# खुराककी कमी और खेती

4253
1031

गांधीजी

Y
1031

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

## खादी

लेखक : गांधीजी

गांधीजी खादी-आन्दोलनमें गांवोंके आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनके पुनरुद्धारके दर्शन करते थे। यह संग्रह खादी-कार्यकर्ताओं और विद्यार्थियोंके साथ ही अैसे सब लोगोंके लिअे अुपयोगी सिद्ध होगा, जो यह जानना चाहते हैं कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके बारेमें गांधीजीके क्या विचार थे और हमारी जनताकी आर्थिक स्थिति सुधारनेकी योजनाओंमें खादी अर्थात् हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीका क्या स्थान होना चाहिये।

कीमत २.०० डाकखर्च ०.९४

## आरोग्यकी कुंजी

लेखक : गांधीजी

गांधीजीके शब्दोंमें अिस किताबको "विचारपूर्वक पढ़नेवालों और अिसमें दिये हुअे नियमों पर अमल करनेवालोंको आरोग्यकी कुंजी मिल जायगी, और अुन्हें डॉक्टरों तथा वैद्योंका दरवाजा नहीं खटखटाना पड़ेगा।"

कीमत ०.४४ डाकखर्च ०.१९

## गोसेवा

लेखक : गांधीजी

अिस संग्रहमें सच्ची गोरक्षा और गोसेवाके बारेमें गांधीजीके तथा अुनके निकटके साथियों और सहयोगियोंके लेख तथा भाषण अिकट्ठे किये गये हैं। अुन्होंने अेक जगह कहा है: "मुझसे कोअी पूछे कि हिन्दू धर्मका बड़ेसे बड़ा बाह्य स्वरूप क्या है, तो मैं गोरक्षाको बताअूंगा।"

कीमत १.५० डाकखर्च ०.३७

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಪ್ರಚಾರ ವಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ: 2163
ACC. No.:
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

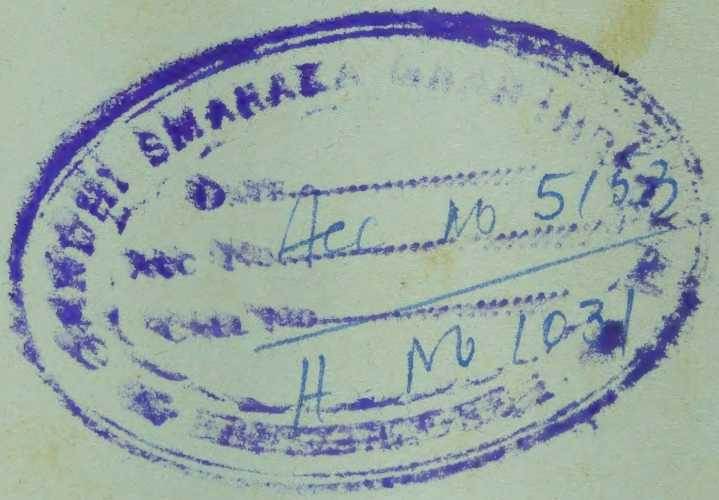

# खुराककी कमी और खेती

गांधीजी

प्रकाशककी ओरसे भेट

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

© सर्वाधिकार नवजीवन ट्रस्टके अधीन, १९४९

पहली आवृत्ति ३०००, १९४९
पुनर्मुद्रण २०००, १९५६
पुनर्मुद्रण ५०००

रु० २.५०

24

फरवरी, १९५९

# संपादकका निवेदन

हम खुराककी कमीका मुकाबला कैसे कर सकते हैं और अिसी संबंधमें हिन्दुस्तानकी खेतीको सुधारनेके लिअे क्या किया जाना चाहिये — अिन दो बड़े प्रश्नोंसे संबंध रखनेवाले गांधीजीके और दूसरोंके 'हरिजन' में छपे लेखोंका संकलन करना ही अिस पुस्तकका अुद्देश्य है।

खुराककी कमीके बारेमें गांधीजीके ज्यादातर सुझाव १९४६ और १९४७ में किये गये थे, हालांकि खुराककी असाधारण कमी तो हिन्दुस्तानमें अिसके तीन चार साल पहलेसे ही थी। १९४२ से १९४६ के बीचके अरसेमें अिस विषयमें गांधीजीके मौनका कारण यही था कि अगस्त १९४२ से सरकारने 'हरिजन' पर प्रतिबंध लगा दिया था और १९४६ में ही अुसे फिरसे जारी करनेकी अिजाजत दी थी।

गांधीजीके सारे लेखोंका निचोड़ यही है कि खुराकके मामलेमें हमें स्वावलंबी होना चाहिये, और विदेशोंसे मददकी आशा न रखकर अपनी समस्यायें हमें खुद ही हल करनी चाहिये। खुराककी कमीके बारेमें अुनका यह पक्का विश्वास था कि अगर हममें से हरअेक — गरीब और अमीर, किसान और व्यापारी, सरकार और जनता — अपना अपना फर्ज पूरा करे, तो हमारे देशमें काफी अन्न पैदा हो सकता है और हमें बाहरसे भीख मांगनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। अुनकी यह राय थी कि हिन्दुस्तान जैसे खेती-प्रधान देशको न सिर्फ अपने ही लोगोंको भोजन देने लायक बनना चाहिये, बल्कि दूसरोंको भी भोजनकी मदद करनी चाहिये।

स्वावलंबनके सिद्धान्तमें अुत्कट विश्वास होनेके कारण ही गांधीजी खुराकके सरकारी कण्ट्रोलको बहुत ज्यादा नापसन्द करते थे। जीवनकी अिस सबसे बड़ी प्राथमिक जरूरतके लिअे लोगोंको सरकार पर निर्भर बनानेका

विचार अुन्हें असह्य मालूम होता था। लड़ाअीके जैसे संकटकालमें पैदा होनेवाली आर्थिक अव्यवस्थाके असरको मिटानेके लिअे यदि सरकार खुराक पर कण्ट्रोल लगावे, तो अिसे वे समझ सकते थे। लेकिन लड़ाअीको बन्द हुअे लंबा अरसा हो जाने पर भी कण्ट्रोल और रेशनिंग जारी रखनेकी सरकारी नीतिको वे निश्चित रूपसे गलत मानते थे। अुनका कहना था कि लोगोंको अपने पांवों पर खड़े होना चाहिये और अपने भोजनके लिअे सरकारकी मेहरबानी पर निर्भर नहीं करना चाहिये, वर्ना लोकशाही अेक मजाक बन जायगी और स्वराज्य निरा भ्रम। सच्ची लोकशाही कायम करनेके लिअे यह जरूरी है कि लोग अपनी बातोंका प्रबंध खुद करें। अिसलिअे सरकारके लिअे जितनी कम गुंजाअिश हो अुतना ही अच्छा। अिसके बजाय, खुराकका कण्ट्रोल लोगोंके जीवन पर सरकारके प्रभुत्वको बढ़ाता है। अिसलिअे अुन्होंने हमेशा कण्ट्रोलका कड़ा विरोध किया।

अिसके अलावा, खुराकके कण्ट्रोलने भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और काले बाजारको जन्म दिया है। कण्ट्रोलके जमानेमें हमारे व्यापारी नैतिक दृष्टिसे जितने नीचे गिरे हैं, अुतने कभी नहीं गिरे थे। कण्ट्रोलके कारण व्यापारी अनाज और दूसरी खानेकी चीजें अिकट्ठी करते हैं और अिस तरह अुनकी कमीको बढ़ाते हैं, अुन्हें काले बाजारमें बेचते हैं और अनाप-शनाप नफा कमाते हैं। कण्ट्रोल शुरू होनेसे छोटे-बड़े सभी सरकारी अफसरोंमें रिश्वत लेनेका लालच बढ़ा है, और अुनमें से बहुतसे अुसके शिकार हो रहे हैं। अिसलिअे व्यापारी और सरकारी अफसर दोनों स्वभावतः कण्ट्रोल जारी रखना चाहेंगे और अुसे हटानेके खिलाफ जी-तोड़ कोशिश करेंगे। लेकिन अगर गांधीजीकी सलाह मानना हो, तो सरकारको दृढ़ बनकर कण्ट्रोल हटा ही देना चाहिये। संभव है अिससे कुछ समयके लिअे कीमतें अूंची चढ़ जायं, लेकिन गांधीजीकी रायके मुताबिक वे जल्दी ही ज्यादा सामान्य सतह पर आ टिकेंगी। अन्तमें अुनका यह विश्वास हो गया था कि देशमें खुराककी सच्ची कमी नहीं है; सिर्फ सरकारकी खुराक पर कण्ट्रोल लगानेकी नीतिके कारण खाद्य पदार्थ अिकट्ठे करके रखनेवालोंने ही यह बनावटी या झूठी कमी पैदा कर दी है।

खेती शीर्षकके नीचे अिस पुस्तकमें 'हरिजन'से अैसे ही लेख लिये गये हैं, जिनमें खेती-सुधारके तरीकोंके बारेमें सूचनायें दी गअी हैं। अुनका खुराककी कमीको मिटानेसे सीधा कोअी संबंध नहीं है। जहां तक खेतीका संबंध है, गांधीजीकी दृष्टि जैव खादोंके अुपयोगसे जमीनका अुपजाअूपन बढ़ाने और पशु-सुधार करनेके प्रश्न तक ही सीमित थी। अिसकी साफ वजह यही थी कि खेतीसे संबंध रखनेवाली दूसरी समस्यायें अितनी बड़ी थीं कि राज्यकी सहायताके बिना व्यक्तिगत प्रयत्नोंसे अुन्हें तुरंत हल नहीं किया जा सकता था। अिसलिअे अिस पुस्तकके खेती-विभागमें अिकट्ठे किये गये सुझावोंका संबंध सिर्फ अिन दो ही विषयोंसे है — खेती-सुधार और पशु-सुधार। फिर भी अुनका बहुत बड़ा महत्त्व है; खासकर अिसलिअे कि आज हमारे देशके लोग रासायनिक खादों और ट्रैक्टरोंके अुपयोगकी तरफ झुकते दिखाअी दे रहे हैं, और पशुओंसे संबंध रखनेवाली अिन समस्याओंको हल करनेके भारी महत्त्वको नहीं समझते कि पशु हमारे पोषणके लिअे ज्यादा दूध और खेतीके लिअे अच्छा खाद और अच्छे बैल कैसे दे सकते हैं। खुद गांधीजीने खेतीके संबंधमें ज्यादा नहीं लिखा, अिसलिअे अिस विभागमें दूसरोंके ही ज्यादा लेख लेना ठीक समझा गया है।

१९४२ से पहलेके अैसे ही लेख लिये गये हैं, जिनका अिस पुस्तकमें चर्चा की गअी समस्याओंके साथ महत्त्वका संबंध है।

दूसरोंके द्वारा लिखे हुअे लेख अिस पुस्तकके दूसरे भागमें दिये गये हैं। गांधीजीने अुन्हें 'हरिजन' में प्रकाशित किया, क्योंकि अुनमें प्रकट किये गये विचारोंका गांधीजीके विचारोंके साथ मेल बैठता था। अिसलिअे यह माना जा सकता है कि अुन्हें गांधीजीका समर्थन और स्वीकृति प्राप्त थी। गांधीजीका अेक ही लेख — 'वैयक्तिक या सामुदायिक?' — दूसरे भागमें शामिल किया गया है, क्योंकि विषयकी दृष्टिसे यहीं अुसका ज्यादा अुचित स्थान है। वह अिस पुस्तकका आखिरी लेख है।

चाहे गांधीजीका हो या दूसरोंका, पूरा लेख वही अुद्धृत किया गया है, जो अिस पुस्तकमें शामिल किये गये विषयोंके अुपयुक्त समझा गया है।

वर्ना लेखके अैसे ही हिस्से दिये गये हैं, जिनका अिन विषयोंसे संबंध है। आम तौर पर लेखोंके मूल शीर्षक ही रहने दिये गये हैं। सिर्फ अेक-दो लेखोंके शीर्षक सुधारे या बदले गये हैं।

अगर गांधीजीमें हमारी सच्ची श्रद्धा है, तो सरकार और जनता दोनोंको अुनके अुपदेशों पर अमल करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अिसके अलावा, खुराककी कमी और खेतीकी जिन समस्याओंका हमें रोज-रोज और हर तरफसे सामना करना पड़ रहा है, अुन्हें तुरन्त हल करना जरूरी है। अिस दिशामें मदद पहुंचानेकी दृष्टिसे ही अिस पुस्तकका संकलन किया गया है।

बम्बअी, १२–४–१९४९ भारतन् कुमारप्पा

# अनुक्रमणिका

सम्पादकका निवेदन ३

## पहला भाग

### अ — खुराककी कमी

१. सच्चा युद्ध प्रयत्न ३
२. भुखमरी कैसे मिटाओ जाय? ५
३. गांधीजीका बयान ६
४. अकाल ८
५. अितना तो करें ही १०
६. अनाजका आयात क्यों नहीं? १२
७. नादानीभरी बरबादी १४
८. भयंकर छाया १६
९. अनाजकी कमी १७
१०. अेक अुपयोगी पर्चा १८
११. कामके सुझाव १९
१२. गांधीजीके अखबारी बयान २०
१३. जूठन छोड़ना २३
१४. सवाल-जवाब २४
१५. बरबादी २५
१६. अन्नकी भीख मांगना २६
१७. अेक मंत्रीकी परेशानी २७
१८. खांड़ और मिठाओ २९
१९. शोचनीय ३१
२०. गांधीजीका अखबारी बयान ३२

| | |
|---|---|
| २१. आमकी गुठलीकी गरी | ३२ |
| २२. हरी पत्तियां | ३४ |
| २३. सोयाबीन | ३५ |
| २४. सोयाबीनकी खेती | ३६ |
| २५. मूंगफलीकी खली | ३७ |
| २६. रंगमें भंग | ३९ |
| २७. कुछ और सुझाव | ४० |
| २८. मंत्रियोंका राशन | ४२ |
| २९. खुराककी कमी क्यों? | ४३ |
| ३०. कत्लेआम | ४४ |
| ३१. खुराककी तंगी | ४५ |
| ३२. अनुचित बरबादी | ४६ |
| ३३. अनाजका भाव | ४८ |
| ३४. अनाजके खतरेको खुद टालो | ४९ |
| ३५. अनाजकी समस्या | ५० |
| ३६. खुराककी तंगी | ५४ |
| ३७. कण्ट्रोल हटा दिया जाय | ५५ |
| ३८. अनाजका कण्ट्रोल हटा दीजिये | ५६ |
| ३९. कण्ट्रोल हटा दिये जायं | ५८ |
| ४०. कण्ट्रोल हटानेकी तारीफमें | ५९ |
| ४१. कण्ट्रोलका सवाल | ६२ |
| ४२. सरकारकी दुविधा | ६३ |
| ४३. कण्ट्रोल | ६४ |
| ४४. कण्ट्रोल | ६५ |
| ४५. फिर कण्ट्रोलके बारेमें | ६७ |
| ४६. देहातोंमें संग्रहकी जरूरत | ६९ |
| ४७. अंकुश हटानेका नतीजा | ७० |
| ४८. कीमतें और अंकुशका हटना | ७१ |

| | | |
|---|---|---|
| ४९. दिल्लीके व्यापारियोंको गांधीजीका संदेश | | ७२ |
| ५०. कण्ट्रोलका हटना | | ७३ |
| ५१. लोकशाही कैसे काम करती है | | ७४ |
| ५२. अंकुश हटनेका नतीजा | | ७५ |


### ब — खेती


| | | |
|---|---|---|
| ५३. मिश्र खाद | | ७७ |
| ५४. खादके खड्डे | | ७८ |
| ५५. हम सब भंगी बनें | | ७९ |
| ५६. मिश्र खाद | | ८० |
| ५७. मिश्र खाद (चालू) | | ८४ |


## दूसरा भाग

### अ — खुराककी कमी


| | | |
|---|---|---|
| ५८. भाव-नियंत्रण | महादेव देसाओ | ९३ |
| ५९. नियंत्रण : सरकारी या सार्वजनिक ? | | ९६ |
| ६०. भाव-नियंत्रणमें गोलमाल | महादेव देसाओ | ९८ |
| ६१. खुराककी मापबन्दी | मॉरिस फ्रिडमैन | १०१ |
| ६२. कण्ट्रोल | जे० सी० कुमारप्पा | १०३ |
| ६३. खतरेकी घण्टी | प्यारेलाल | १०५ |
| ६४. क्या मौका हाथसे चला गया ? | जे० सी० कुमारप्पा | १०८ |
| ६५. निराशाजनक चित्र | प्यारेलाल | १०९ |
| ६६. कुछ सुझाव | अमृतकुंवर | १११ |
| ६७. अन्नकी तंगी : कुछ और सुझाव | अमृतकुंवर | ११६ |
| ६८. मूंगफलीका अुपयोग | अमृतकुंवर | १२२ |
| ६९. अुपयोगी सूचना | | १२५ |
| ७०. अेक अुपवास कितना बचा सकता है | | १२८ |
| ७१. अनाज कैसे बचाया जाय ? | देवेन्द्रकुमार गुप्त | १२९ |
| ७२. दूधकी मिठाअियां | सुशीला नय्यर | १३१ |

| | | |
|---|---|---|
| ७३. आये हुअे पत्रोंसे | अमृतकुंवर | १३२ |
| ७४. अन्नकी कमी और वैज्ञानिक खोज | सुशीला नय्यर | १३४ |
| ७५. दुष्काल संबंधी बातें | प्यारेलाल | १३६ |
| ७६. आंखें खोलनेवाले आंकड़े | अमृतकुंवर | १४६ |


**ब — खेती**


| | | |
|---|---|---|
| ७७. ज्यादा आबादी या कम पैदावार ? | प्यारेलाल | १५० |
| ७८. अनाज, ईंधन और तेल | प्यारेलाल | १५२ |
| ७९. पैसा नहीं, पैदावार | विनोबा | १५३ |
| ८०. अनाजकी तंगी | जे० सी० कुमारप्पा | १५६ |
| ८१. आखिर सही कदम अुठाया गया | जे० सी० कुमारप्पा | १५८ |
| ८२. सरकार ध्यान दे | प्यारेलाल | १५९ |
| ८३. रैयत या किसान | जे० सी० कुमारप्पा | १६१ |
| ८४. ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ? – १ | मीराबहन | १६३ |
| ८५. ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ? – २ | मीराबहन | १६६ |
| ८६. ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ? – ३ | मीराबहन | १७४ |
| ८७. ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ? – ४ | मीराबहन | १७७ |
| ८८. गरमीके मौसमकी शाक-भाजी | मीराबहन | १८३ |
| ८९. अनाज, घास और खेती | स्वामी आनन्द | १८७ |
| ९०. अुपयोगी सूचनाअें | | १९२ |
| ९१. खलिहानका खाद | सी० अेस० | १९४ |
| ९२. जमीनकी खुराक बनाम अुत्तेजक दवाअियां | जे० सी० कुमारप्पा | १९६ |
| ९३. ज्यादा पैदावार, कम पोषण | | २०१ |
| ९४. अन्नसंकट और जमीनका अुपजाअूपन | अेन० आर० धर | २०२ |
| ९५. कचरेमें से सोना | मीराबहन | २१२ |
| ९६. कचरेसे कंचन | वैकुंठभाअी मेहता | २१५ |
| ९७. नौकरशाही योजनाओंके खिलाफ चेतावनी – १ | वा० गो० देसाअि | २१७ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९८. | नौकरशाही योजनाओंके खिलाफ चेतावनी – २ | वा० गो० देसाअि | २२० |
| ९९. | खेतीमें कृत्रिम चीजोंका अुपयोग | प्यारेलाल | २२३ |
| १००. | फोर्ड ट्रैक्टर बनाम हल | सी० अेफ० अेन्ड्रूज़ | २२६ |
| १०१. | जमीनका अूसर बनना | सी० अेफ० अेण्ड्रूज़ | २२९ |
| १०२. | खाद और ढोरोंकी खुराकके रूपमें नमक | प्यारेलाल | २३१ |
| १०३. | बैलके हकमें | वा० गो० देसाअि | २३३ |
| १०४. | भारतमें द्वि-अर्थक ढोरोंका विकास | दातारसिंह | २३७ |
| १०५. | ट्रैक्टर बनाम बैल | मीराबहन | २४२ |
| १०६. | हमारा मवेशी धन | मीराबहन | २४४ |
| १०७. | पशु-सुधार | अमृतकुंवर | २४५ |
| १०८. | वैयक्तिक या सामुदायिक? | मो० क० गांधी | २४८ |
| | सूची | | २५१ |

# खुराककी कमी और खेती

पहला भाग

## अ – खुराककी कमी

### १

### सच्चा युद्ध-प्रयत्न

आज सबसे जरूरी सवाल जो हमारे सामने खड़ा है, वह भूखसे पीड़ित लोगोंके लिअे रोटीका और वस्त्रहीन गरीब जनताके लिअे कपड़ेका बन्दोबस्त करनेका है। अिन दोनों चीजोंका देशमें दुष्काल है और अगर लड़ाअी लम्बी चली, तो यह संकट और भी बढ़ जायगा। बाहरसे अन्न-वस्त्रका आना बन्द हो गया है। धनिकवर्ग भले आज अिसकी तंगीको महसूस न करता हो, परन्तु गरीब लोग तो आज भी काफी तंगीमें हैं। धनिकवर्ग गरीबोंके शोषणसे ही आज अपने-आपको जिन्दा रख रहा है। अिसके सिवा और कोअी रास्ता अुसके पास नहीं है। तो गरीबोंके प्रति आज अिस वर्गका क्या धर्म है? कहावत है कि जो जितना बचाता है, वह अुतना ही कमाता या पैदा करता है। अिसलिअे जिन्हें गरीबों पर दया है, जो अुनके साथ अैक्य साधना चाहते हैं, अुन्हें अपनी आवश्यकताअें कम करनी चाहिये। यह हम कअी तरीकोंसे कर सकते हैं। मैं अुनमें से कुछ ही का यहां जिक्र करूंगा।

धनिकवर्गमें प्रमाण या आवश्यकतासे कहीं ज्यादा खाना खाया और जाया किया जाता है। अेक समय अेक ही अनाज अिस्तेमाल करना चाहिये। चपाती, दाल-भात, दूध-घी, गुड़ और तेल ये खाद्य पदार्थ शाक-तरकारी और फलके अुपरान्त आम तौर पर हमारे घरोंमें अिस्तेमाल किये जाते हैं। आरोग्यकी दृष्टिसे यह मेल ठीक नहीं है। जिन लोगोंको दूध, पनीर, अंडे या मांसके रूपमें स्नायुवर्धक तत्त्व मिल जाते हैं, अुन्हें दालकी बिलकुल जरूरत नहीं रहती। गरीब लोगोंको तो सिर्फ वनस्पति द्वारा ही स्नायुवर्धक तत्त्व मिल सकते हैं। अगर धनिकवर्ग दाल और तेल लेना छोड़ दे, तो गरीबोंको जीवन-निर्वाहके लिअे ये आवश्यक पदार्थ मिलने लगें। अिन बेचारोंको न तो प्राणियोंके शरीरसे पैदा हुअे स्नायुवर्धक तत्त्व मिलते हैं और न चर्बी ही। अन्नको दलियाकी तरह मुलायम बनाकर कभी भी नहीं खाना चाहिये।

अगर अुसको किसी रसीली या तरल चीजमें डुबोये बगैर सूखा ही खाया जाय, तो आधी मात्रासे ही काम चल जाता है। अन्नको कच्ची सलाद, जैसे कि प्याज, गाजर, मूली, लेटिस, हरी पत्तियों और टमाटरके साथ खाया जाय तो लाभ होता है। कच्ची हरी सब्जियोंकी सलादके अेक-दो औंस भी ८ औंस पकाअी हुअी सब्जियोंके बराबर होते हैं। चपाती या डबलरोटी दूधके साथ नहीं लेनी चाहिये। शुरूमें अेक वक्त चपाती या डबलरोटी और कच्ची सब्जियां और दूसरे वक्त पकाअी हुअी सब्जी दूध या दहीके साथ ले सकते हैं। मिष्टान्न भोजन बिलकुल बन्द कर देने चाहिये। अिनकी जगह गुड़ या थोड़ी मात्रामें शक्कर अकेले अथवा दूध या डबलरोटीके साथ ले सकते हैं।

ताजे फल खाना अच्छा है, परन्तु शरीरके पोषणके लिअे थोड़ा फल-सेवन भी पर्याप्त होता है। यह महंगी वस्तु है और धनिक लोगोंके आवश्यकतासे अत्यंत अधिक फल-सेवनके कारण गरीबों और बीमारोंको, जिन्हें धनिकोंकी अपेक्षा अधिक फलोंकी जरूरत है, फल मिलना दुश्वार हो गया है।

कोअी भी वैद्य या डॉक्टर, जिसने भोजनके शास्त्रका अध्ययन किया है, प्रमाणके साथ कह सकेगा कि मैंने जो अूपर बताया है, अुससे शरीरको किसी प्रकारका नुकसान नहीं हो सकता। अुलटे, तन्दुरुस्ती अधिक अच्छी हो सकती है।

स्पष्ट ही भोजन-सामग्रीकी किफायतका सिर्फ यही अेक तरीका नहीं है। अिसके सिवा और भी कअी तरीके हैं। परन्तु केवल अिसी अेक अुपायसे कोअी अुल्लेख योग्य लाभ नहीं हो सकता।

गल्लेके व्यापारियोंको लालच और जितना मुनाफा मिल सके अुतना मुनाफा कमानेकी वृत्तिको त्यागना चाहिये। अुन्हें यथासंभव थोड़ेसे थोड़े मुनाफेमें ही संतुष्ट रहना चाहिये। यदि वे गरीबोंके लिअे गल्लेके भंडार न रखेंगे, तो अुन्हें लूटपाटका डर रहेगा। अुन्हें चाहिये कि वे अपने पड़ोसके आदमियोंसे संपर्क बनाये रखें। कांग्रेसियोंको चाहिये कि वे अिन गल्लेके व्यवसाअियोंके यहां जायें और यह संदेश अुन्हें दें।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य तो यह है कि गांवोंके लोगोंको यह शिक्षा दी जाय कि जो कुछ अुनके पास है अुसे बचाकर रखें और जहां-जहां पानीकी सुविधा है, वहां-वहां नअी फसल बोने और तैयार करनेके लिअे अुन्हें प्रेरित किया जाय। अिसके लिअे प्रचारकी आवश्यकता है, जो बड़े

पैमाने पर और बुद्धिमत्तापूर्ण हो। यह बात आम तौर पर लोगोंको नहीं मालूम है कि केला, आलू, चुकन्दर, शकरकन्द, सूरन और कुछ हद तक लौकी खानेके लिअे सरलतासे बोअी जानेवाली फसलें हैं और जरूरतके समय ये पदार्थ रोटीका स्थान ले सकते हैं।

आजकल पैसेकी भी बहुत कमी है। अनाज शायद मिल भी जाय, परन्तु अनाज खरीदनेको लोगोंके पास पैसा नहीं है। बेकारीके कारण ही पैसेका अभाव है। बेकारी हमें मिटानी है। अिसलिअे सूत कातना ही अिसका सबसे सरल और सहज अुपाय है। स्थानीय जरूरतें श्रमके दूसरे जरिये भी पैदा कर सकती हैं। बेकारी न रहने पाये, अिसके लिअे हरअेक प्रकारका साधन ढूंढ़ना होगा। सिर्फ वे ही भूखों मरेंगे जो आलसी हैं। धीरजके साथ काम करनेसे अैसे लोग भी अपना आलस्य छोड़ देंगे।

काशी जाते हुअे, १९–१–'४२
हरिजनसेवक, २५–१–१९४२

## २

## भुखमरी कैसे मिटाअी जाय ?

स० — ग्राम-संरक्षक दलोंके संगठनकी अपेक्षा अिस वक्त अनाजकी तंगी और महंगाअीका सवाल देहातोंमें ज्यादा महत्त्व रखता है। भूखकी अग्नि भाषणोंसे कैसे शान्त होगी? देशमें न अितने पूंजीपति हैं और न अुनकी त्याग-भावना ही अितनी तीव्र है कि वे अिस मामलेको सुधार सकें। कृपया मार्ग बतलाअिये।

ज० — मेरी दृष्टिसे तो संरक्षक दलोंका ही यह काम है कि जहां तक संभव हो लोगोंको भुखमरी और शोषणसे बचाया जाय। मैंने भुखमरीका अुपाय बताया तो है। आजसे ही अुसका अुपयोग होना चाहिये।

१. शास्त्रीय दृष्टिसे खाना। अिससे अनाज बचता है।

२. जो खाद्य फसल अिस अृतुमें बोअी जा सकती है अुसे बोना।

३. जो जंगली भाजी अित्यादि खाद्य वस्तुअें बगैर प्रयत्नसे अुगती हैं, अुनका संशोधन करना और अुपयोग करना।

४. बेकारी मिटाना। कोअी मनुष्य बेकार न बैठे। मजदूरी न मिले तो अपने लिअे कुछ पैदा करे, जैसे कातना।

५. मुझे डर है कि यदि लड़ाअी शीघ्र बन्द न हुअी और जापानका प्रवेश हिन्दमें हुआ, तो खाद्य पदार्थ अेक जगहसे दूसरी जगह ले जाना मुश्किल हो जायगा; असम्भव भी हो सकता है। अिसलिअे जिस जगह आवश्यकतासे अधिक अनाज वगैरा है, अुसे आवश्यक जगह पहुंचाना चाहिये।

मैं जानता हूं कि अिन सब चीजोंका करना भी मुश्किल है। लेकिन अिसके सिवा कोअी दूसरा अिलाज मैं नहीं पाता।

सेवाग्राम, १६–३–'४२
हरिजनसेवक, २२–३–१९४२

## ३

## गांधीजीका बयान

गांधीजीने अखबारोंके लिअे नीचे लिखा बयान दिया है:

अनाजकी जो हालत पैदा हो गअी है, अुसके कारण वाअिसरॉयके खानगी मंत्रीको मेरे पास आना पड़ा। मेरे लिअे अगले कअी दिनों तक सभाओं और मुलाकातोंका कार्यक्रम तय हो चुका था। अुन्हें मैं टाल नहीं सकता था। फिर मैं हवाअी जहाजसे सफर करना जानता नहीं और अुम्मीद रखता हूं कि शायद मुझे अैसा करना भी न पड़े। अिसलिअे वाअिसरॉयके अनुरोधभरे बुलावेके जवाबमें मैंने यह चाहा कि वे मेरे पास किसीको भेज दें, जो अुनकी ओरसे बात कर सके। अिस तरह वाअिसरॉयके खानगी मंत्री कल आये। सिर्फ अनाजकी हालतके कारण ही वे मेरे पास आये थे। क्या मैं अिस बारेमें कोअी अैसी बात कह सकता हूं, जो अिस सवालको राजनीतिके दायरेसे अलग रख सके और सरकारके अिरादों और नीतिके बारेमें आम तौर पर जो अविश्वास पाया जाता है, अुसका अिस पर कोअी असर न पड़े? अिस मामलेमें देरकी गुंजाअिश नहीं हो सकती, अिसलिअे मैंने जो कुछ कहा अुसका सार यहां दे रहा हूं।

जहां तक कांग्रेसका ताल्लुक है, वाअिसरॉयको चाहिये कि वे मौलाना आजादको बुलायें और अगर वे न आ सकें, तो अुन्हें अपना नुमाअिन्दा

भेजनेके लिअे कहें। मैं खुद यह महसूस करता हूं कि मौजूदा गैरजिम्मेदार कार्यकारिणी कौंसिलकी जगह फौरन जिम्मेदार कौंसिल बनाअी जानी चाहिये और अुसके सदस्य केन्द्रीय धारासभाके चुने हुअे सदस्योंमें से लिये जाने चाहिये। मेरा यह भी खयाल है कि अिस जिम्मेदारीको केन्द्रीय धारासभाके चुने हुअे सदस्योंको पार्टियोंका विचार न करते हुअे लेना चाहिये, कारण कपड़े और अनाजके अकालका खतरा देशके करोड़ों लोगोंको समान रूपसे है। सरकार अिस सुझावको स्वीकार करेगी अथवा नहीं और केन्द्रीय धारा-सभाकी विविध पार्टियां अुसको व्यावहारिक मानेंगी या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। किंतु बिना किसी खण्डनके डरके अेक बात तो मैं कह ही सकता हूं। मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं कि अगर व्यापारी-समाज और अधिकारी जगत अीमानदार बन जाय, खासकर आनेवाले संकटका सामना करनेके लिअे, तो हमारा देश अितना बड़ा है कि बाहरी दुनियासे मदद न मिलने पर भी हम मुश्किलोंमें से पार हो जायंगे। क्योंकि बाहरी दुनिया तो खुद ही कष्टसे कराह रही है।

अनाज और कपड़ेके व्यापारियोंको संग्रह नहीं करना चाहिये; अुन्हें सट्टा भी नहीं करना चाहिये। जहां भी पानी हो या मुहैया किया जा सकता हो, वहां खेतीके लायक सारी जमीनमें अनाज पैदा किया जाना चाहिये। फूलोंके बगीचोंमें अनाजकी फसलें अुगाअी जानी चाहिये। लड़ाअीके समयमें अैसा किया गया है। मौजूदा समय कुछ दृष्टियोंसे लड़ाअीके बनिस्बत भी ज्यादा खराब है। अिससे पहले कि हम अपनी बचतका नाज खा-पका जायं, हमको कंजूसोंके जैसी किफायतशारीसे काम लेना चाहिये। सब तरहके सामाजिक अुत्सव या आयोजन बन्द कर दिये जाने चाहिये। औरतें अपनी घर-गृहस्थीमें किफायत करके मौजूदा संकटको कम करनेमें बड़ा हिस्सा ले सकती हैं। सरकारका रूप कैसा भी हो, अगर वह लोगोंके काममें दखल न दे, तो हम बिना सरकारकी मददके अपने रोजमर्राके दसमें से नौ कामोंका अिन्तजाम खुद कर सकते हैं।

घबड़ाना तो हमको हरगिज न चाहिये। मौतके आनेसे पहले ही हमें मरनेसे अिनकार कर देना चाहिये। हमें हिन्दुस्तानके नर-कंकालोंकी बात सोचनी चाहिये और सोचना चाहिये कि हम अुनकी क्या मदद कर सकते हैं। फिर तो हमारे देशका भला ही होगा। हम अिस खयालके शिकार

न बनें कि चूंकि हम खुद मौजसे रह सकते हैं, अिसलिअे हमारा पड़ोसी भी अुसी तरह रह लेता होगा।

हरिजनसेवक, १७–२–१९४६

## ४

## अकाल

अपने बंगाल, आसाम और मद्रासके दौरेमें मैंने अनाज और कपड़ेकी कमीके कारण लोगोंके संकटके किस्से सुने हैं। हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंसे भी मेरे पास खबरें आ रही हैं। अुनमें भी अुसी हालतका जिक्र है। राजेन्द्र-बाबूने मुझे बताया कि ज्यों ही सरकारने अनाजकी कमीकी आशंका प्रकट की, त्यों ही बाजारमें कीमतें दुगुनी हो गअीं। यह बुरी निशानी है। अिस तरहका सटोरियापन आज मुमकिन न होना चाहिये। व्यापारी समाजमें अैसे लालचको दबानेकी ताकत होनी चाहिये। सरकारकी गलतियों या नालायकीके कारण पैदा हुअे संकटको अुसे बढ़ाना नहीं चाहिये। देशमें व्यापारियोंकी संस्थायें और मण्डल मौजूद हैं। अगर वे देशभक्तिकी भावनासे काम करें, तो घबराहट और सटोरियेपनको रोकनेमें बहुत मदद दे सकते हैं।

अकालके लिअे कुदरतको दोष देना अेक फैशन-सा बन गया है। अकेले हिन्दुस्तानमें ही बरसात कम नहीं होती। दूसरे देशोंमें हालांकि लोग बरसातका स्वागत करते हैं, पर वहां अगर अेक-दो मौसममें बारिश न हुअी, तो भी लोग करीब-करीब अपना काम चला लेते हैं। हमारे यहां सरकार यह माने बैठी है और जनतासे भी कहती है कि जब बरसात कम होती है तभी अकाल पड़ता है। अगर अुसका खयाल दूसरा बना होता, तो अुसने बरसातकी कमीके लिअे कुछ और अिन्तजाम किया होता। अुसने समस्याको हल करनेकी कोअी ठोस कोशिश नहीं की और यह स्वाभाविक भी था। कारण, सरकारी अधिकारियोंको अिससे अच्छा सोचनेकी आदत ही नहीं डाली गअी। भारत-सरकारका जैसा अिकहत्था, गुंथा हुआ संगठन है, अुसमें मौलिकताके लिअे जगह नहीं हो सकती। दुनियामें अुसके जैसा स्वेच्छाचारी संगठन शायद ही और कहीं मौजूद हो। लोकतंत्र तो केवल ब्रिटेनके लिअे ही सुरक्षित रखा

गया है। और जब वह दूसरी कौमोंके करोड़ों आदमियों पर हुकूमत करता है और अुनका शोषण करता है, तो खालिस बुराअी बन जाता है। वह सारे देशको अिस बुरे खयालका शिकार बना देता है कि किसी भी प्रगतिशील लोकतंत्रके लिअे अिस तरहका शोषण सबसे अच्छी चीज है। अगर मेरा खयाल सही है तो अिस मूलभूत बातको याद रखना ठीक होगा। तात्कालिक समस्या पर विचार करते समय हम अिस बातको मान लेंगे, तो मौजूदा कर्मचारियोंके प्रति हम धीरज रख सकेंगे। अिसका यह मतलब नहीं कि मैं बुराअीको सह लेनेकी अपील कर रहा हूं। यह फर्क हमको बुराअीसे निपटनेमें ज्यादा समर्थ बनायेगा।

तो हमको सबसे पहले, जहां तक मुमकिन हो, अपने घरका ठीक प्रबंध करना चाहिये। साथ ही हमें विदेशी सरकारसे भी यह मांग करनी चाहिये कि चूंकि वह जो कहती है वही अुसका आशय भी है, अिसलिअे अुसे गैर-जिम्मेदार कार्यकारिणी कौंसिलकी जगह केन्द्रीय धारासभाके चुने हुअे और जिम्मेदार सदस्योंकी कार्यकारिणी कौंसिल कायम करनी चाहिये, चाहे धारासभा कितनी ही दकियानूसी और सीमित मताधिकारसे क्यों न बनी हुअी हो। वाअिसरॉय अगर आज ही अैसा करना चाहें, तो अुनके रास्तेमें कोअी रुकावट नहीं हो सकती। यहां मैं पहलेसे कठिनाअियोंका जवाब नहीं देना चाहता। 'जहां चाह है वहां राह है'। अकेले अिस अेक कदमसे विश्वास कायम होगा और घबराहट दूर होगी।

'ज्यादा अनाज पैदा करो' का नारा लड़ाअीके जमानेमें बुरा नारा न था। अुसकी आज और भी ज्यादा जरूरत है। राष्ट्रीय सरकार ही अिस पर अच्छी तरह अमल करवा सकती है। अुसकी गलतियां भी नामजद कार्यकारिणी कौंसिलकी तुलनामें, चाहे वह कितनी ही लायक क्यों न हो, बड़ी नहीं मालूम होंगी। आज जैसी हालत है, अुसमें अुसकी योग्यता और अीमानदारी पर भी शक होता है। अैसा होना सही है या गलत, यह अेक जुदा सवाल है। अुसका अिससे ताल्लुक नहीं। धरती माताके पेटसे पानी निकालनेकी हर कोशिश की जानी चाहिये। अिस कामको करनेके लिअे अिस देशमें काफी योग्य आदमी मौजूद हैं। प्रान्तीय स्वार्थके स्थान पर राष्ट्रीय जरूरतको जगह दी जानी चाहिये।

अिसके अलावा, न कि अिन अुपायोंकी जगह, जहांसे भी मुमकिन हो, आज अनाज मंगाया जाना चाहिये।

सेवाग्राम, १०–२–'४६
हरिजनसेवक, १७–२–१९४६

## ५

## अितना तो करें ही

यह मानकर चलना चाहिये कि हमको अनाजके संकटका सामना करना पड़ेगा। अैसी हालतमें हमको नीचे लिखी बातें तो फौरन शुरू कर देनी चाहिये :

१. हरअेक आदमीको अपने खाने-पीनेकी जरूरत कम-से-कम कर लेनी चाहिये; वह अितनी होनी चाहिये कि अुसकी तन्दुरुस्ती कायम रह सके। शहरोंमें जहां दूध, साग-सब्जी, तेल और फल मिल सकते हैं, वहां अनाज और दालोंका अिस्तेमाल घटा देना चाहिये। अैसा आसानीसे किया जा सकता है। अनाजोंमें पाया जानेवाला स्टार्च या निशास्ता गाजर, चुकन्दर, आलू, अरवी, रतालू, जमींकन्द, केला वगैरा चीजोंसे मिल सकता है। अिसमें खयाल यह है कि अुन अनाजों और दालोंको, जिन्हें अिकट्ठा करके रखा जा सके, मौजूदा खुराकमें शामिल न किया जाय और अुन्हें बचाकर रखा जाय। साग-सब्जी भी मौज-मजा और स्वादके लिअे न खानी चाहिये, खासकर अैसी हालतमें जब कि लाखों आदमियोंको वह बिलकुल ही नसीब नहीं होती और अनाज तथा दालोंकी कमीकी वजहसे अुनके भूखों मरनेका खतरा पैदा हो गया है।

२. हरअेक आदमी, जिसे पानीकी सहूलियत मिल सकती हो, अपने लिअे या आम लोगोंके लिअे कुछ-न-कुछ खानेकी चीज पैदा करे। अिसका सबसे आसान तरीका यह है कि थोड़ी साफ मिट्टी अिकट्ठी कर ली जाय, जहां मुमकिन हो वहां अुसके साथ थोड़ा सजीव खाद मिला लिया जाय — थोड़ा सूखा गोबर भी अच्छे खादका काम देता है — और अुसे मिट्टीके या टीनके गमलेमें डाल दिया जाय। फिर अुसमें साग-भाजीके कुछ बीज,

जैसे राअी, सरसों, धनिया, मेथी, पालक, बथुआ वगैरा बो दिये जायं और अुन्हें रोज पानी पिलाया जाय। लोगोंको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितनी जल्दी बीज अुगते हैं और खाने लायक पत्तियां देने लगते हैं, जिनको बिना पकाये कच्चा ही सलाद या चटनीकी तरह खाया जा सकता है।

३. फूलोंके तमाम बगीचोंमें खानेकी चीजें अुगाअी जानी चाहिये। अिस बारेमें मैं यह सुझाना चाहूंगा कि वाअिसरॉय, गवर्नर और दूसरे अूंचे अफसर अिसकी मिसाल पेश करें। मैं केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंके खेतीके महकमोंके मुखियाओंसे कहूंगा कि वे प्रान्तीय भाषाओंमें अनगिनत पर्चे छपवाकर बांटें और साधारण आदमियोंको समझायें कि कौन-कौनसी चीजें आसानीसे पैदा की जा सकती हैं।

४. सिर्फ आम लोग ही अपनी खुराकको न घटावें, बल्कि फौजवालोंको भी चाहिये कि वे ज्यादा नहीं तो आम लोगोंके बराबर अपनी खुराकमें कमी करें। सेनाके आदमी सैनिक अनुशासनमें होनेके कारण आसानीसे किफायत कर सकते हैं, अिसलिअे मैंने सेनासे ज्यादा कमी करनेकी बात कही है।

५. तिलहनकी और तेल व खलीकी निकासी अगर बन्द न की गअी हो तो फौरन बन्द कर दी जानी चाहिये। यदि तिलहनमें से मिट्टी और कचरा वगैरा अलग कर दिया जाय, तो खली अिन्सानके लिअे अच्छी खुराक बन सकती है। अुसमें काफी पोषक तत्त्व होते हैं।

६. जहां मुमकिन और जरूरी हो, सिंचाअीके लिअे और पीनेके पानीके लिअे सरकारको गहरे कुअें खुदवाने चाहिये।

७. अगर सरकारी नौकरों और आम जनताकी तरफसे सच्चा सहयोग मिले, तो मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं कि देश अिस संकटसे पार हो जायगा। जिस तरह घबरा जाने पर हार निश्चित हो जाती है, अुसी तरह जहां व्यापक संकट आनेवाला हो वहां फौरन कार्रवाअी न की जाय, तो धोखा हुअे बिना नहीं रहता। हम अिस मुसीबतके कारणों पर विचार न करें। कारण कुछ भी हों, सचाअी यह है कि अगर सरकार और जनताने संकटका धीरज और हिम्मतसे सामना नहीं किया तो बरबादी निश्चित है। अिस अेक मोर्चेको छोड़कर और सब मोर्चों पर हम सरकारसे लड़ेंगे और अगर सरकार हृदयहीनतासे काम लेगी या अुचित लोकमतको ठुकरायेगी, तो अिस मोर्चे पर भी हमको अुससे लड़ना होगा। अिस बारेमें मैं जनताको

मेरी अिस रायसे सहमत होनेके लिअे कहूंगा कि हम सरकारकी बातको जैसा वह कहती है वैसा ही मान लें और समझ लें कि स्वराज्य कुछ ही महीनोंमें मिल जानेवाला है।

८. सबसे जरूरी चीज यह है कि चोरबाजारोंका और बेअीमानी व मुनाफाखोरीका तो बिलकुल खातमा ही हो जाना चाहिये, और जहां तक आजके अिस संकटका सवाल है, सब दलोंके बीच सहयोग होना चाहिये।

सेवाग्राम, १४–२–'४६
हरिजनसेवक, २४–२–१९४६

## ६

## अनाजका आयात क्यों नहीं?

स० — अनाज बाहरसे जितना ज्यादा आये अच्छा है। क्योंकि आजकल लोगोंको जितना दिया जाता है, अुससे कम देनेमें जोखिम है। लोगोंको पेटभर खानेको नहीं मिलता। अिससे फाकाकशी बढ़ सकती है। बीमारी या महामारी फैल सकती है और शायद दंगे भी हो सकते हैं। अिस समय नया अनाज पैदा करना अगर असंभव नहीं, तो निहायत मुश्किल जरूर है।

ज० — मैं जानता हूं कि अिस तरहके खयाल रखनेवाले बहुतसे लोग देशमें हैं, मगर मुझ पर अिसका असर नहीं हो सकता। फाकाकशी या भुखमरी तो अिस व्रक्त भी मौजूद है। अैसी हालतमें लोगोंकी खुराकमें कमी करना असह्य हो सकता है। लेकिन अगर हम मान लें (मैं तो मानता हूं) कि सरकारके पास अिस समय अनाजके जत्थेका जो हिसाब है वह सच है, तो दूरंदेशी हमसे कहती है और यह हमारा धर्म है कि हम कड़वा घूंट पी जायं और लोगोंको भी पिलावें और अुनसे कहें कि वे आज ही से अपनी खुराकमें कमी कर लें और अगली फसलके आने तक किसी तरह काम चलावें। सचाअी यह है कि राशनमें मिलनेवाले जिस अनाजके लोगों तक पहुंचनेकी बात मानी जाती है, वह भी हुकूमतकी बदअिन्तजामीकी वजहसे अुन्हें नहीं मिलता। अगर अब बराबर हिसाबके मुताबिक सही तरीकेसे और आसानीसे लोगोंको अपने-अपने हिस्सेका अनाज मिलने लगे, तो मैं अुसे

देशका सौभाग्य समझूंगा। अिसके खिलाफ अगर हम यह मान लें कि सरकारी आंकड़े झूठे हैं और अिसलिअे अपने आन्दोलनको जारी रखें और ज्यादा अनाज देनेकी मांग करते ही रहें और सरकार वैसा करना मंजूर कर ले, तो अिससे पहले कि दूसरी फसलके पकने तक हम टिक सकें, अैसा समय आ जायगा जब लोगोंको बिलकुल अनाज न मिलेगा और वे बेमौत मरने लगेंगे। अिस विकट परिस्थितिका सामना करनेके लिअे हमें चौकन्ना रहना चाहिये। अैसा करते हुअे कुछ कम खानेकी नौबत आये, तो अुसे सह लेना मैं ठीक समझता हूं। नया अनाज या दूसरे खाद्य पदार्थ पैदा करना मेरे खयालमें जरा भी नामुमकिन नहीं है। हां, मुश्किल जरूर है। और मुश्किल भी अिसलिअे है कि हममें अिस विषयके शास्त्रीय ज्ञानकी और कार्यकुशलताकी कमी है। अगर हम सब आशावादी बनकर, बिना हिम्मत हारे, अेक साथ जो भी अनाज पैदा किया जा सके अुसे पैदा करनेमें जुट जायं, तो अिस वक्त खुराकमें कमी करनेका जो सिलसिला शुरू हुआ है अुसकी मुद्दत भी कम की जा सकती है और लोग युक्ताहारी बन सकते हैं।

मैं खुद तो अपनी आशावादिताको छोड़ नहीं सकता। हां, यह कबूल किये लेता हूं कि ताली अेक हाथसे नहीं बजती। अिस काममें सरकार और जनता दोनोंके सहयोगकी जरूरत है। दोनोंमें आपसका यह सहयोग न हुआ, तो विदेशोंसें अनाज या खाद्य पदार्थोंके आने पर भी अुनके बेकार खर्च हो जानेका अंदेशा है। असलमें वह जिन्हें मिलना चाहिये अुन्हें नहीं मिलेगा; और हम जो पहले ही पराधीन हैं और भी ज्यादा पराधीन बन जायंगे। आशा न रखते हुअे भी बाहरसे जो अनाज आ पहुंचेगा अुसे हम फेंक नहीं देंगे, बल्कि अुसे ले लेंगे और अुसके लिअे अेहसानमंद रहेंगे। अिस तरह बाहरसे अनाज मंगाना सरकारका परम धर्म है। लेकिन सरकारकी ओर टकटकी लगाकर बैठनेमें या दूसरे देशों पर आधार रखनेमें मैं कोअी श्रेय नहीं देखता। यही नहीं, बल्कि रखी हुअी आशाके सफल न होने पर लोगोंमें जो निराशा पैदा होगी, वह अिस संकटके समयमें अुनके लिअे हानिकारक होगी। लेकिन अगर जनता अिस कठिन समयमें अेकमत हो जाय, दृढ़ बन जाय, केवल अीश्वर पर ही भरोसा रखनेवाली बन जाय और सरकारका जो भी काम अुसे स्वतंत्र रीतिसे कल्याणकारी मालूम हो अुसका विरोध न करे, तो जनताके लिअे निराशाका कोअी कारण न रह जाय, वह आगे बढ़े और अिस

भट्टीमें से अुजली होकर निकले। और दूसरे देशोंसे, जहां-जहां अनाज बच सकता है, बचा हुआ अनाज अपने-आप यहां आ सकता है। अंग्रेजीमें अेक बढ़िया कहावत है कि जो अपनी मदद खुद करते हैं यानी स्वावलम्बी बनते हैं अुनकी मदद तो स्वयं अीश्वर भी करता है, औरोंका तो पूछना ही क्या? मतलब यह कि बाहरसे आनेवाला अनाज बिना मांगे यहां आ सकेगा। यहां यह कहनेकी जरूरत नहीं कि जब अंग्रेज हाकिमोंने हिन्दुस्तानमें जो कुछ था सो सब खाली कर डाला — और अुसीका यह नतीजा आज हमें भोगना पड़ रहा है — तो अब सरकारका और जिनकी अुसने मदद की थी, अुन सबका यह धर्म है कि वे अिस वक्त अपना फर्ज अदा करें।

सेवाग्राम, १६-२-'४६
हरिजनसेवक, २४-२-१९४६

## ७

## नादानीभरी बरबादी

अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघके श्री झवेरभाअी पटेल, जो अपने विषयके जानकार हैं, लिखते हैं:

"बर्मासे चावलोंका आना बन्द हो जानेके बादसे हिन्दुस्तानमें चावलकी बेहद कमी हो गअी है। चावलकी अिस कमीको पूरा करनेके लिअे चावलोंको अेक हदके बाद पॉलिश करनेकी सरकारने मनाही कर दी है। अगर पॉलिश करनेकी बिलकुल ही मनाही कर दी गअी होती, तो बर्मासे आनेवाले चावलोंके बन्द हो जानेके कारण पैदा हुअी कमी जरूर पूरी हो गअी होती। हिन्दुस्तानमें जितना चावल पैदा होता है, अुसका सिर्फ ५ फी सदी बर्मासे आता था, जब कि पॉलिश करनेसे १० फी सदी नुकसान होता है। कुछ तो लोगोंकी आदतको अेकदम बदल डालना मुश्किल होता है और कुछ मौजूदा सरकार लोक-मतको तैयार करके अुसे अपने साथ नहीं रख सकती, अिसलिअे वह यह तरीका जारी न कर सकी। लेकिन अिससे भी ज्यादा खराबीकी बात यह हुअी कि लोगोंका समझभरा सहयोग न मिलनेके कारण

सरकारका यह अधूरा अुपाय भी बेकार गया। जबसे सरकारने कम पॉलिश किया चावल देना शुरू किया, चावल खानेवालोंने राशनके चावलको पॉलिश करवाना शुरू कर दिया। मैंने हालमें ही गुजरातमें देखा है कि गोला जातिकी औरतें घर-घर जाकर मजदूरी पर चावल कूटनेका काम करने लगी हैं। अिधर यह अेक आम रिवाज बन गया है। गृहस्थीमें काम आनेवाले लकड़ीके अूखलों और मूसलोंकी बिक्री भी खूब हो रही है। बम्बअी जैसे बड़े शहरोंमें, जहां जगहकी कमीकी वजहसे लकड़ीके अूखल और मूसल काममें नहीं लिये जा सकते, औरतें लोहेके संभलने लायक अूखल-मूसल काममें लेती हैं। लकड़ीके अूखल-मूसलसे पॉलिश करनेकी हालतमें चावलकी मात्रा औसतन् करीब पांच फी सदी कम हो जाती है और लोहेके अूखल-मूसलसे होनेवाली कमीकी तो कोअी सीमा ही नहीं है; वह कभी-कभी ३० फी सदी तक पहुंच जाती है। अैसे परिवार थोड़े ही होंगे, जो राशनमें मिलनेवाले चावलोंको अुसी रूपमें खाते हों। अिसका नतीजा पहलेके बाकायदा पॉलिश किये हुअे चावलोंसे भी ज्यादा खराब हो रहा है।

"हम अपनी खुराकमें बिना पॉलिशका पूरा चावल काममें लेने लगें, अिसका सबसे कारगर तरीका यह है कि हम अपनी बहनोंको आहारशास्त्र सिखायें।"

यह बात बिलकुल सही है कि यह जरूरी सुधार हम अपनी बहनोंको शिक्षा देकर ही जल्दी करवा सकते हैं। हमें अुनको यह शिक्षा देनी होगी कि किस तरह पकाने पर हम अपने भोजनके पोषक तत्त्वोंकी रक्षा कर सकते हैं। यह शिक्षा कैसे दी जाय, यह अेक गंभीर सवाल है। अखबारों और सभाओंके अलावा स्कूल और कॉलेज अिस शिक्षाके शायद सबसे ज्यादा तैयार साधन हो सकते हैं। अगर लोगोंको अपने-आपको और करोड़ों भूखोंको अिस नाजुक समयमें बचाना है, तो अखबारों और सभाओंके जरिये यह तात्कालिक जरूरत पूरी की जानी चाहिये।

सेवाग्राम, १७-२-'४६
हरिजनसेवक, २४-२-१९४६

## ८

# भयंकर छाया

मद्राससे वापस लौटने पर गांधीजी कुछ ही समय सेवाग्राममें रह पाये। अिस अरसेमें आनेवाले अकालकी भयंकर छायासे गांधीजीका दिमाग भरा हुआ रहा। जब वे बंगालमें थे, तभी आनेवाले खतरेकी अुन्हें आगाही मिल गअी थी। बिहार और मद्रासकी हालत जानकर तो अुन्हें और भी परेशानी हुअी। जब वे मद्रासके गवर्नरसे मिले, तो अुन्होंने अुनसे भी अिस सवालकी चर्चा की, मगर बातचीतके बाद अुनके दिलका बोझ हलका नहीं हुआ। हालत अैसी है कि अिसमें सभी सम्बन्धित पक्षोंका सहयोग जरूरी है।

गांधीजी प्रश्नको टालनेके आदी नहीं। अुसी दिन शामकी प्रार्थनाके बाद अुन्होंने आश्रमवासियोंको समझाया कि खाने-पीनेकी चीजोंको बचाकर रखने और किफायतसे खर्च करनेकी और अनाज वगैरा अुपजाने लायक धरतीके चप्पे-चप्पेमें खेतीके जरिये खाद्यकी मात्रा बढ़ानेकी कितनी सख्त जरूरत है। डॉ० जाकिर हुसैन और तालीमी संघके कुछ दूसरे सदस्य १६ तारीखकी दोपहरको बातचीत करने आये, तब भी गांधीजीने अुनके साथ अिसी सवाल पर चर्चा की। चूंकि नअी तालीमका अुद्देश्य ही जीवनकी असली हालतोंके साथ जीवित सम्बन्ध कायम करना है, अिसलिअे अुनमें होनेवाले हरअेक हेरफेरका अुसे सामना करना चाहिये। "अिसलिअे मौजूदा संकटके समय, जब कि लोगोंके भूखों मरनेका खतरा पैदा हो गया है, आपके यह कहनेसे काम न चलेगा कि हम लोग तो शिक्षा-सम्बन्धी कामोंमें लगे हुअे हैं। नअी तालीमको मौजूदा हालतोंका सामना करना चाहिये। वह हमारी खाद्य सामग्रीको बढ़ानेका साधन बन जाय और लोगोंको बताये कि खाद्यकी कमीके खतरेका कैसे मुकाबला किया जा सकता है। अगर नअी तालीमके विद्यार्थी अपनी खाद्य-सम्बन्धी जरूरतोंका अेक हिस्सा भी खुद पैदा करने लगें, तो अुस हद तक वे दूसरोंके लिअे खाद्य सुलभ कर देंगे और अपनी खुदकी मिसालसे वे दूसरोंको अपने पांवों पर खड़े होनेका जो सबक सिखायेंगे सो अलग।" किसीने अेतराज अुठाया कि सेवाग्राममें तालीमी संघके पास जो जमीन है वह हलके दर्जेकी है और मुश्किलसे ही खेतीके लायक बन सकती है। गांधीजीने अिस अेतराजको रद्द कर दिया: "आपको मालूम

नहीं कि दक्षिण अफ्रीकामें हमको किस किस्मकी जमीनसे पाला पड़ा था। हम वहां 'कुली' कहे जाते थे और कुलियोंको अच्छी जमीन कौन देता? मगर अपनी मेहनतके बल पर हमने अुसी जमीनको फलोंके बगीचेमें बदल दिया था।

"अगर मैं आपकी जगह होअूं, तो मैं शुरूमें हलसे काम न लूं। मैं बच्चोंके हाथोंमें कुदाली पकड़ा दूंगा और अुससे अच्छी तरह काम लेना सिखाअूंगा। यह भी अेक कला है। बैलोंकी ताकतसे बादमें काम लिया जा सकता है। अिसी तरह मैं यह पसन्द नहीं करूंगा कि खराब या हलकी किस्मकी जमीनके कारण आप नाअुम्मीद हो जायं। चिकनी मिट्टी या खादकी हलकी परत डालकर हम कअी तरहकी अुपयोगी साग-सब्जी और गमलोंमें पैदा होनेवाली पत्तियां अुगा सकते हैं। थोड़े गहरे गड्ढोंमें पाखाना डालकर हम अुसका खाद बनानेका काम फौरन शुरू कर सकते हैं। अिस खादके तैयार होनेमें अेक पखवाड़ेसे ज्यादा समय नहीं लगता। नहाने-धोने या रसोअीघरके पानीकी हर बूंदको पिछवाड़ेकी तरकारियोंकी क्यारियोंमें पहुंचाया जा सकता है। पानीकी अेक बूंद भी व्यर्थ नहीं जाने दी जानी चाहिये। हरी पत्तियां मिट्टीके गमलोंमें और बेकाम पुराने टीनके डिब्बोंमें अुगाअी जा सकती हैं। छोटे-से-छोटे मौकेको भी हाथसे न जाने दिया जाना चाहिये। अगर यह सब देशव्यापी पैमाने पर हो सका, तो अुस हालतमें कुल मिलाकर अुसका नतीजा बहुत बड़ा होगा।"

पूना, २३–२–'४६
हरिजनसेवक, ३–३–१९४६

## ९

## अनाजकी कमी

अनाजकी कमीके बारेमें मुझे यह मानना पड़ता है कि अुसे दूर करनेके लिअे हमारे पास काफी साधन नहीं हैं। यह काम तो सरकार ही कर सकती है। मगर हमको भी हाथ पर हाथ धरकर भाग्यके भरोसे नहीं बैठे रहना चाहिये। मौतके आनेसे पहले ही मर जानेमें मर्दानगी नहीं। धरतीके नीचे पानीका जो अटट भण्डार भरा है, अुसको काममें लानेके लिअे सरकारके अिंजीनियरोंको जरूरी अुपाय करने चाहिये। अिसके लिअे २,००० फुटकी

खुदाओ भी करनी पड़े तो की जानी चाहिये। सभी साधनों और तरकीबोंको जब तक हम आजमा न लें, तब तक हमको निराश होने या भाग्यको दोष देनेका हक नहीं हो सकता।

मैं देखता हूं कि बम्बओ जैसे बड़े शहरोंमें आज दावतों और दूसरे जलसोंमें बेहिसाब अन्न बरबाद होता है। आज जैसे संकटके समय तो अन्नके अेक-अेक दाने और घी या तेलकी अेक-अेक बूंदको बचा लेनेका हरअेकका धर्म हो जाता है। जब लाखोंकी तादादमें लोग भूखे मरनेवाले हों, तब शरीरको कायम रखनेके लिअे जितना जरूरी हो अुससे ज्यादा मौज-शौकके लिअे कुछ भी खाना पाप ही समझा जायगा। अगर यह बचा हुआ अन्न गरीबोंको, अुन्हें भिखारी बनानेके लिअे नहीं, बल्कि अुनकी मेहनतके बदलेमें दिया जाय, तो अुन्हें अच्छी मदद मिल सकती है।

पूना, २३–२–'४६
हरिजनसेवक, ३–३–१९४६

## १०

## अेक अुपयोगी पर्चा

अेक मित्रने बम्बओ प्रान्तके खेती-विभाग द्वारा प्रकाशित अेक पर्चा भेजा है। अुसमें बंगलों वगैराके अहातोंमें छोटे पैमाने पर साग-भाजी पैदा करनेके लिअे कुछ सूचनायें हैं। यह पर्चा लड़ाओके दिनों, सन् १९४२, में 'ज्यादा अनाज पैदा करो' आन्दोलनके सिलसिलेमें प्रकाशित हुआ था। अुस वक्त जो कुछ जरूरी था, वह अन्नकी मौजूदा बढ़ती हुओ कमीको देखते हुअे आज अुससे भी कहीं ज्यादा जरूरी है। यह दुःखकी बात है कि यह पर्चा अंग्रेजीमें छपा है। मगर हो सकता है कि सिर्फ अंग्रेजीका ही पर्चा मेरे पास भेजा गया हो और प्रान्तीय भाषाओंमें अिसका अनुवाद हुआ हो। सो जो भी हो, यह पर्चा बड़ा मार्गदर्शक और अुपयोगी है। जो पाठक अिसमें रस लेते हैं, जैसा कि हर किसीको लेना चाहिये, अुन्हें मैं यह सुझाअूंगा कि वे अिस पर्चेको मंगायें और अगर अुन्हें अिस कामके लिअे जमीन मिल सकती हो, तो अिसमें दिये हुअे सुझावोंसे फायदा अुठानेके

खयालसे वे अिसे पढ़ें। मैंने बिना किसी खास सिलसिलेके अिस पर्चेमें से नीचे लिखे सुझाव चुन लिये हैं:

(१) अिस कामके लिअे चुनी हुअी जमीन मकानों या पेड़ोंकी छायासे ढंकी न रहती हो; पानीका बहाव भी बहुत अच्छा हो।

(२) जिन क्यारियोंमें फूल खूब अच्छी तरहसे अुगाये गये हों, वे आम तौर पर अिस कामके लिअे अच्छी होती हैं; लॉनके यानी हरी दूबवाले मैदानके भी कुछ भाग खोदकर भाजी अुगानेके काममें लाये जा सकते हैं।

(३) स्नानघर या रसोअीघरका गन्दा पानी अिस काममें लिया जा सकता है।

(४) गोबर अित्यादिके द्वारा बने हुअे देशी खादके अुपयोगकी आवश्यकता पर अिसमें बहुत जोर दिया गया है।

(५) अखीरमें अेक नकशा दिया है, जिससे यह पता चल सकता है कि किस किस्मका कितना बीज जरूरी है; कितनी गहराअी पर अुसे बोना चाहिये; क्यारियोंकी लम्बाअी-चौड़ाअी कितनी हो; कतारोंके बीचमें कितना फासला रहे, वगैरा।

पूना, १–३–'४६
हरिजनसेवक, १०–३–१९४६

## ११

## कामके सुझाव

अेक सज्जन लिखते हैं:

"आप अिस वक्त पूनामें हैं। अखबारोंसे पता चला है कि आप आगाखान साहबके दोस्त हैं। अुनके पास पानी है, पैसे हैं, जमीन है। अिसी तरह गवर्नर साहबका गणेशखिंडका मैदान भी बहुत बड़ा है। क्या अिन दोनों जगहोंमें अनाज नहीं पैदा हो सकता? क्या अुसे पैदा करनेकी प्रेरणा आप अुनको नहीं दे सकते?

"आपको अुपवासमें विश्वास है। आपने यह भी लिखा है कि अुपवास सिर्फ धर्मलाभके लिअे नहीं, बल्कि आरोग्यके लिअे भी किया

जा सकता है। क्या जिनको हमेशा खाना-पीना मिलता है, अुनको आप हफ्तेमें अेक दिन अथवा अेक या अधिक समयका खाना छोड़नेको नहीं कह सकते? और अिस तरहसे भी अनाज नहीं बचाया जा सकता? कहा जाता है कि अंकुर फूटने तक अनाजको पानीमें भिगोकर कच्चा खाया जाय, तो थोड़े अनाजसे काफी पुष्टि मिलती है। क्या यह ठीक है?"

मेरे खयालमें ये तीनों सूचनायें ठीक हैं और अुन पर आसानीसे अमल हो सकता है। जिनके पास जमीन और पानी है, पहली सूचना अुनके लिअे है; दूसरी जो खुशहाल हैं अुनके लिअे; तीसरी सबके लिअे है। अिसका निचोड़ यह है कि जो चीज कच्ची खाअी जा सकती है, अुसे कच्ची ही खानेकी कोशिश करनी चाहिये। अैसा ज्ञानपूर्वक करनेसे बहुत थोड़ेमें हम निर्वाह कर सकते हैं। अितना ही नहीं, बल्कि अुससे लाभ होता है। अगर सब लोग आहारके नियम समझ लें और अुनके अनुसार चलें, तो अिसमें सन्देह नहीं कि अनाजकी बहुत बचत हो सकती है।

पूना, १–३–'४६
हरिजनसेवक, १०–३–१९४६

## १२

## गांधीजीके अखबारी बयान

[अपना ता० २१–२–'४६ को वाअिसरॉयके निजी मंत्रीको लिखा नीचेका पत्र और अुसके जवाबमें आया वाअिसरॉयके निजी मंत्रीका ता० २६–२–'४६ का पत्र वाअिसरॉय महोदयकी अनुमतिसे गांधीजीने अखबारोंमें छपनेके लिअे भेजा था।]

"अन्न-संकटका सामना करनेके लिअे कुछ मित्रोंने मेरे पास नीचे लिखे कुछ सुझाव और भेजे हैं।

"हिन्दुस्तानकी फौजको रचनात्मक काम करनेका यह अनोखा मौका दिया जाना चाहिये। फौजवालोंको अेक जगहसे दूसरी जगह आसानीसे भेजा जा सकता है। अिसलिअे अुन्हें अुन तमाम जगहोंमें भेजा जाना चाहिये, जहां कुअें खुदवानेकी सख्त जरूरत हो।

"अतिरिक्त अन्नके सिलसिलेमें मछलियोंका अुपयोग सुझाया गया है। हिन्दुस्तानके समुद्री किनारों पर सब तरफ मछलियां बहुतायतसे पाअी जाती हैं। लड़ाअी खतम हो चुकी है। हमारे पास छोटे और मझोले कदके बेशुमार अैसे जहाज हैं, जो पिछले पांच सालोंसे हमारे किनारों पर निगरानी और चौकी-दारीके काममें लाये जाते थे। भारत सरकारका नौसेना-विभाग अिन जहाजोंके लिअे नअी भरतीका अिन्तजाम कर सकता है और अिसमें अुसे सरकारके मछली-विभागकी पूरी मदद मिल सकती है। अगर लड़ाअीके जमानेमें सब कुछ और हर कोअी चीज की जा सकती है, तो शान्तिके समयमें भी वैसा ही अुद्योग क्यों न किया जाय? आज भी मामूली तौर पर आम लोग बहुत बड़ी तादादमें सूखी मछलियां खाते हैं — अलबत्ता तभी कि जब वे मिलती हैं या लोग अुन्हें खरीद पाते हैं।

"जितने भी सार्वजनिक बाग या बगीचे हैं, अुन सबमें फौरन ही कानूनन् साग-सब्जीकी खेती शुरू करवा देनी चाहिये। अिस कामके लिअे भी फौजियोंके दस्ते जहां-तहां भेजे जा सकते हैं। जिन लोगोंको अपनी जमीन या बगीचेमें खेती करवानेके लिअे ज्यादा मजदूरोंकी जरूरत हो, अुन्हें भी अिस जरियेसे मुफ्त मदद मिलनी चाहिये।

"अन्नका बंटवारा सहकारी-समितियोंके या अैसी ही दूसरी संस्थाओंके जरिये किया जाना चाहिये।

"विलायतमें या समुद्र-पारके दूसरे देशोंमें दोस्तों या रिश्तेदारोंको खाने-पीनेकी चीजोंके जो पार्सल भेजे जाते हैं, वे कतअी बन्द किये जाने चाहिये; साथ ही मूंगफली, तेल और खली वगैराकी निकासी भी बंद होनी चाहिये।

"फौजके अधिकारमें जितनी अन्न-सामग्री आज मौजूद है, सो सब तुरंत ही आम जनताके लिअे सुलभ कर दी जानी चाहिये और फौजियों व नागरिकोंके बीच कोअी भेदभाव न बरता जाना चाहिये। अिस सिलसिलेमें मैं वाअिसरॉय महोदयका ध्यान ता० ११ फरवरी, १९४६ की 'अमृत बाजार पत्रिका' में छपे अे० पी० के नीचे लिखे समाचारकी तरफ खींचता हूं:

'ढाका, फरवरी ८

'मालूम हुआ है कि सड़ा हुआ आटा बहुत बड़ी मात्रामें पिछले कुछ दिनोंसे नारायणगंजके पास शीतलाक्षा नदीमें डुबोकर नष्ट किया जा रहा है।'

"निराशाके खिलाफ और अधिक अन्न अुगानेके लिअे शुरू किया गया आन्दोलन तब तक बेकार ही होगा, जब तक घूसखोरीको, जो बहुत बड़े पैमाने पर काम कर रही है, बन्द नहीं किया जाता और अीमानदारी और व्यवहारकी सचाअी, क्या सरकारी हलकोंमें और क्या आम जनतामें, पूरी तरह स्थापित नहीं हो जाती।"

* * *

"१. अन्न-संकटका मुकाबला करनेके लिअे भेजे गये सुझावोंवाले ता० २१ फरवरीके आपके पत्रके लिअे धन्यवाद! वाअिसरॉय महोदयको मैंने आपका पत्र दिखाया है, और वे अुसके लिअे आपके आभारी हैं। वाअिसरॉय महोदय आपके अुन प्रस्तावोंकी जांच करवायेंगे, जिनकी अब तक जांच नहीं हो पाअी है।

"२. अभी अेक या दो दिन पहले ही वाअिसरॉय महोदयने कमाण्डर-अिन-चीफको यह सुझाया था कि भारत सरकारकी नौसेनाके लोग मछली पकड़नेके काममें मदद कर सकते हैं। हालकी घटनाओंके कारण अिसमें कुछ दिक्कतें पेश आ सकती हैं, मगर अिस बीच वाअिसरॉय महोदयने कनाडा और न्यूफाअुण्डलैण्डसे सूखी मछलियां मंगानेकी सम्भावनाके बारेमें पूछताछ शुरू करवा दी है और अिस कामके लिअे अुपयोगी जहाज और साधन-सामग्री प्राप्त करनेके बारेमें भी पुछवाया है, ताकि नये ढंग पर मछलियोंके अुद्योगको बढ़ानेका काम शुरू किया जा सके। फौजके लोग तो अिस वक्त भी 'ज्यादा अनाज पैदा करने' के काममें काफी मदद कर रहे हैं और कुअें खोदने व जमीनको समतल बनानेके लिअे जरूरी मशीनें वगैरा भी फौजकी तरफसे बांटी जा रही हैं।

"३. दिल्लीमें 'सेण्ट्रल विस्टा' नामक शाही मैदानका बहुत बड़ा हिस्सा जोता जायगा और बंगलोंके बगीचोंका अुपयोग बड़े पैमाने पर साग-तरकारी अुगानेके लिअे किया जायगा। दोस्तों या रिश्तेदारोंको हिन्दुस्तानसे बाहर भेजे जानेवाले खाद्य पदार्थोंके पार्सलोंको बन्द करनेका हुक्म जारी किया जा चुका है और मूंगफली, खली वगैरा चीजोंकी निकासीके सवालकी ताकीदके साथ जांच-पड़ताल शुरू की जा रही है।

"४. यह तो मानी हुअी बात है कि घूसखोरी और बेअीमानी समुचित खाद्य-व्यवस्थाके घोर शत्रु हैं। अिस बुराअीको मिटाना बहुत ही कठिन

काम है। कण्ट्रोलकी ब्योरेवार व्यवस्था तो खासकर प्रान्तीय सरकारोंके हाथमें है और संभव है कि नये मंत्रि-मण्डल अिस दिशामें कामयाबी हासिल कर सकें।"

पूना, ६–३–'४६
हरिजनसेवक, १७–३–१९४६

## १३

## जूठन छोड़ना

स० — खाना खाते समय थालीको बिलकुल ही पोंछकर अुठनेमें हलकापन माना जाता है और थोड़ी-बहुत जूठन छोड़ जानेमें बड़प्पन माना जाता है। अैसा क्यों है? भुखमरीके अिन दिनोंमें यह कैसे बरदाश्त किया जा सकता है?

ज० — अिसके कारणकी खोजके पचड़ेमें पड़ना मेरे खयालसे अेक बेमानी चीज है। अगर कोअी कारण हो भी, तो अुसका पता लगानेमें मैं अपना वक्त नहीं दे सकता। लेकिन अितना भोजन परोसवा लेना कि जूठन छोड़नी पड़े, मेरे विचारसे जंगलीपन और अविवेककी निशानी है। आजके कठिन समयमें तो मुझे अिसमें निर्दयता दीखती है, क्योंकि आजकल तो किसीको भरपेट खानेका भी अधिकार नहीं। मैं मानता हूं कि थालीको साफ करके अुठनेमें बहुत विवेक और सभ्यता है। अिससे जिन्हें बरतन साफ करने पड़ते हैं, अुनकी भी मेहनत और समय बचता है।

अगर कोअी किसीकी थालीमें जरूरतसे ज्यादा परोस दे, तो खाना शुरू करनेसे पहले ज्यादा परोसी चीजको अेक साफ बरतनमें रख देना चाहिये। मेरे विचारमें यह विवेक है। मेरी राय तो यह है कि मेजवान मेहमानको वही और अुतना ही दे, जितना और जो कुछ अुसे रुचे। बहुत सावधानीसे काम लेनेवाले तो अपने मेहमानकी जरूरतको पहलेसे ही जान लेते हैं और फिर अुसीके मुताबिक सब चीजें अुसे परोसते हैं।

पूना, ६–३–'४६
हरिजनसेवक, १७–३–१९४६

## १४

## सवाल-जवाब

स० — आप तो मछली खानेवालोंको मछली खिलानेकी बात लिखते हैं? क्या खानेवाला हिंसा नहीं करता? और खिलानेवाला अुसमें भागीदार नहीं बनता?

ज० — दोनोंमें हिंसा भरी है। भाजी खानेवाला भी हिंसा करता है। जगत हिंसामय है। देह धारण करनेका मतलब है, हिंसामें शरीक होना। अैसी ही हालतमें अहिंसा-धर्मका पालन करना है। वह किस तरह किया जाय, सो मैं कअी बार बता चुका हूं। मछली खानेवालेको जबरदस्ती मछली खानेसे रोकनेमें मछली खानेसे ज्यादा हिंसा है। मछली मारनेवाले, मछली खानेवाले और मछली खिलानेवाले जानते भी नहीं कि वे हिंसा करते हैं। और अगर जानते भी हैं, तो अुसे लाजिमी समझकर अुसमें भाग लेते हैं। लेकिन जबरदस्ती करनेवाला जान-बूझकर हिंसा करता है। बलात्कार अमानुषी कर्म है। जो लोग आपस-आपसमें लड़ते हैं, जो धन कमाते समय आगा-पीछा नहीं सोचते, जो दूसरोंसे बेगार लेते हैं, जो ढोरों या मवेशियों पर हदसे ज्यादा बोझ लादते हैं और अुन्हें लोहेकी या दूसरी किसी आरसे गोदते हैं, वे जानते हुअे भी अैसी हिंसा करते हैं जो आसानीसे रोकी जा सकती है। मछली या मांस खानेवालोंको ये चीजें खाने देनेमें जो हिंसा है, अुसे मैं हिंसा नहीं मानता। मैं अुसे अपना धर्म समझता हूं। अहिंसा परम धर्म है ही। हम अुसका पूरा-पूरा पालन न कर सकें, तो भी अुसके स्वरूपको समझकर हिंसासे जितना बच सकें बचें।

स० — आप लिखते हैं कि चावलको पॉलिश न करना चाहिये। लेकिन यह बुराअी तो बहुत गहरीं पैठ गअी है। पॉलिशवाले चावलोंको मल-मलकर धोया जाता है। पकाने पर मांडका सारा पानी, जिसमें सत्त्व होता है, बहा दिया जाता है; क्योंकि आंखोंको और जीभको खिले हुअे चावल खाना अच्छा लगता है। छात्रावासोंमें भी यही होता है। यह बुराअी कैसे मिटाअी जाय?

ज० — मैं अिस बुराअीसे अनजान नहीं। हम गरीब-से-गरीब मुल्कमें रहते हैं, फिर भी हम अपनी बुरी आदतों और नुकसान पहुंचानेवाले स्वादोंको छोड़नेके लिअे तैयार नहीं। हमें अपनी ही पड़ी है। दूसरे अपने होते हुअे भी पराये-से मालूम होते हैं। वे मरें या जीयें, हमें अुससे क्या? मरेंगे तो अपने पापसे; जीयेंगे तो अपने पुण्यसे! मरना-जीना हमारे हाथमें कहां है? हम खायें, पीयें और मौज करें, यही हमारा पुण्य है।

जहां धर्मका रूप अितना विकृत हो गया हो, वहां अुसका अेक ही अिलाज है। जिसे हम सच्चा धर्म मानते हैं अुसका पालन करें और आशा रखें कि जो सच है वह किसी न किसी दिन प्रगट होगा ही। तब तक जिसे हम सच्चा धर्म समझें, अुसका अैलान मौका पाकर करते रहें।

बम्बअी, ११–३–'४६
हरिजनसेवक, २४–३–१९४६

## १५

## बरबादी

खबरों पर खबरें चली आ रही हैं कि खाने-पीनेके सामानका जो जत्था था, वह आदमियोंके अिस्तेमालके लायक नहीं रहा और फेंका जा रहा है। बिना मक्खनवाले दूधकी गाहकी न होनेकी वजहसे वह फेंका जा रहा है और गाढ़ा किया हुआ दूध अज्ञानकी वजहसे निकम्मा पड़ा है। बन्दरगाहों पर अनाज जमा करनेसे मुसीबत कम नहीं होगी, जब तक जहां अुसकी फौरन जरूरत है वहां अुसे तुरन्त पहुंचाया न जाय। अिससे भी बुरी तो यह तिहेरी बरबादी है, जो बढ़ते हुअे अकालकी अिस हालतमें आज की जा रही है। यह सब बरबादी अिसीलिअे होती है कि हुकूमत और जनताके बीच कोअी सीधा — जीता-जागता — सम्बन्ध नहीं है।

अुरुळी, २४–३–'४६
हरिजनसेवक, ३१–३–१९४६

## १६

# अन्नकी भीख मांगना

अकालको रोकनेके लिअे फ्रेण्ड्स अेम्बुलन्स यूनिटने जो योजना तैयार की थी, अुसका गांधीजीने करीब-करीब समर्थन तो किया, लेकिन अुन्हें 'बाहरसे अन्नकी भीख मांगने' की बात बिलकुल पसन्द नहीं आअी। अुन्होंने कहा: "अगर बाहरसे अन्न आता है, तो अुसका स्वागत होगा। लेकिन हमें अुसके भरोसे नहीं बैठना चाहिये। जो हिन्दुस्तान समूचे पूर्वको अन्न देनेवाला है, आज अुसे ही अमेरिका और दूसरे मुल्कोंसे अनाजकी भीख मांगनी पड़ रही है। यह मुझे पसन्द नहीं। किसी भी तरह, अगर हम अपनी मदद पर भरोसा करते हैं, तो ताकत भी न मालूम कहांसे आ ही जाती है। यह ताकत शायद भगवान देता है और लोग महसूस करते हैं कि अुन्हें मरना नहीं चाहिये। फिर बन्दरगाहों पर अनाजके आ जानेसे भी तो समस्या हल नहीं होगी, जब तक कि अुसे अैसी जगह पहुंचाया न जाय जहां अुसकी सबसे ज्यादा मांग है। सच पूछा जाय तो असल समस्या अनाजको लोगोंमें बांटनेकी है। जब तक अिसे हल नहीं किया जाता, तब तक अिस बातका खतरा ही है कि अनाज बन्दरगाहोंमें सड़ता रहे और देशके भीतर अनाजकी कमीसे लोग मरते रहें। आज तो सरकारी कर्मचारियोंमें फैली हुअी सड़ांधको देखते हुअे अिस समस्याके हल होनेकी कोअी अुम्मीद नहीं। अेक सरकारी अफसरने अपने अेक नोटमें बताया है कि बन्दरगाहोंमें अनाजसे लदे जहाजोंके आने पर अुतारे हुअे अनाजको जरूरतकी जगहों तक पहुंचानेमें कम-से-कम दो माह लग जायंगे। अिस बीच लोग क्या करें? अिसीलिअे मैंने यह सुझाव पेश किया है कि जमीनके भीतरका पानी काममें लेकर लोग खुद जो कुछ पैदा कर सकें करें। अगर हिन्दुस्तानके करोड़ों लोग अिस पर अमल करें, तो वे बाहरसे अनाज पहुंचने तक तो अपनेको जिन्दा रख ही सकते हैं।"

अुरुळी, २३–३–'४६
हरिजनसेवक, ७–४–१९४६

## १७

# अेक मंत्रीकी परेशानी

डॉक्टर काटजूने यह पत्र भेजा है :

"हिन्दुस्तानके कअी हिस्सोंमें रबीकी फसल अिस साल और सालोंके मुकाबले कम आअी है और अिसलिअे आम तौर पर लोगोंको यह डर है कि अिस बार देशमें अन्नकी बहुत ज्यादा तंगी रहेगी। अन्नके मामलेमें अमीर और गरीब सबको अेकसी सहूलियतें देनेके खयालसे संयुक्त प्रान्तके बहुतसे शहरी हलकोंमें राशन देना शुरू किया गया है। राशनिंगकी वजहसे सरकार पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वह राशनिंगके हलकोंमें रहनेवाले लोगोंके लिअे अन्न मुहैया करे। प्रान्तमें अितनी ज्यादा तंगीका अंदेशा है कि यहां राशनकी मात्राको घटाकर कम-से-कम कर दिया गया है, यानी फी आदमी रोजका छह छटांक अनाज दिया जाता है। अिसमें दो छटांक गेहूं, दो छटांक चावल और दो छटांक मिलावटी आटा होता है। लोग आम तौर पर मिलावटी आटेको पसन्द नहीं करते और राशनमें अिससे ज्यादा कमी करना लगभग असंभव है। जाहिर है कि शहरी हलकोंको अन्न मुहैया करनेके लिअे देहातसे अुसकी आमद लगातार जारी रहनी चाहिये। हिन्दुस्तानकी सरकारने प्रान्तोंकी सरकारोंको यह सुझाया है कि अन्नकी लगातार आमदका पक्का अिन्तजाम करनेके लिअे ज्यादा अन्न पैदा करनेवाले जिलोंमें यानी अुन जिलोंमें जहां खेतीकी पैदावार देहाती हलकोंकी जरूरतोंसे ज्यादा होनेकी आशा की जाती है, खेतीकी फसल पर लाजिमी तौरसे लाग बैठाना अिष्ट होगा। लाजिमी तौर पर अनाज वसूल करनेका यह सवाल लोगोंको बहुत ही परेशान किये हुअे है। कहा जाता है कि सरकारने कण्ट्रोलकी जो कीमतें तय की हैं, वे बहुत कम हैं और बढ़ाअी जानी चाहिये। अिसका जवाब यह है कि कीमतोंका ढांचा तो समूचे हिदुस्तानके लिअे बनाया जाता है और अुस पर असर डाले बिना किसी अेक प्रान्तमें कीमतें बढ़ाअी नहीं जा सकतीं। अिसके अलावा, संयुक्त प्रांतमें कण्ट्रोलके दाम बंगाली

मनके सवा दस रुपये रखे गये हैं, जो कि असलमें कम नहीं हैं। यह काफी अच्छी रकम है और अिसमें खेतीके और जिन्दगीकी आम जरूरतोंके बढ़े हुअे खर्चका मुनासिब खयाल रखा गया है। लड़ाअीसे पहलेके दिनोमें गेहूं रुपयेके १३ सेर बिका करते थे; आज कण्ट्रोलकी दर फी रुपया ४ सेरकी है। चूंकि आम तौर पर लोगोंको यह डर है कि बाजारमें अनाज मांगके मुकाबले बहुत कम आयेगा, अिसलिअे जहां स्वार्थी लोग अपनी निजी जरूरतोंको पूरा करनेके लिअे अूंचे दामों खाद्यपदार्थ खरीद सकते हैं, वहां काले बाजार खड़े हुअे बिना न रहेंगे। अगर किसान यह महसूस कर लें कि शहरोंमें रहनेवाले अपने भाअी-बहनों और देहातोंमें जिनकी अपनी कोअी खेती-बारी नहीं है, अुन लोगोंको अन्न पहुंचानेकी ज्यादा-से-ज्यादा कोशिश करना अुनका अपना सामाजिक और राष्ट्रीय धर्म है, तो किसी पर कोअी जबरदस्ती न करनी पड़े। किसान सच-मुच हमारे 'अन्नदाता' हैं। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि आप अुनसे यह अपील करें कि वे अिस नाजुक मौके पर न तो खुद अनाज अिकट्ठा करके रखें और न किसी चोर बाजारमें अुसे बेचें; बल्कि जितना दे सकें सरकारी गोदामोंके लिअे दें, ताकि अमीर-गरीब सबको अुचित रूपसे और बराबरीसे अन्न बांटा जा सके और भुखमरी और मोहताजीको टाला जा सके। आपकी आवाज दूर-दूर तक पहुंचती है, अिसलिअे मैं आपसे अपील करता हूं कि आप अिस कामको हाथमें लें। शहरोंके लिअे अनाजका काफी अिन्तजाम करनेके लिअे कअी योजनाअें सोची गअी हैं। लेकिन कोअी भी स्कीम या योजना क्यों न हो, सार सबका यही है कि हर हालतमें किसानसे कहना होगा कि वह अपना अनाज दे। अगर शहरों और गांवोंमें लोगोंके लिअे अन्न मुहैया न किया गया, तो हर तरहके दंगे और फसाद हुअे बिना न रहेंगे। संयुक्त प्रान्तमें हम 'अधिक अन्न अुगाने' और 'अधिक साग-सब्जी अुगाने' के आन्दोलनोंको बढ़ावा देनेकी पूरी-पूरी कोशिश कर रहे हैं। आपके दिये हुअे तमाम सुझावों पर अमल किया जा रहा है। सरकारी मकानोंके आसपासकी तमाम सरकारी जमीनोंको जोतनेके लिअे हिदायतें जारी की गअी हैं। अैसा अिन्तजाम किया गया है कि जिससे निजी मकानोंके मालिक खेती-बारीके विशेषज्ञोंकी

सलाहसे फायदा अुठा सकें। अुन्हें बोनेके लिअे बीज और सिंचाअीके लिअे नहरोंका पानी भी मुफ्त दिया जा रहा है। कुअें खोदनेके काममें भी मदद दी जा रही है। अिन सब बातोंके कहने और करनेके बावजूद जब तक जनता साथ नहीं देती, कुछ किया नहीं जा सकता; और जनताके सहयोगका मतलब है कि 'अन्नदाता' किसान जितना अुनसे बन पड़े अुतना अनाज अिस कामके लिअे दें।"

डॉक्टर काटजूके अिस पत्र पर किसानों और अुनके सलाहकारोंको तथा शहरवालोंको गहराअीसे विचार करना चाहिये। सिर पर मंडरानेवाले संकटका सदुपयोग किया जा सकता है। अुस हालतमें वह संकट न होकर अेक आशीर्वाद ही होगा। वर्ना वह शाप है, और शाप ही रहेगा।

डॉक्टर काटजूने अेक जिम्मेदार मंत्रीके नाते अूपरका पत्र लिखा है। अिसलिअे लोग अुन्हें बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। वे अुन्हें हटाकर अुनसे ज्यादा योग्य आदमीको अुनकी जगह रख सकते हैं। लेकिन जब तक लोगोंके चुने हुअे मंत्री अुनके सेवकके नाते काम करते हैं, लोगोंको चाहिये कि वे अुनकी हिदायतों पर अमल करें। हर कानून या हिदायतका विरोध सत्याग्रह नहीं होता। हां, वह सत्याग्रहके बनिस्बत दुराग्रह आसानीसे बन सकता है।

नअी दिल्ली, १४-४-'४६
हरिजनसेवक, २१-४-१९४६

## १८

## खांड़ और मिठाअी

स० — बम्बअीमें अभी-अभी खांड़के राशनमें २५ फी सदी कमी हुअी है। तो क्या यह जरूरी नहीं है कि आम लोगोंके राशनमें कटौती करनेके बजाय मिठाअीकी दुकानोंके राशनमें कटौती की जाय?

ज० — आम लोगोंके राशनमें कमी करनेसे पहले हलवाअियोंके हिस्सेमें कमी करना हमेशा सराहनीय है। अैसे कठिन समयमें अगर मिठाअी बिलकुल बन्द हो जाय, तो मैं अुसे कोअी खराबी न समझूंगा। युक्ताहारके लिअे मिठाअी खानेकी बिलकुल जरूरत नहीं।

## सफेद रोटी और चोकर

स० — पिछली जनवरी तक डबलरोटीमें १० फी सदी चोकर डालना लाजिमी था। अुसके बाद वह बन्द कर दिया गया। अुसे दुबारा क्यों न शुरू कर देना चाहिये?

ज० — मैं जानता हूं कि सफेद रोटी और चोकरका बहुत दिनोंसे बैर चला आता है। लोग सफेद रंगकी तरफ खिचते हैं। मेरा खयाल है कि हब्शियोंमें अैसा नहीं है। चाहे कुछ भी हो, लेकिन रोटीको सफेद रखनेके लिअे खास तौरसे मेहनत की जाती है। सौभाग्यसे शहरवाले ही अैसे नखरे कर सकते हैं। मैदेके सफेद दीखनेवाले दो-चार फुलके खानेके बदले पूरे गेहूंके आटेकी अेक छोटी रोटी खानेमें ज्यादा मजा आता है और, जैसा कि डॉक्टर लोग कहते हैं, वह अधिक पुष्टिकर होती है। आज तो यह हमारा धर्म भी है, क्योंकि अिससे आटा बचता है। और जितना अनाज बचे, वह मिलेके बराबर है। अेक तरहसे देखें तो वह मिले हुअे अनाजसे भी ज्यादा कीमती है। बन्दरगाहोंमें पड़ी हुअी गेहूंकी बोरियोंके मुकाबले गांवमें पड़ा हुआ गेहूं आज बहुत ज्यादा कामका है। अिसलिअे आटेमें चोकर मिलाना लाजिमी कर दिया जाय तो वह ठीक ही होगा। लड़ाअी चाहे बन्द हो गअी हो, लेकिन आर्थिक दृष्टिसे तो लड़ाअीसे भी ज्यादा खराब हालत आज हो रही है और होती चली जाती है। वह कब सुधरेगी, सो अीश्वर ही जानता है।

नअी दिल्ली, २२–४–'४६
हरिजनसेवक, २८–४–१९४६

## १९

# शोचनीय

'ग्रामोद्योग पत्रिका' में लिखते हुअे श्री जे० सी० कुमारप्पा कहते हैं कि बाहरसे आनेवाले माल पर भरोसा करना या अुसे प्रोत्साहन देना सिद्धान्तके नाते बिलकुल गलत है। यू० पी० और बिहारमें जाड़ोंमें बारिश न होने और पंजाब तथा सरहदी सूबेमें पालेकी वजहसे शक्करकी पैदावारमें कमी हो जानेकी जो अुम्मीद है, अुसे पूरा करनेके लिअे अुनकी राय है कि जंगलोंमें खड़े हुअे ताड़के पेड़ोंसे नीरा निकालकर अुससे गुड़ और शक्कर बनाये जायं।

जहां तक मिट्टीके तेल जैसी खास जरूरतोंका सवाल है, वे कहते हैं कि वनस्पति तेल ज्यादा निकालकर अुन्हें पूरा करें। जो चीजें हम बाहरसे मंगाते हैं, अुनके बदलेमें हमें अपनी पैदावारमें से कुछ चीजें बाहर भेजनी होंगी, जो आगे चलकर और ज्यादा परेशानी पैदा कर देंगी।

'अिम्पीरियल कौंसिल ऑफ अेग्रीकल्चरल रिसर्च' के अुपप्रधान सर हर्बर्ट स्टुअर्टके द्वारा बिहारमें चलाअी गअी वरजीनिया सिगरेटकी तम्बाकूमें तरक्की करनेकी कपटपूर्ण योजनाकी तरफ भी अुन्होंने ध्यान खींचा है। अिस योजनाके मातहत अलग-अलग जगहोंमें तम्बाकूमें रिसर्च करनेके लिअे बहुतसे रिसर्च-स्टेशन खुलनेवाले हैं। 'अिम्पीरियल टोबैको कम्पनी' ने तम्बाकूकी खेतीकी ट्रेनिंग लेनेके लिअे बाहर जानेवालोंको हर साल ५०० पौण्डकी दो छात्रवृत्तियां दी हैं। अैसे कठिन समयमें सरकारका खास फर्ज तो यह होना चाहिये था कि वह 'टोबैको रिसर्च' पर अितना रुपया और समय बरबाद न करके अिन दोनोंका अुपयोग खानेकी चीजें पैदा करनेके लिअे पड़ती जमीन सुधारनेमें करती। लेकिन अिम्पीरियल कौंसिल तो 'अिण्डिया लिमिटेड' का ढोंग करनेवाले विदेशी व्यापारको मदद देनेके लिअे या तो तम्बाकूके, लम्बे रेशोंवाली कपासके और मोटे छिलकेवाले गन्नेके बारेमें सोच सकती है या मूंगफली वगैरा चीजोंके बारेमें; क्योंकि पहली चीजें मिलोंके लिअे चाहिये और दूसरी बाहर भेजनेको।

नअी दिल्ली, २१–४–'४६
हरिजनसेवक, २८–४–१९४६

## २०

# गांधीजीका अखबारी बयान

मि० हूवर कुछ दिनोंके लिअे हिन्दुस्तान आये थे। अुनकी अिस मुलाकातने लोगोंमें काफी दिलचस्पी पैदा की है और शायद आशा भी। भुखमरीसे झगड़नेमें लगे हुअे हिन्दुस्तानको अमेरिकासे और दूसरे देशोंसे जो भी मदद मिल सकेगी अुसका यहां स्वागत ही किया जायगा। फिर भी मेरी कोशिश अैसे अुपायों और साधनोंको ढूंढ़ निकालनेकी रही है, जो हमको अिस मामलेमें अपने पैरों पर खड़ा कर सकें। अगर लोगोंने घबराहटको अपने पर हावी होने दिया तो भुखमरी निश्चित ही है, भले ही हिन्दुस्तानके बन्दरगाहों पर अेकके बाद अेक जहाज आते रहें और बाहरसे लाया हुआ अनाज बन्दरगाहों पर खाली होता रहे। अिसके खिलाफ, अपने बल-भरोसे, अीमानदारी और बहादुरीके साथ, आनेवाली कठिनाअियोंका सामना करनेवाले हिन्दुस्तानको फर्ज समझकर बाहरसे भेजे जानेवाले अनाजका अेक-अेक दाना हर तरह मुफीद साबित होगा। मि० हूवरकी यह मुलाकात सरकारी नौकरोंके लिअे, पैसेदारोंके लिअे और अनाजके व्यापारियोंके लिअे अेक अैसी चेतावनी बन जानी चाहिये, जिससे वे देशके करोड़ों लोगोंके प्रति अपने फर्जका बराबर खयाल रख सकें। जो अपनी मदद खुद करते हैं, कुदरत हमेशा अुनका साथ देती है।

नअी दिल्ली, २६–४–'४६

हरिजनसेवक, ५–५–१९४६

## २१

# आमकी गुठलीकी गरी

मुझे अेक दोस्तने 'करण्ट सायन्स' नामक पत्रिकाकी अेक कतरन भेजी है, जिसमें यह बताया गया है कि आमकी गुठलीकी गरी अनाज और चारेकी जगह खासा अच्छा काम दे सकती है।

"हालके अन्दाजके मुताबिक हिन्दुस्तानमें खली, गवार, कपास वगैराकी ठोस खुराक गायों, बैलों, बछड़ों वगैराकी कुल आबादीके २९.१% के लिअे ही काफी होती है और घास-चारा सिर्फ ७८.५%

के लिअे ही पूरा होता है। अिसमें भेड़ों, बकरियों, घोड़ों, खच्चरों, गधों वगैराकी गिनती शामिल नहीं है। अकालके समय यह कमी और भी बढ़ जाती है। अिज्जतनगरकी 'न्युट्रीशनल रिसर्च लेबोरेटरी' अिस कमीको पूरा करनेके लिअे दाने-चारेकी नअी-नअी चीजोंकी खोज कर रही है। वहां आमकी गुठलीकी गरीको आदमियों और जानवरोंको खिलानेके बारेमें भी खोज हुअी है। आज तो ये गुठलियां कूड़ा समझकर फेंक दी जाती हैं। लेकिन रासायनिक खोजसे यह मालूम हुआ है कि अिसमें कार्बोहाअिड्रेट यानी चीनी और चरबी काफी मात्रामें पाअी जाती है (क्रूड प्रोटीन ८.५%, अीथर अेक्स्ट्रेक्ट ८.८५% और घुल जानेवाले कार्बोहाअिड्रेट ७४.४९%)।"

* * *

"अिस छानबीनसे आमकी गुठलीकी गरी अेक अनाजकी गिनतीमें आ गयी है। अिससे पता चला है कि जो गुठलियां आज रद्दी समझकर फेंक दी जाती हैं, अुनसे ७ करोड़ पौण्ड पचाया जा सकनेवाला प्रोटीन और लगभग ७८ करोड़ पौण्ड स्टार्च (निशास्ता) मिल सकता है। यह भी अन्दाजा लगाया गया है कि यह पचाया जा सकनेवाला प्रोटीन ८० पौण्ड जौमें से जितना निकलता है अुतना ही १०० पौण्ड आमकी गुठलीकी गरीमें से भी निकलता है और ८६ पौण्ड जौके बराबर स्टार्च (निशास्ता) भी निकलता है।"

मुझे अिस गरीके अुपयोगका बचपनसे ही पता था। मगर आज तक शायद ही किसीने खुराकके रूपमें अिसका अुपयोग करनेके लिअे अिसे संभालकर रखनेकी बात सोची हो। आजकल आमका मौसम है। हालांकि काफी दिन बेकार चले गये हैं, फिर भी क्या ही अच्छा हो अगर हरअेक गुठलीको बचाकर रखा जाय और अुसे अनाजकी जगह सेंक कर खाया जाय, या जिन्हें अुसकी जरूरत हो अुन्हें दे दिया जाय? आज तो अनाजका जो भी दाना बचाया जा सके, वह मिला हुआ ही गिना जायगा।

नअी दिल्ली, २१-५-'४६
हरिजनसेवक, २६-५-१९४६

## २२

# हरी पत्तियां

आप खुराक या विटामिनोंके बारेमें लिखी हुअी किसी भी आधुनिक पुस्तकको अुठाकर देखिये, तो आपको पता चलेगा कि अुसमें हर भोजनके साथ थोड़ी मात्रामें बिना पकाअी हुअी हरी पत्तियां या भाजियां खानेकी जोरदार सिफारिश की गयी है। बेशक, अुन पर जमी हुअी धूलको पूरी तरह साफ करनेके लिअे अुन्हें हमेशा ५-६ बार पानीसे अच्छी तरह धोना चाहिये। सिर्फ तोड़नेकी थोड़ीसी तकलीफ अुठानेसे ही ये पत्तियां हर गांवमें मिल सकती हैं। फिर भी अुन्हें सिर्फ शहरोंकी ही खानेकी चीज समझा जाता है। हिन्दुस्तानके बहुतसे हिस्सोंमें गांववाले दाल और चावल या रोटी और बहुतसी मिर्च पर गुजर करते हैं, जो शरीरको नुकसान करती है। चूंकि गांवोंका आर्थिक पुनर्गठन खुराकके सुधारसे शुरू किया गया है, अिसलिअे सादीसे सादी और सस्तीसे सस्ती खुराकका पता लगाना चाहिये, जो गांववालोंको अुनकी खोअी हुअी तन्दुरुस्ती फिरसे पानेमें मदद कर सके। गांववालोंके हर भोजनमें अगर हरी पत्तियां जुड़ जायं, तो वे अैसी बहुतसी बीमारियोंसे बच सकेंगे, जिनके वे आज शिकार बने हुअे हैं। गांववालोंके भोजनमें विटामिनोंकी कमी है; अुनमें से बहुतसे विटामिन हरी पत्तियोंसे मिल सकते हैं। अेक प्रसिद्ध अंग्रेज डॉक्टरने मुझे दिल्लीमें कहा था कि हरी पत्ता-भाजियोंका ठीक-ठीक अुपयोग खुराक-सम्बन्धी रूढ़ विचारोंमें क्रान्ति पैदा कर देगा और आज दूधसे जो कुछ पोषण मिलता है, अुसका बहुतसा हिस्सा हरी पत्ता-भाजियोंसे मिल सकेगा। बेशक, अिसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तानके जंगली घास-चारेमें छिपी हुअी जो बेशुमार हरी पत्तियां मिलती हैं, अुनके पोषक तत्त्वोंकी तफसीलवार जांच की जाय और अुनके बारेमें कड़ी मेहनतसे शोध की जाय।

मैंने सरसों, सूआ, शलजम, गाजर, मूली और मटरकी हरी पत्तियां खाअी थीं। अिसके अलावा यह कहना शायद ही जरूरी हो कि मूली, शलजम और गाजर कच्ची हालतमें भी खाये जा सकते हैं। गाजर, मूली और शल-

जमको या अुनकी पत्तियोंको पकाना पैसे और 'अच्छे' जायकेको बरबाद करना है। अिन भाजियोंमें जो विटामिन होते हैं, वे पकानेसे पूरे या थोड़े नष्ट हो जाते हैं। मैंने अिनके पकानेको 'अच्छे' जायकेकी बरबादी कहा है, क्योंकि बिना पकायी हुअी हरी भाजियोंमें अेक खास कुदरती अच्छा जायका होता है, जो पकानेसे खतम हो जाता है।

हरिजन १५-२-१९३५

## २३

## सोयाबीन

गरीब मनुष्योंकी दृष्टिसे जो लोग आहार-सुधारमें रस लेते हैं, अुन्हें अिस प्रयोगकी परीक्षा करनी चाहिये। यह याद रखना चाहिये कि सोयाबीन अेक अत्यन्त पौष्टिक आहार है। जितने खाद्य पदार्थोंका हमें पता है, अुनमें सोयाबीन सर्वोत्कृष्ट है; क्योंकि अुसमें कार्बोहाअिड्रेटकी मात्रा कम और क्षारों, प्रोटीन तथा चर्बीकी मात्रा अधिक होती है। अुसकी शक्तिका परिमाण प्रतिपौण्ड २,१०० केलोरी* होता है, जब कि गेहूंका १,७५० और चनेका १,५३० होता है। सोयाबीनमें ४० प्रतिशत प्रोटीन और २०.३ प्रतिशत चर्बी होती है, जब कि चनेमें १९ प्रतिशत प्रोटीन और ४.३ प्रतिशत चर्बी तथा अंडेमें १४.८ प्रतिशत प्रोटीन और १०.३ प्रतिशत चर्बी होती है। अतः सोयाबीनको प्रोटीन तथा चर्बीदार सामान्य भोजनके अलावा नहीं खाना चाहिये। गेहूं और घीकी मात्रा भी कम कर देनी चाहिये और दालको तो अेकदम निकाल देना चाहिये, क्योंकि सोयाबीन खुद ही अेक अत्यन्त पौष्टिक दाल है।

हरिजनसेवक, १२-१०-१९३५

---

* यह तापकी अिकाअी है और भिन्न-भिन्न खाद्य पदार्थोंमें भिन्न-भिन्न परिमाणमें पाअी जाती है। सोयाबीनके १ पौण्डसे २,१०० केलोरी मिल सकती हैं, अिसका अर्थ यह हुआ कि वह शरीरमें अुतने तापका अुत्पादन कर सकती है।

## २४

# सोयाबीनकी खेती

लोग पूछताछ कर रहे हैं कि सोयाबीन कहां मिलती है, कैसे बोअी जाती है और किस-किस रीतिसे पकाअी जाती है। मैं बड़ोदा राज्यके फूड सर्वे ऑफिससे प्रकाशित अेक गुजराती पत्रिकाके मुख्य-मुख्य अंशोंका स्वतंत्र अनुवाद नीचे देता हूं। अुसका मूल्य अेक पैसा है।

"सोयाबीनका पौधा अेक फुटसे लेकर सवा फुट तक अूंचा होता है। हरअेक फलीमें औसतन् तीन दाने होते हैं। अिसकी बहुतसी किस्में हैं। सोयाबीन सफेद, पीली, कुछ काली-सी और रंग-बिरंगी आदि अनेक तरहकी होती है। पीलीमें प्रोटीन और चर्बीकी मात्रा सबसे अधिक होती है। अिस किस्मकी सोयाबीन मांस और अंडेसे अधिक पोषक होती है। चीनी लोग सोयाबीनको चावलके साथ खाते हैं। साधारण आटेके साथ अिसका आटा मिलाकर चपातियां भी बना सकते हैं। मिश्रण अिस तरह किया जाय कि अेक हिस्सा सोयाबीनका आटा हो और पांच हिस्से गेहूंका।

"सोयाबीनकी खेतीसे जमीन अच्छी अुपजाअू हो जाती है। कारण यह है कि दूसरे पौधोंकी तरह जमीनसे नाअिट्रोजन लेनेके बजाय सोयाबीनका पौधा अुसे हवासे लेता है और अिस तरह जमीनको जरखेज बनाता है।

"सोयाबीन दरअसल सभी किस्मकी जमीनोंमें पैदा होती है। सबसे ज्यादा वह अुस जमीनमें पनपती है, जो कपास या अनाजकी फसलोंके लिअे मुआफिक पड़ती है। नोनिया जमीनमें अगर सोयाबीन बोअी जाय तो वह जमीन सुधर जाती है। अैसी जमीनमें खाद अधिक देना चाहिये। बिजबिजाया हुआ गोबर, घास, पत्तियां और गोबरके घूरेका खाद सोयाबीनकी खेतीके लिअे बहुत ही मुफीद है।

"सोयाबीनके लिअे अैसी जगह अनुकूल पड़ती है, जो न बहुत गर्म हो न बहुत सर्द। जहां ४० अिंचसे अधिक वर्षा नहीं होती, वहां अिसका पौधा खूब पनपता है। अुसे अैसी जमीनमें नहीं बोना चाहिये, जो पानीसे तर रहती हो। यों आम तौर पर सोयाबीनको पहली बारिश पड़नेके बाद बोते हैं, पर वह किसी भी मौसममें बोअी जा

सकती है। अगर जमीन जल्दी-जल्दी खुश्क हो जाती हो, तो खुश्क मौसममें हफ्तेमें अेक या दो बार अुसे पानीकी जरूरत पड़ती है।

"जमीन सबसे अच्छी तो गर्मियोंमें तैयार होती है। अुसे खूब अच्छी तरह जोत डाला जाय और अुस पर तेज धूप पड़ने दी जाय। फिर ढेलोंको तोड़-तोड़कर मिट्टीको खूब महीन कर दिया जाय।

"दो-दो तीन-तीन फुटके फासलेकी पंक्तियोंमें अिसका बीज बोना चाहिये। पौधे कतारोंमें तीन-तीन, चार-चार अिंचकी दूरी पर होने चाहिये। अिसकी निराअी बार-बार होनी चाहिये।

"अेक अेकड़ जमीनमें दस सेरसे लेकर पन्द्रह सेर तक बीज लगता है। बीज दो अिंचसे ज्यादा गहरा नहीं बोना चाहिये। अेक अेकड़के लिअे दस गाड़ी खादकी जरूरत पड़ेगी।

"अंकुर निकल आनेके बाद हलके हलसे अिसकी ठीक तरहसे निराअी होनी चाहिये। जमीनकी सारी अूपरी परत तोड़ देनी चाहिये।

"बोनेके चार महीनेके बाद अिसकी फलियां तोड़ने लायक हो जाती हैं। पत्तियां ज्यों ही पीली-पीली पड़ने और झड़ने लगें, त्यों ही फलियोंको तोड़ लेना चाहिये। छीमियोंके मुंह खुल जाने और अुनमें से दाने झड़-झड़कर मिट्टीमें मिल-मिला जाने तक छीमियां पौधोंमें नहीं लगी रहने देनी चाहिये।"

हरिजनसेवक, ९–११–१९३५

## २५

## मूंगफलीकी खली

अध्यापक सहस्रबुद्धेने मूंगफलीकी खली पर अपनी जो प्रशंसापूर्ण संमति प्रकट की है, अुसे अेक मित्रने मेरे पास भेजा है। मूंगफलीकी खलीको अवश्य आजमाना चाहिये।

आहारमें सोयाबीनका अुपयोग करनेके लिअे काफी अुपदेश दिया जा रहा है; पर मूंगफलीकी तरफ, जिसकी खेती हिन्दुस्तानमें काफी मात्रामें होती है, अुतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना कि देना चाहिये। मूंगफली आहारकी दृष्टिसे बहुत मूल्यवान वस्तु है। मूंगफली स्वयं सहजमें पच जाय अैसी

चीज नहीं है और अकसर पाचनमें यह गड़बड़ पैदा करती है। अिसका कारण यह है कि अिसमें तेलकी मात्रा बहुत अधिक यानी पचास प्रतिशत होती है। मूंगफलीके दानोंको अच्छी तरह साफ करके अुनमें से तेल निकाल लिया जाय, तो जो खली बाकी बचेगी वह मनुष्यके लिअे बहुत पौष्टिक आहारका काम देगी और कोअी नुकसान नहीं पहुंचायेगी। मूंगफलीकी खलीका और सोयाबीनका पृथक्करण अिस प्रकार है:

| | मूंगफलीकी खली प्रतिशत | सोयाबीन प्रतिशत |
|---|---|---|
| आर्द्रता | ८ | ८ |
| प्रोटीड | ४९ | ४३ |
| कार्बोहाअिड्रेट | २४ | १९.५ |
| चर्बी | १० | २० |
| रेशा | ५ | ५ |
| खनिज द्रव्य | ५ | ४.५ |

मूंगफलीकी खली सोयाबीनकी तुलनामें बहुत अच्छी अुतरती है। प्रोटीड और खनिज द्रव्य, जो अन्नके आवश्यक तत्त्व हैं, सोयाबीनकी अपेक्षा मूंगफलीकी खलीमें अधिक होते हैं। 'अेमिनो-अेसिड' के जो आवश्यक तत्त्व हैं, वे भी सोयाबीनके प्रोटीडसे मूंगफलीके प्रोटीडमें अधिक होते हैं:

| जरूरी अेमिनो-अेसिड | मूंगफली प्रोटीड प्रतिशत | सोयाबीन प्रोटीड प्रतिशत |
|---|---|---|
| टिरोडाअिन | ५.५ | १.८६ |
| अेग्निनाअिन | १३.५ | ५.१२ |
| हिस्टीडाअिन | १.८८ | १.३९ |
| लिसाअिन | ५.५० | २.७१ |
| अिस्टाअिन | ०.८५ | — |

मूंगफलीकी खली खानेसे अगर पित्त बढ़ता हो, तो थोड़ासा गुड़ या जरासा 'सोडा-बाअी-कार्ब' साथ लेनेसे पित्त बन्द हो जायगा।

मूंगफलीकी खलीका स्वाद बहुत अच्छा होता है। और खलीको गरम करके अच्छी तरह बन्द किये हुअे बरतनमें रख दें, तो वह काफी मुद्दत तक वैसी ही रखी रह सकती है।

मूंगफलीकी खलीकी मिठाअी और खानेकी दूसरी कअी सामान्य चीजें बन सकती हैं। अिसलिअे मूंगफलीकी खलीकी अुपयोगिता विषयक

ज्ञानका प्रचार करनेका प्रयत्न देशमें होना चाहिये। यह गुणमें सोयाबीनकी तरह, बल्कि अुससे भी बढ़कर है।

हरिजनसेवक, १–२–१९३६

## २६

## रंगमें भंग

गांधीजीको सिर पर खड़े अकालकी बहुत फिक्र लग रही है। अुन्होंने मसूरीके शौकीन लोगोंसे कहा कि आपकी मेजवानियों पर मौतकी छाया मंडरा रही है। आप अुसका खयाल करें। सच्ची बात तो यह है कि अकाल देशमें पहलेसे ही है, करोड़ोंको पूरा खानेको नहीं मिलता। अमीर लोग शायद पैसा दे सकें, लेकिन पैसेसे किसीका पेट थोड़े ही भरता है। जितना अनाज चाहिये अुतना देशमें नहीं है। जो है वह भी आसानीसे कमीवाले हिस्सोंमें नहीं भेजा जा सकता। गवर्नमेण्टका अिन्तजाम कितना निकम्मा है! फिर कअी अैसी जगहें हैं, जहां खुराकके ढेर पड़े हैं, पर लोग भूखों मर रहे हैं। क्योंकि हमारे अपने लोग ही बेअीमानी और लालची हो गये हैं। जो लोग अमीर हैं और किसी-न-किसी तरह अपनी जरूरतें पूरी कर लेते हैं, वे जितना अनाज बचा सकें बचावें। अगर लोग सहयोग करें और काला बाजार, रिश्वतखोरी और बेअीमानी खतम हो जाय, तो शायद अिस मुश्किलको पार करनेके लिअे देशमें काफी अनाज निकल आये। कुछ लोग हैं जो अिस बातको नहीं मानेंगे। वे कहेंगे कि अगर बाहरसे अनाज न आया, तो हम भूख और मौतसे नहीं बच सकेंगे। मेरी राय अिससे अलग है। पहले तो मालके हिन्दुस्तान पहुंचनेमें कुछ देर लगेगी और फिर बन्दरगाहसे जरूरतकी जगह तक पहुंचानेमें लगभग ६ हफ्ते लग जायंगे। अिसका सच्चा अिलाज सिर्फ अेक ही है कि लोगोंका आपसमें सहयोग हो और बेअीमानी खतम हो जाय। मसूरीके अमीर लोगोंको चाहिये कि जितना अनाज वे भूखोंके लिअे बचा सकें बचायें। अगर सब सिर्फ अुतना ही खायें, जितना स्वास्थ्यके लिअे जरूरी है, तो देश अिन सब मुश्किलोंको पार कर सकेगा।

मसूरी, १–६–'४६

हरिजनसेवक, ९–६–१९४६

## २७

# कुछ और सुझाव

यह अेक अच्छी निशानी है कि अनाजकी कमी पर बहुतसे लोग सोच-विचार कर रहे हैं। हर तरफसे अिस कमीको पूरा करनेके लिअे सुझाव आते रहते हैं। अेक भाअीने, जो अपने विषयको अच्छी तरह जानते हैं, नीचे लिखे सुझाव भेजे हैं:

"(१) जब अनाज बहुत कम मिलने लगे, तो मांस खानेवालोंको दूसरोंके बराबर अनाजका राशन देनेकी क्या जरूरत? जितनी खुराक वे मांससे हासिल कर सकें, अनाजकी अुनकी रसद अुतनी कम कर दी जाय, तो काफी अनाज बच सकता है।

"(२) अनाजकी रसद कम कर दी गअी है। मेरा खयाल है कि अिससे बहुतसे मेहनत करनेवालोंका पेट नहीं भरता। बहुतसे तो अिस कमीको अिस तरह पूरा करते हैं कि गेहूंमें मूंग, चना और जौ मिलाकर अिनका आटा बना लेते हैं। लेकिन अिन तीनों चीजोंकी कीमत गेहूंसे ज्यादा है। अिसलिअे बहुतसे अुन्हें खरीद नहीं सकते। अिससे यह नतीजा निकलता है कि मांस खानेवालोंके लिअे जितना अनाज कम किया जाय, अुतनी ही पौष्टिक मांसकी खुराक अुन्हें कम किये अनाजकी कीमतमें मिलनी चाहिये। मैंने अिस तजवीजका खर्च निकाला है। अगले कुछ महीनोंमें १५ करोड़ रुपयेसे ज्यादा खर्च नहीं आयेगा। लेकिन आदमियोंको बचानेके लिअे तो कोअी भी कीमत ज्यादा नहीं हो सकती। कहा जाता है कि हिन्दुस्तानमें अनाजकी कमीकी वजहसे शायद १ से १।। करोड़ तक आदमी मर जायंगे।

"(३) मुझे जीवहत्या बहुत बुरी लगती है। लेकिन अगर आदमी या जानवरमें से सिर्फ अेकको ही बचाया जा सके, तो मेरे खयालमें आदमीको बचाना चाहिये। हिरन, खरगोश, सूअर और कबूतर फसलोंको काफी नुकसान पहुंचाते हैं। मैं मांस नहीं खाता। लेकिन मांस खानेवाले कहते हैं कि ये खुराककी तरह खाये जा सकते हैं। अगर अिनके शिकार-का ठीक बन्दोबस्त किया जाय, तो कुछ हिस्सोंको, खासकर बड़े शहरोंको, मांस लगातार मिल सकता है। यह बन्दोबस्त कठिन तो है, पर असंभव नहीं। अगर ये जानवर अितने बड़े पैमाने पर मारे जायं, तो लगे हाथों

यह भी फायदा होगा कि जो फसलें ये जानवर बरबाद करते हैं वे बच जायंगी।

"(४) अैसे बहुत कम लोग हैं जो अिस बातको पसन्द करें कि खुराक बचाअी जाय और रसद बांटनेके चालू तरीकेके मुताबिक अकालवाले हिस्सोंमें भेजी जाय। कालाबाजार और बेअीमानी अितनी चलती है कि लोगोंको अैसा लगता है कि जो कुछ वे बचायेंगे सो कालेबाजारमें पहुंच जायगा। अगर बचाया हुआ अनाज अिकट्ठा किया जाय और विश्वास दिलाया जाय कि वह अकालवाले हिस्सोंमें जरूर पहुंच जायेगा, तो लोगोंके दिलों पर अिसका बहुत अच्छा असर होगा। अिसके लिअे बन्दोबस्त तो करना पड़ेगा, पर मुझे अैसा लगता है कि अिससे काफी अनाज अिकट्ठा हो जायगा।"

पहला सुझाव अैसा है कि सरकार अुस पर चले या न चले, अीमानदार मांस खानेवाले तो अुस पर चल सकते हैं। अगर वे आज अनाजका अपना पूरा हिस्सा ले रहे हैं, तो अुसमें से कुछ आसानीके साथ ज्यादा जरूरतमन्द लोगोंको दे सकते हैं। अैसे मौकों पर आपसके सहयोगसे जरूरतवालोंको जल्दी-से-जल्दी मदद पहुंच सकती है।

दूसरा सुझाव पहलेमें से निकलता है।

तीसरे सुझावके बारेमें अलग-अलग राय होगी। हिन्दुस्तान अेक अैसा देश है जहां बहुतसे लोग हर तरहके प्राणीको पवित्र मानते हैं, और जो अैसा नहीं भी मानते अुनकी भी यह आदत बन गअी है कि वे जीवहत्या करना पसन्द नहीं करते। अैसे देशमें शायद मांस खानेवालोंके लिअे भी अिस सुझाव पर चलना मुश्किल होगा। सब जानते हैं कि मैं हर तरहके जीवको पवित्र मानता हूं। फिर भी मैं बड़ी आसानीसे अिस बातकी सिफारिश कर सकता हूं कि जो लोग मांस खाते हैं, वे लेखककी सुझाअी हुअी बात पर चलें। 'हरिजन' में मैं अेक अैसी दलील पर चर्चा करनेकी आशा रखता हूं, जो खतरनाक जानवरोंको भी मारनेके खिलाफ है। लेकिन अिसका खुराककी बातके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं।

चौथा सुझाव अच्छा है। लेकिन अुससे कोअी खास नतीजा निकलनेवाला नहीं, क्योंकि सरकारमें हर जगह बेअीमानी, नालायकी और गैरजिम्मेदारी फैली हुअी है। यह कठिनाअी तब तक दूर नहीं हो सकती, जब तक

हमारी अपनी सरकार न हो। अुसे जनताको हर बातका जवाब देना पड़ेगा और लोग अुस पर भरोसा कर सकेंगे। बहुत दिनोंसे अैसी सरकारका अिन्तजार है। क्या वह कभी आयेगी भी?

मसूरी, २९–५–'४६
हरिजनसेवक, ९–६–१९४६

## २८

## मंत्रियोंका राशन

स० — जब खुराक-विभाग गवर्नरोंके सलाहकारोंके हाथमें था, तब अुन पर काबू रखनेका कोअ पुरअसर जरिया नहीं था। मगर अब तो प्रान्तोंमें लोगोंकी सरकारें कायम हो गअी हैं। अिसलिअे हालत बदल गअी है। कांग्रेसी मन्त्रियोंका यह फर्ज है कि वे अपने हिस्सेकी खुराक वहींसे खरीदें, जहांसे आम लोग खरीदते हैं। अेक दाना भी वे किसी और जगहसे न लें। अिसका असर तुरन्त होगा और वह दूर तक पहुंचेगा। आज कपड़े और अनाजकी सरकारी दुकानें चोरी और बेअीमानीके खुले अड्डे बन गअी हैं। अगर कांग्रेसी मन्त्री अिन्हीं दुकानोंसे अपने हिस्सेका कपड़ा और अनाज खरीदें तो अुनका नैतिक बल अितना बढ़ जायगा कि वे अिन बुराअियोंका कामयाबीके साथ सामना कर सकेंगे।

ज० — यह सवाल अिस तरहके कअी पत्रोंका निचोड़ है। मैं सवालमें दी गअी सलाहसे पूरी तरह सहमत हूं। मैं मानता हूं कि मंत्री और दूसरे सरकारी नौकर अैसा ही करते होंगे। सरकारी दुकानोंके सिवा तो खुराक खरीदनेका रास्ता कालाबाजार ही है। हाकिम कितना ही क्यों न कहें कि कालेबाजारमें मत जाओ, मगर अुसका अुतना असर नहीं होगा जितना अुनके अैसा कर दिखानेका हो सकता है। अगर वे आम लोगोंके साथ खुराक खरीदें, तो दुकानदार समझ जायंगे कि सड़ा हुआ अनाज नहीं बेचा जा सकता। सुनता हूं कि अिंग्लैण्डमें तो यह आम रिवाज है कि मंत्री और बड़े-बड़े अधिकारी लोग वहींसे सामान खरीदते हैं जहांसे आम लोग। होना भी अैसा ही चाहिये।

पंचगनी, २८–७–'४६
हरिजनसेवक, ४–८–१९४६

## २९

# खुराककी कमी क्यों?

स० — आजकल हिन्दुस्तान अपनी आबादीके लिअे काफी खुराक पैदा नहीं कर सकता। बाहरसे खुराक खरीदनेके लिअे हिन्दुस्तानको दूसरा माल बेचना होगा, ताकि अुसकी कीमत चुका सके। अिसलिअे हिन्दुस्तानको यह माल अैसी कीमत पर तैयार करना होगा, जो दूसरे देशोंकी कीमतोंके मुकाबलेमें ठहर सके। मेरी रायमें आजकलकी मशीनोंके बगैर यह नहीं हो सकता। और यह तभी हो सकता है, जब कि शारीरिक मेहनतकी जगह मशीन ले ले।

ज० — पहले वाक्यमें जो बात कही गअी है वह बिलकुल गलत है। बहुतसे लोगोंने अिससे अुलटा कहा है, फिर भी मैं तो मानता हूं कि हिन्दुस्तान अिस समय काफी अनाज पैदा कर सकता है। मैं यह बता चुका हूं कि कौनसी शर्त पर यह हो सकता है: केन्द्रमें हमारी सरकार हो, अुसके हाथमें सारी बागडोर हो, अपना कारोबार वह अच्छी तरह जानती हो और अुसमें अितनी योग्यता हो कि वह तमाम नफाखोरी, कालाबाजार और सबसे बुरी मन और शरीरकी सुस्तीकी सख्तीसे रोकथाम कर सके।

अगर सवालके पहले हिस्सेका मेरा जवाब ठीक है, तो अुसका दूसरा हिस्सा अपने-आप खतम हो जाता है। लेकिन अिन्सानकी मेहनत, जिसकी हिन्दुस्तानमें कमी नहीं, के खिलाफ आजकलकी मशीनोंकी सिफारिशोंको हमेशाके वास्ते रद्द कर देनेके लिअे मैं यह कहूंगा कि अगर करोड़ों लोग, जो मेहनत कर सकते हैं, अेक होकर हिम्मतसे काम करें, तो वे किसी भी राष्ट्र-का — चाहे अुसके पास आजकलकी कितनी ही मशीनें हों — अपनी दृष्टिसे अच्छी तरह मुकाबला कर सकते हैं। सवाल करनेवालेको यह नहीं भूलना चाहिये कि आज तक मशीनोंके साथ-साथ अैसे राष्ट्रोंकी लूट-मार भी जारी रही है, जिनके पास मशीनें नहीं हैं और जिनका नाम कमजोर राष्ट्र रख दिया गया है।

मैंने 'नाम रख दिया गया है' का अिसलिअे अिस्तेमाल किया है कि ज्यों ही अिन राष्ट्रोंने यह पहचान लिया कि अिस समय भी वे अुन राष्ट्रोंसे ज्यादा ताकतवर हैं, जिनके पास नयेसे नये हथियार और मशीनें हैं, त्यों ही

वे अिस बातसे अिनकार कर देंगे कि वे कमजोर हैं। तब किसीकी यह हिम्मत भी नहीं होगी कि अुन्हें कमजोर कह सके।

सेवाग्राम, ८–८–'४६

हरिजनसेवक, १८–८–१९४६

## ३०

## कत्लेआम

अेक दोस्त लिखते हैं :

"मैसूर और रायलासीमामें अनाजकी तंगी दिन-दिन डरावना रूप लेती जा रही है। जब तक बाहरसे काफी मात्रामें अनाज नहीं आता, यहांके कोऑपरेटिव स्टोर्स किसानोंको राशन पूरा नहीं कर सकते — यह राशन भी पेटभर नहीं मिलता। क्योंकि किसानोंको आज सिर्फ आठ औंस चावल दिये जाते हैं, जब कि काम करने लायक बने रहनेके लिअे अुन्हें चौबीस औंस चावल जरूरी होते हैं। मुझे डर है कि अगर आजकी हालत नहीं सुधरी, तो नवम्बर और दिसम्बरमें भारी संख्यामें लोग भूखसे मरने लगेंगे।"

अगर लिखनेवाले भाअीकी आधी बात भी सच हो, तो हिन्दुस्तान जैसे लम्बे-चौड़े देशमें अन्नके अकालका सामना न कर पाना हमारे लिअे शर्मकी बात है। यहां लाखों अेकड़ जमीन बेकार पड़ी हुअी है, या हम अुससे पूरा फायदा नहीं अुठाते; और पानी समुद्रमें तेजीसे बह जाता है, क्योंकि आदमीमें अितनी समझ नहीं कि वह अुसको बांध बांधकर अिकट्ठा कर रखे। लिखनेवाले भाअी कहते हैं कि अगर बाहरसे अनाज 'काफी मात्रामें' नहीं मिलेगा — जिसके साफ मानी ये हुअे कि अगर काफी अनाज हिन्दुस्तानमें बाहरसे नहीं आया — तो 'नवम्बर-दिसम्बर तक लोग बड़ी संख्यामें निश्चित रूपसे मरने लगेंगे।' मैं अिससे सम्बन्ध रखनेवाले हरअेक आदमीसे कहता हूं कि अगर अैसा हुआ, तो देशकी सरकार कत्लेआमकी गुनहगार ठहरेगी।

हिन्दुस्तानके बाहरसे अनाज पानेकी आशा रखना भुखमरीको न्योतना है। क्या यह कभी साफ तौरसे बताया गया है कि अब और नवम्बरके बीच के दिनोंमें हिन्दुस्तान काफी अनाज या खानेकी चीजें पैदा नहीं कर सकता?

अगर सारी दुनिया हिन्दुस्तानके खिलाफ नाकाबन्दीका अैलान कर दे, तो भी क्या अुसके जैसे अितने बड़े मुल्कके लाखों-करोड़ों लोगोंको भूखों मरना ही होगा ?

सेवाग्राम, १६–८–'४६
हरिजनसेवक, २५–८–१९४६

## ३१

## खुराककी तंगी

अमलदारोंकी तरफसे दी जानेवाली खुराककी तंगीकी खबरें लोगोंको घबराहटमें डालनेवाली हैं। अिस घबराहट और डरका नतीजा सचमुचके अकालसे ज़्यादा भयानक होता है। जब मुझे अखबारसे त्रावणकोरमें खुराककी तंगीके बारेमें अेक पैरा पढ़कर सुनाया गया, तो मेरी अैसी ही हालत हुअी। अखबारमें लिखा था कि त्रावणकोरके निडर दीवान कहते हैं कि त्रावणकोरमें सिर्फ १५ दिनके लिअे खुराक बाकी है। मैं त्रावणकोरको अितनी अच्छी तरहसे जानता हूं कि अिस खबरसे मैंने त्रावणकोरके लिअे ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तानके लिअे तरह-तरहकी कठिनाअियोंकी तसवीरें अपने सामने खड़ी कर लीं। त्रावणकोरकी जमीन खूब अुपजाअू है। वहां खाने लायक कन्द-मूल पैदा होते हैं, नारियल होते हैं, मछलियां होती हैं। वहां तो बाहरसे कुछ न जाय तो भी लोगोंको अेक दिनके लिअे भी भूखे रहनेकी जरूरत नहीं। त्रावण-कोरमें मेरे विश्वासने मुझे हिम्मत बंधाये रखी और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुअी कि त्रावणकोरमें तंगी खुराककी नहीं थी, गेहूं और चावलकी ही थी। त्रावणकोरमें गेहूं पैदा नही होता, चावल ही अुगता है। जहां तक अनाजका सम्बन्ध है, त्रावणकोरी भाअी चावल ही खाते हैं। बहुत तंगीमें आने पर ही मुश्किलसे वे गेहूं खानेको तैयार होते हैं। कितना अच्छा हो, अगर अिस कठिनाअीके परिणामस्वरूप हम अपनी प्रान्तीयता छोड़ सकें और अैसी आदतें बना लें कि जिस किसी प्रान्तमें जायं वहीं हमें घर-सा लगे। लेकिन अिस समय तो हिन्दुस्तानके सब जिम्मेदार आदमी अगर अपने-अपने प्रान्तोंको, जिलोंको और रियासतोंको साफ-साफ कह दें कि खुराकके लिअे वे दूसरे देशोंकी तरफ न देखें, जितना हो सके खुद अुगावें और अपनी ही अुपज

पर गुजारा करना सीखें तो मेरा काम हो जाय। मेरे पास बहुतसे विश्वासपात्र लोगोंके पत्र आ रहे हैं। अगर वे असली हालतके सूचक हों, जैसा कि अुन्हें होना चाहिये, तो हमें भूखों मरनेकी कोअी जरूरत नहीं। शाकाहारियोंके लिअे जीवन देनेवाली सब्जियां और थोड़ासा दूध और मांसाहारियोंके लिअे मछली, गोश्त वगैरा बस होंगे।

हिन्दुस्तानियोंको समझना चाहिये कि अभी तक बाहरसे तो नामकी ही खुराक हिन्दुस्तानमें आयी है। कअी दूसरे देश मदद करना चाहते हैं, पर बहुत करके वे खुद कठिनाअीमें हैं या अुनके पास अितनी मांगें हैं कि वे अुन्हें पूरा नहीं कर सकते। अुन सबके लिअे जहाजोंकी दिक्कत तो है ही। और जब अनाज हिन्दुस्तानमें पहुंचेगा, तब अुसे देशमें अेक जगहसे दूसरी जगह ले जानेकी दिक्कत खड़ी होगी। जगह-जगह खुराक पहुंचाना और बांटना बड़े मुश्किल सवाल हैं। अिसलिअे व्यवहार-बुद्धि यही है कि हम कमर कस लें और अेक आवाजसे अपना अिरादा जाहिर कर दें कि हम अपनी खुराक खुद पैदा करेंगे और जरूरत पड़ी तो अुस कोशिशमें बहादुरीसे मर मिटेंगे।

यही अेक सही रास्ता है, दूसरा नहीं।

नअी दिल्ली, २१–९–'४६
हरिजनसेवक, २९–९–१९४६

## ३२

## अनुचित बरबादी

अेक सज्जनने गेहूं वगैराकी बरबादीके बारेमें अेक लम्बा पत्र लिखा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है।

"अिस अव्यवस्थासे जो बरबादी होती है, अुसके पांच खास कारण हैं:

१. गेहूं वगैरा संभालकर रखनेके लिअे कोअी खास गोदाम नहीं हैं। अिस कारण चूहे, कीड़े वगैरा अुन्हें काफी नुकसान पहुंचाते हैं।

२. मण्डियोंमें, रेलके प्लैटफार्म पर और फुटकर बिक्रीकी दुकानोंके सामने बरसते पानीमें भी गेहूं खुला पड़ा रहता है।

३. यों भी मण्डियों और दुकानोंमें गेहूंके ढेर-के-ढेर खुले पड़े रहते हैं और हजारों चिड़ियां, गिलहरियां वगैरा अुन्हें खाती रहती हैं।

४. गेहूं टाटके पुराने थैलोंमें अिधर-अुधर भेजा जाता है। अिसके कारण मनों गेहूं गिर जाता है और रेलोंमें अुसकी चोरी भी आसानीसे होती है।

५. गेहूं गांवसे साफ होकर नहीं आता। अिससे किसानों और खरीदारोंको नुकसान होता है, और ज्यादा वजन होनेसे रेल वगैराका किराया भी फजूल देना पड़ता है।"

लेखक कहते हैं कि अकेले अच्छे गोदाम न होनेकी वजहसे सालमें ३५ लाख टन गेहूं बरबाद होते हैं, और बाकी चार कारणोंसे १५ लाख टन। अिस तरह कुल सालाना नुकसान ५० लाख टनका होता है। जो गेहूं गोदाममें संभालकर नहीं रखा जाता, अुसे चूहे वगैरासे नुकसान पहुंचनेके अलावा खुला पड़ा रहनेसे अुसके गुणमें भी कमी आ जाती है। गेहूंके व्यापारी लापरवाह हैं; और अिसमें सरकारकी लापरवाही न हो, तो भी अुसकी नालायकी और ढिलाअी तो है ही।

लेखककी राय है कि व्यापारियोंके लिअे कानूनसे यह लाजिमी कर देना चाहिये कि वे अच्छे गोदाम बनायें। अुनके पास अैसा प्रबन्ध न हो, तो अुन्हें लाअिसेन्स देना बन्द किया जाय।

अगर मौजूदा मण्डियोंमें या जहां-जहां भी निकम्मे गोदाम हैं, अुनकी ठीक मरम्मत हो जाय, तो ५० फी सदी अनाजकी बरबादी तो फौरन बन्द हो सकती है। अिससे वहां पानी और चूहे वगैरासे गेहूं बचा रहेगा। नये गोदाम बनानेमें सरकारको सबसे पहले अुदाहरण पेश करना चाहिये, ताकि लोग अुनके फायदोंको देखकर अुनकी जरूरत समझ लें।

लाहौर और लायलपुरके बीच हालमें गेहूंके हजारों थैले लेखकने अपनी आंखोंसे पानीमें भीगते देखे हैं। जिन अफसरोंके जिम्मे अुनकी देखभालका काम था, अुनमें से अेक भी वहां नहीं आया और गेहूंको बचानेकी जरा भी कोशिश नहीं की गअी। अिस कारण अेक ही दिनमें ४०,००० मन गेहूं खराब हो गया। अैसा ही हिन्दुस्तानमें दूसरी जगहों पर भी होता होगा।

पुराने थैलोंके बजाय नये दोहरे थैलोंका अुपयोग लाजिमी किया जाना चाहिये।

जहां गेहूं पैदा होता है वहीं वह साफ भी किया जाय, तो अुसमें से जो छोटे दाने और छिलके निकलते हैं, वे पशुओं और मुर्गियोंको खिलाये जा

सकते हैं। अिस तरह बोझा कम होनेसे रेलका किराया भी कम हो जायगा। किसानसे जो खोटके पैसे लिये जाते हैं, वे भी बच जायेंगे।

सरकार आज जितना अनाज बाहरसे मंगाती है या जितने अनाजके आनेकी आशा रखती है, अुतना ही यहां बरबाद हो जाता है।

अिसके अलावा, लेखक कुछ और भी सूचनाअें देते हैं, जो पहले भी 'हरिजन' में दी गअी हैं। जैसे, धनिक घरोंमें खुराककी बरबादीको रोकना; भाजी वगैरा ज्यादा अुगाना; जहां भी खेतीके लायक जमीन हो, वहां कुअें वगैरा बनाकर फौरन खेती करना; खाद बनानेकी जो चीजें बरबाद होती हैं अुन्हें खादके लिअे अिस्तेमाल करना; शहरोंमें गोबर जलानेके काममें न लेना, वगैरा।

नअी दिल्ली, १९–९–'४६ **अमृतकुंवर**

[जो सूचनाअें अिस लेखमें दी गअी हैं, वे अैसी हैं कि अुन पर फौरन ही अमल करना चाहिये। जो अनाज बचा सो मिलनेके बराबर है।

हरिजनसेवक, २९–९–१९४६ **— मो० क० गांधी**]

## ३३

## अनाजका भाव

स० — अन्तरिम सरकारकी नीति अनाजकी कीमत कम करनेकी है। क्या अनाजकी पैदावार पर अिसका बुरा असर नहीं पड़ेगा?

ज० — मैं तो अनाजकी कीमत और भी कम कर देना चाहता हूं। मैं खुद किसान हूं। शायद आप नहीं जानते, मगर मैं जानता हूं कि किसानोंको जितनी कीमत दी जाती है, वह अुनके घर नहीं पहुंचती। किसानोंको जो धक्का पहुंचा है और अनाजकी कीमत बढ़नेसे जो सवाल पैदा हो गया है, अुसको यदि अन्तरिम सरकार हल नहीं कर सकती तो अुसे खतम हो जाना चाहिये। अन्तरिम सरकार किसानोंका गला घोंटकर आम लोगोंको सस्ता अनाज कभी नहीं दे सकती। माना कि अनाजकी कीमत ज्यादा है, मगर बीचके खानेवालों यानी व्यापारियों और दलालों वगैराकी वजहसे पूरी कीमत किसान तक नहीं पहुंचती। अगर अैसा न हो तो अनाज पैदा करनेवालेका पेट भर जाय। मैंने तो खादीमें भी कताअीकी दर आठ आने तक ले जानेकी सूचना की थी

और चार आने तक कताअीका दाम पहुंचा भी। कअी लोगोंने विरोध किया था कि कताअीका दाम बढ़नेसे खादी महंगी हो जायगी और अुसके ग्राहक नहीं मिलेंगे। पर मैंने अुसकी कोअी परवाह नहीं की। अिससे अनाज पैदा करनेवालोंको मेरे रुखका पता चल सकता है। मैं तो बीचके अिस व्यापारी और दलाल वर्गको बिलकुल निकाल दूं। यही वह वर्ग है जो किसानको चूसता है। वर्ना कोअी कारण नहीं कि किसान भूखों मरे। साथ ही यह बात भी है कि जो किसान नफाखोरी या कालाबाजारी करता है, वह किसान नहीं रहता, बल्कि जमींदार जैसा बन जाता है।

नअी दिल्ली, ३०–९–'४६
हरिजनसेवक, १३–१०–१९४६

## ३४

## अनाजके खतरेको खुद टालो

पिछली २४ जनवरीको हशनाबादके लोगोंको राहत पहुंचानेवाली कमेटीकी कृषक-समितिके प्रतिनिधि मुरायममें गांधीजीसे मिले। अुन्होंने गांधीजीको यह बताया कि साम्प्रदायिक दंगोंके हमलेसे अपने हिस्सेको बचानेके लिअे हशनाबादके हिन्दुओं और मुसलमानोंने मिलकर लगभग १,२०० आदमियोंका अेक मजबूत स्वयंसेवक-दल किस तरह खड़ा किया है।

गांधीजीने कहा—"कुछ दिन पहले मैंने हशनाबादके बारेमें यह सुना था कि वह दंगेके दिनोंमें हिन्दू-मुस्लिम-अेकताका अेक चमकदार नमूना रहा है।"

अिसके बाद मिलने आनेवालोंने अिस हिस्सेमें शुरू हुअे अन्न-संकटके बारेमें गांधीजीसे बात की और अुनसे पूछा—"बंगाल सरकारका ध्यान अिस ओर खींचनेके लिअे क्या आप अपने भाषणोंमें अिस संकटका कोअी जिक्र न करेंगे?"

गांधीजीने जवाब दिया—"हालांकि मैं यहांकी हालतको जानता हूं, फिर भी आनेवाले अन्न-संकटके बारेमें कुछ कह नहीं रहा हूं। मैं अिस सवालको अपने ढंगसे हल करनेके बारेमें सोच रहा हूं। मैं नहीं समझ पाता कि लोग मददके लिअे सरकार पर या दूसरी संस्थाओं पर क्यों भरोसा रखते हैं? आजकल हम सुनते हैं कि लोग विदेशोंसे अनाज मंगवानेकी कोशिश कर रहे

हैं। सच बात तो यह है कि अगर लोग खुद अिस मामलेमें कुछ-न-कुछ करने लगें, तो सरकारको भी अिस बारेमें जरूरी कार्रवाअी करनी पड़े। अिसीको मैं सच्ची लोकशाही कहूंगा, क्योंकि अुसका अमल बिलकुल नीचेसे शुरू होता है और वहींसे वह बनती आती है। बंगालकी जमीन बहुत अुपजाअू है। अुसमें आप खाने लायक कन्द-मूल पैदा कर सकते हैं। लेकिन लोगोंको अपने स्वाद और पुरानी आदतें बदलनेके लिअे राजी करना कठिन है। अिन नारियलके पेड़ोंको देखिये। खोपरा बड़ा अच्छा पौष्टिक भोजन है। मैं अुसकी आदत डालनेकी कोशिश करता हूं। हां, मैं अुसका तेल जरूर निकाल डालता हूं। बचे हुअे हिस्सेमें काफी प्रोटीन होता है। फिर बंगालकी भूमिमें पैदा होनेवाली आलूकी जातकी गांठें लीजिये। वे पौष्टिक भोजनकी तरह खायी जा सकती हैं। आपके यहां मछली भी बहुतायतसे मिलती है। मछली, खोपरा और ये गांठें आसानीसे चावलकी जगह ले सकती हैं।" प्रसंगवश गांधीजीने लोगोंके आलसीपनका जिक्र करते हुअे कहा — "आप अिस 'ह्येसिन्थ' की ही — जिसे यहां आप 'कचूरी पाना' कहते हैं — मिसाल लीजिये। अिसकी बेल पानीमें फैलकर जालकी तरह अुस पर छा जाती है। अगर सब लोग सरकारकी मददकी राह देखे बिना खुद ही स्वयंसेवक बनकर अेक हफ्ता भी अिस काममें जुट जायं, तो सात ही दिनोंमें वे अिन बेलोंकी बलासे छुटकारा पा जायं और अूपरसे हजारों रुपयोंकी बचत भी कर सकें।"

हरिजनसेवक, ९–२–१९४७

## ३५

## अनाजकी समस्या

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा :

"अनाजकी मौजूदा गंभीर परिस्थितिमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादको अपनी सलाहका लाभ देनेके लिअे अुनके आमंत्रण पर खुराकके विशेषज्ञ अिकट्ठा हुअे हैं। अिस महत्त्वकी बातमें कोअी भूल होनेसे लाखों आदमी भुखमरीसे मर सकते हैं। कुदरती या अिन्सानके पैदा किये हुअे अकालमें हिन्दुस्तानके करोड़ों नहीं, तो लाखों आदमी भूखसे मरे हैं। अिसलिअे यह हालत हिन्दुस्तानके लिअे नयी नहीं है। मेरी रायमें अेक व्यवस्थित समाजमें अनाज और पानीकी कमीके

सवालको कामयाबीसे हल करनेके लिअे पहलेसे सोचे हुअे अुपाय हमेशा तैयार रहने चाहिये। अेक व्यवस्थित समाज कैसा हो और अुसे अिस सवालको कैसे सुलझाना चाहिये, अिन बातों पर विचार करनेका यह समय नहीं है। अिस समय तो हमें सिर्फ यही विचार करना है कि अनाजकी मौजूदा भयंकर तंगीको हम किस तरह कामयाबीके साथ दूर कर सकते हैं।

## स्वावलम्बन

"मेरा खयाल है कि हम लोग यह काम कर सकते हैं। पहला सबक जो हमें सीखना है वह है स्वावलम्बन और अपने-आप पर भरोसा रखनेका। अगर हम यह सबक पूरी तरह सीख लें, तो विदेशों पर निर्भर रहने और अिस तरह अपना दिवालियापन जाहिर करनेसे हम बच सकते हैं। यह बात घमण्डसे नहीं, बल्कि सचाअियोंको ध्यानमें रखकर कही गअी है। हमारा देश छोटासा नहीं है, जो अपने अनाजके लिअे बाहरी मदद पर निर्भर रहे। यह तो अेक छोटा-मोटा महाद्वीप है, जिसकी आबादी चालीस करोड़के लगभग है। हमारे देशमें बड़ी-बड़ी नदियां, कअी किस्मकी अुपजाअू जमीन और कभी न चुकनेवाला पशुधन है। हमारे पशु अगर हमारी जरूरतसे बहुत कम दूध देते हैं, तो अिसमें पूरी तरह हमारा ही दोष है। हमारे पशु अिस योग्य हैं कि वे कभी भी हमें अपनी जरूरतके जितना दूध दे सकते हैं। पिछली कुछ सदियोंमें अगर हमारे देशकी अुपेक्षा न की गअी होती, तो आज अुसका अनाज सिर्फ अुसीको काफी नहीं होता, बल्कि पिछले महायुद्धकी वजहसे अनाजकी तंगी भोगती हुअी दुनियाको भी अुसकी जरूरतका बहुत कुछ अनाज हिन्दुस्तानसे मिल जाता। आज दुनियाके जिन देशोंमें अनाजकी तंगी है, अुनमें हिन्दुस्तान भी शामिल है। आज तो यह मुसीबत घटनेके बजाय बढ़ती हुअी जान पड़ती है। मेरा यह सुझाव नहीं है कि जो दूसरे देश राजी-खुशीसे हमें अपना अनाज देना चाहते हैं, अुनका अेहसान न मानते हुअे हम अुसे लौटा दें। मैं सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि हम भीख न मांगते फिरें। अुससे हम नीचे गिरते हैं। अिसमें देशके भीतर अेक जगहसे दूसरी जगह अनाज भेजनेकी कठिनाअियां और शामिल कर दीजिये। हमारे यहां अनाज और दूसरी खाने-पीनेकी चीजोंको अेक जगहसे दूसरी जगह शीघ्रतासे भेजनेकी सहूलियतें नहीं हैं। अिसके साथ ही यह असंभव नहीं है कि अनाजकी फेर-बदलीके समयमें अुसमें अितनी मिलावट कर दी जाय कि वह खाने लायक ही न रहे। हम अिस बातसे आंखें

नहीं मूंद सकते कि हमें अिन्सानके भले-बुरे सब तरहके स्वभावसे निपटना है। दुनियाके किसी हिस्सेमें अैसा अिन्सान नहीं मिलेगा, जिसमें कुछ-न-कुछ कमजोरी न हो।

### विदेशी मददका मतलब

"दूसरे, हम यह भी देखें कि हमें दूसरे देशोंसे कितनी मदद मिल सकती है। मुझे मालूम हुआ है कि हमारी आजकी जरूरतोंके तीन फी सदीसे ज्यादा हम नहीं पा सकते। अगर यह बात सही है, और मैंने कअी विशेषज्ञोंसे अिसकी जांच कराअी है और अुन्होंने अिसे सही माना है, तो मैं पूरी तरह मानता हूं कि बाहरी मदद पर भरोसा करना बेकार है। यह जरूरी है कि हमारे देशमें खेतीके लायक जो जमीन है, अुसके अेक-अेक अिंच हिस्सेमें हम ज्यादा पैसे दिलानेवाली फसलोंके बजाय रोजमर्रा काममें आनेवाला अनाज पैदा करें। अगर हम बाहरी मदद पर जरा भी निर्भर रहे, तो हो सकता है कि अपने देशके भीतर ही अपनी जरूरतका अनाज पैदा करनेकी जो जबरदस्त कोशिश हमें करनी चाहिये अुससे हम बहक जायं। जो पड़ती जमीन खेतीके काममें लाअी जा सकती है, अुसे हम जरूर अिस काममें लें।

### केन्द्रीकरण या विकेन्द्रीकरण ?

"मुझे भय है कि खाने-पीनेकी चीजोंको अेक जगह जमा करके वहांसे सारे देशमें अुन्हें पहुंचानेका तरीका नुकसानदेह है। विकेन्द्रीकरणके जरिये हम आसानीसे कालेबाजारका खातमा कर सकते हैं और चीजोंको यहांसे वहां लाने-ले जानेमें लगनेवाले समय और पैसेकी बचत कर सकते हैं। हिन्दुस्तानके अनाज पैदा करनेवाले देहाती अपनी फसलको चूहों वगैरासे बचानेकी तरकीबें जानते हैं। अनाजको अेक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन तक लाने-ले जानेमें चूहों वगैराको अुसे खानेका काफी मौका मिलता है। अिससे देशके करोड़ों रुपयोंका नुकसान होता है और जब हम अेक-अेक छटांक अनाजके लिअे तरसते हैं, तब देशका हजारों मन अनाज अिस तरह बरबाद हो जाता है। अगर हरअेक हिन्दुस्तानी जहां संभव हो वहां अनाज पैदा करनेकी जरूरतको महसूस करे, तो शायद हम भूल जायं कि देशमें कभी अनाजकी तंगी थी। ज्यादा अनाज पैदा करनेका विषय अैसा है, जिसमें सबके लिअे आकर्षण है। अिस विषय पर मैं पूरे विस्तारके साथ तो नहीं बोल सका, मगर मुझे अुम्मीद है कि

मेरे अितना कहनेसे आप लोगोंके मनमें अिसके बारेमें रुचि पैदा हुअी होगी और समझदार लोगोंका ध्यान अिस बातकी तरफ मुड़ा होगा कि हरअेक व्यक्ति अिस तारीफके लायक काममें मदद कर सकता है।

## कमीका सामना किस तरह किया जाय?

"अब मैं आपको यह बता दूं कि बाहरसे हमको मिलनेवाले तीन फी सदी अनाजको लेनेसे अिनकार करनेके बाद हम किस तरह अिस कमीको पूरा कर सकते हैं। हिन्दू लोग महीनेमें दो बार अेकादशीका व्रत रखते हैं। अिस दिन वे आधा या पूरा अुपवास करते हैं। मुसलमान और दूसरे फिरकोंके लोगोंको भी अुपवासकी मनाही नहीं है — खास करके जब करोड़ों भूखों मरते लोगोंके लिअे अेक-आध दिनका अुपवास करना पड़े। अगर सारा देश अिस तरहके अुपवासके महत्त्वको समझ ले, तो हमारे विदेशी अनाज लेनेसे अिनकार करनेके कारण जो कमी होगी, अुससे भी ज्यादा कमीको वह पूरी कर सकता है।

"मेरी अपनी रायमें तो अगर अनाजके रेशनिंगका कोअी अुपयोग है भी तो वह बहुत कम है। अगर अनाज पैदा करनेवालोंको अुनकी मर्जी पर छोड़ दिया जाय, तो वे अपना अनाज बाजारमें लायेंगे और हरअेकको अच्छा और खाने लायक अनाज मिलेगा, जो आज आसानीसे नहीं मिलता।

## प्रेसिडेन्ट ट्रूमेनकी सलाह

"अनाजकी तंगीके बारेमें अपनी बात खतम करनेसे पहले मैं आप लोगोंका ध्यान प्रेसिडेन्ट ट्रूमेनकी अमेरिकन जनताको दी गयी अुस सलाहकी तरफ दिला-अूंगा, जिसमें अुन्होंने कहा है कि अमेरिकन लोगोंको कम रोटी खाकर यूरोपके भूखों मरते लोगोंके लिअे अनाज बचाना चाहिये। अुन्होंने आगे कहा है कि अगर अमेरिकाके लोग खुद होकर अिस तरहका अुपवास करेंगे, तो अुनकी तन्दुरुस्तीमें कोअी कमी नहीं आयेगी। प्रेसिडेण्ट ट्रूमेनको अुनके अिस परोपकारी रुख पर मैं बधाअी देता हूं। मैं अिस सुझावको माननेके लिअे तैयार नहीं हूं कि अिस परोपकारके पीछे अमेरिकाका आर्थिक लाभ अुठानेका गन्दा अिरादा छिपा हुआ है। किसी अिन्सानका न्याय अुसके कामों परसे होना चाहिये, अुनके पीछे रहनेवाले अिरादेसे नहीं। अेक भगवानके सिवा और कोअी नहीं जानता कि अिन्सानके दिलमें क्या है। अगर अमेरिका भूखे यूरोपको अनाज देनेके लिअे अुपवास करेगा या कम खायगा, तो क्या हम अपने खुदके लिअे यह काम

नहीं कर सकेंगे? अगर बहुतसे लोगोंका भूखसे मरना निश्चित है, तो हमें स्वावलम्बनके तरीकेसे अुनको बचानेकी पूरी-पूरी कोशिश करनेका यश तो कमसे कम ले ही लेना चाहिये। अिससे हमारा राष्ट्र अूंचा अुठता है।

"हम अुम्मीद करें कि डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा बुलाअी गअी कमेटी तब तक अपना काम करती रहेगी, जब तक वह देशकी मौजूदा अनाजकी भयंकर तंगीको दूर करनेका कोअी व्यावहारिक तरीका नहीं ढूंढ़ निकालेगी।"

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ६–१०–'४७
हरिजनसेवक, १९–१०–१९४७

* * *

### अनाजका कण्ट्रोल

कल अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें गांधीजीने अपने जो विचार जाहिर किये थे, अुनका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि अगर मेरे सुझाव पर अमल किया जायगा, तो २४ घण्टेके अन्दर अनाजकी तंगी काफी हद तक दूर हो जायगी। विशेषज्ञ मेरे अिस सुझावसे सहमत हैं या नहीं, यह अलग बात है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ७–१०–'४७
हरिजनसेवक, १९–१०–१९४७

## ३६

## खुराककी तंगी

प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें गांधीजीने कहा: खुराकके सम्बन्धमें मैं कहूंगा कि आजका कण्ट्रोल और रेशनिंगका तरीका अस्वाभाविक और व्यापारके अुसूलोंके खिलाफ है। हमारे पास अुपजाअू जमीनकी कमी नहीं है, सिंचाअीके लिअे काफी पानी है और काम करनेके लिअे काफी आदमी हैं। अैसी हालतमें खुराककी तंगी क्यों होनी चाहिये? जनताको अपने-आप पर निर्भर रहनेका पाठ पढ़ाना चाहिये। अेक बार जब लोग यह समझ लेंगे कि अुन्हें अपने ही पांवों पर खड़े रहना है, तो सारे वातावरणमें अेक बिजली-सी दौड़ जायगी। यह मशहूर बात है कि असल बीमारीसे जितने लोग नहीं मरते,

अुससे कहीं ज्यादा अुसके डरसे मर जाते हैं। मैं चाहता हूं कि आप अकालके संकटका सारा डर छोड़ दें। लेकिन शर्त यही है कि आप अपनी जरूरतें खुद पूरी करनेका स्वाभाविक कदम अुठायें। मेरा पक्का विश्वास है कि खुराक परसे कण्ट्रोल अुठा लेनेसे देशमें अकाल नहीं पड़ेगा और लोग भुखमरीके शिकार नहीं होंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १०–१०–'४७
हरिजनसेवक, १९–१०–१९४७

## ३७

# कण्ट्रोल हटा दिया जाय

डॉ० राजेन्द्रप्रसादने जो कमेटी कायम की थी, अुसने अपना सलाह-मशविरा खतम कर दिया है। अुसे सिर्फ अन्नकी समस्या पर ही विचार करना था। लेकिन मैंने कुछ समय पहले यह कहा था कि अनाज और कपड़ा दोनों परसे जल्दी-से-जल्दी कण्ट्रोल हटा दिया जाय। लड़ाअी खतम हो चुकी। फिर भी कीमतें अूपर जा रही हैं। देशमें अनाज और कपड़ा दोनों हैं। फिर भी वे लोगों तक नहीं पहुंचते। यह बड़े दुःखकी बात है। आज सरकार बाहरसे अनाज मंगाकर लोगोंको खिलानेकी कोशिश कर रही है। यह कुदरती तरीका नहीं है। अिसके बजाय, लोगोंको अपने ही साधनोंके भरोसे छोड़ दिया जाय। सिविल सर्विसके कर्मचारी आफिसोंमें बैठकर काम करनेके आदी हैं। वे दिखावटी कार्रवाअियों और फाअिलोंमें ही अुलझे रहते हैं। अुनका काम अिससे आगे नहीं बढ़ता। वे कभी किसानोंके संपर्कमें नहीं आये। वे किसानोंके बारेमें कुछ नहीं जानते। मैं चाहता हूं कि वे नम्र बनकर राष्ट्रमें जो परिवर्तन हुआ है अुसे पहचानें। कण्ट्रोलोंकी वजहसे अुनके अिस तरहके कामोंमें कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये। अुन्हें अपनी सूझ-बूझ पर निर्भर रहने दिया जाय। लोकशाहीका यह नतीजा नहीं होना चाहिये कि वे अपने-आपको लाचार महसूस करें। मान लीजिये कि अिस बारेमें बड़े-से-बड़े डर सच साबित हों और कण्ट्रोल हटानेसे हालत ज्यादा बिगड़ जाय, तो वे फिर कण्ट्रोल लगा सकते हैं। मेरा अपना तो यह विश्वास है कि कण्ट्रोल अुठा देनेसे हालत सुधरेगी। लोग खुद

अिन सवालोंको हल करनेकी कोशिश करेंगे और अुन्हें आपसमें लड़नेका समय नहीं मिलेगा।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १७–१०–'४७
हरिजनसेवक, २६–१०–१९४७

## ३८

## अनाजका कण्ट्रोल हटा दीजिये

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा: डॉ० राजेन्द्रप्रसादने प्रांतोंके प्रधान मंत्रियों या अुनके प्रतिनिधियों और दूसरे जानकार लोगोंकी मीटिंग अिसलिअे बुलाअी है कि वे लोग अुन्हें अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें मदद और सलाह दे सकें। मुझे लगता है कि आज शामको मैं अिसी बड़े महत्त्वके विषय पर बोलूं। अिन दिनों मैंने जो कुछ सुना है, अुससे मैं अपनी शुरूसे ही बनी हुअी अिस रायसे तिलभर भी नहीं हटा हूं कि कण्ट्रोल पूरी तरह जल्दीसे जल्दी हटा दिये जायं। अगर वे रखे भी जायं तो ६ माहसे ज्यादा तो हरगिज न रखे जायं। अेक दिन भी अैसा नहीं जाता, जब मेरे पास अिस बारेमें पत्र और तार न आते हों। अुनमें से कुछ तो बहुत महत्त्वके लोगोंके होते हैं। सभीमें अिस बात पर जोर दिया जाता है कि अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटा दिया जाय। मैं दूसरे यानी कपड़ेके कण्ट्रोलको फिलहाल छोड़ देता हूं।

### कण्ट्रोल बुराअी पैदा करता है

कण्ट्रोलसे धोखेबाजी बढ़ती है, सत्यका गला घोंटा जाता है, कालाबाजार खूब बढ़ता है और चीजोंकी बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि कण्ट्रोल लोगोंको बुजदिल बनाता है, अुनके काम करनेके अुत्साहको खतम कर देता है। अिससे लोग अपनी जरूरतें खुद पूरी करनेकी सीखको भूल जाते हैं, जिसे वे अेक पीढ़ीसे सीखते आ रहे हैं। कण्ट्रोल अुन्हें हमेशा दूसरोंका मुंह ताकना सिखाता है। अिस दुःखभरी बातसे बढ़कर अगर कोअी दूसरी बात हो सकती है, तो वह है बड़े पैमाने पर चलनेवाली आजकी भाअी-भाअीकी हत्या और लाखोंकी आबादीकी पागलपन भरी अदला-बदली। अिस अदला-बदलीसे लोग बिला जरूरत मरते हैं, अुन्हें भूखों मरना पड़ता है, रहनेको ठीक घर नहीं मिलते और खासकर आनेवाले तेज जाड़ेसे बचनेके लिअे

पहनने-ओढ़नेको ठीक कपड़े मयस्सर नहीं होते। यह दूसरी दुःखभरी बात सचमुच ज्यादा बड़ी दिखाओ देती है। लेकिन हम पहली यानी कण्ट्रोलकी बातको अिसीलिअे नहीं भुला सकते कि वह अितनी बढ़ी-चढ़ी नहीं दिखाओ देती।

पिछली लड़ाओसे हमें जो बुरी विरासतें मिलीं, खुराकका कण्ट्रोल अुन्हींमें से अेक है। अुस समय कण्ट्रोल शायद जरूरी था, क्योंकि बहुत बड़ी मात्रामें अनाज और दूसरी खानेकी चीजें हिन्दुस्तानसे बाहर भेजी जाती थीं। अिस अस्वाभाविक निर्यातका लाजिमी नतीजा यही होना था कि देशमें अनाजकी तंगी पैदा हो। अिसलिअे बहुतसी बुराअियोंके रहते हुअे भी रेशनिंग जारी करना पड़ा। लेकिन अब हम चाहें तो अनाजका निर्यात बन्द कर सकते हैं। अगर हम अनाजके मामलेमें हिन्दुस्तानके लिअे बाहरी मददकी अुम्मीद न करें, तो हम दुनियाके भूखों मरनेवाले देशोंकी मदद कर सकेंगे।

मैंने अपने दो पीढ़ियोंके लम्बे जीवनमें बहुतसे कुदरती अकाल देखे हैं। लेकिन मुझे याद नहीं आता कि कभी रेशनिंगका खयाल भी किया गया हो।

भगवानकी दया है कि अिस साल बारिश अच्छी हुओ है। अिसलिअे देशमें खुराककी सच्ची कमी नहीं है। हिन्दुस्तानके गांवोंमें काफी अनाज, दालें और तिलहन हैं। कीमतों पर जो बनावटी कण्ट्रोल रखा जाता है, अुसे अनाज पैदा करनेवाले किसान नहीं समझते — वे समझ नहीं सकते। अिसलिअे वे अपना अनाज, जिसकी कीमत अुन्हें खुले बाजारमें ज्यादा मिल सकती है, कंट्रोलकी अितनी कम कीमतों पर खुशीसे बेचना पसन्द नहीं करते। अिस सचाओको आज सब कोओ जानते हैं। अनाजकी तंगी साबित करनेके लिअे न तो लम्बे-चौड़े आंकड़े अिकट्ठे करनेकी जरूरत है और न बड़े-बड़े लेख और रिपोर्टें निकालना जरूरी है। हम आशा रखें कि कोओ देशकी जरूरतसे ज्यादा बढ़ी हुओ आबादीका भूत दिखाकर हमें डरायेगा नहीं।

## अनुभवी लोगोंकी सलाह

हमारे मंत्री जनताके हैं और जनतामें से हैं। अुन्हें अिस बातका घमण्ड नहीं करना चाहिये कि अुनका ज्ञान अुन अनुभवी लोगोंसे ज्यादा है, जो मंत्रियोंकी कुर्सियों पर तो नहीं बैठे हैं, लेकिन जिनका यह पक्का विश्वास है कि कंट्रोल जितनी जल्दी हटे अुतना ही देशका फायदा होगा। अेक वैद्यने लिखा है कि अनाजके कंट्रोलने अुन लोगोंके लिअे, जो रेशनके खाने पर निर्भर करते हैं, खाने

लायक अनाज और दाल पाना असंभव बना दिया है। अिसलिअे सड़ा-गला अनाज खानेवाले लोग गैर-जरूरी तौर पर बीमारियोंके शिकार बनते हैं।

### लोकशाही और विश्वास

आज जिन गोदामोंमें कंट्रोलका सड़ा-गला अनाज बेचा जाता है, अुन्हींमें सरकार आसानीसे अच्छा अनाज बेच सकती है, जो वह खुले बाजारमें खरीदेगी। अैसा करनेसे कीमतें अपने-आप ठीक हो जायंगी और जो अनाज, दालें या तिलहन लोगोंके घरोंमें छिपे पड़े हैं वे सब बाहर निकल आयेंगे। क्या सरकार अनाज बेचनेवालों और पैदा करनेवालोंका विश्वास नहीं करेगी? अगर लोगोंको कानून-कायदेकी रस्सीसे बांधकर अीमानदार रहना सिखाया जायगा तो लोकशाही टूट पड़ेगी। लोकशाही विश्वास पर ही कायम रह सकती है। अगर लोग आलसके कारण या अेक-दूसरेको धोखा देनेके कारण मरते हैं, तो अुनकी मौतका स्वागत किया जाय। फिर बचे हुअे लोग आलस, सुस्ती और निर्दय स्वार्थके पापको नहीं दोहरायेंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ३–११–'४७
हरिजनसेवक, १६–११–१९४७

## ३९

## कंट्रोल हटा दिये जायं

गांधीजीने प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें कहा: खुराक-मंत्रीने गैर-सरकारी लोगोंकी जो कमेटी बनाअी थी, अुसने अपनी रिपोर्ट अुनके सामने पेश कर दी है। अुस कमेटीकी सिफारिशों पर कोअी फैसला करनेमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादको मदद देनेके लिअे प्रान्तोंके जो मंत्री या अुनके प्रतिनिधि दिल्ली आये थे अुनसे मैं मिला था। जब मैंने अिस मीटिंगके बारेमें सुना तो मैंने डॉ० राजेन्द्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे अुन लोगोंके सामने अपनी बात रखनेका मौका दें, ताकि मैं अुनके शकोंको दूर कर सकूं। क्योंकि मुझे अिसका पूरा विश्वास है कि अनाजका कंट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डॉ० राजेन्द्रप्रसादने तुरन्त मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मंत्रियों या अुनके प्रतिनिधियोंके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोंसे मिलकर बड़ी खुशी हुअी। मैं यह कहता रहा हूं कि जहां तक साम्प्रदायिक

झगड़ोंके बारेमें मेरी रायका सम्बन्ध है, आज अुसे कोअी नहीं मानता। लेकिन यह कह सकनेमें मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवाल पर मेरी रायके बारेमें अैसी बात नहीं है। जब बंगालके गवर्नर मि० केसीसे मैं कअी बार मिला, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिन्दुस्तानमें अनाज या कपड़े पर कण्ट्रोल रखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। अुस समय मुझे यह मालूम नहीं था कि मुझे लोगोंका समर्थन प्राप्त है या नहीं। लेकिन हालकी चर्चाओंमें यह जानकर अचरज हुआ कि मुझे जनताके जाने और अनजाने मेम्बरोंका बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमें मेरे पास जो बेशुमार पत्र आते हैं, अुनमें मुझे अेक भी पत्र अैसा याद नहीं आता, जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय बताअी हो। मैं श्री घनश्यामदास बिड़ला और लाला श्रीराम जैसे बड़े-बड़े लोगोंकी राय नहीं जानता, न मैं यही जानता हूं कि अिस बारेमें मुझे समाजवादी पार्टीका समर्थन मिलेगा या नहीं। हां, जब डॉ० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो अुन्होंने अनाजका कंट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा-पूरा समर्थन किया। मुझे यह कहनेमें कोअी हिचकिचाहट नहीं होती कि आज देशको अनाजकी जिस तंगीका सामना करना पड़ रहा है, अुसमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादका मार्गदर्शन अुनकी कमेटीके अेक या ज्यादा मेम्बर करें, न कि अुनका स्थायी स्टाफ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ६–११–'४७
हरिजनसेवक, १६–११–१९४७

## ४०

# कंट्रोल हटानेकी तारीफमें

[अनाजके कंट्रोलको हटानेके बारेमें अेक भाअीने बड़ा लम्बा लेख मेरे पास भेजा था। अुसमें से कुछ हिस्से नीचे दिये जाते हैं। — **मो० क० गांधी**]

"रेशनको $1\frac{1}{4}$ पौंडसे घटाकर $\frac{3}{4}$ पौंड कर देनेसे सरकारने और बड़ा कुचक्र पैदा कर दिया है। रेशन जितना ज्यादा घटाया जाता है, अुतना ही ज्यादा किसान छिपे तौर पर अनाज जमा करता है। वह जानता है कि रेशन जितना कम होगा, अुतनी ही कालेबाजारकी मांग बढ़ेगी और अुतनी ही ज्यादा अुसकी आमदनी भी बढ़ेगी। वह

छिपाकर अनाज अिकट्ठा करेगा और सरकारको अनाजकी पैदावारके सच्चे आंकड़े नहीं मिलेंगे। कम पैदावारके आंकड़े सरकारी विभागमें बेचैनी पैदा करेंगे तथा सरकार और ज्यादा रेशन घटानेकी बात सोचेगी। अिस तरह सरकार अपने आपको चिन्तामें डालती है और सारे देशको भी चिन्तामें डुबोती है। अिस तरह यह कुचक्र चलता ही रहता है!

*  *  *

"अगर हम अिस बात पर सोचें कि हम कितना अनाज बाहरसे मंगाते हैं और कितना अनाज गोदामोंमें सड़ता है और फेंक दिया जाता है, तो हमें मालूम होगा कि बाहरसे मंगाये जानेवाले अनाजसे ज्यादा अनाज हम बरबाद कर देते हैं। अिसलिअे हमें विदेशोंसे अनाज नहीं मंगाना चाहिये। हमें बरबादी कम करनी चाहिये — रोकनी चाहिये।

"अगर मामूली वक्तकी तरह अनाज खुले बाजारमें आजादीसे बेचा जाय, तो क्या कोअी गृहिणी अनाजका अेक दाना भी बिगड़ने और बरबाद होने देगी? वह अुसकी देखभाल करेगी, अुसे साफ करेगी, सावधानीसे अुसे जमा करेगी, समय-समय पर अुसे देखती रहेगी और अैसा प्रबन्ध करेगी कि बिगड़कर अनाजका अेक भी दाना फेंकनेकी नौबत न आने पाये। अगर हम अिस चीजकी तुलना सरकारकी नीतिसे और अुसके अनाज अिकट्ठा करनेके प्रबन्धसे करें, तो हमें यह समझमें नहीं आता कि हमारे बड़े-बड़े नेता, जो आज हम पर राज कर रहे हैं और जनतामें से चुने गये हैं, सारे देशमें बरते जानेवाले अनाजकी देखभालके तरीकेको क्यों नहीं जानते और वे अुस सादे और व्यावहारिक तरीकेको काममें लेनेके बजाय आजका बरबादीवाला तरीका क्यों काममें लेते हैं? अंग्रेजोंने खास कारणोंसे हमारे लिअे जो जाल तैयार किया था, अुसमें हमारे नेता क्यों फंसे रहते हैं? वे ये सब बातें साफ-साफ क्यों नहीं समझते? सरकारी अफसर अनाजकी पैदावारके जो आंकड़े अुनके सामने रख देते हैं, जो कभी-कभी न तो पूरे होते हैं और न सही, अुनके अनुसार वे क्यों काम करते हैं?

*  *  *

"छह बरस पहले हमारे यहां अनाजकी जो सालाना पैदावार होती थी, अुससे आजकी पैदावार कम नहीं है। तबसे अब तक आबादीमें जो बढ़ती हुअी है, वह भी ज्यादा नहीं है। रेशनिंगवाले हिस्सेमें जो आबादीकी झूठी बढ़ती दिखाअी पड़ती है, वह कुछ हद तक जाली रेशनकार्डोंकी वजहसे है। लड़ाअीके दिनोंमें बहुतसा अनाज फौजको दिया जाता था, जिसमें से कुछ अनाज तो बरबाद हो ही जाता था। मध्यपूर्वको भी हिन्दुस्तानसे अनाज भेजा गया था। आज ये हालतें हमारे यहां नहीं हैं। तब जनताको सवा पौंड रोजानाके हिसाबसे रेशन दिया जाता था। अिस तरह जान पड़ता है कि अुस समय हमारे यहां आजकी अपेक्षा ज्यादा अनाज स्टॉकमें था। छह साल पहले लोग अपने-अपने घरोंमें अपनी हैसियतके मुताबिक अपनी जरूरतकी चीजोंका १५ दिनसे लगाकर दो साल तकका स्टॉक जमा करके रखते थे। हर गांवमें पुराने रिवाजके अनुसार बखारोंमें अनाज जमा करके रखा जाता था। हर व्यापारी, चाहे वह देहातका हो चाहे शहरका, अपने पास अनाजका बड़ा स्टॉक रखता था। जहां कहीं भी हम गये, हमने अनाजसे खचाखच भरे गोदाम देखे। ढेरों अनाज था। वह सब कहां गया? सारे देशसे वह गायब क्यों हो गया? सभी जगह लोग अकालकी चर्चा क्यों करते हैं? आज न जनताके पास, न व्यापारीके पास और न सरकारके पास कोअी स्टॉक है। अगर पैदावार कम है, तो स्वभावतः अनाज बाहर नहीं भेजा जा सकता। तब वह देशमें ही कहीं न कहीं रखा हुआ होना चाहिये। अुसे बाहर कैसे लाया जा सकता है? लोगोंमें कांग्रेसकी आलोचना करनेकी वृत्ति पैदा हो गयी है। अुनके अैसा करनेका कोअी सही कारण जरूर होना चाहिये। अुनके बदले हुअे रुखकी अुपेक्षा नहीं करना चाहिये। कांग्रेस, जिसके हाथमें आज हुकूमत है, मौजूदा कार्य-प्रणालीके दोषोंके कारण जनताको वह सब देनेमें असमर्थ है, जो दरअसल देशमें आज मिल सकता है। जनता नाराज है और अपना स्वार्थ साधनेवाली पार्टियां अिस हालतसे फायदा अुठाकर कांग्रेसको बदनाम कर रही हैं। सिर्फ कांग्रेस ही अैसी संस्था है, जो देशमें शान्ति बनाये रख सकती है। अगर वह अेक बार भी जनता परसे अपना काबू खो बैठे,

तो आनेवाले तूफानको टालना अुसके लिअे असम्भव नहीं तो बहुत मुश्किल जरूर हो जायगा। अगर मौजूदा हालतमें सुधार नहीं हुआ और अिसी तरह अुसे दिनोंदिन बिगड़ने दिया गया, तो संभव है कांग्रेसका जनता पर काबू न रह जाय।"

हरिजनसेवक, २३–११–१९४७

## ४१

## कण्ट्रोलका सवाल

प्रार्थना-सभामें भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा : मैं आपको थोड़ी देर और रोकूंगा, ताकि कण्ट्रोलके सवाल पर आपसे कुछ कहूं। अिस सवाल पर आजकल खूब चर्चा हो रही है। क्या अुन पंडितोंके शोरमें, जो कण्ट्रोलके बारेमें सब कुछ जाननेका दावा करते हैं, जनताकी आवाज डूब जायगी? हमारे मंत्री, जो कि जनतामें से चुने गये हैं और जनताके हैं, अच्छी तरह जानते हैं कि अिन दफ्तरी निष्णातोंने सविनय अवज्ञा-आन्दोलनके दिनोंमें अुन्हें कितना बड़ा नुकसान पहुंचाया है। कितना अच्छा हो अगर वे आज अिन पंडितोंकी बात सुननेके बजाय जनताकी आवाजको सुनें। अुन दिनों अिन पंडितोंने पूरी कड़ाअीसे हुकूमत की थी। क्या आज भी अुन्हें अैसा ही करना चाहिये? क्या लोगोंको गलतियां करने और अुनसे सबक सीखनेका कोअी मौका नहीं दिया जायगा? क्या मंत्री यह नहीं जानते कि अुन नमूनोंमें से, जो मैं नीचे दे रहा हूं, अगर किसी अेक अुदाहरणमें भी कण्ट्रोल हटानेसे जनताको नुकसान पहुंचे, तो वे अितनी ताकत रखते हैं कि अुस पर फिरसे कण्ट्रोल लगा दें?

कण्ट्रोलोंकी जो सूची मेरे सामने है, अुससे मेरे जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। अुनमें से कुछमें अच्छाअी हो सकती है। मैं तो सिर्फ अितना ही कहता हूं कि अगर कण्ट्रोलोंकी साअिन्स नामकी कोअी चीज है, तो अुसे ठंडे दिलसे जांचना होगा। अुसके बाद लोगोंको अिस बातकी शिक्षा देनी होगी कि सब चीजों पर कण्ट्रोलका क्या अर्थ है और खास-खास चीजों पर कण्ट्रोलका क्या अर्थ है। जो सूची मुझे मिली है अुसके गुणोंकी जांच किये बगैर अुसमें से कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूं : अेक्सचेंज पर, व्यापारमें

रुपया लगाने पर, केपिटल अिश्योरेंस पर, बैंकोंकी शाखाअें खोलने पर, अिश्योरेंसमें पैसा लगाने पर, मुल्कके बाहर जाने और अन्दर आनेवाली हर तरहकी चीजों पर, अनाज पर, चीनी पर, गुड़, गन्ना और शर्बत पर, वनस्पति पर, कपड़े पर (जिसमें गरम कपड़ा भी शामिल है), पावर अल्कोहॉल पर, पेट्रोल और मिट्टीके तेल पर, कागज पर, सीमेंट पर, फौलाद पर, भोडल पर, मेंगेनीज पर, कोयले पर, चीजोंके अिधर-अुधर ले जाने पर, मशीनरी लगाने और फैक्टरी खोलने पर, कुछ प्रान्तोंमें मोटरें बेचने पर और चायकी खेती पर।

गांधीजीने कहा : जब तक देशमें अनाजकी तंगीकी भावना बनी रहेगी, तब तक हिन्दुस्तानके हर अमीर और गरीब नागरिकसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वह जरूरतसे ज्यादा अनाज काममें न ले। जब कण्ट्रोल हटा दिया जायगा तब स्वभावतः यह आशा की जायगी कि अनाज पैदा करनेवाले अपनी मरजीसे अनाज जमा करना छोड़ देंगे और जनताको अुचित दामों पर अपने पासका अनाज और दालें देंगे। अनाज बेचनेवालोंसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वे अेकसा और अुचित मुनाफा लेकर सस्ते-से-सस्ते दामोंमें अनाज बेचनेका ज्यादा ध्यान रखेंगे और सरकारसे यह आशा रखी जायगी कि वह अनाजके कण्ट्रोलको धीरे-धीरे ढीला करेगी और अन्तमें जल्दी-से-जल्दी अुसे हटा देगी।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १७ व १८–११–'४७
हरिजनसेवक, ३०–११–१९४७

## ४२

## सरकारकी दुविधा

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणके अन्तमें गांधीजीने कहा : अब मैं कण्ट्रोलोंके हटानेके बारेमें, खासकर अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटानेके बारेमें, चर्चा करूंगा। सरकार कण्ट्रोल हटानेमें हिचकिचाती है, क्योंकि अुसका खयाल है कि देशमें अनाज और कपड़ेकी सच्ची तंगी है। अिसलिअे अगर कण्ट्रोल हटा दिया गया, तो अिन चीजोंके दाम बहुत बढ़ जायंगे। अिससे गरीबोंको बड़ा नुकसान होगा। गरीब जनताके बारेमें सरकारका यह खयाल है कि वह कण्ट्रोलोंके जरिये ही भुखमरीसे बच सकती है और तन ढंकनेको कपड़ा पा

सकती है। सरकारको व्यापारियों, अनाज पैदा करनेवालों और दलालों पर शक है। अुसे डर है कि ये लोग कण्ट्रोलोंके हटनेका बाजकी तरह रास्ता देख रहे हैं, ताकि गरीबोंको अपना शिकार बनाकर बेअीमानीसे कमाये हुअे पैसेसे अपनी जेबें भर सकें। सरकारके सामने दो बुराअियोंमें से किसी अेकको चुननेका सवाल है। अुसका खयाल है कि मौजूदा कण्ट्रोलोंको हटानेके बदले अुन्हें बनाये रखना कम बुरा है।

### व्यापारियोंसे अपील

अिसलिअे मैं व्यापारियों, दलालों और अनाज पैदा करनेवालोंसे अपील करता हूं कि वे अपने प्रति किये जानेवाले अिस शकको मिटा दें और सरकारको यह विश्वास दिला दें कि अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटानेसे कीमतें अूंची नहीं चढ़ेंगी। कण्ट्रोल हटानेसे कालाबाजार और बेअीमानी जड़से भले ही न अुखाड़ी जा सके, लेकिन अिससे गरीबोंको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २२–११–'४७
हरिजनसेवक, ३०–११–१९४७

## ४३

## कण्ट्रोल

कण्ट्रोलकी बात करते हुअे गांधीजीने प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें कहा: चीनी परसे कण्ट्रोल अुठ गया है। मुझे आशा है कि कपड़े और खुराक पर से भी अुठ जायेगा। तब हमारा धर्म क्या होगा? चीनीके बड़े-बड़े कारखाने हैं। चीनी परसे कण्ट्रोल अुठनेका यह अर्थ नहीं होना चाहिये कि अिन कारखानोंके मालिक जितने पैसे लोगोंसे छीन सकते हैं छीन लें। हिन्दुस्तानके अधिकतर लोग गुड़ खाते हैं। गुड़ देहातोंमें बनता है। वह खानेमें स्वादिष्ट होता है। मगर चायमें लोग गुड़ नहीं डालते। अगर चीनीके दाम खूब बढ़ जायें, तो आम लोग चीनी नहीं खा सकेंगे। चीनीके कारखाने चंद लखपतियोंके हाथमें हैं। अुन्हें निश्चय करना चाहिये कि आजाद हिन्दुस्तानमें तो वे शुद्ध कौड़ी ही कमायेंगे। व्यापारमें जितनी सड़ांध है अुसे दूर करेंगे। मान लीजिये कि चीनीका दाम अेकदम बढ़ जाता है, तो अुसका अर्थ

यह होगा कि कल तक जो व्यापारी १०% नफा लेता था, वह आज ५०% लेने लगा है। मेरी समझमें तो ५% से ज्यादा नफा लेना ही नहीं चाहिये। कण्ट्रोल अुठनेसे चीनीके दाम बढ़नेका डर सिद्ध न हो, तो दूसरे अंकुश अपने-आप निकल जायंगे। गन्ना किसान बोता है। अुसे तो पूरा दाम मिलना ही चाहिये। लेकिन अिस कारणसे चीनीके दाम बहुत ज्यादा नहीं बढ़ सकते। व्यापारी अपना हिसाब साफ रखे। वह साफ बता दे कि अितना नफा किसानकी जेबमें गया। अुसकी जेबमें ५% से अधिक नहीं गया। चीनीके कारखानोंके मालिकोंके बाद छोटे व्यापारी रहते हैं। वे अगर बेहद दाम बढ़ा दें, तो भी जनता मर जाती है। तो अुन्हें भी अीमानदारीसे व्यापार करना है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २९–११–'४७
हरिजनसेवक, ७–१२–१९४७

## ४४

## कण्ट्रोल

गांधीजीने कहा: आजकल यह बात चल रही है कि कपड़ेका और खुराकका अंकुश छूट जानेवाला है। सब कहते हैं अच्छा है, जल्दी छूटे। मगर छूटने पर हमारा फर्ज क्या होगा? व्यापारियोंका फर्ज क्या होगा? अंकुश छूटने पर सब कुछ अुनके हाथोंमें रहेगा। तो क्या वे लोगोंको लूटना शुरू कर देंगे? अगर अंकुश छूटता है, तो अुसमें मेरा भी हाथ है। मैंने अितना प्रचार किया है। मगर मैं यह भी कहूंगा कि सरकारको जो चीज नहीं जंचती, अुसे वह कर नहीं सकती। मैं नहीं चाहता कि वह अैसा करे। मैं तो तर्क कर लेता हूं कि आज अगर १० मन अन्न है, तो अंकुश अुठने पर २० मन हो जायगा। जिसे लोग दबाकर बैठ गये हैं, वह सब बाहर आ जायगा। आज किसानोंको पूरे दाम नहीं मिलते हैं, अिसलिअे वे अन्न नहीं निकालते। सरकार जबरदस्तीसे निकाल सकती है; निकाल रही है। व्यापारी लोग पुरानी हुकूमतमें मनमाने दाम लेते थे। लोगोंको लूटते थे। अब अुन्हें अेक कौड़ी भी अिस तरह लेना पाप समझना चाहिये। मुझे आशा है कि किसान अन्न बाहर निकालेंगे और व्यापारी शुद्ध कौड़ी

कमायेंगे। तब सबको खाना-कपड़ा मिल जायगा। अगर कुछ कमी रहेगी, तो लोग अपने-आप कम हिस्सा लेंगे। मैं यह नहीं चाहता कि अंकुश अुठनेसे लोग भूखों मरने लगें। अगर लोग अपना फर्ज नहीं समझते, खुद अपने पर अंकुश नहीं लगाते, तो हमारी सरकारको हट जाना होगा। व्यापारी अगर अपना ही पेट भरें, दूसरोंको मरने दें, तो हमारी सरकार रहकर क्या करे? क्या वह नफाखोरोंको गोलीसे अुड़ा दे? अैसी ताकत हमारे पास नहीं है। हमारी ३०–४० सालकी तालीम अिससे अुलटी रही है। गोली चलाकर राज्य चल नहीं सकता। वह राज्य खोनेका रास्ता है। आशा तो यह है कि अंकुश अुठाने पर लोग साफ दिलसे सरकारकी सेवा करेंगे। सरकार सब कुछ खुद ही करना चाहे, तो वह कर नहीं सकती। वह पंचायत-राज्य नहीं होगा, रामराज्य नहीं होगा। लोग खुद अपने पर अंकुश रखें, ताकि सरकार और सिविल सर्विसवाले कहें कि अंकुश अुठाया तो अच्छा ही हुआ। आज तो सिविल सर्विसवाले कहते हैं कि गांधी क्या समझे? अंकुश अुठनेसे कीमतें अितनी बढ़ जायंगी कि लोगोंको भूखे और नंगे रहना होगा। मैं अैसा बेवकूफ नहीं। मैं सिविल सर्विसमें नहीं गया, हुकूमत मैंने नहीं चलाअी, मगर लाखों-करोड़ों लोगोंको पहचानता हूं। अुस परसे मैं कह सकता हूं कि क्या होना चाहिये। कण्ट्रोल अुठनेसे अगर कालाबाजार बन्द हो गया, तो सबका डर निकल जायगा।

कपड़ेका कण्ट्रोल निकालना और भी आसान है। अपने लिअे पूरी खुराक पैदा कर सकनेके बारेमें शक है। मगर किसीने यह नहीं कहा कि हम अपने लिअे पूरे कपड़े नहीं बना सकते। हमारे पास हमारी जरूरतसे ज्यादा कपास होती है, मगर मिल तो आप सबके घरमें पड़ी है। अीश्वरने आपको दो हाथ दिये हैं। चरखा चलाअिये। लोग कातें और कपड़ा पहनें। कपासको बाहर बेचना सरकार रोक सकती है। मिलोंका कब्जा भी ले सकती है। मगर मिलोंका कपड़ा जिस हद तक कम पड़ता है, अुतना तो हम कात लें और बुन लें। जुलाहे तो बहुत पड़े हैं, मगर अुन्हें मिलका सूत बुननेका शौक हो गया है। आज लाचारीकी हालतमें तो हम हाथका सूत बुनें। फिर भले सब मिलें जल जायं, तो भी यहां कपड़ेकी कमी नहीं होनी चाहिये। कपड़े पर अंकुश रखना अज्ञानकी सीमा है। मैं तो अनाजके अंकुशको भी मूर्खता मानता हूं। जैसे ही अंकुश अुठेगा, किसान कहेंगे कि

हम तो लोगोंके लिअे बोते हैं। कोअी कारण नहीं कि जहां आज आधा सेर अनाज अुगता है, वहां कल पूरा अेक सेर न अुग सके। मगर अुपज बढ़ानेके तरीके हमें किसानोंको सिखाने हैं। अुसके साधन अुन्हें देने हैं। अगर सरकारकी सारी मशीन अुधर लग जाय, तो फिर न किसीको भूखे रहनेकी जरूरत है, न नंगे रहनेकी। हमारे यहां आज पूरा अन्न नहीं, पूरा दूध नहीं, पूरा कपड़ा नहीं! यह सब हमारे अज्ञानके कारण है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ५–१२–'४७
हरिजनसेवक, १४–१२–१९४७

## ४५

# फिर कंट्रोलके बारेमें

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा: चीनी परसे अंकुश अुठ गया है। अन्न परसे, दालों परसे और कपड़े परसे जल्दी ही अुठ जायगा। अंकुश अुठानेका मूल हेतु यह नहीं है कि कीमतें अेकदम कम हों। आज तो असल हेतु यह है कि हमारा जीवन स्वाभाविक बने। अूपरसे लादा हुआ अंकुश हमेशा बुरा होता है। हमारे देशमें वह और भी बुरा है, क्योंकि हमारी करोड़ोंकी आबादी है और वह अेक विशाल देशमें फैली हुअी है, जो १९०० मील लम्बा और १५०० मील चौड़ा है। यहां देशके बंटवारेको सामने रखनेकी जरूरत नहीं। हम फौजी राष्ट्र नहीं हैं। हम अपनी खुराक खुद पैदा करते हैं, या यों कहिये कि कर सकते हैं; और हमारी जरूरतके लिअे काफी कपास पैदा करते हैं। जब अंकुश अुठ जायेगा, तो लोग आजादी महसूस करेंगे। अुन्हें गलतियां करनेका अधिकार रहेगा। यह प्रगतिका पुराना सही तरीका है: आगे बढ़ना, गलतियां करना और अुन्हें सुधारते जाना। किसी बच्चेको रुअीमें लपेटकर ही रखा जाये, तो या तो वह मर जायगा या बढ़ेगा ही नहीं। अगर आप चाहते हैं कि वह तगड़ा आदमी बने, तो आपको अुसे सिखाना होगा कि वह सब किस्मके मौसमको बरदाश्त कर सके। अिसी तरह सरकार अगर सरकार कहलानेके लायक

है, तो अुसे लोगोंको सिखाना है कि कमीका सामना कैसे किया जाय। अुसे लोगोंको बुरे मौसमका और जीवनकी दूसरी कठिनाअियोंका अपने संयुक्त प्रयत्नसे सामना करना सिखाना है। बिना अपनी मेहनतके जैसे-तैसे अुन्हें जिन्दा रखनेमें मदद नहीं करना है।

### कण्ट्रोल हटानेका मतलब

अिस तरह देखा जाय तो अंकुश हटानेका अर्थ यह है कि सरकारके चन्द लोगोंकी जगह करोड़ोंको दूरन्देशी सीखना है। सरकारको जनताके प्रति नयी जिम्मेदारियां अुठानी होंगी, ताकि वह जनताके प्रति अपना फर्ज पूरा कर सके। गाड़ियों वगैराकी व्यवस्था सुधारनी होगी। अुपज बढ़ानेके तरीके लोगोंको बताने होंगे। अिसके लिअे खुराक-विभागको बड़े जमींदारोंके बजाय छोटे-छोटे किसानोंकी तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा। सरकारको अेक तरफसे तो सारी जनताका भरोसा करना है, दूसरी तरफसे अुसके कामकाज पर नजर रखना है और हमेशा छोटे-छोटे किसानोंकी भलाअीका ध्यान रखना है। आज तक अुनकी तरफ कोअी ध्यान नहीं दिया गया, मगर करोड़ोंकी जनतामें बहुमत अिन्हीं लोगोंका है। अपनी फसलका अुपयोग करनेवाला भी किसान ही है। फसलका थोड़ासा हिस्सा वह बेचता है और अुसके जो दाम मिलते हैं, अुनसे जीवनकी दूसरी चीजें खरीदता है। अंकुशका परिणाम यह आया है कि किसानको खुले बाजारसे कम दाम मिलते हैं। अिसलिअे अंकुश अुठनेसे किसानको जिस हद तक अधिक दाम मिलेंगे, अुस हद तक खुराककी कीमत बढ़ेगी। खरीदारको अिसमें शिकायत नहीं होनी चाहिये। सरकारको देखना है कि नयी व्यवस्थामें कीमत बढ़नेसे जो नफा होगा, वह सबका सब किसानकी जेबमें जाय। जनताके सामने हर रोज या हर हफ्ते यह चीज स्पष्ट करनी होगी। बड़े-बड़े मिल-मालिकों और बीचके सौदागरोंको सरकारके साथ सहकार करना होगा और अुसके मातहत काम करना होगा। मैं समझता हूं कि यह काम आज हो रहा है। अिन चन्द लोगों और मंडलोंमें पूरा मेलजोल और सहकार होना चाहिये। आज तक अुन्होंने गरीबोंको चूसा है और अुनमें आपस-आपसमें भी स्पर्धा चलती आयी है। यह सब दूर करना होगा, खास करके खुराक और कपड़ेके बारेमें। अिन चीजोंमें नफा कमाना किसीका हेतु नहीं होना चाहिये। अंकुश अुठनेसे अगर लोग नफा कमानेमें सफल हो सके, तो अंकुश अुठानेका

हेतु निष्फल जायेगा। हम आशा रखें कि पूंजीपति अिस मौके पर पूरा सहकार देंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ८–१२–'४७
हरिजनसेवक, २१–१२–१९४७

## ४६

## देहातोंमें संग्रहकी जरूरत

श्री वैकुण्ठभाअी लिखते हैं:

"आजकलकी व्यापार-पद्धतिका परिणाम यह होता है कि देहातोंका अनाज परदेश चला जाता है। देशके बहुतसे हिस्सेमें गांवोंमें स्थानिक संग्रह नहीं रहता। परिणाममें मजदूर-वर्गको कष्ट अुठाना पड़ता है और चौमासेमें अनाजका भाव खूब बढ़ जाता है। अैसी हालतमें यह अच्छा होगा कि गरीब प्रजाको बचानेके लिअे देहातमें ही पंचायतके कब्जेमें किसी अच्छे गोदाममें काफी मात्रामें अन्न अिकट्ठा किया जाय और वहींसे जहां भेजना हो भेजा जाय। अिस दृष्टिसे चार साल पहले श्री अच्युतराव पटवर्धनने और मैंने अेक योजना तैयार की थी। श्री कुमारप्पाने जो योजना बनायी है, अुसमें भी अुन्होंने अिस तरहकी व्यवस्थाकी जरूरत स्वीकार की है।

"आजके नये संजोगोंमें आपको ठीक लगे, तो आप प्रान्तीय सरकारोंको और देहाती प्रजाको अिस बारेमें कुछ सूचना कर सकते हैं।"

मुझे तो अिस सूचनामें बहुत सचाअी मालूम होती है। हमारे देशकी अर्थ-व्यवस्थाके लिअे अैसे संग्रहकी जरूरत है। जबसे नकद रकमके रूपमें लगान देनेकी प्रथा जारी हुअी, तबसे देहातोंमें अन्नका संग्रह कम हो गया है। यहां मैं नकद लगानके गुण-दोषोंमें अुतरना नहीं चाहता। मगर अितना मैं मानता हूं कि अगर देहातोंमें अन्न-संग्रह करनेकी प्रथा चालू होती, तो आजकी विपदासे शायद हम बच जाते। जब अंकुश अुठ रहे हैं, तब अगर वैकुण्ठभाअीकी सूचनाके अनुसार देहातमें अन्नका संग्रह हो और व्यापारी और देहाती अीमानदार बन जावें तो किसीको कष्ट नहीं होगा। अगर किसानको और व्यापारीको

अुचित नफा मिले, तो मजदूर-वर्ग और शहरके दूसरे लोगोंको महंगाअीका सामना करना ही न पड़े। मतलब तो यह है कि अगर सबके अनुकूल जीवन बन जाय, तो फिर सस्ते और महंगे भावका सवाल नहीं रहेगा।

नअी दिल्ली, २२–१२–'४७
हरिजनसेवक, २८–१२–१९४७

## ४७

## अंकुश हटानेका नतीजा

आज शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा : कहा जाता है कि खाने-पहननेकी चीजों पर जो अंकुश है वह जा रहा है। अुसका परिणाम मेरे सामने ब्रजकिशनजीने रख दिया है। मैंने सोचा कि आपके सामने भी वह रख दूं। पहले गुड़ रुपयेका अेक सेर मिलता था, अब आठ आने सेर मिलने लगा है। यह बड़ी बात है। कोअी कारण नहीं है कि अिससे भी कम दाम नहीं होने चाहिये। जब मैं लड़का था, तब तो अेक आनेका सेरभर गुड़ मिलता था। अिसी तरह जो शक्कर पहले ३४ रुपये मन थी, वह अब २४ रुपये मन हो गयी है। मूंग, अुड़द और अरहरकी दाल अेक रुपयेकी १४ छटांक मिलती थी, वह अब रुपयेकी डेढ़ सेर हो गयी है। अिसी तरह चना २४ रुपये मन था और अब १८ रुपये मन हो गया है। गेहूं कालेबाजारमें ३४ रुपये मन था, वह अब २४ रुपये मन हो गया है। यह सब मुझे अच्छा लगता है। मुझे लोग कहते थे कि 'आप अर्थशास्त्र नहीं जानते; भावकी चढ़-अुतर नहीं समझते। आप तो महात्मा ठहरे। आप कहते हैं कि अंकुश अुठा दो। मगर अुसका नतीजा भोगना पड़ेगा गरीबोंको। गरीबोंको मरना पड़ेगा।' मगर आज तो अैसा लगता है कि गरीबोंको मरना नहीं तरना है। बाजरे और मक्की परसे भी अंकुश अुठाना चाहिये। बहुतसे लोग वही खाते हैं। डॉ० राजेन्द्रप्रसादने कहा है कि धीरे-धीरे सब अंकुश अुठ जायंगे। अूपरके आंकड़ों परसे लगता है कि वे अुठने ही चाहिये। दियासलाअीके आज बड़े अूंचे दाम हैं। कंट्रोल अुठने पर वे जरूर गिरेंगे। आज तो दियासलाअीका बकस अेक आनेका अेक आता है। पहले अेक आनेके १२ मिलते थे। दाम अगर बढ़ने हैं, तो वे मेहनत करनेवालोंके घर जायं। मगर अिस कारणसे दाम बहुत नहीं बढ़ते।

बहुत दाम बढ़नेका कारण होता है तिजारत करनेका पाजीपन। हमने बहुत आपत्तियां सहन कीं। अब आजादी आ गयी। अब तो हम कहीं न कहीं शुद्ध काम करें। शुद्ध कौड़ी कमावें! दाम बढ़नेका डर अिसलिअे रहता है कि हम पाजी हैं, दगाबाज हैं, व्यापारी लोग शुद्ध कौड़ी कमाना नहीं जानते। यह सब कहते मुझे शर्म आती है। अैसी हालतमें पंचायत-राज कैसे कायम हो सकता है? हम सबको सिविल सर्विसके सिपाही बनना है। हम लोगोंके लिअे ही जिन्दा रहें, तो हमारे लोगोंमें जो अेक तरहका पाजीपन और दगा-बाजी आ गयी है, वह निकल जायेगी। हम सीधे हो जायेंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १६–१२–'४७
हरिजनसेवक, २८–१२–१९४७

## ४८

# कीमतें और अंकुशका हटना

आजकी प्रार्थनाके बादके भाषणमें गांधीजीने कहा: अेक भाअीका तार है कि आपने तो कहा था कि चीनीका भाव गिर गया है, मगर यहां तो बढ़ा है। अुसका जवाब यह है कि किसी जगह पर खास कारणसे भले बढ़ा हो, मगर दूसरी जगहों पर कम हुआ है। दिल्लीमें शक्करका भाव कम हुआ है। शक्कर तो चीनीसे अच्छी है।

### पेट्रोल पर अंकुश

अेक जगहसे दूसरी जगह माल ले जानेमें कठिनाअी होती है। डॉ० मथाअी कहते हैं कि अुनके पास माल ढोनेके डिब्बों और कोयलेकी कमी है। ये दिक्कतें दूर करनेकी कोशिश हो रही है। आश्चर्यकी बात है कि जब रेल नहीं थी, तब भी हमारा काम चलता था। मगर अब रेल है, मोटर है, हवाअी जहाज हैं, तो भी हमारे हाथ-पांव फूल जाते हैं। रेलके अलावा लोगोंको और सामानको अिधर-अुधर ले जानेका जरिया मोटर है। मगर मोटर तो पेट्रोलसे ही चल सकती है और पेट्रोल पर अंकुश है। पेट्रोलका अंकुश अुठा दिया जाय, तो लारियोंवाले लारियां चला सकते हैं। नमकका कण्ट्रोल छूटा, मगर नमकका भाव बढ़ा। आज नमक मिलना मुश्किल हो गया है।

अैसा ही पेट्रोलके बारेमें हो सकता है। मगर मुझे तो अुसमें हर्ज नहीं है। पेट्रोल अैसी चीज नहीं जिसकी सबको जरूरत हो। यदि लारियां चलने लगें, तो नमककी कमी पूरी हो सकती है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १९–१२–'४७
हरिजनसेवक, २८–१२–१९४७

## ४९

# दिल्लीके व्यापारियोंको गांधीजीका सन्देश

### जनमतकी ताकत

हार्डिज लायब्रेरीमें आज तीसरे पहर व्यापारियोंकी अेक सभामें भाषण देते हुअे गांधीजीने कहा — "मैं समझता हूं कि जो अंकुश अनाज पर लगाया जाता है वह बुरा है। हिन्दुस्तानका हित अुसमें नहीं हो सकता। कपड़ेका अंकुश भी हटना चाहिये। आज जब हमें आजादी मिल गयी है, तो अुसमें हम पर कण्ट्रोल क्यों? जवाहरलालजी, सरदार पटेल वगैरा जनताके सेवक हैं। जनताकी अिच्छाके विरुद्ध वे कुछ नहीं कर सकते। अगर हम अुन्हें कहें कि आप अपने पदों परसे हट जाअिये, तो वे वहां रह नहीं सकते। वे रहना भी नहीं चाहते। वे लोग हमेशा कहते हैं कि हम तो लोगोंका ही काम करना चाहते हैं; हम लोगोंके सेवक हैं। बात सच भी है। ३२ बरससे हम अंग्रेजोंसे लड़ते आये हैं और हमने यह बता दिया है कि सच्ची लोकसत्ता कैसे चलती है। लेकिन हमारी सत्ता अंग्रेजों जैसी नहीं है। वे अिंग्लैण्डसे फौज वगरा ला सकते थे। हमारे पास वह सब नहीं है। लेकिन हमारे मन्त्रियोंके पास अिससे भी बड़ी ताकत है। जवाहरलालजी, सरदार पटेल वगैराके पीछे फौज और पुलिससे बढ़कर लोकमतकी ताकत है।

### कण्ट्रोल लगानेका कारण

कण्ट्रोलकी जरूरत क्यों पड़ी? व्यापारियोंकी बेअीमानी और नफाखोरीके डरसे ही कण्ट्रोल लगानेकी जरूरत पड़ी। अेक मजदूरको अपनी मेहनतके लिअे जो पैसा मिलना चाहिये, अुससे ज्यादा अेक व्यापारीको अुसकी मेहनतके लिअे क्यों मिलना चाहिये? अुसे अधिक नहीं लेना चाहिये। अगर व्यापारी

लोग अितना समझ लें, तो आज हिन्दुस्तानमें हमें खाने-पहननेकी चीजोंकी जो मुसीबतें सहनी पड़ती हैं वे न सहनी पड़ें। अगर हम और आप अिस अंकुशको बरदाश्त नहीं करना चाहते तो अुसे हटना ही होगा। अगर आप सच्चे हैं, मैं सच्चा हूं, तो अंकुश रह नहीं सकेगा। हम सच्चे न रहें, तब तो अंकुश अुठनेसे हिन्दुस्तान मर जायेगा। व्यापारी-मण्डलको और मिल-मालिकोंको आपसमें मिलना चाहिये, अुनके प्रति जो शक किया जाता है अुसे दूर करना चाहिये और अेक-दूसरेकी शक्ति बढ़ानी चाहिये। गीताजीका श्लोक है: "देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।" देव आसमानमें नहीं पड़े हैं। हमारी लड़कियां जैसे देवियां मानी जाती हैं, वैसे ही हम भी देव हैं। लेकिन कोअी अपनेको देव कहते नहीं, वह अच्छा भी है। यह मनुष्यकी नम्रता है। तो हम देवों जैसे शुद्ध बनें, शुद्ध रहें और सुखी रहें, तब हमारी गरीबी, भुखमरी, नंगापन वगैरा सब चला जायगा।

नअी दिल्ली, २८-१२-'४७
हरिजनसेवक, ४-१-१९४८

## ५०

## कंट्रोलका हटना

गांधीजीने अपने प्रार्थनाके बादके भाषणमें कहा: मेरे पास अिस मतलबके काफी तार और पत्र आते हैं कि अंकुश हटनेका चमत्कारिक असर हुआ है। कपड़ेका कंट्रोल नहीं हटा, फिर भी टुआल वगैरा बहुत सस्ते दामोंमें बिकते हैं। कालेबाजारवाले लोगोंने समझ लिया है कि कंट्रोल अुठा नहीं, तो भी गांधी लोगोंकी आवाज सुनाता है और कंट्रोल अुठानेकी बात करता है; अिसलिअे कंट्रोल अुठेगा ही और पीछे कालेबाजारकी चीजें वहीं पड़ी रहेंगी। अिसलिअे वे सस्ते दामोंमें बेचने लगे हैं। सुनता हूं कि चीनीके ढेर-के-ढेर पड़े हैं। अेक रुपयेकी सेरभर चीनी मिलती है। सौदा होता है और रुपयेके १५ आने कर दिये जाते हैं। हर जगहसे मुझे तार मिल रहे हैं कि अंकुश अुठनेसे हमें आराम है। सच्ची दुआ तो करोड़ोंकी ही मिलनी चाहिये। क्योंकि मैं तो करोड़ोंकी आवाज अुठाता हूं; अिसलिअे वह चलती भी है। आज मैं कहता हूं कि मुसलमानोंको मत मारो, अुन्हें अपना दुश्मन मत मानो, पर मेरी

चलती नहीं। अिसलिअे मैं समझता हूं कि वह करोड़ोंकी आवाज नहीं। मगर आप मेरी नहीं सुनते, तो बड़ी गलती करते हैं। आप जरा सोचें कि गांधीने अितनी बातें सही कहीं, तो क्या आज अिसमें भूल कर रहा है? नहीं, गांधी भूल नहीं करता। तुलसीदासने कहा है, दया धर्मका मूल है। वही मैं आपसे कहता हूं। तुलसीदास पागल नहीं थे। अुनका नाम सारे हिन्दुस्तानमें चलता है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २८–१२–'४७
हरिजनसेवक, ४–१–१९४८

## ५१

## लोकशाही कैसे काम करती है

[अेक माने हुअे मित्रने गांधीजीको बिना सोचे-समझे चीजों परसे कंट्रोल हटानेके बारेमें चेतावनी दी थी। गांधीजीने अुन्हें जो जवाब लिखा था, अुसमें से नीचेका हिस्सा लिया गया है।]

आप अभी भी अिस तरह लिखते हैं मानो आप गुलाम हों, हालांकि हमारी गुलामी अब खतम हो गयी है। अगर आपके कहनेके मुताबिक अंकुश हटनेका बुरा नतीजा हुआ है, तो आपको अुसके खिलाफ आवाज अुठानी चाहिये, चाहे अैसा करनेवाले आप अकेले ही क्यों न हों और आपकी आवाज कमजोर ही क्यों न हो। सच पूछा जाय तो आपके बहुतसे साथी हैं और आपकी आवाज भी किसी तरह कमजोर नहीं है, बशर्ते कि सत्ताके नशेने अुसे कमजोर न बना दिया हो। अंकुश हटनेसे अूंचे चढ़नेवाले दामोंका भूत मुझे तो व्यक्तिगत रूपसे नहीं डराता। अगर हमारे बीच बहुतसे धोखेबाज लोग हैं और हम अुनका मुकाबला करना नहीं जानते, तो हम अुनके द्वारा खा लिये जाने लायक हैं। वे हमें जरूर खा जायेंगे। तब हम मुसीबतोंका बहादुरीसे सामना करना जानेंगे। सच्ची लोकशाही लोग किताबोंसे या नामसे सरकार कहे जानेवाले लेकिन असलमें अपने सच्चे सेवकोंसे नहीं सीखते। कठिन अनुभव ही लोकशाहीका सबसे अच्छा शिक्षक होता है। यह खत मैं अिस चेतावनीके लिअे नहीं लिख रहा हूं कि आप मुझे तसवीरका अपना पहलू लिखकर न बतावें। लेकिन अिसका मकसद आपको यह बताना है

कि मेरी अकेली ही आवाज सुनाअी दे, तो भी मैं अंकुश हटानेकी बात पर क्यों जोर देता रहूंगा।

लोकशाहीके शुरुआतके दिन बेसुरे रागोंकी तरह होते हैं, जो कानोंको बुरे मालूम होते हैं और सिरदर्द पैदा करते हैं। अगर लोकशाहीको अिन खा जानेवाले बेसुरे रागोंके बावजूद जिन्दा रहना है, तो बाहरसे बेसुरे मालूम होनेवाले कोलाहलके अिस जरूरी अनुभवमें से हमें सुन्दर सुर और सुमेल पैदा करना ही होगा।

नअी दिल्ली, ११–१–'४८
हरिजनसेवक, १८–१–१९४८

## ५२

## अंकुश हटनेका नजीजा

मेरे पास बहुतसे पत्र और तार आ रहे हैं, जिनमें लोग अंकुश अुठने पर मुझे बधाअी देते हैं और जिन चीजों पर अभी अंकुश है अुसे भी हटानेको कहते हैं। अंग्रेजीमें लिखा हुआ अेक पत्र मैं यहां देता हूं। पत्र लिखनेवाले भाअी अेक खास अच्छे व्यापारी हैं। अुन्होंने मेरे कहनेसे अपने विचार लिखे हैं:

"आपके कहे मुताबिक मैं चीनी, गुड़, शक्कर और दूसरी खानेकी चीजोंका आजका भाव और अंकुश अुठनेसे पहलेका भाव नीचे देता हूं:

| | आजकलका भाव | नवम्बरमें अंकुश अुठनेसे पहलेका भाव |
|---|---|---|
| चीनी | ३७।। रु. मन | ८० से ८५ रु. मन |
| गुड़ | १३ से १५ रु. मन | ३० से ३२ रु. मन |
| शक्कर | १४ से १८ रु. मन | ३७ से ४५ रु. मन |
| चीनीके क्यूब | ११ आनेका अेक पैकेट | १।। से १।।। रु. का अेक पैकेट |
| चीनी देशी | ३० से ३५ रु. मन | ७५ से ८० रु. मन |

"आप देखते हैं कि चीनी आदिका भाव ५० फी सैकड़ा गिर गया है।

**अनाज**

| | | |
|---|---|---|
| गेहूं | १८ से २० रु. मन | ४० से ५० रु. मन |
| चावल बासमती | २५ रु. मन | ४० से ४५ रु. मन |
| मकअी | १५ से १७ रु. मन | ३० से ३२ रु. मन |
| चना | १६ से १८ रु. मन | ३८ से ४० रु. मन |
| मूंग | २३ रु. मन | ३५ से ३८ रु. मन |
| अुड़द | २३ रु. मन | ३४ से ३७ रु. मन |
| अरहर | १८ से १९ रु. मन | ३० से ३२ रु. मन |

**दालें**

| | | |
|---|---|---|
| चनेकी दाल | २० रु. मन | ३० से ३२ रु. मन |
| मूंगकी दाल | २६ रु. मन | ३९ रु. मन |
| अुड़दकी दाल | २६ रु. मन | ३७ रु. मन |
| अरहरकी दाल | २२ रु. मन | ३२ रु. मन |

**तेल**

| | | |
|---|---|---|
| सरसोंका तेल | ६५ रु. मन | ७५ रु. मन" |

मुझे लगता है कि अिन आंकड़ोंके खिलाफ कुछ नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा हो। अगर अैसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आंकड़े बताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी कृपा करें। मैंने अूपर लिखी बातें मान ली हैं, क्योंकि जानकार लोगोंका मत भी अिसी तरफ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोअी चीज चाहती है, तब लोकराजमें झिझकको कोअी स्थान नहीं रहता। जनताके प्रतिनिधियोंको जनताकी मांग ठीक रूपमें रखनी चाहिये, ताकि वह पूरी हो सके। जनताका मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाअियां जीतनेमें बहुत मदद दे चुका है।

पत्र लिखनेवाले भाअीने जो हकीकत बयान की है, वह सच्ची हो तो चौंकानेवाली चीज है। अंकुश अमीरोंके लिअे आशीर्वादरूप है और गरीबोंके लिअे लानत, हालांकि अंकुश रखा जाता है गरीबोंके खातिर। अगर अिजारेका रिवाज अिसी तरह काम करता है, तो अुसे अेक पलका भी विचार किये बिना निकाल देना चाहिये।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ५–१–'४८

हरिजनसेवक, १८–१–१९४८

## ब – खेती

# ५३

# मिश्र खाद

मिश्र खादका प्रचार करनेके लिअे मीराबहनकी प्रेरणा और अुत्साहसे दिल्लीमें अिस महीनेंमें अेक सभा बुलाअी गयी थी। अुसमें डॉ० राजेन्द्रप्रसाद सभापति थे। अिस कामके विशारद सरदार दातारसिंह, डॉ० आचार्य वगैरा भी अिकट्ठे हुअे थे। अुन्होंने तीन दिनके विचार-विनिमयके बाद कुछ महत्त्वके प्रस्ताव पास किये हैं। अुनमें यह बताया गया है कि शहरोंमें और ७ लाख गांवोंमें अिस बारेमें क्या करना चाहिये। शहरोंमें और देहातोंमें मनुष्यके और दूसरे जानवरोंके मलको कूड़े-कचरे, चीथड़ों व कारखानोंमें से निकले हुअे मैलके साथ मिलानेका सुझाव रखा गया है। अिस विभागके लिअे छोटीसी अुपसमिति बनाअी गअी है, जिसके मेम्बर ये हैं: श्री मीराबहन, श्री शिवकुमार शर्मा, डॉ० बी० अेम० लाल और डॉ० के० जी० जोशी।

अगर यह ठहराव सिर्फ अखबारोंमें छपकर ही न रह जाय और करोड़ों अुस पर अमल करें, तो हिन्दुस्तानकी शकल बदल जाय। हमारे अज्ञानके कारण जो करोड़ों रुपयोंका खाद बरबाद हो रहा है वह बच जाय, जमीन अुपजाअू बने और जितनी फसल आज पैदा होती है, अुससे कअी गुनी ज्यादा फसल पैदा होने लगे। परिणाम यह होगा कि भुखमरी बिलकुल दूर हो जायगी। करोड़ोंका पेट भरनेके लिअे अन्न मिलेगा और अुसके बाद बाहर भी भेजा जा सकेगा।

आज तो जैसी अिन्सानकी और जानवरोंकी कंगाल हालत है वैसी ही फसलकी है। अिसमें दोष जमीनका नहीं, मनुष्यका है। आलस और अज्ञान नामके दो कीड़े हमको खाते हैं। मीराबहनने जो काम अुठाया है, वह बहुत बड़ा है। अुसमें सैकड़ों मीराबहनें खप सकती हैं। लोगोंमें अिस कामके लिअे अुत्साह होना चाहिये। खेती-विभागके लोग जाग्रत होने चाहिये। करोड़ोंके करनेका काम थोड़ेसे सेवक-सेविकाओंसे नहीं हो सकेगा। अिसमें तो सेवक-सेविकाओंकी भारी फौज चाहिये।

क्या हिन्दुस्तानका अैसा अच्छा भाग्य है? यहां हिन्दुस्तानका मतलब दोनों हिस्सोंसे है। अगर दक्षिणका हिस्सा यह काम शुरू कर दे, तो अुत्तरके हिस्सेने भी अुसे शुरू किया ही समझिये।

नअी दिल्ली, २१–१२–'४७
हरिजनसेवक, २८–१२–१९४७

* * *

हमारे यहां पूरी खुराक पैदा नहीं होती, क्योंकि हमारी जमीनको पूरा खाद नहीं मिलता। हम खाद बाहरसे लाते हैं। अुससे रुपया बरबाद होता है। जमीन भी बिगड़ती है। लोग जानवरोंके मलको कचरेके साथ मिलाकर जब खाद बनाते हैं, तब पता नहीं चलता कि वह खाद है। अुसे हाथमें ले लो तो बदबू नहीं आती। हम कचरेमें से करोड़ों रुपये बना सकते हैं और अेक मनकी जगह दो मन, चार मन धान पैदा कर सकते हैं।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, १९–१२–'४७
हरिजनसेवक, २८–१२–१९४७

## ५४

## खादके खड्डे

गांवोंमें खादके खड्डे खोदनेकी जरूरतके बारेमें बताये गये श्री ब्रेनके सुझावोंके साथ आम तौरसे सहमत होते हुअे, मगर साथ ही अुनकी अिस रायसे असहमत होते हुअे कि खादके खड्डे ६ फुट चौड़े और ६ फुट गहरे होने चाहिये, गांधीजीने लिखा: श्री ब्रेनने जैसे खड्डोंके लिअे लिखा है, वैसोंकी ही आम तौर पर सिफारिश की जाती है, यह मैं जानता हूं। मगर मेरी रायमें श्री पूअरेने जो अेक फुटके छिछले खड्डोंकी सिफारिश की है, वह अधिक वैज्ञानिक अेवं लाभप्रद है। अुसमें खुदाअीकी मजदूरी कम होती है और खाद निकालनेकी मजदूरी या तो बिलकुल ही नहीं होती या बहुत थोड़ी होती है। फिर अुस मैलेका खाद भी लगभग अेक सप्ताहमें ही बन जाता है। क्योंकि जमीनकी सतहसे ६ से ९ अिंच तककी गहराअीमें

रहनेवाले जंतुओं, हवा और सूर्यकी किरणोंका अुस पर असर होता है, जिससे खड्डेमें दबाये जानेवाले मैलेके बनिस्बत कहीं अच्छा खाद तैयार हो जाता है।

लेकिन मैला ठिकाने लगानेके तरीके कितने ही तरहके क्यों न हों, याद रखनेकी मुख्य बात तो यह है कि सब मैलेको खड्डेमें गाड़ा जरूर जाय। अिससे दुहरा लाभ होता है — अेक तो ग्रामवासियोंकी तन्दुरुस्ती ठीक रहती है, दूसरे खड्डोंमें दबकर बना हुआ खाद खेतोंमें डालनेसे फसलकी वृद्धि होकर अुनकी आर्थिक स्थिति सुधरती है। यह याद रखना चाहिये कि मैलेके अलावा जानवरोंके शरीरके अवयव आदि चीजें अलग गाड़ी जानी चाहिये।

हरिजनसेवक, ८–३–१९३५

## ५५

## हम सब भंगी बनें

जी० आअी० फाअुलर नामके अेक लेखकने 'संपत्ति तथा दुर्व्यय' (Wealth and Waste) नामकी अेक अंग्रेजी पुस्तकमें लिखा है कि मनुष्यका मैला अच्छी तरह ठिकाने लगाया जाय, तो प्रति मनुष्यके मैलेसे हर साल २ रु० की आमदनी हो सकती है। अनेक जगहोंमें तो आज सोने जैसा खाद यों ही पड़ा-पड़ा नष्ट हो जाता है और अुलटे अुससे बीमारियां फैलती हैं। अुक्त लेखकने प्रोफेसर ब्रुलटीनीकी 'कूड़े-कचरेका अुपयोग' (The Use of Waste Materials) नामक पुस्तकमें जो अुद्धरण दिया है, अुसमें कहा गया है कि 'दिल्लीमें रहनेवाले २,८२,००० मनुष्योंके मैलेमें से जो नाअिट्रोजन पैदा होता है, अुससे कमसे कम दस हजार और अधिकसे अधिक ९५ हजार अेकड़ जमीनको पर्याप्त खाद मिल सकता है।' मगर चूंकि हमने अपने भंगियोंके साथ अच्छी तरह बरताव करना नहीं सीखा है, अिससे प्राचीन कीर्तिवाली दिल्ली नगरीमें भी आज अैसे-अैसे नरक-कुण्ड देखनेमें आते हैं कि हमें अपना सिर शर्मसे नीचा कर लेना पड़ता है। अगर हम सब भंगी बन जायं, तो हमें यह मालूम हो जायगा कि हमें खुद अपने प्रति कैसा बरताव करना चाहिये, और यह भी ज्ञान हो जायगा कि आज जो चीज जहरका काम कर रही है, अुसे हम पेड़-पौधोंके लिअे किस प्रकार अुत्तम खादमें परिणत कर सकते हैं। अगर हम मनुष्यके मलका सदुपयोग करें, तो

डॉक्टर फाअुलरके हिसाबके अनुसार भारतकी तीस करोड़की आबादीसे सालमें ६० करोड़ रुपयेका लाभ हो सकता है।

हरिजनसेवक, २२–३–१९३५

## ५६

## मिश्र खाद

[ अिन्दौरमें 'अिन्स्टिटचूट ऑफ प्लान्ट अिण्डस्ट्री' नामकी अेक वैज्ञानिक संस्था है। जिनकी सेवा करनेके लिअे वह कायम की गयी है, अुनके लिअे वह समय-समय पर परचे शाया किया करती है। अिनमें से पहला परचा खेतकी बेकार समझी जानेवाली चीजोंसे कंपोस्ट (मिश्र खाद) बनानेके तरीकों और अुसके फायदोंका बयान करता है। गोबर और मैला अुठाने, साफ करने या फेंकनेका काम करनेवाले हरिजनों और ग्रामसेवकोंके लिअे वह बहुत अुपयोगी है। अिसलिअे मैं कम्पोस्ट बनानेकी प्रक्रियाके वर्णनके साथ अुसके फुटनोटोंको भी जोड़कर लगभग पूरे परचेकी नकल नीचे देता हूं।

**—मो० क० गांधी ]**

बहुत लम्बे समयसे यह बात समझ ली गअी है कि हिन्दुस्तानकी मिट्टियोंमें अुचित और व्यवस्थित ढंगसे प्राणिज तत्त्वोंकी कमी पूरी करना या अुन्हें फिरसे पैदा करना खेतीकी पैदावारको बढ़ानेकी किसी भी सफल योजनाका अेक जरूरी हिस्सा है। यह भी अुतनी ही अच्छी तरह समझ लिया गया है कि खलिहानोंमें तैयार किये जानेवाले खादके मौजूदा साधन खादकी जरूरी मात्रा पूरी नहीं कर सकते। अिसके अलावा, यह बात तो है ही कि अिस खादके तैयार होनेमें नाअिट्रोजनका बड़ा हिस्सा बरबाद हो जाता है और अिस खादके ज्यादासे ज्यादा गुणकारी बननेमें बहुत लम्बा समय लग जाता है। हरा खाद शायद अिसकी जगह ले सकता है, लेकिन मौसमी हवा (monsoon) की अनिश्चितताके कारण हिन्दुस्तानके ज्यादातर हिस्सोंमें अुसका मिलना अनिश्चित ही रहता है। हरे खादका मिट्टीमें गलना या सड़ना भी कुछ समयके लिअे पौधोंके भोजनकी कमी पूरी करनेकी कुदरती प्रक्रियामें रुकावट डालता है, जो अुष्ण कटिबन्धके प्रदेशोंमें जमीनके अुपजाअूपनको कायम रखनेमें बड़े महत्त्वका काम करती है। साफ है कि

जमीनको ह्यूमस तैयार करनेके बोझसे मुक्त करके अुसे जैव तत्त्वोंकी कमी पूरी करने और फसलको बढ़ानेके काममें ही लगे रहने देना सबसे अच्छा रास्ता है। अिसका सबसे आसान तरीका यह है कि खेतका काम चालू रखते हुअे खेतीकी अैसी सारी बेकार चीजोंका, जिनकी अींधन या ढोरोंके चारेके रूपमें जरूरत नहीं होती, फायदा अुठाकर अुप-पैदावारके रूपमें ह्यूमस तैयार किया जाय।

यहां अिस बात पर जोर देना जरूरी है कि खलिहान या बाड़ोंके खादकी जगह लेनेवाली कोअी भी चीज बनावटमें ह्यूमसके साथ ज्यादासे ज्यादा समानता रखनेवाली होनी चाहिये। यही अिन्दौर-पद्धतिका ध्येय है, जिसे वह सिद्ध करती है। अिस तरह अिन्दौर-पद्धतिका अुद्देश्य अुन तरीकोंके अुद्देश्योंसे बिलकुल अलग है, जो बहुत ज्यादा नाअिट्रोजनवाला सक्रिय खाद तैयार करते हैं, जिसकी खास अुपयोगिता बनावटी खादों जैसी ही होती है।

अिन्दौरके 'अिन्स्टिटचूट ऑफ प्लान्ट अिण्डस्ट्री' में होनेवाले कामने, जो श्री अेलबर्ट हॉवर्डके अिस दिशामें किये गये बीस बरसके परिश्रमका नतीजा है, अब निश्चित रूपसे यह सिद्ध कर दिया है कि अिन अुसूलोंको बड़ी आसानीसे अमलमें लाया जा सकता है। कम्पोस्टकी अिन्दौर-पद्धति व्यावहारिक टेकनिक (तरीका) बताती है और विकासके नये रास्ते खोलती है। खेतों और शहरोंमें कचरा, मैला वगैरा चीजोंके रूपमें जो अपार कुदरती साधन मौजूद हैं, अुनका मिश्र खाद बनाकर खेतोंमें अुपयोग किया जा सकता है और फायदा अुठाया जा सकता है। खलीके निकास व गोबरके अींधनके रूपमें होनेवाले अुपयोग पर हमला किये बिना अिससे बहुतसा खाद मिल सकता है, साथ ही बनावटी खादोंके अिस्तेमालमें किफायत भी की जा सकती है, जो जैव तत्त्वोंकी मददसे ही अच्छेसे अच्छे नतीजा ला सकते हैं।

'युटिलाअिज़ेशन ऑफ अेग्रिकल्चरल वेस्ट' (हॉवर्ड अेण्ड वाड, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, १९३१) नामकी किताबमें अिस पद्धतिसे सम्बन्ध रखनेवाली समस्याओं और अुसूलोंकी चर्चा की गयी है और अिन्दौर-पद्धति पर विस्तारसे प्रकाश डाला गया है। अिस लेखमें सिर्फ हिन्दुस्तानी किसानोंकी हालतों पर लागू होनेवाले तरीकेकी कामचलाअू रूपरेखा ही थोड़ेमें दी गयी है।

हिन्दुस्तानकी सिंचाओकी फसलोंके लिअे खलिहानका खाद बहुत कीमती माना गया है। लेकिन बिना सिंचाओवाली फसलोंके खेतोंमें भी समय-समय पर थोड़ा खाद देते रहना अुतना ही जरूरी है। कम्पोस्ट बनानेकी अिन्दौर-पद्धति जल्दी ही बड़ी मात्रामें ज्यादा अच्छा खाद तैयार करती है। अिसके अलावा, यह खाद देते ही तुरन्त फसलको सक्रिय रूपसे फायदा पहुंचाता है, जब कि खलिहानका खाद हमेशा अैसा नहीं करता। अगर सही ढंगसे तैयार किया जाय तो अिन्दौर-पद्धतिका मिश्र खाद तीन महीने बाद काममें लिया जा सकता है और तब वह गहरे भूरे या क़ॉफीके रंगका बिखरा (amorphous) पदार्थ बन जाता है, जिसमें २०% के करीब कुछ अंशोंमें गला हुआ छोटी डलियोंवाला हिस्सा होता है, जिसका अंगुलियोंसे दबाकर तुरन्त भूसा किया जा सकता है। बाकीका हिस्सा गीला होनेके कारण (और अिसलिअे अुसके बिखरे कण फूले हुअे होते हैं) अुम्दा होता है और वह अेक अिंचमें छह छेदवाली छलनीसे छन जाता है। अिस खादमें नाअिट्रोजनकी मात्रा, अिस्तेमाल किये हुअे कचरे वगैराके गुणके मुताबिक, .८ से लेकर १.० फी सदी या अिससे ज्यादा होती है। १०० या १२५ गाड़ी खेतमें मिलनेवाले सब तरहके कचरे और गोठानमें मिलनेवाली पेशाब जज्ब की हुअी आधी मिट्टीके साथ अेक-चौथाअी भाग ताजा गोबर मिलानेसे दो बैलोंके पीछे हर साल करीब ५० गाड़ी मिश्र खाद तैयार हो सकता है। आधी बची हुअी पेशाबवाली मिट्टीका भी बड़ा अच्छा खाद होता है और वह सीधे खेतोंमें डाला जा सकता है। अगर अिससे ज्यादा कचरा मिल सके, तो सारे गोबर और पेशाबवाली मिट्टीसे करीब १५० गाड़ी मिश्र खाद बनाया जा सकता है। अिन्दौरमें अेक गाड़ी मिश्र खाद बनानेका खर्च साढ़े आठ आने आता है। यहां ८ घंटे काम करनेके लिअे हर मर्दको ७ आने रोज और हर औरतको ५ आने रोज मजदूरी दी जाती है।

### १. अिन्दौर-पद्धतिकी रूपरेखा

दूसरी तरहसे बेकार जानेवाली खेतीकी चीजों, कचरे वगैराके साथ ताजा गोबर, लकड़ीकी राख और पेशाबवाली मिट्टीके मिश्रणको खड्डोंमें जल्दी सड़ाना ही अिस तरीकेका खास काम है। खड्डोंकी गहराओ २ फुटसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। वे १४ फुट चौड़े होने चाहिये। अुनकी मामूली लम्बाओ ३० फुट होनी चाहिये। खड्डोंका यह नाप बड़े पैमाने और छोटे पैमाने दोनों

तरहके कामके लिअे ठीक रहेगा। अुदाहरण के लिअे, खड्डेका ३ फुट लम्बा हिस्सा दो जोड़ी बैलोंके नीचे बिछाये हुअे बिछौनेसे ६ दिनमें भर सकता है। अिसके बाद ३ फुटका पासका हिस्सा भरा जाय। आगे चलकर हरअेक हिस्सेको स्वतंत्र अिकाअी समझा जाय। खड्डेमें डाली हुअी चीजों पर पानीका अेकसा छिड़काव किया जाता है, जिसमें थोड़ा गोबर, लकड़ीकी राख, पेशाबवाली मिट्टी और सक्रिय खड्डेमें से निकाला हुआ कुकुरमुत्ता (fungus) वाला खाद मिला रहता है। सक्रिय रूपसे सड़नेवाला कम्पोस्ट जल्दी ही कुकुरमुत्ता अुगनेसे सफेद हो जाता है। बादमें यह नये खड्डोंके कचरे, गोबर वगैराको जोरोंसे सड़ानेके काममें लिया जाता है। पहले-पहल जब कुकुरमुत्तावाला खाद नहीं मिलता, तो ढोरोंके बिछौनेके साथ थोड़ी हरी पत्तियां बिछाकर कुकुरमुत्ता अुगानेमें मदद ली जाती है। खड्डेकी चीजोंको गलानेका काम शुरू करनेवाले पदार्थ (starter) में पूरी सक्रियता ३–४ बार अैसी क्रिया हो चुकनेके बाद आती है। खड्डेकी सतह पर पानी छिड़कने और भीतरकी चीजोंको पलटते रहनेसे नमी और हवाको नियमित रखकर अिसकी सक्रियता कायम रखी जाती है। अिसमें दूसरी बार स्टार्टरकी थोड़ी मात्रा जोड़ी जाती है, जो अिस वक्त ३० दिनसे ज्यादा पुराने खड्डेसे लिया जाता है। सारा ढेर जल्दी ही बहुत गरम हो जाता है और लम्बे समय तक वैसा बना रहता है। व्यवस्थित ढंगसे सब काम किया जाय, तो बड़ा अच्छा मिश्रण तैयार होता है और अुसे काफी हवा भी मिलती रहती है। पानीका साधारण छिड़काव अेकदम चीजोंको गलाना शुरू कर देता है, जो आखिर तक लगातार चालू रहता है। और अन्तमें बिलकुल अेकसा अुम्दा खाद बन जाता है।

## २. खड्डे बनाना

गोठानके पास और संभव हो तो पानीके किसी साधनके पास अच्छी तरह सूखा हुआ जमीनका हिस्सा चुन लीजिये। ३० फुट × १४ फुट × २ फुटका खड्डा बनानेके लिअे अेक फुट मिट्टी खोदकर किनारों पर फैला दीजिये; अैसे खड्डे दो दो की जोड़में खोदे जायं। अुनकी लम्बाअी पूर्वसे पश्चिमकी ओर रहे। अेक जोड़के दो खड्डोंके बीच ६ फुटकी दूरी रहे और अैसी हर जोड़ी अेक-दूसरेसे १२ फुट दूर रहे। तैयार कम्पोस्टके ढेर और बारिशमें लगाये जानेवाले ढेर अिन चौड़ी जगहों पर किये जाते हैं, जो हरअेक ढेरसे सीधे गाड़ीमें खाद भर कर ले जानेके लिअे भी अुपयोगी होती हैं।

### ३. मिट्टी और पेशाब

ढोरोंकी पेशाबमें कीमती खादके तत्त्व होते हैं और खलिहानका खाद बनानेके मामूली तरीकेमें वह ज्यादातर बरबाद ही होती है। गोठानमें पक्का फर्श बनाना खर्चीला होता है और बैलोंके लिअे अच्छा नहीं होता। ढोरोंके अुठने-बैठने और सोनेके लिअे खुली मिट्टीका मुलायम, गरम और सूखा बिछौना सस्तेमें बनाया जा सकता है। मिट्टीकी ६ अिंचकी परत गन्दगी फैलाये बिना ढोरोंकी सारी पेशाब जज्ब करनेके लिअे काफी होगी, बशर्ते कि ज्यादा गीले हिस्से रोज साफ कर दिये जायं, अुनमें थोड़ी नयी मिट्टी डाल दी जाय और मिट्टी पर थोड़ा न खाया हुआ घास बिछा दिया जाय। हर चार महीनेमें यह पेशाबवाली मिट्टी हटा दी जाय और अुसकी जगह नयी मिट्टी डाली जाय। अुसका ज्यादा अच्छा हिस्सा कम्पोस्ट बनानेके लिअे रख छोड़ा जाय और ज्यादा बड़े ढेले सीधे खेतोंमें डाल दिये जायं। यह बड़ी जल्दी काम करनेवाला खाद होता है, जो खास तौर पर सिंचाअीकी फसलको अूपरसे दिया जाता है।

हरिजन, १७–८–१९३५

## ५७

## मिश्र खाद

[ चालू ]

### ४. गोबर और राख

रोज मिल सकनेवाले गोबरका सिर्फ अेक-चौथाअी हिस्सा ही जरूरी है; यह पानीमें मिलाकर प्रवाही रूपमें छिड़का जाता है। जरूरत हो तो बचे हुअे गोबरको अींधनकी तरह काममें लिया जा सकता है। रसोअीघर और दूसरी जगहोंसे लकड़ीकी राख सावधानीसे अिकट्ठी करनी चाहिये और किसी ढंकी हुअी जगह पर अुसका संग्रह करना चाहिये।

### ५. खेतका कचरा

हर तरहके पौधोंके कचरेसे, जिसकी खेतमें दूसरी तरहसे जरूरत न हो, कम्पोस्ट बनाया जा सकता है। अिस कचरेमें ये सब चीजें आ सकती हैं : घासपात, कपास, मटर और तिलके डंठल, टेसूके पत्ते, अलसी, सरसों,

काले और हरे चनोंके डंठल, गन्नेका कूचा और छिलका, जुआर और गन्नेकी जड़ें, पेड़ोंके गिरे हुअे पत्ते और घास-चारे, कड़बी वगैराके न खाये हुअे हिस्से। कड़ी चीजोंको कुचलना होगा। सिंधमें कच्ची और मुलायम सड़कों पर भी यह काम कामयाबीके साथ किया गया है। वहां गाड़ीके रास्ते पर अैसी चीजें फैला दी जाती हैं और कुचले हुअे हिस्सोंको समय-समय पर अुठाकर अुनकी जगह दूसरी कड़ी चीजें फैला दी जाती हैं। ठूंठ और जड़ों जैसे बहुत कड़े हिस्सोंको (कुचलनेके अलावा) कमसे कम दो दिन तक पानीमें भिगोने या दो-तीन माह तक गीली मिट्टी या कीचड़के नीचे गाड़नेकी जरूरत रहेगी। अिसके बाद ही वे अच्छी तरह काममें लिये जा सकते हैं। कीचड़के नीचे गाड़नेका काम बारिशमें आसानीसे किया जा सकता है। हरी चीजें कुछ हद तक सुखा ली जायं और फिर अुनकी गंजी लगाअी जाय। थोड़ी-थोड़ी अलग-अलग चीजोंकी अेक साथ गंजी लगायी जाय और बड़ी मात्राकी हरअेक चीजके लिअे अलग गंजी बनायी जाय। अिन चीजोंको कम्पोस्टके खड्डेमें ले जाते समय अिस बातका ध्यान रखना चाहिये कि सब तरहकी चीजोंका मिश्रण किया जाय; खड्डेमें डालनेके लिअे अुठाअी जानेवाली सारी चीजोंकी कुल मात्राके अेक-तिहाअीसे ज्यादा कोअी चीज खड्डेमें नहीं डालनी चाहिये। पानीमें भिगोअी या मुलायम बनायी हुअी सख्त जड़ें, डंठल वगैरा अेक बारमें बहुत थोड़ी मात्राओंमें ही काममें लिये जाने चाहिये। अगर मामूली तौर पर मिल सकनेवाली अलग-अलग चीजोंको अैसी मात्राओंमें अिकट्ठा और अिस्तेमाल किया जाय कि सालभर तक वे मिलती रहें, तो यह सब अपने-आप हो जाता है। सन या अिसी तरहकी दूसरी खरीफकी फसलके अुपयोगसे कम्पोस्टको और ज्यादा गुणकारी बनाया जा सकता है। अिसे हरी ही काटना चाहिये और सूखने पर ढेर लगाना चाहिये। अिससे रबीकी फसल बोनेके समय जमीन साफ मिलेगी और सन बोनेसे अिस फसलको फायदा पहुंचेगा।

### ६. पानी

अगर कम्पोस्ट तैयार करनेकी जमीनके पास अेक छोटा खड्डा या हौज बनाकर अुसमें नहाने-धोनेका गन्दा पानी अिकट्ठा किया जाय और रोज काममें लिया जाय, तो मेहनत बचेगी और फायदा भी होगा। लम्बे समय तक अेक जगह पड़ा रहनेवाला कोअी भी पानी नुकसानदेह होगा। अिससे

ज्यादा पानीकी जरूरत हो, तो दूसरी तरहसे अुसका प्रबन्ध करना चाहिये। मौसमके मुताबिक अेक गाड़ी कम्पोस्ट तैयार करनेके लिअे चार गैलनके ५० से ६० तक पानीसे भरे पीपोंकी जरूरत होती है।

### ७. तफसील

**खड्डोंका भरना :** ४ फुट लम्बा और ३ फुट चौड़ा अेक पाल या टाटके टुकड़ेका स्ट्रेचर (जिसके लम्बे किनारे ७।। फुट लम्बे दो बांसोंमें फंसे हों) लीजिये। गोठानके फर्श पर, जहां ढोर अुठते-बैठते और सोते हैं, रोज अेक बैलके लिअे अेक पाल और अेक भैंसके लिअे डेढ़ पालके हिसाबसे खेतका कचरा फैला दीजिये। अिस कचरे पर ढोरोंका पेशाब गिरता और जज्ब होता है; साथ ही ढोर अुसे कुचल कर मिला देते हैं। बारिशमें यह बिछौना सूखे कचरेकी दो परतोंके बीचमें हरे लेकिन कुछ सूखे हुअे कचरेकी परत डालकर बनाया जाता है। घोल बनानेके बाद जो ताजा गोबर बचे, अुसके या तो कंडे बनाये जा सकते हैं या छोटी नारंगीके बराबर हिस्से करके अुसे ढोरोंके बिछौने पर फैलाया जा सकता है। घोल बनानेके बाद पेशाबवाली मिट्टीका और कुकुरमुत्तावाले खादका बचा हुआ हिस्सा दूसरे दिन सुबह ढोरोंके बिछौने पर छिड़क दिया जाता है, जब वह सीधे खड्डोंमें डालने और पतली परतोंमें फैलानेके लिअे फावड़ों और पालोंके जरिये सारे फर्श परसे अुठाया जाता है। बादमें अैसी हर परतको थोड़ी-थोड़ी लकड़ीकी राख, ताजा गोबर, पेशाबकी मिट्टी और कुकुरमुत्तावाले खादके घोलसे अेकसा गीला किया जाता है। ढोरोंका सारा बिछौना अुठा लेनेके बाद फर्श पर बिखरा हुआ बारीक कचरा भी झाड़ लिया जाता है, जो खड्डेकी अूपरी सतह पर बिछाया जाता है। सबसे अूपरकी परतको पानी छिड़ककर गीला किया जाता है और शामको व दूसरे दिन सुबह और ज्यादा पानी छिड़ककर अुसे पूरी तरह भिगो दिया जाता है। मिलनेवाले कचरेकी मात्राके मुताबिक अेक खड्डा या अुसका हिस्सा छह दिनमें सिरे तक भर ही दिया जाना चाहिये। अिसके बाद दूसरा खड्डा या अेक खड्डेका दूसरा हिस्सा अिसी तरह भरना शुरू किया जाय। खड्डेको भरते समय कचरेको पांवसे दबाना **नुकसानदेह** होता है, क्योंकि अिससे हवा अन्दर नहीं जाने पाती।

बारिशमें खड्डे पानीसे भर जाते हैं। जब बारिश शुरू हो तो खड्डोंका कचरा निकाल कर जमीन पर अिकट्ठा कर देना चाहिये, जिससे अुसे अुलट-

पुलट करनेका लाभ मिल जाय। बारिशके दिनोंमें ८ फुट × ८ फुट × २ फुटके ढेर जमीन पर लगाकर नया कम्पोस्ट बनाना चाहिये। ये ढेर खड्डोंके बीचकी चौड़ी जगहों पर बिलकुल पास पास किये जाने चाहिये, ताकि वे ठंडी हवासे बच सकें।

### ८. कम्पोस्टको पलटना और अुस पर पानी छिड़कना

सड़ते हुअे कम्पोस्टकी अूपरी सतह पर हर हफ्ते पानीका छिड़काव करके नमी कायम रखी जाती है। खड्डेके भीतर बीच-बीचमें नमी और हवा पहुंचाते रहना जरूरी है, अिसलिअे खादको तीन बार पलटना चाहिये। हर पलटेके साथ पानीका छिड़काव करना चाहिये, जिससे नमीकी कमी पूरी की जा सके। गीले मौसममें पानीके छिड़कावकी मात्रा कम कर देनी चाहिये या पानी बिलकुल न छिड़कना चाहिये। लेकिन जब पहली बार खड्डा भरा जाय या ढेर लगाया जाय, तब तो हर मौसममें पानी छिड़कना ही चाहिये।

### ९. पहला पलटा — करीब १५ दिन बाद

सारे खड्डेसे अूपरकी न सड़ी हुअी परत निकाल डालिये और अुसे नया खड्डा भरनेके काममें लीजिये। फिर खुली हुअी सतह पर ३० दिनका पुराना कम्पोस्ट फैलाअिये और सिरे पर अितना पानी छिड़किये कि लगभग ६ अिंच नीचे तक वह अच्छी तरह गीला हो जाय। पहले पलटेके समय खड्डेको लम्बाअीके हिसाबसे दो हिस्सोंमें बांट दिया जाता है और हवाके रुखकी तरफके आधे हिस्सेको जैसेका तैसा रहने दिया जाता है। अुसे नहीं छेड़ा जाता। दूसरा आधा हिस्सा अुस पर डाल दिया जाता है (अिसके लिअे लकड़ीका घास अुठानेका औजार काम देता है)। कचरेकी अेक परतके बाद दूसरी परत नहीं अुठानी चाहिये, बल्कि औजारोंको अिस तरह काममें लेना चाहिये कि जहां तक संभव हो खड्डेके सिरेसे पेंदे तकका कचरा साथमें निकल सके। पलटे हुअे कचरेकी हर परतको, जो करीब छह अिंच मोटी होगी, पानी छिड़ककर अच्छी तरह भिगोना चाहिये। बारिशमें सारा ढेर पलटा जा सकता है, ताकि अुसकी अूंचाअी ज्यादा न बढ़ जाय।

### १०. दूसरा पलटा — करीब अेक माह बाद

खड्डेके आधे हिस्सेका कचरा अुसकी खाली बाजूमें औजारसे पलट दिया जाता है और अुस पर काफी पानी छिड़का जाता है। अिसमें भी सिरेसे पेंदे तकके खादको मिलानेका ध्यान रखना चाहिये।

## ११. तीसरा पलटा — दो माह बाद

अिसी तरह कम्पोस्ट फावड़ेसे खड्डोंके पासकी चौड़ी जगहों पर फैला दिया जाता है और अुस पर पानी छिड़का जाता है। दो खड्डोंका खाद बीचकी खुली जगह पर १० फुट चौड़ा और ३।। फुट अूंचा ढेर बनाकर अच्छी तरह फैलाया जा सकता है। ढेरकी लम्बाअी कितनी भी रखी जा सकती है और अिस तरह बहुतसे ढेर साथ-साथ लगाये जा सकते हैं। अगर सुभीता हो तो खादको पानी छिड़क कर खड्डोंसे गाड़ीमें भरकर सीधे खेतोंमें ले जाया जा सकता है। जिस जमीनमें खादका अुपयोग करना हो, वहीं अुसका ढेर लगाना चाहिये। अिससे बुवाअीके मौसममें कीमती समय बच सकेगा। सब ढेर अूंचे और चपटे सिरवाले होने चाहिये, ताकि वे बहुत ज्यादा सूख न जायं और अुनमें खाद बननेकी प्रक्रिया बन्द न हो जाय।

अच्छा कम्पोस्ट किसी भी समय बदबू नहीं करता और सारा अेकसे रंगका होता है। अगर वह बदबू करे या अुस पर मक्खियां बैठें, तो समझना चाहिये कि अुसे ज्यादा हवाकी जरूरत है। अिसलिअे खड्डेके खादको पलटना चाहिये और अुसमें थोड़ी राख और गोबर मिलाना चाहिये।

हर मामलेमें कचरे, गोबर वगैराकी कितनी मात्रा चाहिये, अिसका हिसाब नीचेके आंकड़ोंके आधार पर आसानीसे लगाया जा सकता है :

## १२. चालीस ढोरोंके लिअे जरूरी मात्रा

**छह दिन तक रोज खड्डे भरना :** गोठानके फर्श पर ढोरोंके बिछौनेके लिअे बिछाये हुअे कचरेकी और अुसे अुठानेके बाद झाड़ूसे अिकट्ठे किये हुअे बारीक कचरेकी अेक दिनमें खड्डेमें डाली जानेवाली मात्रा — ४० से ५० पाल भर कर कचरा, जिस पर ४ तगारी (१८ अिन्च व्यासवाली और ६ अिन्च गहरी) कुकुरमुत्तावाला खाद, १५ तगारी पेशाबवाली मिट्टी और अींधनके रूपमें अुपयोग न किया जानेवाला फाजिल गोबर फैलाया जाय।

**घोल :** गोठानके अेक दिनके कचरे वगैराके लिअे २० पीपे (चार गैलनके) पानी, ५ तगारी गोबर, १ तगारी राख, १ तगारी पेशाबवाली मिट्टी और २ तगारी कुकुरमुत्तावाला खाद।

**पानी :** गोठानके अेक दिनके कचरे वगैराके लिअे खड्डा भरते ही ६ पीपे पानी, १० पीपे पानी शामको और ६ पीपे दूसरे दिन सुबह।

**अूपरी सतहका छिड़काव :** हर बार २५ पीपे पानी।

**पलटेके वक्त पानी :** पहले पलटेके समय मौसमके मुताबिक ६० से १०० पीपे; दूसरे पलटेके समय ४० से ६० पीपे; तीसरे पलटेके समय ४० से ८० पीपे।

**कुकुरमुत्तावाला खाद :** पहले पलटेके वक्त १२ तगारी।

### कोष्ठक

अेक तगारीमें भरी हुअी चीजोंकी मात्रा (दो पसरोंमें) और वजन (पौंडमें)।

| चीज | मात्रा (पसरोंमें) | वजन (पौंडमें) |
|---|---|---|
| ताजा गोबर | ६ से ७ | ४० |
| पेशाबवाली मिट्टी | २० से २१ | २२ |
| लकड़ीकी राख | १५ | २० |
| कुकुरमुत्तावाला खाद | ५ | २० |
| पहले पलटेके लिअे खाद | ६ | २० |

### कामका समय-पत्रक

| दिन | घटनायें |
|---|---|
| १ | भरना शुरू होता है |
| ६ | भरना खतम होता है |
| १० | कुकुरमुत्ता जमता है |
| १२ | पानीका पहला छिड़काव |
| १५ } १६ } | पहला पलटा और अेक माह पुराना कम्पोस्ट मिलाना |
| २४ | पानीका दूसरा छिड़काव |
| ३०–३२ | दूसरा पलटा |
| ३८ | पानीका तीसरा छिड़काव |
| ४५ | ,, चौथा ,, |
| ६० | तीसरा पलटा |
| ६७ | पानीका पांचवां छिड़काव |
| ७५ | ,, छठा ,, |
| ९० | काममें लेनेके लिअे कम्पोस्ट तैयार |

अगर परिस्थितियां पूरी तरह अिन्दौर-पद्धतिसे कम्पोस्ट बनानेमें बाधक हों, तो नीचे लिखे ढंगसे कुछ अंशमें अुसके फायदे अुठाये जा सकते हैं :

कअी तरहका मिला हुआ कचरा ढोरोंके बिछौनोंके लिअे अुपयोग किया जाय और दूसरे दिन सुबह हटानेके पहले अुस पर अूपर बताये मुताबिक जरूरी मात्रामें गोबर, पेशाबवाली मिट्टी और राख डाली जाय। यह सब कचरा बादमें अुस खेतकी मेढ़ पर ले जाया जाता है, जिसमें अुसका अुपयोग करना होता है या दूसरी किसी सूखी जगह पर ले जाया जाता है और ८ अिंच चौड़े और ३ अिंच अूंचे ढेरोंमें जमा किया जाता है। ढेरोंकी लम्बाअी सुविधाके अनुसार कितनी भी रखी जा सकती है। बारिश शुरू होनेके करीब महीने-भर बाद ही अुन पर कुकुरमुत्ता जम जायगा। अिसके बाद कोअी अैसा दिन चुनकर, जब आकाशमें बादल घिरे हों या थोड़ी बारिश हो रही हो, अुसे पूरी तरह पलट दिया जाता है। अेक महीने बाद अेक या दो बार फिर अुसे पलट देनेसे मौसम खतम होते होते वह सड़ जायगा, बशर्ते कि समय-समय पर अच्छी बारिश होती रहे।

अलबत्ता, खाद तैयार होनेके पहले अेक बरस तक ठहरना जरूरी होगा। अगर बारिश बहुत कम हो, तो शायद ज्यादा भी ठहरना पड़े।

अिस तरह बना हुआ खाद अिन्दौर-पद्धतिसे तैयार किये हुअे खादसे तो घटिया होता है, लेकिन खलिहानोंमें तैयार किये जानेवाले मामूली खादसे हर हालतमें ज्यादा अच्छा होता है। क्योंकि अिस तरीकेसे भी कड़ी और सख्त चीजें आसानीसे सड़ाअी जा सकती हैं और गांवकी मौजूदा पद्धतिसे तैयार होनेवाले खादसे कहीं ज्यादा मात्रामें खाद बनता है।

हरिजन, २४–८–१९३५

# खुराककी कमी और खेती

## दूसरा भाग

## ५८

## भाव-नियंत्रण

पुलिसवाले अकसर किसी छोटे व्यापारीकी दुकान पर छापा मारकर अुसे हाकिमोंके सामने खड़ा कर देते हैं। कहा जाता है कि यह सब अुन्हें, यानी व्यापारियोंको 'सबक सिखाने' की गरजसे किया जाता है। लेकिन अिस तरह 'सबक सिखाने' का हमारा अब तकका जो अनुभव है, वह बहुत कड़वा है। हिन्दुस्तानी व्यापारी-मंडलकी समितिने हिन्दुस्तान सरकारके नाम अेक महत्त्वका पत्र भेजा है। अुसमें यह बताया है कि भाव-नियंत्रणके कारण कैसा अनर्थ हो रहा है। अिस नियंत्रणका हेतु तो यह बताया जाता है कि आम रिआयाको अुसकी जरूरतकी चीजें अुचित भावसे मिलें और व्यापारी लोग बेहद मुनाफा लेनेसे बाज आयें। जैसा कि अिस समितिने अपने पत्रमें कहा है, "अब तक सरकारने अिस दिशामें जो कार्रवाअी की है, अुससे अधिकतर तो अुसके असल अुद्देश्यकी सिद्धिमें रुकावट ही पैदा हुअी है। यह देखा गया है कि जब किसी चीजके भाव पर सरकारी नियंत्रण शुरू होता है, तो तुरन्त ही बाजारमें अुस चीजकी तंगी मालूम होने लगती है या अुसका वहां आना ही बन्द हो जाता है, बशर्ते कि सरकार अिस तंगी या गड़बड़ीको रोकनेकी दिशामें कोअी अुचित कार्रवाअी न करे। मसलन्, कुछ ही समय पहले हिन्दुस्तानकी सरकारने गेहूंकी बिक्रीका निर्ख तय किया था। नतीजा यह हुआ कि कलकत्तेके बाजारमें थोकबन्द गेहूंका जाना कम हो गया और आज हालत अितनी गंभीर हो अुठी है कि अगर गेहूंका संग्रह बनाये रखनेकी दिशामें समय रहते अुचित कार्रवाअी न की गयी, तो कुछ समय बाद वहां गेहूं मिलना भी मुश्किल हो जायगा। अिसी तरह पिछले साल विलायतमें भी जब टमाटर और 'गूज़बेरी' के निर्ख बांधे गये, तो अुसके बाद फौरन ही ये फल बाजारसे गायब हो गये।" अैसी ही खबरें देशके दूसरे हिस्सोंसे भी आयी हैं। कहा जाता है कि अेक जगह तो रुपयेके अेक सेर गेहूं मिलना भी असम्भव हो गया था।

पुलिसवाले ज्यादातर तो जो सामने पड़ जाता है, अुसीको बिना सोचे-विचारे पकड़ लेते हैं; अतअेव अच्छा ही हुआ कि समितिने अपने पत्रमें अिसका भी जिक्र कर दिया। समितिने लिखा है :

"आज होता क्या है? जब पुलिसको पता चलता है कि बाजारमें कोअी चीज बिक नहीं रही है, तो वह अुसके कारणकी छानबीन नहीं करती, बल्कि बिना सोचे-समझे जो मनमें आता है कर डालती है और जो अिने-गिने लोग यहां-वहां अुसकी चपेटमें आ जाते हैं, अुन्हें हदसे ज्यादा दाम लेने या मालका संग्रह करके भी अुसे न बेचनेके लिअे गिरफ्तार कर लेती है। अिसका यह मतलब नहीं कि समिति अुन लोगोंका समर्थन करती है, जो मालको कोठारमें भरे रहते हैं और अुसे बेचनेसे जी चुराते हैं। समिति मानती है कि अिसकी रोक होनी चाहिये; फिर भी वह यह कहना चाहती है कि अिस तरहकी छुटपुट और मनमानी कार्रवाअीसे तो व्यापारमें अव्यवस्था ही फैलती है और बहुतेरे छोटे व्यापारी बार-बार अिस तरह जलील होनेके बजाय अपना व्यापार बन्द करके घर बैठ जाना बेहतर समझते हैं।"

अिसके बाद समितिने अपने पत्रमें यह बताया है कि विभिन्न प्रान्तीय सरकारें जब अपने अपने ढंगसे कोअी कार्रवाअी करती हैं, तो अुसका नतीजा क्या होता है :

"अुदाहरणके लिअे, पिछले सितम्बरमें युक्त-प्रान्तकी सरकारने दूसरे बाजारोंमें प्रचलित भावका विचार किये बिना ही हापुड़के बाजारमें गेहूंकी निर्खबन्दी कर दी। दूसरे प्रान्तोंमें और हिन्दुस्तानके दूसरे बाजारोंमें, खासकर पंजाबमें, अुस समय गेहूंका जो भाव था अुससे यह भाव कम रहा। नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंके जिन व्यापारियोंने — मसलन्, कलकत्तावालोंने — हापुड़वालोंके साथ अेक खास निर्ख पर गेहूंका सौदा कर रखा था, अुन्हें हापुड़से गेहूं नहीं मिले, बल्कि बहुतेरा गेहूं पंजाब चला गया, क्योंकि वहां भाव ज्यादा था।"

अिसी सवालके सिलसिलेमें और भी कअी बातें हैं, जिनका जिक्र करना यहां जरूरी नहीं है। अूपर कही गयी तमाम विचित्रताओं और मुसीबतोंसे बचनेके लिअे और भाव-नियंत्रण संबंधी सरकारी कार्रवाअीको सफल बनानेके लिअे समितिकी रायमें नीचे लिखी बातें जरूरी हैं :

"१. सरकार निर्खकी जो ज्यादासे ज्यादा हद कायम करे, अुसका व्यापारी द्वारा लाये जानेवाले नये मालकी लागत दरके साथ कोअी मुनासिब संबंध होना चाहिये; और

२. ठहराये हुअे भावसे खुद सरकारको भी वे चीजें बेचनेकी तैयारी रखनी चाहिये — अुत्पादनका कुल खर्च, माल लाने ले जानेका खर्च, कच्चा माल पानेकी सहूलियत, मजदूरी और वाजिब मुनाफा वगैरा तमाम चीजोंको ध्यानमें रखकर ही निर्खबन्दी होनी चाहिये।"

ये सब सूचनाअें बिलकुल अुचित और व्यावहारिक हैं; सरकारको अिन पर अमल करनेमें कोअी मुश्किल न होनी चाहिये। अिसके बारेमें भी समितिने अपने कुछ सुझाव पेश किये हैं। वह कहती है:

"निर्खकी अूंचीसे अूंची हद ठहरा देनेके बाद सरकारको देशके अलग-अलग केन्द्रोंमें अनाजके कुछ बड़े कोठार खोलने चाहिये और तयशुदा निर्खसे ग्राहकोंके हाथ जितना वे चाहें, फुटकर या थोकबन्द माल बेचनेको तैयार रहना चाहिये। जब सरकार अेक खास भावसे बेचनेको तैयार हो जायगी, तो व्यापारी भाव न बढ़ा सकेंगे। चांदीके मामलेमें तो अैसा हो भी चुका है।"

भाव-नियंत्रण सम्बन्धी प्रश्नोंका विचार करनेके लिअे अिसी फरवरीके पहले हफ्तेमें जो परिषद शुरू होनेवाली है, अुसमें अिन सुझावों पर विचार होना चाहिये, विभिन्न चीजोंके व्यापारियोंके प्रतिनिधियोंके साथ चर्चा की जानी चाहिये और जिस हालतके जल्दी ही बेकाबू होनेका डर है, अुसे फौरन ही काबूमें लाना चाहिये।

सेवाग्राम, १–२–'४२ **महादेव देसाअी**

हरिजनसेवक, ८–२–१९४२

## ५९

# नियंत्रण : सरकारी या सार्वजनिक ?

[अेक बहुत ही अनुभवी मित्रने नीचेका लेख भेजा है :]

यह सच है कि आज देशमें अनाजकी जो तंगी है, वह कुछ हद तक ब्रह्मदेशसे चावल और आस्ट्रेलियासे गेहूंकी आमदके बन्द हो जाने और हिन्दुस्तानसे विदेशोंमें गेहूंकी निकासी होनेके कारण अुत्पन्न हुअी है; लेकिन साथ ही हमारे देशमें राज्यके अधिकारियोंने अपनी अक्षमताके कारण सारी परिस्थितिको कुछ अैसा जटिल बना दिया है कि जिससे स्थिति और भी ज्यादा खराब हो गअी है। यदि सरकारी नियंत्रणके मौजूदा दोषोंको दूर करनेके लिअे अुचित अुपाय न किये गये, तो सारे देशमें खाद्य पदार्थोंकी जो तंगी बढ़ती चली जा रही है, अुसके कारण डर है कि कहीं परिस्थिति बहुत ही गंभीर और बहुत व्यापक न बन जाय।

यह तो जाहिर है कि साधारण अवस्थामें हिन्दुस्तान अपनी प्रजाकी आहार-संबंधी कुल आवश्यकताओंके बारेमें स्वयंपूर्ण है। पिछले तीन सालोंमें हर साल औसतन करीब १४ लाख टन चावल ब्रह्मदेशसे आता था और आस्ट्रेलियासे कुछ गेहूं आता था; अब चूंकि अिनका आयात करीब करीब बन्द हो चुका है, अिसलिअे देशके आन्तरिक अुपयोगके लिअे आवश्यक अनाजकी मात्रामें काफी कमी हुअे बिना नहीं रह सकती। लेकिन याद रहे कि ब्रह्मदेशसे जो १४ लाख टन चावल आता था, अुसके मुकाबले हिन्दुस्तानमें चावलकी कुल पैदावार १९३८–३९ में २ करोड़ ४० लाख टनकी और १९३९–४० में २ करोड़ ५० लाख टनकी हुअी थी। अिसमें दूसरे अनाजोंकी पैदावार, जो २ करोड़ ३० लाख टन है, और जोड़ी जा सकती है। अिसलिअे आयातके बन्द हो जानेसे अनाजकी कुल मात्रामें ३ फी सदी ही कमी पड़ती है। आयातकी बन्दीके सिवा, हिन्दुस्तान सरकारने जिस गलत तरीकेसे काम किया है, वह भी पिछले कुछ महीनोंमें खाद्य पदार्थों संबंधी स्थितिको अधिक गंभीर बनानेमें कारणीभूत हुआ है।

खाद्य पदार्थोंके भावका नियंत्रण करनेकी सरकारी कोशिश बिलकुल ही बेकार साबित हुअी है। सब किसीका यह अनुभव है कि अिससे खरीदारोंको लाभ होनेकी बात तो दूर रही, अुलटे जब कुछ वक्त पहले गेहूंकी

ज्यादासे ज्यादा दर फी मन ४ रु० ६ आना ठहरायी गयी, तो अुसके कारण अनेक मंडियोंमें गेहूंके दर्शन दुर्लभ हो गये। क्योंकि अिस नियंत्रणकी वजहसे लोगोंमें घबराहट फैल गयी और अुनमें निजी अुपयोगके लिअे गेहूंका संग्रह करके रखनेकी लालसा पैदा हो गयी। नतीजा यह हुआ कि आज बाजारमें मुंह-मांगे दाम देने पर भी गेहूं नहीं मिल रहे हैं। भाव-नियंत्रणके लिअे सरकारने जिस तरीकेसे काम लिया, अुसकी सारी बुनियाद ही गलत थी और अुसका अमल भी योग्यतापूर्वक नहीं हुआ। अनाजके बंटवारेकी व्यवस्थाके लिअे सरकारके पास कोअी प्रबन्ध नहीं था, और जो थोड़ा खानगी प्रबन्ध था वह सरकारी कार्रवाअीके कारण बेकार हो गया। यदि सरकार गेहूंके भावको नियंत्रित करना चाहती थी, तो अुसका अुचित तरीका तो यह था कि वह गेहूंके स्टाकको खरीदती और लागत दर पर अुसका वितरण करनेके लिअे अेक कार्यक्षम तंत्र खड़ा करती। अिसके लिअे अेक विशाल और कार्यक्षम संस्थाकी आवश्यकता थी। लेकिन वैसी कोअी चीज खड़ी नहीं की गयी। सरकारने अेक दिन जागकर गेहूंके ज्यादासे ज्यादा भावकी हद बांध दी और फिर वह गेहूंकी तलाशमें लग गयी। वितरणकी व्यवस्थाका और नअी पूर्तिके खर्चका पर्याप्त विचार किये बिना ही सरकारने भावों पर अंकुश रखनेका यह अनगढ़ प्रयत्न किया। अिसके सिवा कअी जगह व्यापारियोंको सताया गया। संयुक्त प्रान्त जैसे प्रान्तमें हिसाब रखनेकी पद्धति पर अंकुश लगाया गया और अेक जगहसे दूसरी जगह — अेक जिलेसे दूसरे जिलेमें भी — अनाज लाने ले जानेकी मनाही की गयी। अिसके कारण व्यापारके सामान्य प्रवाहमें बहुत ही रुकावट पैदा हुअी। फलतः लोगोंमें घबराहट फैली और अुसके कारण वे निजी अुपयोगके लिअे अनाजका संग्रह करके रखने लगे।

अतअेव सरकारके लिअे बेहतर तरीका तो यही है कि वह अनाजके भाव, वितरण और आयात-निर्यात परका नियंत्रण अुठा ले। सम्भव है कि नियंत्रणके अुठते ही गेहूं जैसे कुछ अनाजके भावोंमें अेकदम बहुत तेजी आ जाय। लेकिन जब तक अधिकसे अधिक खरीदारोंको सरकार द्वारा निश्चित दर पर पर्याप्त अनाज नहीं मिलता, तब तक मौजूदा नीतिके कारण तो खरीदारोंके लिअे अनाजकी बनावटी किल्लत ही पैदा होगी। सरकार द्वारा की गयी निर्खबन्दीका अेक अजीब नतीजा यह हुआ है कि कअी जगह मंडियों और बाजारोंमें से गेहूंका सारा स्टाक ही गायब हो गया है और निर्खबन्दीवाली

चीजें ग्राहकोंको मुंह-मांगे दाम देने पर भी नहीं मिल रही हैं। अिसलिअे मजबूरन यही मानना पड़ता है कि अनगढ़ और अधूरे नियंत्रणकी अपेक्षा तो नियंत्रणके अभावसे ग्राहकोंका अधिक हित हो सकेगा।

नियंत्रण न होने पर जनताकी जिम्मेदारी खास तौर पर बढ़ जाती है। लोगोंको भयभीत न होना चाहिये और अपनी मामूली जरूरतोंसे बेहद ज्यादा अनाज संग्रह करके न रखना चाहिये।

व्यापारियों और दुकानदारोंको बेहद मुनाफा कमानेकी जरा भी कोशिश न करनी चाहिये और अिस गंभीर व कठिन समयमें देशके प्रति अपने कर्तव्यको समझना चाहिये। यदि वे गल्ला अिकट्ठा करके रखेंगे, तो आम जनताको बड़ी परेशानी अुठानी पड़ेगी और अुनका अपना स्वार्थ भी बहुत संकटमें पड़ जायगा।

जो चीज सरकार नहीं कर सकी, वही व्यापारी वर्ग कर सकता है।

हरिजनसेवक, १२–४–१९४२

## ६०

## भाव-नियंत्रणमें गोलमाल

भाव-नियंत्रणमें गोलमालके बारेमें १२ अप्रैलके अंकमें अेक 'अनुभवी मित्र' का जो लेख आया है वह स्वागतके योग्य है। वर्तमान भाव-नियंत्रणको हटानेका यही अेक कारण काफी है कि अिससे किसीको भी कोअी फायदा नहीं हुआ, और ग्राहकोंको तो बिलकुल नहीं। सारे प्रश्न पर नये सिरेसे विचार होना चाहिये। वह न केवल अुत्पादकों और बेचनेवालोंकी दृष्टिसे, बल्कि ग्राहकोंकी दृष्टिसे भी विचारा जाना चाहिये। भाव-नियंत्रणकी नीतिका अेक बहुत गंभीर नतीजा यह आया कि बाजारसे खाद्य पदार्थ गायब हो गये; साथ ही जहां खाद्य पदार्थ मिलते थे, वहां गरीब आदमियोंको सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। सरकारने अच्छी तरह विचार किये बिना व व्यापारियोंसे सलाह-मशविरा किये बिना ही नियंत्रित भावका अैलान तो कर दिया, पर अुस भावसे चीजोंकी पूर्ति करनेमें वह असफल रही। यदि कण्ट्रोल लागू करना था तो वह 'दैनिक अिस्तेमालकी सभी वस्तुओं' पर लागू करना था। वह केवल खाद्य पदार्थोंके भावों पर ही लगाया गया, पर कपड़ा, मिट्टीका तेल, माचिस, कागज, लोहा और दूसरी चीजों पर — जिनके भाव

१०० से ३०० प्रतिशत तक बढ़ गये हैं — नहीं लगाया गया। अिससे गरीब किसानको, जिसे अनाजकी कीमतें बढ़नेसे भी कोअी खास लाभ नहीं हुआ, अधिकसे अधिक सहना पड़ा। अुसके दृष्टिकोणसे अनाजके भावोंका नियंत्रण अेक भयंकर नुकसान है, क्योंकि जिस वस्तुसे अुसे रातदिन काम पड़ता है, या जिसे वह बेचता है अुसका भाव तो बंध गया, पर अुसके हमेशाके अिस्तेमालकी दूसरी सब चीजोंके लिअे अुसे बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

दूसरी चीजोंकी तरह अिसमें भी खास कठिनाअी तो गैर-जिम्मेदार सरकार ही है। 'रॉयल अिकानॉमिक सोसाअिटी'के 'दि अिकानॉमिक जर्नल'में गत महायुद्धमें जर्मनीके भाव-नियंत्रण पर छपा हुआ अेक लेख सारे प्रश्न पर अच्छी रोशनी डालता है और रास्ता भी बताता है। पर सरकार अुसका लाभ अुठाना चाहे तब न! अिसका लेखक लियन जिटलीन कहता है कि जर्मनीके अिस अनुभवसे "स्वदेशकी आर्थिक स्थितिको मजबूत बनानेके ब्रिटिश प्रयत्नोंको सफल बनाने और साथ ही समान बलिदानके सन्तुलनको कायम रखनेकी दिशामें" पदार्थपाठ मिल सकता है।

अुसने जो सबसे पहली चीज बतलायी, वह यह है कि 'नया माल खरीदनेकी कीमत' किस प्रकार तय की जाय। अिसके दो अर्थ हैं: (१) अुत्पादकके लिअे अिसका अर्थ है अुत्पादनका खर्च; (२) बेचनेवालों (थोक व खुदरे) के लिअे अिसका अर्थ है अपने संग्रहमें से बेची हुअी अुसी जाति व प्रमाणकी चीजोंको वापस खरीदनेकी कीमत। लेकिन ये कीमतें "किसी खास समयमें — कहिये तीन माहमें — नये व पुराने मालकी कीमतोंका औसत निकालनेकी संयोगोंके अनुसार बदलनेवाली पद्धति (Elastic system of averaging costs)" से तय की जायं।

दूसरी मुख्य बात भाव-नियंत्रणमें आनेवाली चीजोंकी संख्याके बारेमें बतलायी गयी है। "असरकारक भाव-नियंत्रणके लिअे यह जरूरी है कि जहां तक संभव हो कमसे कम चीजें अुसके नियमोंसे मुक्त रहें।" अिससे हमारे देशके गरीब किसानोंको होनेवाले कष्ट कम हो जायंगे।

पर सबसे अधिक महत्त्वकी और हमारे देशके लिअे खास प्राथमिक महत्त्वकी बात विभिन्न व्यापारिक संघोंकी सेवा प्राप्त करनेकी है। ब्रिटेन और जर्मनी जैसे स्वतंत्र देशोंमें यही स्वाभाविक रास्ता था। यहां विदेशी नौकरशाहीको यह रास्ता नहीं सूझेगा और यदि सूझा भी तो अुसे अप्रिय

लगेगा। पर मुद्देकी बात यह है कि यदि व्यापारिक संघोंकी सेवाका अुपयोग न किया जाय, तो सारा भाव-नियंत्रण ही अेक भयंकर गोलमाल हो जाता है। लेखक यह बताते हुअे लिखता है: अिसने "दूसरे देशोंके अैसे ही संगठनोंके मुकाबले जर्मनीके आर्थिक जीवनमें ज्यादा महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। वहां अेक प्रकारका 'बंद दुकान' का तरीका अपनाया गया था और अुन संगठनोंको यह तय करनेका हक मिल गया था कि किसे सदस्य बनाया जाय और किसे नहीं। . . . संगठनोंके अधिकारी 'राज्यके डिप्टी कमिश्नर' नियुक्त किये जाकर सरकारके ट्रस्टी बने। लड़ाअी शुरू होनेके तुरन्त बाद ही स्थापित किया हुआ 'युद्ध-दफ्तर' का अेक खास विभाग अिस संगठनका केन्द्र था, जिसने कच्चे मालके सारे स्टाकको अपने कब्जेमें करके न केवल युद्धकी आवश्यकताओं, बल्कि तमाम नागरिक मांगों पर भी नियंत्रण कर दिया। अपनी बहुविध और दूरगामी आर्थिक प्रवृत्तियोंका विकेन्द्रीकरण करनेके लिअे अिस विभागने विविध अुद्योगों और व्यापारों-सम्बन्धी खास खास कामोंको करनेके लिअे कअी अलग अलग समितियां बना डालीं और ये समितियां व्यापारिक संघोंकी अर्ध-सरकारी प्रवृत्तियोंका मार्गदर्शन और देखरेख करती थीं।"

लेखक आगे कहता है:

> "व्यापारिक संघोंसे सम्बन्ध रखनेवाली सरकारी नीति अुनकी जर्मनीके आर्थिक जीवनमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्रात करनेकी अिच्छासे मेल खाती थी। अिसलिअे सरकारने अुत्पादकों, थोक व खुदरा व्यापारियों, निकास करनेवाले व्यापारियों और कारीगरोंके केन्द्रीय संघोंकी रचनाको प्रोत्साहन दिया। अिन केन्द्रीय संघोंमें अलग अलग धंधोंके सभी संगठन, संस्थाअें व मंडल आदि समा गये थे और वे सरकारके बहुत बड़े मददगार साबित हुअे; क्योंकि तब सरकारको व्यक्तियों या असंतुष्ट समूहोंकी सतत व कठिन शिकायतोंको सुनने व निपटानेका असंभव जैसा काम नहीं करना पड़ा। फिर ये केन्द्रीय संघ बहुत जल्दी समर्थ व जिम्मेदार संस्थाअें बन गये, जो सरकारको युद्ध-सम्बन्धी अुत्पादन व वितरणके तमाम मामलोंमें सलाह देने लगे।"

व्यापारिक संघोंको अपना काम खुद चलानेकी सत्ता रखनेवाली संस्थाओंमें बदल कर अुनकी सेवायें लेनेकी पद्धति "अच्छे कामकी दृष्टिसे अैसी समितियां

कायम करनेके बनिस्बत ज्यादा पसन्द करने लायक है, जिनके सदस्य बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति तो अवश्य होते हैं, लेकिन अपने व्यापारोंके चुने हुअे प्रतिनिधि नहीं होते।" यदि स्वतंत्र देशोंके लिअे यह बात सही है, तो हिन्दुस्तान जैसे गुलाम देशके लिअे, जहां न तो सरकारका लोगोंसे कोअी वास्ता है न अुनके प्रति कोअी जिम्मेदारी, यह और भी सही है।

आखिरी बात आर्थिक शक्तिके दुरुपयोगके विरुद्ध कानून बनानेके बारेमें है। युद्धके बाद जर्मनीमें अिमर्जेन्सी डिक्री (आकस्मिक व आवश्यक कानून) द्वारा "अेक खास सुप्रीम कोर्टकी रचना की गअी थी। अुसे सामाजिक हितके घातक करारोंको रद्द ठहराने, संस्थाओंके सदस्योंको अुनके बंधनसे मुक्त करने, संगठनको तोड़ने, अुत्पादन, वितरण और भावों-सम्बन्धी नीति पर असर डालनेकी कोशिश करनेवाले व्यक्तियों या संगठनों पर जुर्माना करने आदिका हक दिया गया था।"

अिस दिशामें जब तक कदम न अुठाये जायं, तब तक विचार-रहित, निकम्मी, बेअसर और नुकसानदेह भाव-नियंत्रणकी नीतिका त्याग किया जाना चाहिये।

अिस बीच क्या किया जाय, अुस सम्बन्धमें व्यापारी-मित्रके दिये गये सुझावोंसे अधिक अच्छे सुझाव शायद नहीं मिल सकते।

**महादेव देसाअी**

हरिजन, २६–४–१९४२

## ६१

## खुराककी मापबन्दी

हिन्दुस्तानमें खुराककी मापबन्दीके बारेमें भूल की जा रही है। खुराक अिकट्ठी करने, ले जाने, रखने और बांटनेका खर्च खुराककी कीमतमें डाला जाता है। अिससे खुराक पैदा करनेवालेको जो दाम मिलता है और खानेवालेको जो देना पड़ता है, अुसमें ३० से ५० फी सदी तकका फर्क रहता है। अिसका नतीजा यह होता है:

१. अनाज पैदा करनेवाला अनाज देना नहीं चाहता; क्योंकि अुसे डर रहता है कि अगर बादमें खरीदना पड़ा तो अुसे ज्यादा दाम देने पड़ेंगे।

२. खुराक पैदा करनेवालों पर बुरा असर होता है। सरकारी नियंत्रण और दखलगीरीके डरसे वे अपनी फसल बढ़ानेमें हिचकिचाते हैं।

३. नफेकी अितनी गुंजाअिश होनेके कारण कालेबाजारको प्रोत्साहन मिलता है।

अिसलिअे सूचना यह है कि खुराक अिकट्ठी करने वगैराका खर्च सरकारी खजानेसे दिया जाय और खरीदनेवालोंको खुराक अुसी भावमें बेची जाय, जिस भावसे पैदा करनेवालोंके पाससे वह खरीदी गयी थी।

अिसके अलावा, अेकसे तीन सालके लिअे खुराकका भाव कानूनसे निश्चित कर दिया जाय, ताकि पैदा करनेवाले और खरीदनेवाले दोनोंको पता रहे कि अुन्हें क्या मिलेगा और क्या देना होगा।

अिस छोटेसे फेरफारका यानी खुराककी मापबन्दीका अूपरी खर्च सरकारी खजानेसे देनेका असर यह होगा:

१. कालाबाजार अपने-आप बन्द हो जायगा।

२. ज्यादा खुराक पैदा करनेकी वृत्तिको प्रोत्साहन मिलेगा।

३. पैदा करनेवाले अपना माल देनेको तैयार होंगे, क्योंकि अुन्हें पता रहेगा कि जब कभी अुन्हें जरूरत पड़ेगी अुन्हीं दामों अुनको खुराक मिल सकेगी।

४. खरीदनेवालेको भविष्यके अपने रहन-सहनका दाम मालूम रहेगा, अिससे अुसको सन्तोष रहेगा।

५. जिन्दगीके लिअे जरूरी चीजोंकी अेकसी और कम कीमत रखनेका रिवाज पैदा होगा।

अिस तरह खुराककी मापबन्दी पर जो खर्च होगा, अुसके लिअे अुन चीजों पर, जिनकी मापबन्दी नहीं है, खास करके अैश-आरामकी चीजों पर, बढ़ते पैमानेका सेल्स टैक्स लगाकर पैसा पैदा किया जा सकता है। अिस तरह खुराक जैसी जरूरी चीजोंकी कीमत चुकानेमें गैरजरूरी और अैश-आरामकी चीजें खरीदनेवाले मदद करेंगे।

थोड़ेमें, अिस सूचनाको यों रखा जाय कि जिन्दगी और तन्दुरुस्तीके लिअे गैरजरूरी चीजें खरीदनेवालोंको जरूरी चीजें ले जाने, रखने और

बोनेका खर्च अुठानेमें मदद देनी होगी, ताकि जरूरी चीजें अिस्तेमाल करनेवालों तक वे कम-से-कम कीमतमें पहुंच सकें।

**मॉरिस फ्रिडमैन**

हरिजनसेवक, २९–९–१९४६

## ६२

## कण्ट्रोल

माननीय श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यने 'टाटा अिंस्टिटचूट ऑफ सोशल सायन्स' के कन्वोकेशनमें बोलते हुअे कहा—"अब जिन्दगी अितनी आअे बढ़ गयी है और अितनी पेचीदा बन गयी है कि मुझे यह पूरा विश्वास हो गया है कि दुनियामें चीजोंके लगभग सारे कण्ट्रोल जारी रहेंगे।" अुन्होंने यह भी कहा कि "कण्ट्रोल चन्द रोजकी नहीं बल्कि हमेशाकी चीज बन जायंगे।" अेक मामूली आदमीको यह बात बिलकुल अुलटी मालूम होती है।

हालांकि लड़ाअीको बन्द हुअे करीब दो साल हो चुके, फिर भी देशमें बुनियादी जरूरतें पूरी करनेवाली चीजोंके मामलेमें लड़ाअीके समयकी हालतें आज भी मौजूद हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि चीजोंकी कमीकी वजहसे लोगोंको कुछ हद तक सामाजिक न्यायका विश्वास दिलानेके लिअे किसी-न-किसी तरहके कानून-कायदे बनाना जरूरी हो गया है। खुराकका रेशनिंग आज भी हमारा पीछा नहीं छोड़ता। कालेबाजारका सब तरफ बोलबाला है। नफाखोरी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती दिखाअी दे रही है, और सरकार कण्ट्रोलके काममें मशगूल है! दूरसे देखनेवालेको लगता है कि सरकारी व्यवस्थामें कहीं न कहीं गड़बड़ी जरूर है। लेकिन बहुतसे लोग यह नहीं कह सकते कि वह गड़बड़ी क्या और कहां है।

चीजोंकी कीमत अुनकी मांग और पूर्ति (सप्लाअी) के नियम पर ही निर्भर करती है। अगर किसी चीजकी मांग ज्यादा हो और वह पूरी न की जाय, तो अुसकी कीमत बढ़ जाती है। लेकिन जो चीज बाजारमें मांगसे ज्यादा मात्रामें होती है अुसकी कीमत घट जाती है। अिसलिअे चीजों और अुनकी कीमतोंके कण्ट्रोलका ध्येय होना चाहिये चीजोंकी मांग और पूर्ति दोनों पर नियंत्रण रखना। रेशनिंग चीजोंकी मांग पर पाबन्दी लगानेकी कोशिश तो करता है, लेकिन अुनकी पूर्ति (सप्लाअी) की कोअी व्यवस्था

नहीं करता। चीजोंकी कीमतको कण्ट्रोल करनेके लिअे सरकारने जो मौजूदा तरीका अख्तियार किया है, वह मिनटके कांटेको हाथसे लगातार घुमाकर घड़ीको चालू रखने जैसा ही है। हम तो यह चाहते हैं कि समाजके आर्थिक व्यवहारकी घड़ीके कलपुर्जोंको ठीक करके अुसे अपने-आप चलने दिया जाय। कानून-कायदे बनाकर चीजोंकी कीमत पर जो बनावटी नियंत्रण रखा गया है, वही बहुत हद तक कालेबाजारके लिअे जिम्मेदार है। दरअसल देखा जाय तो कीमतोंकी हद अपने-आप बंध जानी चाहिये; अुसके लिअे सरकारी हुक्मकी जरूरत नहीं। अभी तक सरकार राजा कैन्यूटकी तरह हुक्म देकर कालेबाजार और नफाखोरीकी बाढ़को रोकनेकी कोशिश करती रही है। लेकिन जो तरीका अख्तियार किया गया, वह बिलकुल बेकार साबित हुआ है। हकीकत यह है कि बहुतसे व्यापारी खुद यह चाहते हैं कि कण्ट्रोल हमेशा बने रहें; क्योंकि अिससे अुन्हें कालाबाजार करनेका मौका मिलता है। अूंची जगहों पर काम करनेवाले रिश्वतखोर सरकारी अफसर भी यही चाहते हैं कि कण्ट्रोल सदा बने रहें। लेकिन अब वह समय आ गया है कि प्रान्तोंमें राज्य करनेवाले लोकप्रिय मंत्रि-मण्डल अिन सब बातोंमें सुधार करें और कालाबाजार और नफाखोरीको हमेशाके लिअे खतम कर दें।

अगर हम कालेबाजारसे बचना चाहते हैं और चीजोंकी मांग और पूर्तिको स्वाभाविक तौर पर काबूमें रखना चाहते हैं, तो मांगको रेशनिंग खुद काबूमें रख लेगा। लेकिन चीजोंकी पूर्ति (सप्लाअी) को स्वाभाविक रूपसे काबूमें करनेके लिअे सिर्फ बनावटी तौर पर चीजोंकी कीमतें तय कर देनेसे काम नहीं चलेगा; अिसके लिअे सप्लाअीको ही कण्ट्रोलमें लेना होगा। लेकिन सरकारको अेक काम करना होगा। जिन चीजों पर वह कण्ट्रोल लगाना चाहती है, अुन्हें अच्छी तादादमें सरकारी गोदामोंमें अिकट्ठा करे और जब व्यापारी बाजारमें अुन्हें नियत कीमतसे ज्यादा दामोंमें बेचनेकी कोशिश करें, तभी अेक निश्चित कीमतमें अुन्हें बेचे। बेशक, सरकार व्यापारीके नाते बाजारमें तभी आयेगी, जब व्यापारी खुद अपनी करतूतोंसे अुसे अैसे सख्त कदम अुठानेके लिअे मजबूर कर देंगे। सरकार गोदाममें अनाज जमा करके यह देखती रहेगी कि व्यापारी अनुचित ढंगसे चीजोंकी कीमतें न बढ़ा दें। ज्यों ही बाजारमें कीमतें बढ़ने लगें, त्यों ही सरकारी गोदाम खोल दिये जायं और कीमतें घटानेके लिअे सस्ते दामोंमें अनाज बेचना शुरू कर

दिया जाय। बाजार पर कारगर तरीकेसे असर डालनेके लिअे जरूरी संग्रहका १० से १५ फीसदी भी सरकार अिकट्ठा कर ले तो काफी होगा।

यह कोअी नअी बात नहीं है। 'बिहार केन्द्रीय राहत कमेटी' के काममें खानगी अेजेन्सियां कायम करके, बगैर किसी कानून या दूसरी सरकारी सत्ताकी मददके, कामयाबीके साथ अिसका प्रयोग किया गया है। हम सिर्फ अपनी अपीलसे ही लोगोंको राजी करते थे। अिसके अलावा, आर्थिक मामलोंमें सेण्ट्रल बैंक भी ब्याजकी दरों पर, जो पैसेका बाजार-भाव ही कहा जायगा, काबू रखनेके लिअे यही तरीका काममें लेते हैं। लेकिन किसी अनजाने कारणसे सरकारने अच्छी तरह परखे हुअे अिस रास्तेको छोड़कर मनमाने ढंग पर चीजोंकी कीमतें बांधनेके लिअे राजा कैन्यूटका रास्ता पकड़ा और व्यापारियोंको माल छिपानेका मौका दिया। आज भी मौका हाथसे गया नहीं है। जनताकी सरकारोंको चाहिये कि वे अपनी यह नीति बदल दें और जैसे-जैसे बाजारमें मामूली हालतें पैदा होती जायं, वैसे-वैसे चीजों परसे धीरे-धीरे कण्ट्रोल हटा लें। हमें विश्वास है कि हमारी सरकारें मौजूदा कण्ट्रोलके तरीकोंसे जनताको जो तकलीफ होती है, अुसे मिटानेके लिअे जल्दी ही कदम अुठायेंगी।

हरिजनसेवक, ११–५–१९४७ **जे० सी० कुमारप्पा**

## ६३

## खतरेकी घण्टी

जो खबरें आ रही हैं, अुनमें सचाअीका थोड़ा भी अंश हो तो अुससे काफी चिन्ताजनक हालतका पता चलता है। अभी अुस दिन मारवाड़ी व्यापारी-संघके श्री अेम० अेल० खेमकाने अिलाहाबादमें पत्र-सम्पादक सम्मेलनके सामने कहा: "अेक ओर तो भारत-सरकारके खाद्य-विभागके सेक्रेटरीका यह कहना है कि अगस्त १९४३ से अनाजकी निकासी बिलकुल बन्द है और दूसरी ओर कलकत्तेके चुंगीघरने जो निर्यात-सूची छापी है, अुससे पता चलता है कि सिर्फ गत अगस्त और सितम्बरके महीनोंमें ही अकेली अेक गैर-हिन्दुस्तानी फर्मने कलकत्तेके बन्दरगाहसे विदेशोंको २२,५०४ टनसे कम चावल नहीं भेजा है, जिसकी कीमत ९४ लाख रुपयेसे ज्यादा होती है।"

श्री खेमकाने यह भी कहा कि "कलकत्तेकी ही निर्यात-सूचीकी बारीकीसे छानबीन करनेसे बंगालसे चावलकी और भी निकासीका पता चलेगा।" अेक भारतीय जहाजी कम्पनीके मैनेजरकी ओरसे अेक सज्जन बम्बअीसे लिखते हैं:

"हमारी लाअिन १९१७ में कायम हुअी। तबसे हमारे माल ले जानेवाले जहाज हिन्दुस्तानके विभिन्न बन्दरगाहोंके अलावा हांगकांग और दूसरे चीनी बन्दरगाहोंके बीच भी चलते रहे हैं। जापानकी लड़ाअीमें हमारे दो जहाज डूब गये। हमारा अेक नया जहाज पिछले महीने ही आया है। पिछले सप्ताह ता० १४–२–'४६ को विदेशकी अपनी पहली यात्रामें ही वह मूंगकी दालके २,९५१ बोरे ले गया।"

अपनी पूरक सूचनामें वे लिखते हैं:

"पिछले महीने भी 'बेगम' और 'जलज्योति' जहाज दालोंके और मूंगके ३५,००० बोरे कोलम्बो ले गये; लांग दालके २६,०५३ बोरे, अरहरकी दालके ३,०११ बोरे और मूंगके १,६१२ बोरे 'बेगम' जहाजसे निर्यात हुअे। मुझे और मालूम हुआ है कि अधिकारियोंकी जानकारीमें कितनी ही मात्रा हर महीने बाहर भेजी जाती है।"

अुत्तरी बंगाल-चावल-मिल-अेसोसियेशन, दिनाजपुरके सभापतिने जो रिपोर्ट भेजी है, वह भी अुतनी ही चिन्ताजनक है। अुसका सार यह है:

"सन् १९४५ में बंगाल सरकारने चावलकी दर अचानक ११ रु० ८ आनेसे घटाकर ९ रु० ८ आना कर दी और जब चावलकी मिलवालोंने अिस अचानक और भारी कमीका विरोध किया, तो चावलकी मिलोंके अधिकारमें चावलका जो भी संग्रह था, जिसमें अुबला, अध-अुबला और कच्चा धान सभी शामिल थे, वह भारत-रक्षा-नियमोंके मातहत सरकारने अपने अधिकारमें ले लिया, ताकि मिलोंवाले बादमें बढ़ायी गअी १० रु० ८ आना मनकी दरका फायदा न अुठा सकें।

"सन् १९४४ में बंगाल सरकारने १३ रु० ८ आनेसे लगाकर ११ रु० ८ आने तक फी मनके हिसाबसे दिनाजपुर जिलेसे ५० लाख मन चावल हासिल किया और अुसी चावलको अभाववाले हिस्सोंमें और राशनके हिस्सोंमें १६ रु० फी मनके हिसाबसे बेचा। अेक जिलेके चावलसे ही अिस तरह सरकारने १ करोड़ रुपयेसे ज्यादा नकद मुनाफा

कमाया। राशनके हिस्सोंमें चावलकी दर घटनेके साथ चावलकी मिलोंके चावल पर सरकार २ रु० फी मनके हिसाबसे भारी बट्टा लेने लगी। सरकारने सन् १९४५ में दिनाजपुर जिलेसे ही ९ रु० ८ आनेसे १० रु० फी मनके भाव पर ६० लाख मन चावल खरीदा और अुसे १४ रु० से १५ रु० फी मनके हिसाबसे बेचा। यह ध्यान रहे कि जिस चावल पर सरकार २ रु० फी मन बट्टा काटती थी, अुसको भी वह १४ रु० से १५ रु० फी मनकी दर पर बेचती थी। अिस तरह सरकारने १ करोड़ ५० लाख रुपयेसे कम मुनाफा नहीं कमाया। चावल पर बट्टा अनेक अस्पष्ट आधारों पर काटा जा रहा है। जैसे, चावल कम साफ हुआ है, ठीक ढंगका नहीं है, कम पॉलिश हुआ है, ज्यादा पक गया है, कम पका है, वगैरा। अिस प्रकारके नये नये आधार हर हफ्ते अुत्साही और तरक्कीकी अिच्छा रखनेवाले अूंचे अफसर अीजाद करते रहते हैं। अुन्हें सरकारको मुनाफाखोरीमें मदद देनेके लिअे जल्दी-जल्दी तरक्कियां मिल जाती हैं। पहलेसे ही बोझसे लदी जनताकी किसीको परवाह नहीं। सरकार मध्यम दर्जेका चावल बट्टा काटकर मोटे चावलसे भी कम भाव पर खरीदती है; मगर अिसी चावलको राशनके हिस्सेमें मध्यम दर्जेके चावलके तौर पर भेजती है।

"सन् १९४५ में चावलकी मिलोंको टूटे चावलों (खुड़ी) को चावलसे अलग करनेके लिअे मजबूर किया गया, जो कि सन् १९४४ तक चावलके ही हिस्से समझे जाते थे। . . . खुड़ी चावलोंका भारी जत्था अिकट्ठा हो गया है और बार-बार याद दिलाने और अर्जियां देनेके बावजूद भी अुनको ठिकाने लगानेका कोअी प्रबन्ध नहीं किया गया है। . . .

"अैसी अनेक मिसालें हैं कि सरकारने चावलकी मिलोंके चावलको खराब बताकर नहीं खरीदा और न ही अुसकी निकासीकी अिजाजत दी। नतीजा यह हुआ कि वह चावल बेकार गया या ढोरोंके खानेके काम आया।

"अगर मिलवालोंको प्रान्तके भीतर ही अिस चावलकी निकासी करने दी जाती, तो सरकारी गोदामोंसे जो निहायत बदनाम व खराब चावल दिया जाता था, अुससे यह कहीं ज्यादा अच्छा साबित होता।

अिस तरह सरकार बहुतसे लोगोंको कम-से-कम खुराक भी नहीं मिलने दे रही है, जिसकी तंगीके अिन दिनोंमें अुन्हें सख्त जरूरत है।

"चावलकी मिलोंको सौ फी सदी पॉलिश किया हुआ चावल देनेको मजबूर किया गया और अगर चावलके किसी दाने पर थोड़ी भी ललाअी पाअी गअी, तो अुसे कम पॉलिश किया हुआ बता दिया गया और अुस पर भारी बट्टा लगाया गया। मामूली तौरसे ज्यादा पॉलिश करने पर अेक मन पीछे अेक सेरकी बरबादी होती है और चावल टूट भी जाता है। अिसके अलावा, चावलके विटामिन तत्त्व कम होते हैं सो अलग। अिस तरह सरकार लाखों मन अैसा चावल बरबाद कर रही है, जो आसानीसे बचाया जा सकता है।"

अगर यह सच हो तो चावलकी मिलोंसे सौ फीसदी पॉलिश किये चावलकी मांगको और टूटे चावलोंको अलग करनेमें होनेवाली बरबादीको भारी अपराध ही कहना पड़ेगा। अगर सन् १९४३ की दुर्घटना फिर बड़े पैमाने पर न होने देना हो, तो अिस सबकी तुरन्त बारीक जांच होनी चाहिये और अुचित कार्रवाअी की जानी चाहिये।

पूना, २३–२–'४६ प्यारेलाल

हरिजनसेवक, ३–३–१९४६

## ६४

## क्या मौका हाथसे चला गया?

ब्रिटिश जनताकी खास खुराक मांस है। लड़ाअीने अिंग्लैण्डके सारे रीति-रिवाज और परम्परायें खतम कर दीं। अुनका कभी न बदलनेवाला रिवाज खानेका था। फिर भी, परिस्थितियोंके दबावने अंग्रेजोंको अपने खानेकी चीजोंमें बहुत बड़ा फेरफार करनेके लिअे मजबूर कर दिया है। जहां भोजनका आधार मांस हो, वहां अनाज और दालें स्वभावसे सिर्फ दूसरी जगह ही ले सकती हैं। फिर भी, अिंग्लैंडका खुराक-महकमा राष्ट्रकी जरूरतोंकी तरफ पूरी पूरी सावधानी रखता है। आज वहां गेहूंकी सफेद रोटी नहीं मिलती, जो किसी समय फैशनकी चीज समझी जाती थी। जब राष्ट्र खुराककी तंगी महसूस कर रहा है, तब अुन्होंने खुराकके पोषक तत्त्वोंको

बरबाद करनेकी अपनी गलतीको समझ लिया है। आज वहां चोकरवाले आटेकी भूरी रोटी ही सब जगह दिखायी देती है।

हमारे देशमें अिससे बिलकुल अुलटी बात देखनेमें आती है। हमारे भोजनका आधार अनाज और दालें हैं। अिसीलिअे भोजनमें अुनकी खास जगह होती है। हमारे देशकी आम जनता चावल, गेहूं और दूसरे अनाज पर निर्भर करती है। लेकिन हमारा खुराक-महकमा अितना कमजोर है कि रेशनकी सरकारी दुकानों पर भी लोगोंके लिअे पॉलिश किया हुआ चावल ही मिलता है। क्या हमने चावलकी मिलों पर रोक लगाने और अिस तरह आम जनताके भोजनके पोषक तत्त्वोंको बढ़ानेका सुनहला मौका नहीं खो दिया है? क्या आज भी अैसा करनेका मौका हाथसे चला गया है?

हरिजनसेवक, २३–११–१९४७ **जे० सी० कुमारप्पा**

## ६५

## निराशाजनक चित्र

अेक पत्र-लेखक, जो अपने विषयके जानकार हैं, गांधीजीके नाम लिखे अेक पत्रमें बताते हैं कि अेक ओर जब कि सरकार अकालकी पहली अवाअीकी घोषणा करके अखबारी बयान निकाल रही थी, अुसी वक्त दूसरी ओर बंगालके बन्दरगाहोंसे चावल बाहर भेजा जा रहा था। जब यह खबर अखबारोंमें छपी कि जनवरी १९४६ में कलकत्ता बन्दरसे चावल बाहर भेजा जा रहा था, तो अुससे बड़ी सनसनी फैली। अलग अलग क्षेत्रोंसे सरकार पर जो दबाव डाला गया, अुसका नतीजा यह हुआ कि केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंने अिस बातका विश्वास दिलाते हुअे बयान निकाले कि आगे बंगालसे कभी चावल बाहर नहीं भेजा जायगा। अितने पर भी चटगांवके बन्दरगाहसे चावलका बाहर भेजा जाना चालू रहा। 'बंगाल मेन्युफैक्चरर्स अेण्ड ट्रेडर्स फेडरेशन' (बंगालके अुत्पादकों और व्यापारियोंके संघ) ने २६ मअीको कलकत्ताके श्रद्धानन्द पार्कमें हुअी अेक आम सभामें यह बात जाहिर की थी। अिसके जवाबमें २८ मअीको बंगाल सरकार अिस मतलबका अेक अखबारी बयान निकाल कर ही रह गयी कि "टिपरा स्टेट अेजेन्सी चटगांवसे चावल बाहर भेज रही है और बंगाल सरकार अिसके लिअे जवाबदार नहीं है!"

सरकारके निकम्मे और कठोर अिन्तजामकी अेक और मिसाल देते हुअे पत्र लिखनेवाले भाअी बताते हैं कि "पिछले बारह महीनोंमें लगभग तीस लाख मन गेहूं सरकारी गोदामोंमें सड़ गये हैं।" आज यह बात सब कोअी जानते हैं। वे भाअी यह सुझाते हैं कि अनाजके वितरण और रक्षणका काम व्यापारियोंको सौंप देना चाहिये, जो जनताके प्रतिनिधियोंकी बनी कमेटियोंके मातहत अुनकी कड़ी निगरानीमें नामके कमीशन पर यह काम करें।

आगे वे भाअी लिखते हैं कि सरकार मामूली किस्म और अच्छी किस्मके चावलों पर प्रति मन क्रमशः ४ और १० रु० के हिसाबसे नफा कमाती है, जब कि चावलके थोक और खुदरा व्यापारी पहले मन पीछे २ से ४ आने नफा कमाते थे। अिस सबके अलावा, वे भाअी लिखते हैं कि सरकार सनकी खेती और कारखानोंके लिअे धानके खेतों पर अधिकार कर रही है। "पिछले अरसेमें सरकारने धानके खेतोंके अेक बहुत बड़े हिस्से पर फौजी छावनियों, हवाअी अड्डों और कारखानोंके लिअे अधिकार कर लिया है। अिन खेतोंको तुरन्त ही जुताअीके लिअे छोड़ देना चाहिये। १९४५ में करीब ९ लाख बीघा जमीन, जो १९४४ में जोती गयी थी, बिनजोती रह गअी। अिसके अलावा चालीस लाख बीघा जमीन अैसी है, जो अब तक कभी जोती ही नहीं गयी है। अिसे अगर जोता जाय तो बहुत बड़ी मात्रामें अनाज पैदा किया जा सकता है।"

अिस दरमियान गांवोंमें मौतकी छाया पड़नी शुरू हो गयी है और कलकत्तेमें तो भुखमरीके कारण लोगोंके मरनेकी खबरें भी आने लगी हैं। पत्र लिखनेवाले भाअी बताते हैं कि "ढाकामें चावल ५० रु० मन और मैमनसिंगमें ४५ रु० मन बिक रहा है। दूसरे जिलोंमें चावल ४० से ३० रु० मन तक बिकता है। बचतवाले जिलोंमें भी चावल २० रु० मन बिक रहा है। अिससे पहले चावलका मामूली भाव ४ रु० मन था।" सरकारके निकम्मेपन और अिन्सानकी कठिनाअियोंके प्रति कठोर लापरवाहीकी अिससे बुरी मिसाल मिलना मुश्किल है। अिससे सारे प्रान्तमें गुस्सा पैदा हुअे बिना नहीं रहेगा। हम अुम्मीद करें कि अिस बातसे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकारी तुरन्त ही अिन शिकायतों पर ध्यान देंगे और अुन्हें दूर करनेके लिअे जल्दीसे जल्दी ठोस कदम अुठायेंगे।

पूना जाते हुअे रेलमें, २९-६-'४६ **प्यारेलाल**

हरिजनसेवक, ७-७-१९४६

## ६६

# कुछ सुझाव

जबसे गांधीजीने देशके सामने खड़े हुअे अकालके संकटको टालनेके अुपाय और साधन मालूम करनेकी ओर अपना और जनताका ध्यान खींचा है, अुनके पास चारों ओरसे सुझाव चले आ रहे हैं। अिनमें से कअी सुझावोंकी चर्चा गांधीजी अपने अखबारी बयानों और 'हरिजन' के लेखोंमें कर चुके हैं। कुछ और सुझाव नीचे दिये जाते हैं। जो काम सरकारी अधिकारियोंके करनेका है, वह अुन्हें करना चाहिये और जहां आम जनताके सक्रिय सहयोगकी जरूरत है, वहां अुसे आगे आना चाहिये।

१. लाखों अेकड़ अुपजाअू काली मिट्टीवाली जमीन वर्जीनिया तम्बाकू अुगानेके काममें ली जा रही है। अैसी जमीन ८ लाख अेकड़ गन्तूरमें, ६ लाख कृष्णा और गोदावरी जिलोंमें, १० लाख सरकार जिलेमें और २० लाख दूसरे हिस्सोंमें है। चूंकि तम्बाकू और अुसका अिस्तेमाल मनुष्यके लिअे नुकसान देह माना गया है, अिस जमीनके मालिकोंके लिअे अुसकी खेती बन्द कर देने या कम कर देनेका यह सुनहरा मौका है। अुसके बदले वे अिस अुपजाअू जमीनमें अनाज, तरकारियां और मवेशियोंका चारा वगैरा अुगावें।

२. छिलकोंवाला और सूखा नारियल, जिसे आम तौर पर खोपरा कहा जाता है, बड़े पैमाने पर औद्योगिक कामोंके लिअे अिस्तेमाल किया जाता है। अुससे खोपरेका तेल और दूसरे खुशबूदार तेल, साबुन वगैरा चीजें बनाअी जाती हैं। खोपरेको बिना किसी मुश्किलके लम्बे अरसे तक रखा और पूरक व पोषक खुराकके तौर पर काममें लाया जा सकता है। अुसमें काफी मात्रामें अच्छे प्रकारकी वनस्पति चर्बी और खनिज तथा विटामिन होते हैं। यह खास तौर पर कोचीन और त्रावणकोरमें होता है। वहां खोपरेके अुद्योगको चलानेमें बड़े बड़े लोगोंका हाथ है।

३. पूनाके अेक दोस्तने मुझे जुवारके दो नमूने भेजे हैं। अेक नमूना अुस जुवारका है, जिसे पिछले मौसममें गांववालोंने अपने खेतोंमें पैदा किया था और जिसे सरकारी अधिकारियोंने लाजिमी तौर पर अनाज अिकट्ठा करनेकी योजनाके मुताबिक गांववालोंसे प्राप्त कर लिया था। अिस जुवारके पैदा करनेवालोंको ६ रुपया फी बंगाली मनके हिसाबसे दाम चुकाये गये।

दूसरा नमूना अुस जुवारका है, जो अुन्हीं गांववालोंको, जिनसे पहले नमूनेकी जुवार लाजिमी तौर पर ले ली गयी थी, भूखों मरनेसे बचनेके लिअे १० रुपया फी मनके हिसाबसे लेनी पड़ रही है। अगर यह सच हो तो यह अधिकारियोंकी नालायकी, दूरन्देशीकी कमी और गरीबोंकी जरूरतों और भलाअीकी ओर पूरी लापरवाहीकी जीती-जागती मिसाल है। किसी भी हिस्सेसे अनाजका अेक दाना भी बाहर भेजनेके पहले स्थानीय जरूरतोंका ठीक ठीक हिसाब लगा लेना चाहिये।

४. बिहारसे अेक दोस्त महुओंके बारेमें ध्यान खींचते हुअे लिखते हैं कि यह अेक खानेकी चीज है, मगर देशी शराब बनानेके काममें अिसका अिस्ते-माल किया जाता है। अगर अिससे शराब बनाना बहुत ही कम कर दिया जाय, तो महुआ न केवल गांववालोंकी खुराकमें शामिल किया जा सकता है, बल्कि 'अिससे मजदूरोंकी आमदनीमें लाजिमी तौर पर बचत होने लगेगी। कअी अुदाहरणोंमें तो अुनकी कुल आमदनीका २५ फीसदी अिस पर खर्च हो जाता है। अिस तरह वे आजसे ज्यादा दूध, तरकारी, अण्डे वगैरा खरीद सकेंगे।' मवेशियोंको जो अनाज खिलाया जाता है, अुसकी जगह महुआ भी खिलाया जा सकता है।

५. अनाजोंसे जो शराब या नशीले पेय तैयार किये जाते हैं, अुनका बनाया जाना फौरन बन्द कर दिया जाना चाहिये।

६. कलप तैयार करनेवाले कारखानोंको कुछ समयके लिअे चावल और मक्का देना रोक दिया जाय, या कम कर दिया जाय।

७. अेक पंजाबी दोस्तकी राय है कि गेहूं पैदा करनेवाले जिलोंमें सैकड़ों मन गेहूंकी कच्ची फसल रोज मवेशियोंको हरे चारेके रूपमें खिलाअी जाती है। यह बिना पका दो सौ तीन सौ मन गेहूं यदि पक जाने दिया जाय, तो वह पांचसे साढ़े सात हजार मन अनाजके बराबर हो सकता है। अिन मित्रका सुझाव है कि आदमियोंकी तरह मवेशियोंके लिअे भी अनाजकी मात्रा तय कर दी जाय और अुसके बदले शत्ताला, सरसों, हरी सब्जी और हरा चारा अुन्हें ज्यादा मात्रामें दिया जाय।

८. होटलों और अुपाहार-गृहोंमें केक, बिस्कुट, पेस्ट्री, बढ़िया रोटी (फैन्सी ब्रेड), मिठाअी वगैरा बनती हैं। अिस बारेमें जांच-पड़ताल होनी चाहिये और अुनमें कमी की जानी चाहिये।

९. शादी-गमीके मौकों पर होनेवाली दावतें और पार्टियां बन्द कर दी जायं।

१०. चावलके सवाल पर श्री प्यारेलालजीने लिखा ही है, मगर अिस बारेमें कुछ और लिखा जा सकता है। दिनाजपुरसे अेक संवाददाता लिखते हैं कि ३०,००० मन खुड़ी (टूटा) चावल वहांकी मिलोंमें पड़ा है और बरबाद हो रहा है। वह चाहे बाजारमें न बेचा जाय, लेकिन अगर अुसे छुट्टा कर दिया जाय, तो अुससे हजारों भूखोंका पेट भर सकता है। लेखकका सुझाव है कि अिस बातकी जांच की जाय कि बंगाल कितना चावल पैदा करता है, कितना सरकार मिलोंसे खरीदती है और अुसको किस काममें लेती है, सारे प्रान्तमें कितना खुड़ी चावल पड़ा है और क्या सरकार अिस चावलको खास तौर पर कायम की गयी अन्न बांटनेवाली कमेटीके सुपुर्द करने देगी।

११. प्रो० रंगाका खयाल है कि शहरी लोगोंको अन्नका राशन देनेकी तो पूरी कोशिश की गयी है, मगर देहातमें रहनेवालोंके लिअे अुसी तरह खुराक देनेकी ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है। अुनके नीचे लिखे सुझाव हैं:

(क) अनाज पैदा करनेवाले किसानोंको काफी मेहनताना दिया जाय, ताकि वे व्यापारी फसलें अुगाना बन्द कर दें। किसानोंको कपड़ा, घासलेट, अींधन और दूसरे तेल काफी मात्रामें नहीं मिलते। दलालोंको अलग रखकर अगर अन्नकी पैदावारकी अुन्हें अच्छी कीमत दी जाय, तो अुनका संकट कम हो सकता है। अुनके काममें आनेवाली चीजें अुन्हें राशनिंग पद्धतिसे दी जायं और खेतीकी पैदावारके बदलेमें अिन चीजोंके मिलनेका व्यवस्थित और अुचित तरीका खोजा जाय और अुस पर अमल किया जाय।

(ख) जरूरतके मुताबिक किसानोंको खेतीके औजार अुचित भाव पर दिये जायं।

(ग) फी आदमी अधिक-से-अधिक पैदावार और कम-से-कम खपतके बारेमें गृहस्थों, किसानों और देहातियोंके बीच अच्छी होड़ाहोड़ी हो। जो लोग ज्यादा पैदा करें, अुन्हें ज्यादा पैसा दिया जाय और अुन्हें अुनके काममें आनेवाली चीजें ज्यादा मात्रामें मिलें।

(घ) जो जमीन खेतीके लायक हो, लेकिन किसीके अधिकारमें न हो, वह सबकी सब अुन किसानोंको, जिनके पास जमीन नहीं है, या अुनकी सहकारी समितियोंको सिर्फ अनाज पैदा करनेकी शर्त पर बांट दी जाय।

(ङ) अनाज पैदा करनेवालोंको सिर्फ अपनी जरूरतके लायक अनाज अपने पास रखनेके लिअे समझाया जाय; बाकीको वे गांव-पंचायतोंके सुपुर्द कर दें, जो अिस बातका फैसला करें कि अनाज न पैदा करनेवालों और बिना जमीनवाले मजदूरोंको कितने अनाजकी जरूरत होगी। गांवकी पंचायतें अनाजको बुद्धिमानीके साथ अिकट्ठा करके रखेंगी और अुसे बांटेंगी।

(च) बाकी बचा हुआ अनाज जिलेके अधिकारियोंके कब्जेमें रहे, जिसे वे दूसरी जगह भेज सकते हैं। अनाजके मौजूदा जत्थे मुनासिब तौर पर बांटनेके अहम कामको पूरा करनेके लिअे अेक अफसर नियुक्त किया जाय। वह अन्न अिकट्ठा करने, अुसे बांटने और अुसका राशनिंग करनेका काम करे।

(छ) देहातियोंको शादी और दूसरे रीत-रिवाज मुलतवी कर देने या कम-से-कम अैसे मौकों पर अन्नकी बरबादीको कम करनेके लिअे समझाया जाय। अैसे मौकों पर कम-से-कम लोगोंको अिकट्ठा किया जाय।

(ज) कारीगरों और दूसरोंके लिअे अगर सस्ते भावों पर सामुदायिक भोजनालय खोले जायं, तो अन्नकी बरबादी कम होगी।

(झ) हर पचास गांवोंके पीछे या हर तहसीलमें अनाज-भण्डार कायम करने होंगे, ताकि किन्हीं गांवोंमें या आसपासके हिस्सोंमें अगर अचानक अनाजकी कमी पड़ जाय, तो वहां काफी मात्रामें अनाज पहुंचाया जा सके।

(ञ) हर तहसील और गांव-पंचायतको लोहा मुहैया किया जाय और गाड़ियोंके लिअे लोहेकी पत्तियां पहले दी जायं, ताकि अनाजको अिधर-अुधर ले जानेके लिअे अनाज बांटने और अिकट्ठा करनेवाले अधिकारियोंको बैलगाड़ियां मिल सकें।

(ट) जब कभी जरूरत पड़े, फौजी मोटर-लारियां हासिल की जायं और बहुत जरूरी हो तो रेलवे अधिकारियोंको चाहिये कि वे खास रेलगाड़ियां दौड़ानेकी तैयारी रखें।

(ठ) गांववालोंको शहरियोंके बनिस्बत ज्यादा अनाज मिलना चाहिये।

(ड) पानीको बरबाद न होने दिया जाय और जहां जरूरत हो वहां कुअें खुदवाये जायं। मौजूदा तालाबों और कुओंकी मरम्मत सरकारको करानी चाहिये।

(ढ) जंगलकी और दूसरी हरी पत्तियोंका खाद अिकट्ठा करके रखा जाय और जहां जरूरत हो वहां भेजा जाय। अिसको भेजनेका किराया घटाया जाय। किसानोंको खाद देना अेक जरूरी काम है। खाद बांटनेका काम गांवकी पंचायतों या किसानोंकी संस्थाओंको सौंप दिया जाना चाहिये।

(ण) कन्द-मूल जैसी धरतीके भीतर पैदा होनेवाली फसलें, जो सालमें तीन-चार बार अुगाअी जा सकती हैं, अुगानेके लिअे बढ़ावा दिया जाय।

(त) धान (चावल) हाथसे फटका जाय। अिस तरह अुसकी मात्रा कम-से-कम १० फी सदी बढ़ाअी जा सकती है।

(थ) अगर प्रान्त और जिलेके अधिकारी अनाज और दालें वैज्ञानिक तरीकेसे अुगाने देनेका काम अपने हाथमें लें, तो अनाजसे होनेवाले पोषणकी मात्रा १५ से २५ फी सदी तक बढ़ाअी जा सकती है।

१२. पशु-पालनको बढ़ावा दिया जाय। गन्तूरसे अेक दोस्त लिखते हैं कि अुनका जिला अच्छे दूध देनेवाले जानवरोंके लिअे मशहूर है। अुनके जिलेमें ओंगोल किस्मकी गाय होती है। मगर अुनके जिलेसे अच्छी नसलको फौजकी और मांसकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे बाहर भेजा जा रहा है।

१३. मौजूदा संकटके समय सेनाको, खासकर अुन लोगोंको जिन्हें सेनासे अलग किया जा रहा है, कअी तरहके कामोंमें लगानेके सुझाव भी आये हैं। अेक संवाददाताका कहना है कि बंबअी प्रान्तमें कल्याणसे करजतके बीच चावल पैदा करने लायक अेक चौड़ी और अुपजाअू पट्टी है। हजारों अेकड़ अच्छी जमीन, जिसके आसपास समुद्रमें जाकर गिरनेवाला काफी पानी

है, नवम्बरसे जून तक बेकार पड़ी रहती है। पानीको आसानीसे नहरोंमें ले जाया जा सकता है या थोड़ी दूर पर खेतोंमें कुअें खोंदे जा सकते हैं। जाहिर है कि धान पैदा करनेवाले अितने गरीब हैं कि वे यह काम नहीं कर सकते; लेकिन अगर धानको नुकसान पहुंचाये बिना दूसरी फसलें अुगाअी जा सकें, तो सरकार अिस काममें अिंजीनियरोंकी कअी टुकड़ियां और दूसरे सैनिकोंको क्यों न लगा दे? यह बात अिस लम्बे-चौड़े देशके और भी बहुतसे दूसरे हिस्सों पर लागू होती है।

१४. आखिरमें, अनाजको जमा करके रखने और चोरबाजार चलानेकी हमेशाकी और आम शिकायत है। चोरबाजारको खतम करनेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि अमीर लोग अुसमें जायें ही नहीं। क्या वे अैसा करेंगे? आज जिस हवामें हम सांस लेते हैं, अुसके जर्रे-जर्रेमें हिंसा भरी हुअी है। किन्तु हत्या करना, लूटना, आग लगाना और संपत्तिका नाश करना ही हिंसा नहीं है; लालच, स्वार्थ, शोषण, रिश्वतखोरी और बेअीमानी हिंसाके बारीक और अिसलिअे ज्यादा ताकतवर रूप हैं। भीड़का गुस्सा कम हो जाता है या ज्यादा बड़ी हिंसासे अुसे वशमें किया जा सकता है, किन्तु सूक्ष्म हिंसा गहरे रोगकी तरह जड़ जमा लेती है और समाजके प्राणोंको कुतरती रहती है। जाग्रत लोकमत और नैतिक मूल्योंको ठीक-ठीक समझनेसे ही अुसे मिटाया जा सकता है।

पूना, २–३–'४६ अमृतकुंवर

हरिजनसेवक, १०–३–१९४६

## ६७

## अन्नकी तंगी : कुछ और सुझाव

१. दक्षिण भारतसे अेक मित्र लिखते हैं कि मद्रास सरकारकी नीतिसे न माल पैदा करनेवालोंको फायदा पहुंचता है न खरीदारोंको, क्योंकि दोनोंको नुकसानमें रखकर दलाल बेहिसाब मुनाफा कमाते हैं। मसलन्, जिलेका कलेक्टर थोक मालके व्यापारियोंकी नियुक्ति करता है और ये व्यापारी अपने अेजेण्ट मुकर्रर करते हैं। अेक अेजेण्ट क गांवसे रु० ५–९–१० (मद्रासके ३२ मापके) फी मनके हिसाबसे धान खरीदता है। अिस धानको वह चार मील दूर

थोकबन्द मालके व्यापारीके गोदाम पर ले जाता है। फिर यही धान जिस गांवमें पैदा हुआ था वहां वापस भेजा जाता है और तीन आना पांच पाओ फी मद्रासी मापकी दरसे बेचा जाता है। अिस तरह लागत कीमत और बिक्रीकी कीमतमें फी मन रु० १–३–६ का फर्क रहता है, यानी लागतसे २१.७ फी सदी ज्यादा। मालकी ढुलाओीका खर्च कम करनेके बाद वह सारी रकम दलालकी जेबमें जाती है। अिस फर्कके कारण ही लोग अनाजका संग्रह करते हैं और अिससे चोरबाजारोंके निर्माणमें मदद मिलती है। किसान अपने मालको फुटकर बिक्रीकी कीमतसे कम कीमतमें आसानीसे बेच सकता है और फिर भी वह, दलाल अुसे जो कुछ देता है, अुससे ज्यादा ही पा सकता है। ग्राहक भी राशनकी दुकानके मुकाबले किसानसे सीधा सस्ते दामों माल खरीद सकता है।

अिसमें कोओी शक नहीं कि जब खरीदा हुआ धान चावलके रूपमें बेचा जाता है, तो दलालको और भी ज्यादा मुनाफा होता है। हर हालतमें, कोओी वजह नहीं दीखती कि लोगोंको धान ही क्यों न दिया जाय, जिसे वे अपने हाथों कूटकर चावल बना सकें। अिससे अुनको जो शारीरिक और आर्थिक लाभ होगा, अुसके अलावा अुन्हें अपने ढोरोंके लिअे भूसी भी मिल सकेगी। अतअेव ये मित्र नीचे लिखे अुपाय सुझाते हैं:

(अ) गांवोंके गोदामोंमें धान अिकट्ठा करके रखा जाय। गांवकी अपनी जरूरतोंके लिअे काफी धान जमा कर लेनेके बाद बचे हुअे धानको, जहां अुसकी जरूरत हो, सीधा भेजा जा सकता है।

(आ) राशन धानके रूपमें बांटा जाय।

(अि) धानका वितरण लागत कीमत पर किया जाय और अुसे प्राप्त करने व बांटनेका खर्च सरकार अपनी तरफसे दे।

(अी) खेतोंमें मजदूरी करनेवाले या दूसरी कड़ी मेहनत करनेवाले मजदूरोंको आजसे दुगना राशन दिया जाय।

२. बंगालके अेक मित्र सुझाते हैं कि जूटकी फसल अितनी कम कर दी जाय कि अुससे सिर्फ स्थानीय जरूरत ही पूरी हो सके। जूटकी खेतीमें अुपजाअू जमीनका बहुत बड़ा हिस्सा लगा हुआ है। अब अुसका अुपयोग अन्न-सामग्री पैदा करनेमें किया जाना चाहिये।

३. अेक तीसरे मित्र लिखते हैं कि कुछ देशी रियासतोंमें बहुत ज्यादा अनाज अिकट्ठा करके रखा गया है। अुनसे कहा जाय कि वे अपनी स्थानीय

जरूरतें पूरी करनेके बाद अिस मामलेमें ब्रिटिश भारतसे सहयोग करें और अपना बचा हुआ अनाज अुन जगहोंमें भेजें जहां अुसकी जरूरत है। जहां कहीं भी अनाज अिकट्ठा करके रखा गया हो, वहां वह सड़कर नष्ट न हो जाय या मुनाफाखोरीका जरिया न बने, अिसकी कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिये।

४. खेतीके औजारोंके मामलेमें गरीब किसानोंको हर तरहकी मदद दी जानी चाहिये। सरकारका यह फर्ज है कि वह अिन औजारोंमें सुधार करे और किसानोंको सस्ते दामों दे।

५. अेक पंजाबी मित्र लिखते हैं कि कण्ट्रोलसे गरीबोंको मदद मिलनेके बजाय कीमतोंके बढ़ने और कालेबाजारोंके पैदा होनेमें मदद मिल रही है। वे लिखते हैं कि पंजाबके बाजारोंमें आज चना १८ रुपया फी मनके हिसाबसे बिक रहा है और अुसका यह सौदा भी साफ-पाक तरीकेसे नहीं हो रहा है। अगर कण्ट्रोल अुठा लिया जाय तो दर कम हो जाय। पंजाबमें ढेरों गेहूं काला पड़ रहा है और आटेमें मिलावटके होते हुअे भी वह १३ या १४ रु० फी मनके हिसाबसे मुश्किलसे मिलता है।

६. कअी सज्जनोंने लिखा है कि आमोंकी अगली फसलसे पूरा फायदा अुठाया जाना चाहिये, क्योंकि अिस बार आम खूब बौराये हैं और अच्छी फसल आनेकी आशा है। मनुष्यके लिअे आममें काफी पोषक तत्त्व रहते हैं।

७. मूंगफली, सरसों और दूसरे तिलहनकी खलीको आसानीसे मनुष्यकी अुच्च पोषक खुराकमें बदला जा सकता है। अिसे रोटी बनानेके काममें भी ला सकते हैं और अगर यह गेहूंके आटेमें बराबरीसे मिला दी जाय, तो अुसकी चपातियां भी बन सकती हैं। अगर घासलेट बाहरसे ज्यादा मंगाया जाय, तो गरीबोंके लिअे तिलहन ज्यादा मात्रामें खानेके काम आ सकता है।

८. चूंकि अन्नका सवाल राजनीति और दलबन्दीसे परेका सवाल है, अिसलिअे केन्द्रमें लोगोंके माने हुअे प्रतिनिधियोंकी अेक खास अन्न-समिति होनी चाहिये। मुमकिन है कि अिसकी वजहसे घूसखोरी वगैरा बुराअियोंसे छुटकारा पानेमें बड़ी मदद मिले।

९. खुशहाल लोगोंमें ज्यादातर लोग अैसे हैं, जो बहुत ज्यादा खाते हैं। अुन्हें अिस बातकी तालीम देकर यह समझाना चाहिये कि तन्दुरुस्ती और ताकतका दारमदार ज्यादा खाने पर नहीं है। बल्कि असलमें बात बिलकुल अुलटी है।

१०. सोयाबीनके अिस्तेमाल पर भी अिस बिना पर जोर दिया गया है कि अुसमें प्रोटीन, चर्बी और कार्बोहाअिड्रेट पाये जाते हैं। अेक हिस्सा सोयाबीन और तीन हिस्से गेहूं मिलकर पूरी पोषक ख़ुराक बन जाती है। अगर अिसे रोजके राशनमें बढ़ाया जा सके तो गेहूंकी मात्रा घटाकर ९ औंस की जा सकती है। लेखकका आग्रह है कि बाहरसे सोयाबीन मंगायी जाय और यहां भी अुसकी खेतीके लिअे बढ़ावा दिया जाय।

११. अकालकी हालत जीवनके सभी क्षेत्रोंमें देहातियोंको सहयोगका मूल्य सिखानेके लिअे अेक सुनहला मौका देती है। लेकिन यह काम अुन्हीं लोगों द्वारा किया जाना चाहिये, जो सचमुच गांववालोंसे प्रेम करते हैं और अुनमें घुल-मिलकर, अुनके बनकर, यह देखते हैं कि हर काम अीमानदारीके साथ किया जा रहा है।

१२. अेक जानकार मित्र लिखते हैं:

"अन्न-संकटके सिलसिलेमें मैं कुछ नौजवान फौजी अफसरोंसे बातचीत करता रहा हूं। वे अपने बसभर सब-कुछ करनेको तैयार और अुत्सुक हैं। जरूरत अिस बातकी है कि अुन्हें काश्तकारीकी कुछ बातें थोड़े समयमें सिखा दी जायं और अिस बातकी ठीक-ठीक हिदायत दे दी जाय कि अुन्हें क्या क्या करना है। फौजी अिंजीनियरोंकी अिन टुकड़ियोंके साथ कुछ कृषि-विशारदोंकी नियुक्ति करना जरूरी होगा। अुनके पास ट्रैक्टरों, जीपों और बुल-डोज़रोंके रूपमें काफी साधन-सामग्री मौजूद है, लेकिन अुनसे यह आशा नहीं की जानी चाहिये कि वे हल भी तैयार करें। अुनको हल वगैरा चीजें दी जानी चाहिये। फौजके लिअे यह जरूरी है कि अुसे विशेषज्ञोंका मार्गदर्शन मिले। लेकिन दुर्भाग्यसे केन्द्रके सूत्रधार बहुत ही कमजोर हैं और दूरन्देशी तो अुन्हें छू भी नहीं गयी है। खुशीकी बात है कि वाअिसरॉयने खुद अिस मामलेको अपने हाथमें ले लिया है। मगर केन्द्रकी जिस कार्यकारिणीके जरिये अिस महान समस्याका हल होनेवाला है, वह अभी तक संगठित नहीं की गयी है। गणितकी भाषामें सारी समस्याको अिस तरह पेश किया जा सकता है:

"सालमें हमारे यहां कुल ६ करोड़ टन अनाज पैदा होता है, और अुसमें से १ करोड़ ८० लाख टन बाजारमें बिकनेको आता है।

सरकारने ६० लाख टन अनाजकी कमीका अन्दाज किया है। साल भरमें जितना अनाज बाजारमें आता है, अुसका यह अेक तिहाअी हिस्सा होता है। सिर्फ ढुलाअीके खयालसे भी यह बहुत बड़ा जत्था है। अगर यह देखा जाय कि जिन खास हिस्सोंमें फौरन ही मदद पहुंचनी चाहिये, अुनमें बम्बअी प्रान्तका दक्षिणी भाग और मैसूर-त्रावणकोर सहित समूचे मद्रासका प्रदेश शामिल है, तो समस्या बहुत ही विकट बन जाती है। मुमकिन है कि विदेशोंसे तीस या चालीस लाख टन अनाज देशमें आये; लेकिन पश्चिमी और दक्षिण-पूर्वी किनारों परके अपने बन्दरगाहों पर आनेवाले अिस अनाजके अेक-चौथाअी भागकी भी अुचित व्यवस्था करना हमारे लिअे बिलकुल असंभव हो जायगा। क्योंकि न तो कहीं कोठारों या गोदामोंका अिन्तजाम किया गया है और न बन्दरगाहों या रेलों पर अितनी सहूलियत है कि आनेवाले मालको जहांका तहां पहुंचाया जा सके। अिस बातका बड़ा खतरा है कि अेक तरफ तो लोग भूखों मरते रहें और दूसरी तरफ बन्दरगाहमें अनाज सड़ता रहे या जहाजोंमें लदा पड़ा रहे, और सो भी सिर्फ अिसलिअे कि अिस सारे सवाल पर ब्योरेवार सोचा ही नहीं गया है। अेक पूरी लदी हुअी मालगाड़ीमें पचास डब्बे होते हैं और अेक बारमें अेक गाड़ी १,००० टनसे ज्यादा बोझ नहीं ले जाती। अैसी अेक मालगाड़ीको भरनेके लिअे ३ से ५ दिनका समय लगता है, **बशर्ते कि अुसके लिअे जरूरी साअिडिंग और मजदूर सुलभ हों।** मालगाड़ी खाली करने और अुसके अेक जगहसे दूसरी जगह जाने-आनेमें जो वक्त लगे, अुसे भी अिसमें शामिल किया जाय, तो सहज ही आपको समयकी तंगीका अन्दाज हो जायगा। अगर बाहरसे हमें ३० लाख टन अनाज मिले तो अुसकी ढुलाअीके लिअे ३,००० स्पेशल मालगाड़ियोंकी जरूरत रहेगी; अिनमें से कम-से-कम आधीकी जरूरत तो शुरूके १५० दिनोंमें पड़ेगी, यानी रोजकी १० गाड़ियां लगेंगी — अच्छीसे अच्छी परिस्थितिमें भी यह अेक बिलकुल असंभव चीज है। समझमें नहीं आता कि पश्चिमी तटके बन्दरगाहोंकी अपनी मर्यादाओंके रहते और दक्षिण भारतमें चलनेवाली रेलवे लाअिनोंके साधनोंको देखते हुअे यह सारा काम

कैसे हो सकेगा? रेलों और सड़कोंकी राह मालकी ढुलाईके जितने भी साधन आज रेलवालों, आम लोगों और फौजवालोंके पास मौजूद हैं, अुनसे कहीं ज्यादाकी हमें जरूरत पड़ेगी। दुर्भाग्यसे अिस चीजको अिन हकीकतोंके साथ सरकारवालोंने न तो यहां सोचा है, न केन्द्रमें ही। कभी कभी तो मुझे डर लगता है कि सरकारको अुस आनेवाले खतरेकी अहमियतका खयाल कराना बिलकुल असंभव है, जो मुल्कके सामने न सिर्फ अिस साल मुंह बाये खड़ा है, बल्कि आनेवाले सालमें भी जिसका खतरा बना रहनेवाला है; क्योंकि हमारी मौजूदा बस्तीके लिअे हमको तुरंत ७० लाख टन ज्यादा अनाज अुगानेकी जरूरत है और सन् १९५३ में हमें ४५ करोड़की अपनी आबादीके लिअे १ करोड़ ४० लाख टन ज्यादा अनाजकी जरूरत होगी। अिसलिअे हम विदेशवालोंकी अुदारताकी अुम्मीद पर जी नहीं सकते। भविष्यमें अुनकी ओरसे बराबर मदद मिलती रहे, तो भी हम अुस मददकी आशा पर निभ नहीं सकते।

"जैसा कि गांधीजीने कहा है, अिसका अेक ही रामबाण अिलाज है; और वह है स्वावलंबन। अिस स्वावलंबन या स्वयं-सहायताका मतलब यह है कि अपनी पैदावारको बढ़ानेके लिअे हम ठोस अुपायोंसे काम लें, यातायातके साधनोंकी गतिमें वृद्धि करें और माल-गोदामोंका पूरा व पक्का अिन्तजाम करें। गोदामोंमें गलत तरीकेसे माल भरने और कीड़े वगैरा लगनेसे जो भयंकर नुकसान होता है, वह कोशिश करनेसे बहुत कुछ कम किया जा सकता है — किया जाना चाहिये। मगर अिसमें दिक्कत यह है कि सारे सरकारी अधिकारी अेक लीक पर चलनेवाले बन गये हैं। यही वजह है कि खुद वाअिसरॉय भी कोशिश करके अुन्हें जगानेमें कामयाब नहीं हो सकते। अिसके लिअे जरूरत अिस बातकी है कि सार्वजनिक संस्थाओं और सरकारी कल-पुर्जोंके बीच ज्यादा-से-ज्यादा सहयोग बढ़ाकर पूरे संगठनकी अेक विस्तृत योजना तैयार कराअी जाय। अिसलिअे मैं जरूर यह अुम्मीद करता हूं कि केन्द्रमें जल्दी ही कुछ फेरफार होंगे और कम-से-कम खाद्य विभागमें तो जरूर ही होंगे, वरना अिसमें शक नहीं कि हमारे सामने बहुत ही विकट समय आनेवाला

है। अगर सारी योजनाको अमलमें लानेके लिअे जिम्मेदार कर्मचारी समय रहते न जागे (और अुनके जागनेके कोअी लक्षण नजर नहीं आ रहे हैं), तो बाहरसे आनेवाली मदद हमारी पूरी-पूरी नालायकीका भण्डाफोड़ कर सकती है।"

पूना, १०–३–'४६ **अमृतकुंवर**

हरिजनसेवक, १७–३–१९४६

## ६८

## मूंगफलीका अुपयोग

डॉक्टर अे० टी० डब्ल्यू० सीमियन्सके मूंगफली पर लिखे लम्बे लेखका सार नीचे दिया जाता है:

डॉ० सीमियन्सकी राय है कि हम लोग कम शक्तिवाले अिसलिअे होते हैं कि हमारी खुराकमें प्रोटीन, विटामिन और खारवाली चीजोंकी कमी रहती है। बंगालके अकालके दिनोंमें यह साबित किया जा चुका है कि भुखमरीके शिकार बने लोगोंका जीवन स्टार्च या निशास्ताकी जगह प्रोटीन देनेसे ज्यादा टिकता था। अुनका कहना है कि ज्यादा अनाजके बजाय ज्यादा प्रोटीनवाले पदार्थ लोगोंको दिये जायं, तो देशके पोषक तत्त्वोंकी दृष्टिसे अुनकी कीमत कअी गुनी बढ़ जाय। मूंगफलीके आटेमें ५० फीसदीसे भी ज्यादा प्रोटीन होता है। किसी भी साग-सब्जीके बनिस्बत मूंगफलीमें प्रोटीनकी मात्रा ज्यादा होती है। साथ ही, वह आसानीसे पचाया भी जा सकता है। अेक अेकड़ जमीनमें पैदा किये गये गेहूं, बाजरी या चावलोंके बनिस्बत अुतनी ही जमीनमें पैदा की गयी मूंगफलीमें कअी गुना ज्यादा प्रोटीन होता है। फिर भी हम अुसका पूरा-पूरा फायदा नहीं अुठाते। मूंगफलीकी कुल फसलका ४५ फीसदी हिस्सा तेल निकालनेके काममें लिया जाता है। "बाकी बची ५५ फीसदी मूंगफलीका क्या होता है? अगर हम अुसके दाने खा सकते हैं, तो दानोंमें से तेल निकालनेके बाद बच रही खली क्यों नहीं खा सकते? अर्थशास्त्री अिसका जवाब यह देते हैं कि मूंगफलीकी खलीका अुपयोग ढोरोंको खिलानेमें और गन्ने व चावलके खेतोंको खाद देनेमें किया जाता है।" अिस पर डॉक्टर सीमियन्स यह दलील पेश करते हैं कि

हमारे खेतोंको ज्यादा अुपजाअू बनानेके लिअे गोबर, मैला या पाखाना और परिन्दोंकी हगार-जैसी न खाअी जाने लायक चीजें हमारे पास मौजूद हैं। तिस पर भी अगर हम खानेके काममें आने लायक प्रोटीनको अिस बुरी तरह बरबाद करते हैं, तो बहुत बड़ा गुनाह करते हैं। "गन्नेके खेतोंमें मूंगफलीकी खलीकी खाद देनेसे जमीनमें डाला गया समूचा प्रोटीन यों ही बरबाद होता है। क्योंकि गन्नेमें प्रोटीन बिलकुल नहीं रहता। अिसके अलावा, खलीमें रहनेवाला दस फीसदी तेल, विटामिन और खार वगैरा बरबाद होते हैं सो अलग। हम दुधार ढोरोंको खली खिलाते हैं। अिससे अुनका दूध बढ़ता है और दूध सबसे बढ़िया खुराक है। लेकिन गायको मूंगफलीका दस पौण्ड प्रोटीन खिलाने पर हमें अुसके दूधसे आधा रतल प्रोटीन भी शायद ही मिलेगा। अिसके बदले, ढोरोंको बिनौले या आदमीसे न खाअी जा सकनेवाली दूसरी चीजें खिलाकर भी यह नतीजा निकाला जा सकता हो, तो फिर मूंगफलीके प्रोटीनको अिस तरह क्यों बिगाड़ा जाय?"

डॉ० सीमियन्स प्रो० बी० जी० अेस० आचार्यके अेक प्रयोगका हवाला देते हैं। अुन्होंने चूहों पर नपी-तुली खुराकका प्रयोग करके यह दिखा दिया है कि मूंगफलीके प्रोटीनमें जीवनको टिकाये रखनेके काफी गुण मौजूद हैं। वे कहते हैं कि प्रयोगोंसे यह भी साबित हो चुका है कि मूंगफलीका प्रोटीन अच्छी तरह पचाया भी जा सकता है। "वह खमीरके 'माअिक्रोबियल प्रोटीन' के जैसे गुणोंवाला और दूध, अण्डे और मांसके प्रोटीनसे करीब-करीब मिलता-जुलता होता है।"

"मूंगफलीकी साफ खलीमें ५० फी सदीसे भी ज्यादा अूंची जातका प्रोटीन होता है और मांसके प्रोटीनसे अुसमें तेरह फी सदी ज्यादा प्रोटीन पाया जाता है। अिस तरह खेतोंमें डाली गयी मूंगफलीकी अेक टन खलीमें ही हम प्रोटीनकी शकलमें पचास भेड़ों, पचास हजार अण्डों या पन्द्रह हजार सेर दूधके बराबर पोषक तत्त्व बरबाद कर डालते हैं।"

प्रोटीनके अलावा मूंगफलीमें स्टार्च, चरबी और खनिज द्रव्य भी होते हैं। अगर अुसमें थोड़ा स्टार्च या निशास्ता और विटामिन 'सी' और जोड़ दिया जाय, तो वह खुद पूरी खुराकका काम देती है। 'बी कॉम्प्लेक्स' नामके सबसे ज्यादा कामके विटामिनकी हिन्दुस्तानमें बड़ी कमी है। लोगोंकी तन्दुरुस्ती और अुनकी अुमर पर अुसका बहुत असर पड़ता है। मूंगफलीमें

विटामिन 'बी कॉम्प्लेक्स', खासकर विटामिन 'बी १', निकोटिनिक अेसिड और रिबोफ्लेविन नामकी चीजें काफी मात्रामें पायी जाती हैं। ये सब चीजें जिन्दगीके लिअे बड़े कामकी हैं। कोल्हापुर रियासतके अेक दूरके गांवमें काम करनेवाले मि० किन्केअिड नामके पादरीका कहना है कि मूंगफलीकी साफ खली खानेसे अुनके स्कूलके बच्चे तगड़े और तन्दुरुस्त बने हैं। गांवके लोग भी अपना वहम छोड़कर अब मूंगफलीसे फायदा अुठाने लगे हैं। वे अपनी खुराकमें $\frac{1}{5}$ से $\frac{1}{4}$ तक भाग मूंगफलीका भी शामिल करते हैं। खासकर मधुमेहके बीमारोंके लिअे तो मूंगफली अेक देन बन गयी है, क्योंकि अुससे अुनकी रोटीके आटेका राशन बढ़ जाता है। जिस आटेमें मूंगफलीका आटा मिलाया जाता है, अुसकी 'भाकरी' या खस्ता रोटी बच्चे बहुत पसन्द करते हैं। थोड़ा नमक मिलाकर बनायी गयी अैसी 'भाकरी' को बड़ी अुमरवाले भी पसन्द करते हैं। मिठाअी वगैरा बनानेमें भी मूंगफलीका आटा काममें लाया जा सकता है।

बिकनेवाली मूंगफलीके दाम सरकारने फी टन रु० ७५ ठहराये हैं। मूंगफली थोड़ी महंगी होती है। मगर डॉ० सीमियन्सकी राय है कि बिकाअू मूंगफलीसे खानेकी मूंगफलीके दाम ज्यादा होने पर भी वह सामान्य अनाजोंके मुकाबले सस्ती ही पड़ेगी।

मूंगफलीकी खेती करनेवालोंकी निगाहसे सोचें, तो अुसकी खलीका खुराकके तौर पर अुपयोग होने पर भी तेल या मूंगफलीके बाजारमें किसी तरहकी अुथल-पुथल नहीं मचेगी।

"हिन्दुस्तानमें हर साल १५ लाख टन मूंगफली पैदा होती है। अितनी मूंगफलीमें से ७ लाख टन अच्छी-से-अच्छी खुराक मिल सकती है। प्रोटीनके हिसाबसे अिसकी कीमत ३५ अरब अण्डे या १० अरब सेर दूध या ३॥ करोड़ भेड़ोंके बराबर होती है। अिसके अलावा, हर साल स्टार्च, चरबी, खनिज द्रव्यों और विटामिनकी शकलमें जो कामकी चीजें बरबाद होती हैं सो अलग। यह सब मूंगफली-जैसी बेशकीमती चीजका गलत अिस्तेमाल करनेसे ही होता है।"

नअी दिल्ली, २४–६–'४६ **अमृतकुंवर**

हरिजनसेवक, २५–८–१९४६

## ६९

# अुपयोगी सूचना

डॉ० अेम० अे० चद्रे लिखते हैं:

"अनाजको पहले पीसकर फिर आटेसे रोटी या पूरी बनानेकी चालू पद्धति नुकसानकारक है। अुसमें नीचेके दोष हैं।

"बिजलीकी चक्कीमें अनाज तेजीसे पीसा जाता है। अिससे अुसमें रहे हुअे प्रोटीन, स्टार्च, रेशे (सेल्युलोज़) और खनिज क्षार बदल जाते हैं और आटेके गरम होनेसे अुसमें रही चर्बीका तत्त्व अुड़ जाता है। आटेको गूंधकर काममें लेने लायक बनानेमें अुसमें आटेके वजनका आधा पानी ही समा सकता है, जिसका नतीजा यह होता है कि अुसमें रहा स्टार्च फूलता नहीं। चूंकि अुसमें पानी कम समाता है, भोजन कम पौष्टिक बनता है। पूर्वमें गूंधे हुअे आटेसे रोटी या पूरी बेली जाती है, जो आसानीसे पकाअी या सेकी जा सकती है, पर अुसके बदले वह घी या तेलमें तली जाती है। अैसा करनेसे अुसके दोनों तरफ अेक पतली पपड़ी अुठ आती है। पश्चिममें रोटीको पोची व छेदवाली बनानेके लिअे आटेमें खमीर डाला जाता है। पर यह भी पूरी पौष्टिक नहीं होती, न अुतनी स्वास्थ्यप्रद ही होती है, जितनी कि वह कही जाती है। क्योंकि खमीरके अुठनेसे अुसके विटामिन तथा दूसरे भोजनके तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। अतः अिस पुराने रिवाजसे बनाया हुआ भोजन न तो जायकेदार होता है, न स्वास्थ्यप्रद; न वह पौष्टिक होता है, न आसानीसे पचने लायक। जो थोड़ा-बहुत पचता है, अुसके लिअे भी पित्त रस, जठर और 'पेन्क्रियाज़' में से निकलनेवाले पाचक रसोंकी बहुत ज्यादा प्रमाणमें जरूरत पड़ती है। आम लोग अिस बातको जानते हैं, अिसका सबूत यह है कि यह भोजन बीमार आदमीको नहीं दिया जाता। बिस्कुट भी अिससे बेहतर नहीं कहे जा सकते। आसानीसे पचने लायक न होनेसे वे कब्ज पैदा करते हैं, जो सभी रोगोंकी जड़ है। अिसके अलावा, आटा गूंधनेसे पहले छाना जाता है और चोकर अुससे अलग कर दिया जाता है। यह भी अेक नुकसान है। आटेमें छोटे छोटे जन्तु आसानीसे व शीघ्र ही अुत्पन्न हो जाते हैं, अिससे वह ज्यादा समयके लिअे नहीं रखा जा सकता और अुसके लाने ले जानेमें और अिस्तेमालमें वह काफी घट जाता है, जिससे अुसका अुपयोग बहुत महंगा पड़ता है।

"सभी अनाजोंकी — खासकर गेहूं, बाजरा व जुवारकी — पोषण-शक्ति बढ़ाने और अुसमें से खूब आरोग्यदायक आहार बनानेके लिअे लम्बे समयसे प्रयोग करके तय की हुअी प्रणालीसे अूपरकी सभी कमियां दूर की जा सकती हैं।

"नये तरीकेके अनुसार गेहूंकी अमुक मात्राके साथ अुसका साढ़े तीन गुना पानी मिलाया जाय, अर्थात् अेक कटोरी भरकर गेहूँ और साढ़े-तीन कटोरी भरकर पानी लिया जाय, या वजनसे १ रतल गेहूंके साथ ४ रतल पानी मिलाया जाय। अुसे हलकी आंच पर धीरे-धीरे अुबाला जाय। अुबालनेसे पहले अिच्छा हो तो चम्मच-भर शक्कर या गुड़ मिलाया जा सकता है। यदि सादा बरतन हो, तो अुस पर ढक्कन रखा जाय। अुबालनेसे पहले यदि गेहूंको १२ से १८ घंटे तक पानीमें भिगोकर रखा जाय तो लकड़ी कम जलेगी। यदि प्रेशर कुकर (दबाकर ढंका जा सके अैसा पकानेका खास बरतन) काममें लिया जाय, तो गेहूं और पानीका प्रमाण तोलसे १ : १$\frac{3}{4}$ हो; यानी अेक सेर गेहूंमें पौने दो सेर पानी मिलायें। गेहूंकी जातिके अनुसार भी पानीका प्रमाण कम-ज्यादा हो सकता है। अिस प्रकार पकाने या अुबालनेमें करीब दो रतल पानी भाप बनकर अुड़ जाता है और स्टार्च, चोकर और दूसरे तत्त्व पानी पीकर फूल जाते हैं तथा गेहूं सत्त्ववाले बनते हैं। अिस प्रकार थोड़ा पानी बचे तब तक अुबालनेका काम चालू रखना चाहिये। ठंडे होनेके पहले गेहूं बचे हुअे पानीको भी सोख लेंगे। अितना गरम भी न करें कि सारा पानी अुड़ जाय, क्योंकि अुससे गेहूंको पूरा पानी नहीं मिलेगा। न बरतनके बचे हुअे पानीको फेंका ही जाय; क्योंकि फेंकनेका अर्थ है गेहूंके अुन तत्त्वोंका नष्ट होना जो पानीमें घुल जाते हैं। जब गेहूं पूरी तरह पक जाय, (जो दानोंके फूलनेसे या दबाकर अुनकी नरमी देखनेसे मालूम हो जायगा), तो स्वादिष्ठ बनानेके लिअे अुनमें थोड़ा नमक भी डाला जा सकता है।

"अिस प्रकार पकाये हुअे गेहूं चबाकर खाये जा सकते हैं या वे खरलसे, पत्थर पर या लकड़ीके दो टुकड़ोंके बीच पीसकर गूंधे हुअे आटे जैसे बनाये जा सकते हैं। प्रेशर कुकरमें पके हुअे गेहूँ तो अपने-आप अिस तरह तैयार हो जाते हैं। अिस प्रकारके आटेसे पूरी, रोटी या बिस्कुट बनाये

जा सकते हैं और साधारण तरीकेसे खानेके लिअे अुसे आग पर सेका या घी-तेलमें तला जा सकता है।

"बम्बअी जैसे शहरोंमें, जहां कभी कभी गेहूं न मिलकर केवल आटा ही मिलता है, पहले साधारण रीतिसे आटेको गूंध लिया जाय। फिर अुसे कपड़ेमें बांधकर अुबलते हुअे पानीके बरतनके अूपर लटका देना चाहिये, जहां वह भापसे पूरा पक जाने तक रखा रहे। तब अुससे चालू तरीकेसे रोटी आदि बनाअी जाय।

"अिस नये भोजनका फायदा यह है कि अुससे ५५ प्रतिशत गेहूंकी बचत होती है। ४० प्रतिशत तो पौने दो गुना पानी सोखनेसे, १० प्रतिशत चोकरके बचे रहनेसे और ५ प्रतिशत दूसरे तरीकेसे होनेवाली बरबादीके न होनेसे। अिसका अर्थ यह हुआ कि अेक माहका अनाज दो महीने चलेगा। वास्तवमें, अिस प्रकार पकानेसे गेहूंका प्रमाण बढ़कर ढाअी गुना हो जाता है, अर्थात् अेक माप गेहूं बढ़कर ढाअी माप हो जाते हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि जितने आटेकी पुराने तरीकेसे ४ रोटियां बनती हैं, अुतने ही आटेकी अिस नये तरीकेसे अुतनी ही मोटी और बड़ी १० रोटियां बन जाती हैं।

"अिसके अलावा भोजन ज्यादा जायकेदार, स्वास्थ्यप्रद, पोषक और आसानीसे पचने लायक होता है, क्योंकि अुसके जाने हुअे और न जाने हुअे सभी तत्त्व अुसके अन्दर रह जाते हैं। और सबमें बराबर बंट जाते हैं। अिसके अलावा, अिसके खानेवालेका वजन दिखने लायक प्रमाणमें बढ़ जायगा। साथ ही, आसानीसे पचने लायक होनेके कारण यह भोजन बीमार आदमीको भी खिलाया जा सकता है। और भी, अिस तरीकेको काममें लेनेसे गेहूं, बाजरी, जुवार आदि अनाजोंको अधिक लम्बे समय तक सड़े बिना संग्रह करके रखा जा सकेगा और आटेको लाने-ले जानेसे होनेवाला नुकसान बन्द हो जायगा। साथ ही आटेकी चक्कियोंकी आवश्यकता न रहेगी।

"सबसे बड़ी बात तो यह है कि अिस तरीकेसे सबको खुराक मिल सकेगी। अिस पौष्टिक खुराकसे भारतको प्रतिवर्ष करीब ८० से १२० लाख टन गेहूंकी बचत होगी, जिसकी कीमत रु० ३६० प्रति टनके भावसे ३०० से ४५० करोड़ रुपये होगी और अुतनी ही बाजरी तथा जुवार भी बचेगी। अिस तरह वर्तमान अनाजकी तंगी मिट जायगी और हमारे भूखे मरते लोगोंका भविष्य अुज्ज्वल हो जायगा।"

हरिजन, १४–७–१९४६

## ७०

# अेक अुपवास कितना बचा सकता है

अिण्डोनेशियाने हमें ५०,००० टन चावल देनेका वचन दिया है। ५०,००० टन = ११ करोड़ २० लाख रतल (पौंड)। अितना अनाज बड़ी अुमरके ११ करोड़ २० लाख मनुष्योंको, प्रति मनुष्य अेक रतलके हिसाबसे, अेक दिनके लिअे काफी होता है।

अिसलिअे, यदि बड़ी अुमरके ११ करोड़ २० लाख मनुष्य अेक दिनका अुपवास करें, तो अिण्डोनेशियासे आनेवाला ५०,००० टन चावल बच जाय।

सूचना : बूढ़े, कमजोर और शारीरिक श्रम करनेवाले मजदूरोंको छोड़कर बाकी सब बड़ी अुमरके मनुष्योंको हर शनिवार शामका भोजन छोड़ देना चाहिये।

यहां हिन्दुस्तानमें बड़ी अुमरके २४ करोड़ मनुष्य हैं, जिनमें से ८ करोड़ शारीरिक श्रम करनेवाले हैं।

अिसलिअे शनिवारकी शामका अेक समयका भोजन छोड़ देनेसे अेक बड़ी अुमरके मनुष्यका औसतन आधा रतल अनाज बचे, तो शारीरिक श्रम करनेवालोंको छोड़कर बाकीके सब बड़ी अुमरके १६ करोड़ मनुष्योंका अिस वर्षके बाकी रहे हुअे २६ शनिवारोंका कुल २०८ करोड़ रतल अनाज बच जाये। २०८ करोड़ रतल = ९.२ लाख टन अनाज।

अिससे अनाजकी जो कमी मानी गअी है वह दूर होगी। सब दलोंको, सब प्रान्तकी सरकारोंको और व्यक्तियोंको तथा समाचार-पत्रोंको हर शनिवार अेक समयका खाना छोड़नेकी बातका समर्थन करना चाहिये। देशके कुछ भागोंमें जो भुखमरी आ रही है, अुसे दूर करनेमें हिन्दुस्तानकी जनता अितना हिस्सा ले तो भुखमरी टल जाय। अर्थात् अिस भुखमरीमें हिस्सा लेनेका अर्थ दरअसल खुराक बांटकर खाना होगा।

अिस तरह आनेवाली भुखमरी दूर की जा सकेगी और जो अुपवास रखेंगे अुनमें से बहुतोंको स्वास्थ्यलाभ भी होगा।

अिस प्रयासको यदि १० प्रतिशत भी सफलता मिली, तो अिससे भी ९२,००० टन अनाज यानी अिण्डोनेशियाने जितना देनेका वचन दिया है अुससे काफी ज्यादा अनाज बच जायगा। फिर राष्ट्रको ये ९२,०००

टन बिना कीमत चुकाये ही मिल जायंगे; और अितना अनाज बचेगा यही नहीं, बल्कि हरअेक कुटुम्बको अुतना खर्च भी बचेगा।

(रोजकी डाकमें से)

हरिजन, १८-८-१९४६

## ७१

# अनाज कैसे बचाया जाय?

देशमें अनाजकी मौजूदा कमीको ध्यानमें रखकर मगनवाड़ीमें खुराक पर कुछ प्रयोग किये गये थे। नीचे दिये गये नतीजे, जिनकी मगनवाड़ीमें जांच की जा चुकी है, कुछ हद तक अनाजको बचानेमें मददगार साबित होंगे।

रेशनिंग महकमेके अधिकारी कअी जगह अनाजके बदले आटा बांटते हैं और चूंकि यह आटा घटिया किस्मके अनाजोंका होता है, अिसलिअे यह सुझाया गया है कि आटेको ज्यादा पोषक बनानेके लिअे अुसमें केलशियम मिलाया जाय। हमारा सुझाव है कि आटेमें १५ फी सदी मूंगफलीकी साफ खली मिलाअी जाय। अिससे बहुतसे फायदे होंगे :

१. १५ फी सदी अनाजकी सीधी बचत होगी।
२. आटेमें प्रोटीनकी मिकदार करीब-करीब दुगुनी हो जायगी।
३. कीमत बढ़नेके बजाय घट ही सकती है।
४. मूंगफलीकी खलीमें विटामिन 'बी कॉम्प्लेक्स' और खासकर विटामिन 'बी १' काफी मात्रामें होता है।

खलीका चूरा अनाजके आटेमें जितने प्रमाणमें मौजूद रहेगा, अुतने प्रमाणमें वह सड़ेगा भी नहीं, क्योंकि आटेका ऑक्सिजन-विरोधी गुण अुसे सड़नेसे बचायेगा।

मूंगफलीके सिर्फ अच्छे और ताजे दाने ही लेने चाहिये। अुन्हें हाथसे साफ करके बैलसे चलनेवाली घानियोंमें पेरना चाहिये। तेलको ठण्डे तरीकेसे निकालनेकी वजहसे मूंगफलीके शक्ति बढ़ानेवाले तत्त्व बरबाद नहीं होते। दानोंका तेल निकाल लेनेके बाद खलीमें सिर्फ १० या ११ फी सदी तेल बच रहता है। खलीकी टिकियाके छोटे-छोटे टुकड़े करके अुन्हें धूपमें सुखा लिया जाता है। अिस तरहकी खली कमसे कम अेक हफ्ते तक बिलकुल ताजी

और जायकेदार रहेगी। छोटे-छोटे टुकड़े पत्थरोंकी तरह कड़े हो जाते हैं। ओखली और मूसलकी मददसे अुनका अुम्दा चूरा बनाया जा सकता है। अिस चूरेको हाथ-चक्कीमें पीसकर महीन आटा तैयार किया जा सकता है।

आटेमें १५ फी सदी खली मिलानेका मतलब होगा, हर रोजकी मामूली खुराकमें डेढ़ छटांककी बचत। अिस आटेकी चीजें तैयार करना मुश्किल नहीं है। अुसमें साबित अनाजके आटेकी सारी अच्छाअियां मौजूद रहती हैं; साथ ही अुसमें खास तरहकी सुपारी जैसी खुशबू रहती है, जो खानेको ज्यादा जायकेदार बना देती है। मूंगफलीकी खलीका आटा सिर्फ १५ फी सदी मिलाया जाय, तो यह खुशबू नहींके बराबर होती है। अिसे ज्यादा मात्रामें मिलाने पर ही अुसके स्वादका मजा लिया जा सकता है।

अिस खलीमें ५० फी सदीसे भी ज्यादा अूंचे दरजेका प्रोटीन रहता है।

दूसरी जगह किये जानेवाले वैज्ञानिक प्रयोगोंने यह भी साबित कर दिया है कि मूंगफलीके प्रोटीनमें अूंचे दरजेका हजम होनेका गुण मौजूद रहता है। मूंगफलीका प्रोटीन खमीरके प्रोटीनके जैसा ही होता है और दूध, अण्डों व मांसमें पाये जानेवाले प्रोटीन और मूंगफलीके प्रोटीनमें बहुत थोड़ा फर्क रहता है।

बहुतसे प्रयोगोंके बाद हम अिस नतीजे पर पहुंचे हैं कि १ से २ छटांक तक मूंगफलीकी खली बड़ी आसानीसे पचाअी जा सकती है और अनाजके आटेके साथ मिलानेसे वह खानेको और भी जायकेदार बना देती है। खलीके टुकड़े पानीमें भिगो दिये जाते हैं और लगभग २ घण्टोंमें अुनका अेकसा चूरा बन जाता है। अिस चूरेको आटेके साथ मिलाकर चपातियां बनाअी जा सकती हैं। अेक हिस्सा खलीके साथ ५ हिस्सा आटा मिलाना काफी होगा। अगर दाल या तरकारीके साथ अिस चूरेको पकाया जाय, तो यह अुसके स्वादको बढ़ा देता है। आधा हिस्सा अनाज और आधा हिस्सा खलीसे या अनाजके बिना सिर्फ खलीके चूरेसे तैयार किया हुआ दलिया या लपसी बड़ी जायकेदार बनती है।

मूंगफलीकी खलीके अैसे अुपयोगसे जरूरतका थोड़ा अनाज बच सकता है; साथ ही खली तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाली अुम्दा खुराक भी होगी।

शकरकन्द : अिनमें काफी स्टार्च (निशास्ता) होता है और ये अनाजके बदले अच्छी तरह काममें लाये जा सकते हैं। अुन्हें भाप पर पकाया जाय

तो सारे पानीको भाप बनकर अुड़ जाने दिया जाय, वर्ना बहुतसे नमकीन पदार्थ पानीके साथ घुल जायंगे और अुन्हें पानीके साथ फेंक देना पड़ेगा।

शकरकन्द शाक-भाजी, दूध, या दहीके साथ मिलाकर या दूसरे किसी रूपमें खाये जा सकते हैं। अगर किसी वक्तकी खुराकमें अनाजकी जगह कन्दोंका ही अुपयोग किया जाय, तो अनाजकी मामूली मात्रासे वे थोड़ी ज्यादा मात्रामें खाये जायं।

हरिजनसेवक, ६–४–१९४७

देवेन्द्रकुमार गुप्त
(अ० भा० ग्रा० संघ)

## ७२

# दूधकी मिठाअियां

अेक भाअी लिखते हैं:

"आप जानते हैं कि हिन्दुस्तानमें दूधकी कितनी तंगी है। यहां जमशेदपुरमें लगभग २।। लाखकी आबादी है। अगर हर आदमीको २।। छटांक दूध भी दिया जाय, तो रोज १००० मन दूधकी खपत होगी। अुसके खिलाफ टिस्को डेरी रोज सिर्फ ३० मन दूध पैदा करती है और हम लोग दूसरा ३ मन। ग्वाले घर-घर जाकर पानी मिला कितना दूध बेचते होंगे, यह हम नहीं जानते। लेकिन अितना हम जरूर जानते हैं कि जब छोटे बच्चों, गर्भवाली औरतों और बीमारोंको दूध पीनेको नहीं मिलता, तब हलवाअी लोग रोजाना लगभग ५० मन दूधकी मिठाअियां तैयार करते हैं। क्या रसगुल्लों, पेड़ों और अैसी ही दूसरी मिठाअियोंको पहला स्थान देकर खुराकके रूपमें दूधके अिस्तेमालको बन्द कर देना ठीक होगा?"

गांधीजीने कअी बार चिल्ला-चिल्लाकर अिस सवाल पर अपनी राय जाहिर की है। आजके नाजुक समयमें अन्नका अेक दाना भी बरबाद करना गुनाह है। मिठाअियां खाना तो बरबादीसे भी बदतर है। वे खानेवालोंको नुकसान पहुंचाती हैं और दूसरोंको दूधकी जरूरी खुराकसे वंचित रखती हैं। यह देखना जनताका काम है कि मिठाअी खाना तुरन्त बन्द कर दिया

जाय। जब तक बीमारों और बच्चोंके लिअे काफी दूध नहीं मिलता, तब तक दूधसे बनी हुअी सारी मिठाअियों पर रोक लगा दी जानी चाहिये। सारे समझदार लोगोंको, अपनी जिम्मेदारी समझकर दूधकी मिठाअियोंको न छूनेकी और दूसरोंको भी अिसके लिअे राजी करनेकी प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये। जनताकी राय सबसे कारगर कानून है। अगर जनता अिस नाजुक हालतको और बच्चों और बीमारोंको जरूरी खुराकसे वंचित रखनेवाली मिठाअी खानेकी बुराअीको समझ ले, तो वह अपनी गलतीको सुधार लेगी। जनताकी जाग्रत रायके बिना बनावटी कण्ट्रोलसे कोअी फायदा नहीं हो सकता।

रावलपिण्डी, ३१–७–'४७ **सुशीला नय्यर**

हरिजनसेवक, १७–८–१९४७

## ७३

## आये हुअे पत्रोंसे

सोयाबीनके बारेमें 'हरिजनसेवक' के कालमोंमें चर्चा की जा चुकी है। बरेलीसे अेक दोस्त लिखते हैं :

"अिस जिलेके मेरे खेतोंमें मैंने सोयाबीन पैदा की है। खरीफ फसलके नाते वह खूब पकी है। और कुछ दोस्तोंने, जिन्होंने अुससे बनी कअी चीजोंको चखा है, अुसे बहुत पसन्द किया है। लड़ाअीके दिनोंमें दूधकी कमी होनेसे मेरे अेक दोस्तने सोयाबीनके बने दूधसे ही काम चलाया है।

"अगली बारिशमें वह अैसे तमाम खेतोंमें पैदा की जा सकती है, जहां बरसातका पानी ज्यादा समय तक नहीं ठहरता। खासकर बंगलोंसे जुड़ी हुअी खाली जमीनोंमें बोनेके लिअे सोयाबीनकी फसल बड़े कामकी साबित होगी। पंजाब और पश्चिमी यू० पी० के लोगोंकी तन्दुरुस्ती ज्यादा चावल खानेसे बिगड़ जाती है। बाजरा और मक्का बहुत लोगोंको माफिक नहीं आते। गेहूं मुश्किलसे मिलते हैं। अिसलिअे अगर आम तौर पर नहीं, तो कम-से-कम कुछ लोगोंके लिअे तो

सोयाबीन गेहूं, चावल वगैराकी जगह ले सकती है और फायदेमन्द साबित हो सकती है।"

* * *

'अेग्री-हॉर्टीकल्चरल सोसायटी' की सालाना जनरल मीटिंगकी सभा-नेत्रीकी हैसियतसे श्रीमती लीलावती मुंशीने आम जनता और बम्बअी म्युनिसिपल कार्पोरेशनके सामने कुछ कामके सुझाव पेश किये हैं:

(अ) पहाड़ीकी चोटी पर बने हुअे हेंगिंग गार्डनको छोड़ कर, बॉम्बे गैरेजसे लेकर केम्प्स कॉर्नर तककी मलबार हिलकी सारी ढालू जमीनको शाक-भाजीके बगीचेमें बदल दिया जाय। अितनी जमीन अेक हजार आदमियोंको बड़ी आसानीसे शाक-भाजी दे सकती है।

(आ) आजकलके नये तरीकोंको अमलमें लाकर सारे मकानोंकी छतोंपर छोटे पैमाने पर टमाटर और दूसरी हरी भाजियां पैदा की जायं।

(अि) शहरके सारे कूड़े-करकटका रासायनिक रीतिसे खाद तैयार किया जाय।

(अी) बच्चोंमें, स्कूल और घर दोनों जगह, फलके पौधे, तरकारियां और अनेक तरहके अनाज पैदा करनेकी रुचि अुत्पन्न की जाय। अिससे बच्चोंका फालतू समय तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाले कामोंमें खर्च होगा और समाज-सेवाकी भावना भी अुनमें बचपनसे ही पैदा हो जायगी।

अुनका यह कहना ठीक है कि अगर तरकारियोंका बगीचा ठीक ढंगसे सजाया जाय, तो वह सुन्दर भी दिखाअी देगा। जरूरत पड़ने पर सोसायटी अिस बारेमें जानकारोंकी सलाह देनेके लिअे भी तैयार है।

* * *

अेक पत्र-लेखकने गांधीजीके अिस सुझावका स्वागत किया है कि अनाजकी कमीके अिन दिनोंमें कच्ची तरकारियां खाअी जायं और कभी-कभी पूरा या आधा अुपवास भी किया जाय। सादा भोजन और यौगिक आसन कअी लोगोंकी अनचाही चर्बीको घटाकर अुनकी पाचनशक्तिको सुधार देते हैं। अधिकतर मालदार लोगोंकी बीमारियां गलत खान-पान या ज्यादा खानेसे पैदा होती हैं। अिस कठिन वक्तमें अगर खान-पानके मामलेमें थोड़े

सोच-विचारके साथ संयमसे काम लिया जाय, तो ये दोनों कठिनाअियां दूर की जा सकती हैं।

* * *

बकरीका दूध कम-से-कम खर्चमें मिल सकता है। कअी बड़े परिवारोंमें रोज काफी खुराक तरकारियोंके छिलकों और डण्ठलों वगैराके रूपमें फेंक दी जाती है, जिससे अेक बकरीका पेट आसानीसे भर सकता है।

हिन्दुस्तान जैसे देशमें, जहां चरागाहोंकी बड़ी कमी है और बहुत थोड़े किसान दुधार मवेशी पाल सकते हैं, दुधार बकरी ही गरीबकी गायकी जगह ले सकती है।

कुछ लोग बकरीका दूध अिसलिअे नापसन्द करते हैं कि अुसमें बदबू आती है। लेकिन अुसकी यह बुराअी सफाअीसे दूध निकालने और अुबालनेसे दूर की जा सकती है।

अुरुळी, २८–३–'४६ **अमृतकुंवर**

हरिजनसेवक, १४–४–१९४६

## ७४

## अन्नकी कमी और वैज्ञानिक खोज

अन्नकी कमीके सम्बन्धमें वाअिसरॉयके प्राअिवेट सेक्रेटरी जिस दिन सेवाग्राममें गांधीजीसे मिले, तभीसे गांधीजी आनेवाले खतरेका सामना करनेके तरीके खोजनेमें लगे हुअे हैं। अुन्होंने 'ज्यादा अनाज पैदा करो' और 'जितना हो सके अुतना अन्न बचाओ' के आन्दोलनों पर सबसे ज्यादा जोर दिया है। हमारे आश्रममें फूलोंके तमाम पौधे खोद डाले गये हैं और अुनकी जगह तरकारियां अुगाअी गअी हैं। वहां यह नियम बनाया गया है कि जरूरतसे ज्यादा अेक कौर भी किसीको नहीं खाना चाहिये और अन्नका अेक दाना भी बरबाद नहीं करना चाहिये। अिसके अलावा, वे यह भी सोचते रहे हैं कि अन्नकी कमी और किन चीजोंसे पूरी की जा सकती है। अेक रोज अुन्होंने मुझसे पूछा कि क्या दाने पड़नेके पहले गेहूंकी मुलायम बालियोंमें किसी तरहके पोषक तत्त्व मौजूद रहते हैं? अिससे अुनका मतलब अगली फसल पकने तककी मुसीबतोंको टालनेका था। जहां तक मैं

जानती हूं, दाना पड़नेके पहले गेहूंकी बालियों या मुलायम कोपलोंमें किसी तरहका पोषक तत्त्व नहीं रहता। देशकी खोजशालाओंका यह फर्ज है कि वे अिस बातकी खोज करें और अकालके खतरेसे बचनेमें मदद पहुंचायें। कुछ डॉक्टरी पत्रोंमें अैसी रिपोर्टें छपी हैं कि वैज्ञानिकोंने घासको वह शकल देनेमें सफलता पा ली है, जिसे अिन्सान खा सके और पचा सके। अिस सिलसिलेमें कूनूरकी पोषक खुराकके बारेमें खोज करनेवाली प्रयोगशाला बहुत बड़ा काम कर सकती है। अिस बातकी पूरी-पूरी अुम्मीद है कि अुस संस्थाके अधिकारी कुछ समयके लिअे अपनी सैद्धान्तिक खोजोंको बंद कर देंगे और अन्नकी कमीको दूर करनेके साधनों और तरीकोंकी खोजमें ही अपनी ताकत लगा देंगे। मसलन्, अनाजकी जगह लेनेवाली चीजोंकी खोज करना, आलू-शलजम और गाजर-मूली जैसी गठीली और जड़ोंवाली फसलोंकी अुपयोगिताका पता लगाना। यह मानी हुअी बात है कि ये फसलें थोड़े समयमें बहुत ज्यादा मात्रामें पकती हैं और अन्नसंकटको मिटानेमें पूरी मदद कर सकती हैं। देशके मौजूदा अन्नकी ठीक-ठीक सार-संभाल करनेके सुझाव देकर भी संस्थाके अधिकारी बड़ा काम कर सकते हैं। अेक दोस्त, जिन्हें खेती और किसानोंका अच्छा अनुभव है, अुस दिन कह रहे थे कि किसानों द्वारा अिकट्ठे किये हुअे गेहूंकी ठीक-ठीक देखभाल न हो सकनेके कारण अुसका लगभग $\frac{1}{5}$ वां भाग बरबाद हो जाता है। अिसका अिलाज फौरन ही किया जाना चाहिये। मेडिकल विभागके खोज करनेवालोंका काम है कि वे अिसके लिअे कारगर और सादे तरीके सुझायें। वे सादे, पौष्टिक और मित भोजनकी मात्रा सुझा सकते हैं, नपी-तुली खुराककी बातें सुझा सकते हैं और साथ ही अन्नके मामलेमें जितनी हो सके अुतनी कोर-कसरके रास्ते भी सुझा सकते हैं। कूनूरकी 'न्यूट्रीशन रिसर्च लेबोरेटरी' ने देशके पढ़े-लिखोंको खुराकके बारेमें जाग्रत करके देशकी अुपयोगी सेवा की है। अब आम जनताकी मदद करना अुनका काम है। तभी हर साल रिसर्च या खोज पर जो भारी खर्च होता है, वह अुचित माना जा सकेगा। रिसर्चके कामोंमें खर्च होनेवाला पैसा गरीबोंकी जेबोंसे आता है, अिसलिअे रिसर्चका काम करने-वालोंको चाहिये कि वे लोगोंको अुस भुखमरीसे हरगिज न मरने दें, जो टाली जा सकती है।

सुशीला नय्यर

[अन्नसंकट पर मैं जितना ही सोचता हूं, अुतना ही मेरा यह विश्वास मजबूत होता जाता है कि लोग अन्नकी कमीसे भूखों नहीं मर रहे हैं, बल्कि अिसलिअे भूखों मर रहे हैं कि अिस चीजके जानकारोंमें आपसी सहयोग नहीं है और केन्द्रमें अैसी राष्ट्रीय सरकार नहीं है, जो संकटका मुकाबला करने पर तुली हो और लोगोंमें अपने लिअे विश्वास पैदा कर सके।

नअी दिल्ली, २०–४–'४६ —मो० क० गांधी]
हरिजनसेवक, १२–५–१९४६

## ७५

# दुष्काल संबंधी बातें

### अनाजका दुरुपयोग

अमेरिकासे अन्न आनेकी संभावना दूर हटती जाती है और अिससे हमारी रेशनिंग पद्धतिके जूनके तीसरे हफ्तेमें टूट जानेका डर पैदा हो गया है। अतः मनुष्योंको भूखसे तड़पकर मरनेसे बचानेके कामके सिवा अन्नका दूसरा कोअी भी अुपयोग न हो, या अेक दाना भी व्यर्थ नष्ट न किया जाय, अिसके लिअे बहुत सख्त कदम अुठाये जाने चाहिये। कुछ समय पहले 'हरिजन' के कालमोंमें अुद्योगोंके लिअे स्टार्च और डेक्सट्राअिन (अेक तरहका गोंद जो कपड़ों पर कलप करनेके काम आता है) बनानेमें जो अत्यधिक मात्रामें अनाजका अिस्तेमाल होता है, अुसकी टीका की गअी थी। अेक मित्रने अभी अेक तफसीलवार नोट भेजा है, जिसमें बताया है कि न केवल करीब १ लाख ६१ हजार टनसे ज्यादा अनाज अिस काममें लिया जाता है, बल्कि काफी मात्रामें अनाज व्यर्थ नष्ट भी होता है। यह बिगाड़ और अनाजका अुपयोग बहुत घटाया अथवा अेकदम रोका जा सकता है। वे भाअी लिखते हैं :

> "जहां तक मुझे मालूम हुआ है अिस समय सारे ब्रिटिश भारत व रियासतोंमें बड़े पैमानेपर स्टार्च, डेक्सट्राअिन और मैदा बनानेके स्टार्चके तेरह कारखाने हैं। स्टार्च और डेक्सट्राअिन बनानेके लिअे अुपयोगमें आनेवाले कच्चे मालमें गेहूं, जौ, मक्का, चावल, टेपिओका, आलू और बार्ली वगैरा खानेकी चीजें शामिल हैं।

"अिस स्टार्च और डेक्सट्राअिनका अुपयोग अुद्योगोंमें तरह तरहसे होता है। मैं यहां पर केवल अुन तीन बातोंका अुल्लेख करूंगा, जिनमें अिनका अुपयोग बहुत बड़े पैमाने पर होता है :

"**१. वस्त्र अुद्योगमें 'साअिज़' या 'साअिज़िंगमें काम आनेवाली' वस्तुके रूपमें, अर्थात् कपड़े पर मांड़ चढ़ानेमें :** ताना तैयार करते समय या बुनते समय अुसकी मजबूती बढ़ानेके लिअे सूत और कपड़ेको या दोमें से किसी अेकको सामान्यतः मांड़ लगायी जाती है। जितनी तफसील मुझे मिली है, अुसके आधार पर स्टार्च या डेक्सट्राअिनसे बने हुअे और कपड़े पर मांड़ चढ़ानेके लिअे मिलोंमें और हाथ-करघा चलानेवाली मंडलियों तथा कारखानोंमें अुपयोगमें लिये जानेवाले अैसे पदार्थोंकी खपतका सालाना अन्दाज सारे हिन्दुस्तानमें लगभग १,३२,००० टन कूता गया है। मांड़ कितनी चढ़ाअी जाय या काममें ली जाय, अिसका आधार अुपयोग किये जानेवाले सूतके नम्बर पर, तैयार होनेवाले कपड़े वगैराकी जाति पर, अुस मालके बाजारमें मिलनेवाले भाव पर और खास तौर पर कारखानेवालोंकी धुन या मौज पर रहता है। हलके और सस्ते सूती कपड़े पर ज्यादा भाव लेनेके लालचसे खूब मांड़ चढ़ायी जाती है, और अिसका बोझ अेकन्दर सस्ता कपड़ा खरीदनेवाले गरीब वर्ग पर पड़ता है। ६० प्रतिशतके हिसाबसे मांड़ चढ़ानेके लिअे लगनेवाले १,३२,००० टन पदार्थ पानेके लिअे हर साल ७०,२०० टन स्टार्च और डेक्सट्राअिनकी जरूरत होती है, जिनकी बनावटमें अिससे दुगुना कच्चा माल लगता है। दूसरे शब्दोंमें कहें तो कपड़ेपर मांड़ चढ़ानेके लिअे जरूरी पदार्थ बनानेमें अुपरोक्त खाद्य पदार्थोंका सालाना १,४०,४०० टन जत्था काममें लिया जाता है।

"**२. गोंद या चिपकानेके काममें अिस्तेमाल की जानेवाली गोंद जैसी चीजोंकी बनावटमें :** दो चीजोंको अेक-दूसरीके साथ जोड़ने या चिपकाने और अिसी तरहके अलग-अलग कामोंके लिअे काममें लिये जानेवाले गोंद और गोंद जैसी दूसरी चीजोंकी बनावटमें गेहूं और चावलका आटा तथा टेपिओका पाअुडर कितना अिस्तेमाल किया जाता है अिसके आंकड़े नहीं मिलते। फिर भी अुसका सालाना अन्दाज लगभग १५०० टन आता है। और अुतना आटा और

पाअुडर पानेके लिअे २००० टन कच्चा माल (खाद्य पदार्थ या अनाज) चाहिये।

"**३. कपड़े रंगनेके रंगोंमें मिलावट करनेमें :** सब कोअी जानते हैं कि 'डाअिज़' या 'कलर्स' यानी रंगके पदार्थोंके व्यापारमें अुनकी ताकत घटानेके लिअे डेक्सट्राअिनका अुपयोग किया जाता है। मुझे जहां तक जानकारी मिली है, हिन्दुस्तानके अलग-अलग प्रान्तोंमें अिस कामके लिअे ५,५०० टन डेक्सट्राअिन अिस्तेमाल किया जाता है। अिसमें बम्बअी प्रान्त सबसे आगे बढ़ जाता है, जहां २,५०० टन डेक्सट्राअिन काममें लिया जाता है। मुझे अैसा शक है कि दरअसल अिसकी जितनी मात्रा काममें ली जाती है, अुसके मुकाबले ये आंकड़े कम हैं, क्योंकि मुझे अुसके अिस्तेमालके पूरे-पूरे आंकड़े नहीं मिल सके। अिस बारेमें जरूरी तफसील सरकारी तंत्र द्वारा ही अिकट्ठी की जा सकती है।

"अिम्पीरियल केमिकल अिण्डस्ट्रीज़ सिबा (अिण्डिया लिमिटेड), शॉ वॉलेस और गीगी जैसी रंगका व्यापार करनेवाली मुख्य कंपनियां और बहुतसी हिन्दुस्तानी कंपनियां भी आम तौर पर बाजारमें बिकनेवाले रंगोंमें मिलावट करके अुनकी ताकत कम कर देती हैं। अिस कामके लिअे बारीक और अूंची जातका डेक्सट्राअिन या स्टार्च अिस्तेमाल किया जाता है। कच्चे मालमें से सिर्फ ३० प्रतिशत ही डेक्सट्राअिन तैयार हो सकता है। यानी ५,५०० टन डेक्सट्राअिन बनानेमें १९,००० टन अनाज कच्चे मालके तौर पर खर्च हो जाता है।

"अिस तरह अिन तीन कामोंमें कुल १,६१,४०० टन अनाज खर्च हो जाता है।

"स्टार्च और डेक्सट्राअिन अिस्तेमाल करनेवाले ग्राहकोंके पाससे मैंने ये आंकड़े अिकट्ठे किये हैं। अिसलिअे मेरा अन्दाज कारखानोंकी पैदावारके आधार पर नहीं, बल्कि अिन चीजोंकी असल खपतके आधार पर है। अिसमें बिगाड़के लिअे, कारखानेवालोंकी माल भर रखने और संग्रह करनेकी वृत्तिके लिअे २० प्रतिशत और जोड़ लिया जाय। अर्थात् अिन सब चीजोंकी बनावटमें सचमुच काममें लिये जानेवाले अनाजकी मात्रा लगभग २ लाख टन सालाना समझनी चाहिये।"

अिसके बाद पत्र लिखनेवाले भाअी कारखानोंमें चलनेवाली अव्यवस्था और रिश्वतखोरीकी बुराअीके कारण होनेवाले बिगाड़का वर्णन करते हैं:

"सिर्फ रिश्वतखोरीकी बुराअीके कारण कपड़े और सूतकी मिलोंमें और रंगके कारखानोंमें साअिज़िंगके लिअे अिस्तेमाल किये जानेवाले पदार्थोंका भारी बिगाड़ होता है। साअिज़िंग मास्टरको या रंगकी मिलावट करनेवाले कारीगरको या कारखानेके मैनेजरको आम तौर पर बख्शिश, रिश्वत या कमीशन दिया जाता है और अुसका आधार अुसके द्वारा दिये जानेवाले आर्डर पर रहता है। कभी-कभी अेक आदमीके बदले तीन-चार आदमियोंको चढ़ता-अुतरता कमीशन देना पड़ता है और अिससे अुसकी रकम बहुत बढ़ जाती है। कुछ मामलोंमें साअिज़िंग मास्टर या मैनेजर ज्यादा कमीशन खानेका लोभ करता है। अिसलिअे वह यह कहकर किसी मालके बहुत बड़े जत्थेका आर्डर दिया करता है कि वह माल बड़े महत्त्वका है। अिस जातिका माल बहुत खपता है, अैसा बतानेके लिअे अुसके बड़े-बड़े जत्थे व्यर्थमें बिगाड़ दिये जाते हैं।

"कितने ही मामलोंमें अैसा होता है कि जिस कपड़ेकी कीमत ६ से ८ आना होती है, अुसे बहुत ज्यादा और मोटी मांड़ चढ़ाकर गरीब और अज्ञान लोगोंके मत्थे १० से १४ आनेके भावसे मढ़ दिया जाता है। कपड़ेके निष्णातोंको नियुक्त करके अिसे रोका या सुधारा जा सकता है, जो यह तय करें कि किसी खास नम्बरके सूतके खास तरहके कपड़े पर ज्यादा-से-ज्यादा और कम-से-कम कितनी मांड़ चढ़ाअी जा सकती है। मुझे लगता है कि राष्ट्रीय सरकारको अिस सवाल पर विचार करना पड़ेगा।

"अिसी तरह २ और ३ नम्बरके मुद्दोंमें बताअी गअी बुराअियों पर नियंत्रण रखनेका तरीका यह है: या तो अिन कामोंमें आनेवाले अूपर बताये हुअे पदार्थोंके बदले दूसरे कोअी पदार्थ बताये जायं, या कम-से-कम बाहरसे रंग मंगवानेवालों, रंगमें मिलावट करनेवालों और बाजारमें बेचनेके लिअे रंगकी पुड़ियां बनानेवालों पर यह पाबन्दी लगा दी जाय कि वे रंगकी ताकत कम करनेमें अिन चीजों

(डेक्सट्राअिन वगैरा) का बिलकुल अुपयोग न करें। यहां भी अेक तरफसे रिश्वतखोरी चलती है और दूसरी तरफसे ग्राहकोंको धोखा दिया जाता है। जिन रंगोंका भाव ३ से ६ रुपये होता है, अुनकी ताकत डेक्सट्राअिन मिलानेसे ५० प्रतिशत घटाकर अुन्हें अुसी भावमें या अुससे अूंचे भावमें बेचा जाता है। और अिस तरह १०० प्रतिशतसे ज्यादा नफा लिया जाता है।"

अनाज और कंदमूलके अितनी भारी मात्रामें होनेवाले अुपयोगको या तो अेकदम बंद किया जा सकता है या अुसमें बहुत बड़ी कमी की जा सकती है। अैसा करके ये चीजें मनुष्योंके अुपयोगके लिअे बचाअी जा सकती हैं। पत्र लिखनेवाले भाअी बताते हैं कि अैसे कदम अुठानेसे कपड़े व सूतका धन्धा या रंगका व्यापार न तो किसी तरह रुकेगा और न अुस पर कोअी बुरा असर होगा। क्योंकि अनाज और कंदमूलसे मिलनेवाले स्टार्च और डेक्सट्राअिनके बदलेमें कॉफीके बीजोंसे मिलनेवाले डेक्सट्राअिन तथा अिमलीके बीजों व आमकी गुठलीकी गरीसे मिलनेवाले स्टार्च और कअी जंगली पेड़ोंके फलोंको काममें लिया जा सकता है। ये अनाज और कंदमूलसे पैदा होनेवाले स्टार्च या डेक्सट्राअिन जैसा ही काम देते हैं। आज हजारों टन अिमलीके बीज परदेश भेजे जाते हैं।

## नुकसानदेह खेती

गुजरातसे अेक भाअीने खाद्य पदार्थोंकी खेतीको नुकसान पहुंचाकर तमाखूकी खेतीका जो विस्तार होता जा रहा है, अुसके बारेमें अिससे भी अधिक चौंकानेवाली हकीकतें भेजी हैं। अुनके पत्रका सार नीचे दिया है:

"अेक तरफ तो आप लोगोंसे कहते हैं कि ज्यादा शाक-भाजी और अनाज पैदा करनेके लिअे बगीचोंके फूलके झाड़ निकाल डालो तथा खेतीके लिअे नये कुअें खुदाओ और पुरानोंकी मरम्मत कराओ, तब दूसरी तरफ खुराकके तौर पर किसी काममें न आनेवाली और तन्दुरुस्तीको नुकसान पहुंचानेवाली तमाखूकी खेतीमें लाखों अेकड़ जमीन रोक ली जाती है। अिस तरह जिन बोअरिंगके कुओं, अिन्जनों और क्रूड ऑअिलका अुपयोग अकालसे बचनेके लिअे ज्यादा अनाज पैदा करनेमें किया जा सकता है, अुनकी मददसे काले बाजारमें बेचनेके लिअे तमाखू पैदा की जाती है।

"ब्रिटिश सरकारने १९४२ में तमाखू पर १८ आने सेर या ४५ रुपये (बंगाली) मनका कर लगा दिया और बादमें अुससे ज्यादासे ज्यादा पैसा कमानेकी नीयतसे अुसकी खेतीको प्रोत्साहन देना शुरू किया।

"रियासतोंमें तमाखू पर कर नहीं रखा गया था। वहांके अधिकारियोंने मुफ्त जमीन और तमाखूके बीज देनेका कहा और तमाखूकी खेतीके जानकार किसानोंको वेतन देकर बाहरसे बुलाया और अुनके द्वारा अपने-अपने राज्यमें तमाखूकी खेती शुरू कराअी। अिस तरह तमाखूकी खेती करनेवाले लगभग ३ हजार किसान परिवार गुजरातसे रजवाड़ोंकी हदमें चले गये। वे गुजरातकी हद पर स्थित भावनगर, जूनागढ़, मोरबी, जामनगर वगैरा राज्योंमें जाकर बस गये और तमाखूकी खेती करने लगे। अिसके अलावा, अुदयपुर, जोधपुर, खेतड़ी, नीमच, पीपलोद, रतलाम, ग्वालियर, भोपाल, देवास, अिन्दौर, अुज्जैन और मारवाड़के सिरोही वगैरा राज्योंमें भी तमाखूकी खेती फैल गअी है। सिन्धके हैदराबाद, सक्कर और खेरज जिलोंमें ९० हजार बीघा जमीनमें तमाखूकी खेती की जाती है। निजाम हैदराबाद तथा पालनपुरमें तमाखू पर कर लगाया गया है और सरकारी आय बढ़ानेके लिअे अुसकी खेतीको प्रोत्साहन दिया जाता है। मध्यप्रान्तके अमरावती, यवतमाल और खामगांव जिलोंमें चरोतर (गुजरात) के पाटीदारोंको बुलाकर तमाखूकी खेतीके लिअे बसाया गया है। बड़ोदा राज्यके महेसाणा जिलेमें तमाखूकी पैदावार अेक हजारसे बढ़कर ७ लाख थैले तक पहुंच गअी है।"

वे भाअी यह सुझाते हुअे अपना पत्र पूरा करते हैं कि जब तक अकालकी हालत मौजूद रहे, तब तक कानून बनाकर सारी तमाखूकी खेती पर रोक लगा दी जाय और खुराककी चीजोंके लिअे निश्चित की हुअी फाजिल जमीनमें पहले तिलहन और कपासकी खेतीको जगह दी जाय। अिससे दुधार जानवरोंको खली और बिनौले दिये जा सकेंगे और अनाज बचेगा।

## गन्तूरसे आअी हुअी शिकायत

गन्तूरसे श्री सीताराम शास्त्री लिखते हैं :

"पिछले महीनेमें गन्तूरके डेप्युटी डायरेक्टर ऑफ अेग्रिकल्चरसे गन्तूर जिलेमें होनेवाली तमाखूकी खेतीके बारेमें मेरी चर्चा

हुअी। तमाखूकी खेतीको रोकनेसे बची हुअी जमीनको अनाजकी खेतीके अुपयोगमें लेनेके बारेमें सरकारकी तरफसे सुझाव मांगे गये थे। अिस जिलेकी ७० हजार अेकड़ जमीनमें अमेरिकाकी वर्जिनिया तमाखू और अुतनी ही दूसरी जमीनमें देशी तमाखूकी खेती होती है। अिस तरह तमाखूकी खेतीमें कुल १,४०,००० अेकड़ जमीन रुकी हुअी है। अैसा हिसाब लगाया गया था कि दोनों तरहकी तमाखूकी खेतीसे अेक अेकड़ पीछे करीब १५० रुपयेकी और अनाजकी खेतीसे लगभग ८० रुपयेकी आय होती है। अिस तरह साफ दिखाअी देता है कि नकद पैसा लेनेके हेतुसे तमाखू पैदा करनेवालेको अेकड़ पीछे ७० रुपयेका फायदा होता है। अिसलिअे बादमें यह तजवीज पेश की गअी कि चालू सालकी फसलमें सरकारी पत्रकमें जिसके नाम तमाखूकी खेतीमें जितने अेकड़ बताये गये हों, अुसे अेक अेकड़के पीछे ७० रुपयेके हिसाबसे सरकारी मदद दी जाय।

"तमाखूके धंधेमें बड़े निहित स्वार्थ हैं। तमाखूकी खेती पूरी-पूरी रोक देनेसे अिन स्वार्थोंको जो नुकसान पहुंच सकता है, अुसे यथासंभव कम करनेके हेतुसे अुस वक्त यह भी सुझाया गया था कि तमाखूकी खेतीवाली जमीनमें से आधे भागमें अिस साल अनाज बोया जाय और बाकीके आधे भागमें आते साल अनाज बोया जाय।

"बापटलामें भाषण करते हुअे डायरेक्टर ऑफ अेग्रिकल्चरने अैसी सूचना की थी कि सरकार तमाखूकी खेती पर रोक लगानेका विचार कर रही है।

"अूपर जो १,४०,००० अेकड़ जमीनमें तमाखूकी खेती होनेका जिक्र किया गया है, अुसमें अुस जमीनका समावेश नहीं है, जिसमें वर्जिनिया तमाखूके रोपे अुगाये जाते हैं। जिलेमें लगभग अेक हजार अेकड़ जमीनमें ये रोपे अुगाये जाते हैं। यह जमीन भी अनाजकी खेतीके लिअे मिल जायगी।

"तमाखूसे होनेवाले नुकसानकी विस्तृत चर्चा करनेकी यहां जरूरत नहीं। अितना तो सब समझ सकते हैं कि अुसमें से मनुष्य, जानवर या पक्षीको कोअी खाने-पीनेकी चीज नहीं मिलती।

"तमाखूकी खेतीका सवाल सारे हिन्दुस्तानका सवाल है। अुसे हल करनेके लिअे सारे प्रान्तों और देशी राज्योंको मिलकर कदम

अुठाने होंगे। अिस बारेमें कांग्रेस वर्किंग कमेटी भी विचार करे और सारे देशकी रहनुमाअी करे तो अच्छा हो।"

आज जब भीषण अकालका खतरा देशके सिर पर लटक रहा है, तब अिस बारेमें क्या शक हो सकता है कि जमीनके कसको चूस डालनेवाली और नकद पैसे देनेवाली अिस फसल पर कानूनसे रोक लगा दी जानी चाहिये? लेकिन तमाखूकी खेती करनेवालोंको मुआवजा देनेकी बात बिलकुल नादानीकी और वाहियात है। यह पैसेको परमेश्वर मानकर पूजनेवाली पूंजीवादी समाज-व्यवस्थामें ही संभव हो सकती है। चारों तरफ फैली हुअी अकाल और भुखमरीकी हालतमें भी अपनेको होनेवाले नुकसानका मुआवजा पानेका निहित स्वार्थोंका दावा कैसा अमानुषिक है? माल पैदा करनेकी दूसरी प्रवृत्तियोंकी तरह खेती भी सबसे पहले आदमीकी जरूरत पूरी करनेके लिअे ही हो सकती है। 'पैसेकी फसलों' द्वारा हमारी अर्थ-व्यवस्था पर जो आक्रमण शुरू हुआ है, अुसमें देशके लिअे बड़ा भय छिपा हुआ है। सुव्यवस्थित समाजमें जो जोते, वही जमीनका मालिक होगा; और अुसमें खेती पैसे जोड़नेके लिअे नहीं, बल्कि लोगोंकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे ही की जायगी। आज खेतीको अपनी गुलामीमें जकड़ रखनेवाली और अनेक मुंहसे किसानोंका खून चूसनेवाली निहित स्वार्थरूपी जोंकके पंजेसे खेतीको छुड़ाना ही होगा।

## दो कीमती सूचनाअें

ज्यादा अनाज पैदा करनेके बारेमें दो कीमती सूचनाअें दी गअी हैं और सरकारको अुन पर तुरन्त विचार करना चाहिये। क्वेटासे अेक अिंजीनियर लिखते हैं:

"नहरोंके दोनों ओर पानीकी सतहसे ६ अिंच अूंची और ६ से २० फुट तक चौड़ी जमीनकी पट्टी रखी जाती है। अुसे 'बर्म' कहते हैं। हिन्दुस्तानमें ही मनुष्योंकी कोशिशसे खुराकके राशनमें तुरन्त जो कुछ बढ़ती हो सकती है, अुसे करनेके लिअे जहां संभव हो वहां शाक-भाजी अुगानेकी सचमुच सरकारकी अिच्छा हो, तो मेरी आपको यह सूचना है कि आप वाअिसरॉयसे बिनती कीजिये कि वे हर प्रान्तीय सरकारको यह हुक्म दें कि वह अपने प्रदेशके 'बर्म' के हर टुकड़ेमें शाक-भाजी अुगानेका अपने पी० डब्ल्यु० डी० विभागको आदेश दे दे।

"अगर अिस तरह नहरके दोनों तरफकी जमीनकी पट्टियोंका अुपयोग किया जाय, तो पानी घुमाने या लानेके लिअे नअी नालियां वगैरा खोदनेके खर्चके बिना ही हजारों अेकड़ नअी और अुपजाअू जमीन मिल जायगी। अिस 'बर्म' की जमीनमें शाक-भाजीके लिअे जरूरी नमी हमेशा कायम रहती है। और व्यवहारमें यह तरीका बड़ा कामयाब साबित हुआ है। कमसे कम सिन्धमें हरअेक समतल जगह पर (पानीके बहावको काबूमें रखने और ठीकसे घुमानेके लिअे पी० डब्ल्यु० डी० विभागका जहां-जहां बन्दोबस्त रहता है वहां) अिस विभागके लोग अपने अुपयोगके लिअे जरूरी शाक-भाजी पैदा कर लेते हैं।

"आसपासके किसानोंको अिस 'बर्म' तक पहुंचनेका सुभीता दे दिया जाय, तो वे खुशीसे अपना फालतू समय शाक-भाजी बोनेमें और अुसे संभालनेमें देंगे। और अिस तरह वे अपना समय अुपयोगी काममें खर्च कर सकेंगे। सिर्फ अितना ही जरूरी है कि पी० डब्ल्यु० डी० विभाग जिन लोगोंको 'परायें' समझता है, अुनके अपनी हदमें आनेका वह कोअी खयाल न करे। लेकिन अिस संकटके समय देशको तुरन्त जो लाभ होगा, अुसका खयाल करके अिस बारेमें अुसे कोअी अेतराज नहीं अुठाना चाहिये।

"अिसके अलावा, अिस शाक-भाजीको बेचनेके लिअे पासके बाजारोंमें या रेलवे स्टेशन पर ले जानेके लिअे जरूरी वाहनका अिंतजाम भी प्रान्तीय सरकारोंको ही करना होगा। लड़ाअीके दरमियान फौजी छावनियोंमें जिस तरह शाक-भाजी पहुंचाअी जाती थी ठीक अुसी तरह यह भी किया जा सकता है। अमेरिकाकी तरफसे 'लीज़ लेण्ड योजना' द्वारा ठेकेदारोंको जो लारियां मिली हैं, अुन्हें भाड़ेकी दरें ठहराकर काममें लिया जा सकता है। (अिन ठेकेदारोंको लारियां देते समय यह शर्त रखी गअी थी कि जब सरकार मांगे तब भाड़े पर लारियां देनी होंगी।) हरअेक नहर, अुसकी शाखाअें और अुनमें से पानी ले जानेके लिअे बनाअी हुअी नालियोंके साथ-साथ कामकाजके लिअे जो सड़कें बनाअी गअी हैं, अुनका अिस्तेमाल ये लारियां कर सकती हैं। नये रास्ते बनानेका खर्च भी नहीं अुठाना पड़ेगा। केवल अिन रास्तोंको अच्छी हालतमें बनाये रखनेका काम रहता है। लेकिन

जिन-जिन किसानोंके हिस्सेमें से रास्ता जाता होगा, अुन्हें यह काम सौंपा जाय, तो वे अपने-अपने हिस्सेका रास्ता आसानीसे अच्छी हालतमें रखेंगे ।

"शाक-भाजी जितनी आसानी और तेजीसे अुगती है, अुतनी खुराककी दूसरी कोअी चीज नहीं अुगती। अगर सरकार व्यवस्था हाथमें ले ले, तो सिर्फ धूपमें ही सुखाकर बहुतसी शाक-भाजी काफी समय तक रखी जा सकती है।"

### फौजकी मदद

दूसरी सूचना ब्रिटिश फौजके अेक भाअीकी तरफसे आअी है। वे अेक पत्रमें गांधीजीको लिखते हैं :

"यह देखकर मुझे चिन्ता और दुःख होता है कि हिन्दुस्तानके लोगोंको अेक और अकालका सामना करना होगा। अिस बारेमें अखबारोंमें जो समाचार, लेख वगैरा निकलते रहे हैं, अुन्हें मैं पढ़ता रहा हूं और २१ फरवरीको आपने वाअिसरॉयके प्राअिवेट सेक्रेटरीको जो पत्र लिखा था, वह भी मैंने पढ़ा है।

"आपके सुझावके मुताबिक अिस काममें फौजका अुपयोग जरूर किया जाना चाहिये। मुझे लगता है कि हिन्दुस्तानी और ब्रिटिश फौज तथा हवाअी सेना दोनोंको अपनी-अपनी छावनियोंमें और दूसरी सब स्थायी छावनियोंमें अनाज पैदा करना शुरू कर देना चाहिये। अैसी सब जगहोंमें अिस कामके लिअे अलग जमीन रखी जा सकती है, मजदूर भी रहते हैं और पानी भी काफी मात्रामें रहता है। लड़ाअीके दरमियान ब्रिटेनमें फौजसे यही काम लिया गया था और हिन्दुस्तानकी आजकी हालतमें यहां भी अैसा ही करना जरूरी हो गया है।

"आपने यह सुझाया था कि खुराकका बंटवारा सहकारी संस्थाओं या अैसी ही दूसरी संस्थाओंके जरिये किया जाना चाहिये। यह भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मुल्की जीवनमें ब्रिटेनकी सहकारी प्रवृत्तिके साथ मेरा सम्बन्ध है, और हिन्दुस्तानमें आनेके बादसे यहां भी मैं अिस प्रवृत्तिसे सम्बन्ध रखनेवाली स्थितिका निरीक्षण करता रहा हूं। बेशक, अिंग्लैण्ड और हिन्दुस्तानकी हालतमें बड़े भेद हैं। अुनमें सबसे बड़ा और महत्त्वका भेद तो आप भी तुरन्त समझ सकते हैं। अिंग्लैण्डमें

बहुतसी सहकारी समितियां लोगोंकी हैं, जब कि हिन्दुस्तानकी बहुतसी समितियां सरकारके आसरे पर टिकी हुअी हैं। फिर भी, हिन्दुस्तानकी सहकारी समितियोंके सम्पर्कमें आकर मैंने देखा है कि लड़ाअीके दरमियान जो बहुतसी खुदरा बिक्रीकी सहकारी समितियां या स्टोर खोले गये हैं, अुन्होंने अुचित भावमें लोगोंको जरूरी आटा, शक्कर, खली वगैरा माल देनेका या पहुंचानेका अच्छा काम किया है। आपने अपने सुझावमें अुनके अिस कामका जिक्र किया है, यह देखकर मुझे खुशी हुअी।"

दिल्ली, ११-५-'४६ **प्यारेलाल**

हरिजन २-६-१९४६

## ७६

## आंखें खोलनेवाले आंकड़े

आज जब कि देशमें अनाजकी कमी महसूस हो रही है, '१९४६ का अन्नसंकट' नामके परचेमें से ली हुअी नीचेकी बातें और आंकड़े दिलचस्प मालूम होंगे :

हिन्दुस्तानमें अनाजकी पैदावार
(१९४५-४६)

| | | | |
|---|---|---|---|
| चावल | २ करोड़ | ५८ लाख | टन |
| गेहूं | | ८३ ,, | ,, |
| चना | | ३० ,, | ,, |
| जुवार-बाजरा | | ७५ ,, | ,, |
| मकअी | | २२ ,, | ,, |
| जौ | | १७ ,, | ,, |

अूपरकी मिकदार हिन्दुस्तानकी कुल आबादीके लिअे नाकाफी है और कूती गअी कमी साठ लाख टन बताअी गअी है।

मामूली समयमें पंजाब, सी० पी० और बरार, सिन्ध, अुड़ीसा और आसामके प्रान्त अनाज बाहर नहीं भेजते हैं। सीमाप्रान्त, बिहार, यू० पी०, मद्रास, बम्बअी, बंगाल, त्रावनकोर और कोचीनकी रियासतें — ये सब अपनी

जरूरतका पूरा अनाज पैदा नहीं कर पाते और सभीको गेहूं, चावल, जुवार-बाजरा या सारे अनाज बाहरसे मंगाने पड़ते हैं।

हिन्दुस्तान हर साल जितना अनाज और दूसरी खानेकी चीजें पैदा करता है और जितनेकी दरअसल अुसे जरूरत है, अुन दोनोंके आंकड़े नीचे दिये जाते हैं:

| खानेकी चीज | पदावार (टनोंमें) | जरूरत (टनोंमें) | कमी (टनोंमें) |
|---|---|---|---|
| अनाज | ५ करोड़ | ६ करोड़ | १ करोड़ |
| दाल | ७० लाख | १ करोड़ २० लाख | ५० लाख |
| तरकारी और फल | अनकूते | कम-से-कम दुगुने | — |
| मछली | ६ लाख | ९० लाख | ८४ लाख |
| दूध | २ करोड़ २० लाख | ३ करोड़ ५० लाख | १ करोड़ ३० लाख |
| अण्डे (तादाद) | २६६ करोड़ | १४६०० करोड़ | १४३३४ करोड़ |

अच्छी तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिअे फी आदमी जितने नपे-तुले आहारकी जरूरत है, अुसके आंकड़े नीचे दिये जाते हैं:

| | |
|---|---|
| अनाज | १४ औंस |
| दाल | ३ ,, |
| हरी पत्तेवाली तरकारी | ३ ,, |
| (जड़ोंवाली) तरकारी | ३ ,, |
| दूसरे साग-सब्जी | ३ ,, |
| फल | ३ ,, |
| दूध | १० ,, |
| शक्कर | २ ,, |
| वनस्पति तेल, घी वगैरा | २ ,, |
| मछली और गोश्त | ३ ,, |
| अण्डा | सिर्फ १ |

अिस आहारसे लगभग २६०० केलोरी पैदा होती हैं।

| | |
|---|---|
| अेक बालिग हिन्दुस्तानी मर्दके लिअे | २६०० केलोरीकी जरूरत है |
| अेक बालिग औरतके लिअे | २१०० ,, ,, |
| १२–१३ सालके बच्चेके लिअे | २१०० ,, ,, |
| १०–११ ,, ,, | १८०० ,, ,, |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ८–९ | ,, | ,, | १६०० | ,, | ,, |
| ६–७ | ,, | ,, | १३०० | ,, | ,, |
| ४–५ | ,, | ,, | १००० | ,, | ,, |
| गर्भवती स्त्रीके लिअे | | | २४०० | ,, | ,, |
| दूध पीनेवाले बच्चेकी मांके लिअे | | | ३००० | ,, | ,, |

लेकिन दूसरे देशोंके मुकाबले अुन्हें मिलता कितना है? यह अेक दर्दभरी कहानी है:

| देश | हर व्यक्तिको रोजाना मिलनेवाली केलोरी |
|---|---|
| अमेरिका | ३२०० |
| ग्रेटब्रिटेन | २६०० |
| जर्मनी (लड़ाअीके बाद) | १६०० |
| जापान (अमेरिकाके अधिकारमें) | १५७५ |
| 'दर्दनाक और खतरनाक तादाद' | १५०० |
| हिन्दुस्तान | ९६० |

अिसे देखते हुअे अगर हमारे देशके बालिगों और बच्चोंकी मौतकी तादाद अितनी डरानेवाली हो तो कोअी ताज्जुब नहीं:

(१९४२)

| देश | अेक हजार पर मरनेवालोंकी तादाद | अेक हजार पैदा होनेवाले बच्चोंमें से मरनेवालोंकी तादाद |
|---|---|---|
| आस्ट्रेलिया | १०.५ | ३९ |
| केनाडा | ९.७ | ५४ |
| अमेरिका | १०.४ | ४० |
| जर्मनी | १२.७ (१९४०) | ६८ |
| अिंग्लैण्ड | १२.२ (१९४०) | ५४ |
| जापान | १७.६ (१९३८) | ११४ (१९३७) |
| हिन्दुस्तान | २२.० | १६३ |

हमारे देशवालोंकी औसत अुमर कितनी कम है:

| देश | पैदा होते समय जिन्दगीकी लंबाअीका अंदाज (बरसोंमें) | | |
|---|---|---|---|
| | मर्द | औरत | |
| हॉलण्ड | ६५.७० | ६७.२० | (१९३१–४०) |
| न्यूज़ीलैण्ड | ६५.४६ | ६८.४५ | (१९३४–३८) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्वीडन | ६४.३० | ६६.९२ | (१९३६–४०) |
| अमेरिका | ६३.६५ | ६८.६१ | |
| डेन्मार्क | ६३.५० | ६५.८० | (१९३६–४०) |
| दक्षिण अफ्रीकाका यूनियन | ६१.४६ | ६६.८० | (१९४०) |
| केनाडा | ६०.९० | ६४.७० | (१९४०–४२) |
| आयरलैण्ड | ५९.०० | ६१.०० | (१९४०–४२) |
| अिंग्लैण्ड | ६०.१८ | ६४.४० | (१९३७) |
| जर्मनी | ५९.८६ | ६२.८० | (१९३२–३४) |
| अिटली | ५३.७६ | ५६.०० | (१९३०–३२) |
| जापान | ४६.९२ | ४९.६३ | (१९३५–३६) |
| हिन्दुस्तान | २६.९१ | २६.५६ | (१९३१) |

श्री रमेशचन्द्र दत्तने बरसों पहले कहा था :

"हिन्दुस्तानके सारे अुद्योग-धंधे कुचल डाले गये हैं, अुसकी खेती पर अनाप-शनाप और अनिश्चित लगान लगा रखा है, और अुसकी मालगुजारीका आधा हिस्सा हर साल देशसे बाहर निकल जाता है। अिस दर्दनाक हालतमें दूसरे किसी भी देशको रख दीजिये और नतीजा यह होगा कि दुनियाका सबसे बढ़ा-चढ़ा देश भी जल्दी ही अकालका शिकार बन जायगा।"

हिन्दुस्तान लंबे अरसेसे निर्दय विदेशी जुअेके नीचे दबकर कराह रहा है। मि० विन्स्टन चर्चिल और अुनके जैसे दूसरे लोग, जो हिन्दुस्तानके अल्प-संख्यकों (माअिनारिटीज़) को दिये हुअे अपने पवित्र वचनोंकी दुहाअी दिया करते हैं, अिन चौंकानेवाले आंकड़ोंको पढ़ें और अपनी धूर्तता और बहाने-बाजीसे बाज आयें। जब तक हमारे देशवालोंको भरपेट खाना नहीं मिलता, तब तक अच्छे मकानों, अच्छी सड़कों या तालीम और स्वास्थ्यकी योजनाओंसे अुन्हें कोअी फायदा नहीं हो सकता। पूरा और अच्छा आहार मनुष्यकी पहली जरूरत है; और अगर हम जिन्दा रहना चाहते हैं, तो प्रान्तोंकी सरकारोंको अिस जरूरतको पूरा करनेमें अपनी सारी ताकत लगा देनी चाहिये।

पूना, १–८–'४६ **अमृतकुंवर**

हरिजनसेवक, २५–८–१९४६

## ब – खेती

### ७७

# ज्यादा आबादी या कम पैदावार ?

आजकल यह रिवाज-सा पड़ गया है कि अगर लोग भूखों मरते हैं या बार-बार अकाल पड़ता है, तो कहा जाता है कि आबादीका बढ़ना ही अिस भुखमरीका कारण है। अिस सिद्धान्तका कअी बार विरोध किया गया है। निश्चित प्रमाणके साथ यह कहा जा सकता है कि भारतमें अितने ज्यादा खाद्य अुत्पादनकी संभावना है, जो आनेवाले काफी समयके लिअे अुसकी बढ़ती हुअी आबादीको खिलानेके लिअे काफीसे भी ज्यादा होगा। अेक पत्रलेखक खेतीके बारेमें नीचेकी बातोंकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं :

"१. सरकारी खेतोंमें प्रयोग करके यह साबित किया जा चुका है कि अगर अच्छे बीज बोये जायं, तो २९ फी सदी ज्यादा अनाज पैदा होगा।

"२. तिलहन, खली, हड्डी वगैरा जो चीजें परदेश भेजी जाती हैं, अुनकी निकासी बन्द की जाय। जो सूखा गोबर जलानेके काम आता है, अुसकी जगह अींधनका अिन्तजाम किया जाय और गोबरका खाद बनाया जाय। अगर यह सब किया जाय, तो आज जितना अनाज पैदा होता है अुससे दुगुना पैदा हो सकता है।

"३. नहरके पानीका अितजाम करनेसे या नये कुअें और तालाब बनानेसे जहां पहले सालमें अेक ही फसल ली जाती थी, वहां दो फसलें ली जा सकेंगी। आज कुल २४५ करोड़ अेकड़ जमीनमें से सिर्फ ३२ करोड़ अेकड़ जमीनमें दो फसलें पकती हैं।

"४. भारत और दूसरे देशोंमें हर अेकड़ पीछे होनेवाली अुपजका मुकाबला करनेसे यही प्रगट होता है।

चावलकी अुपजके आंकड़े प्रति अेकड़ नीचे लिखे मुताबिक हैं :

| | | |
|---|---|---|
| मिस्र | ३४४७ | रतल |
| जापान | ३९०९ | ,, |

| | | |
|---|---|---|
| अिटली | ४८१० | ,, |
| फारमूसा | २४०७ | ,, |
| भारत | ९३९ | ,, |

गेहूंकी प्रति अेकड़ अुपजके आंकड़े अिस प्रकार हैं:

| | | |
|---|---|---|
| जापान | २०१० | रतल |
| अिटली | १३७४ | ,, |
| केनाडा | ११९७ | ,, |
| अिंग्लैण्ड | २०८५ | ,, |
| भारत | ७७४ | ,, |

"५. सरकारी बयान यह भी बतलाते हैं कि अनाजके गोदामोंका ठीक बन्दोबस्त न होनेके कारण हर साल १० लाख टन अनाज चूहे वगैरा खा जाते हैं।

"६. हिन्दुस्तानमें काश्तके काबिल ९ करोड़ अेकड़ जमीन यों ही पड़ी रहती है और अुसमें कोअी भी फसल पैदा नहीं की जाती।

"७. आखिरमें, 'तिजारती फसलों' का आक्रमण आता है। सन् १९०० में तिजारती फसलकी काश्त १६५ लाख अेकड़ जमीनमें होती थी; सन् १९३० में वही २४० लाख अेकड़ तक पहुंच गअी। अिस बीच तिलहनकी खेतीकी जमीन १३० लाख अेकड़से १६० लाख अेकड़ हो गअी। १९४२ में तिलहन और सनकी कुल अुपजका ३२ प्रतिशत, अलसीका ७१ प्रतिशत और मूंगफलीका १५ प्रतिशत भाग निकासीके लिअे था। दूसरे शब्दोंमें, जमीनका अितना अुपजाअूपन केवल व्यापारी लाभके लिअे दूसरे देशोंको विनिमयमें भेज दिया गया। अिसमें जमीनसे जो कुछ ले लिया गया था, अुसके बदले किसी भी रूपमें जमीनको कुछ भी वापस देनेकी संभावना न थी। अर्थात् हमेशाके लिअे अुपजाअूपनका अितना नुकसान कर दिया गया। यह खेती नहीं है, बल्कि आनेवाली पीढ़ियोंको नुकसान पहुंचाकर की गअी जमीनकी सरासर लूट है। अगर हम अपनी खेतीको तिजारती फसलोंके आक्रमणसे छुड़ा सकें, तो हमेशा होनेवाली अनाजकी कमीको मिटानेमें यह बहुत मदद देगा।"

अगर अिन सब खामियोंको दुरुस्त कर लिया जाय, तो जाहिर है कि बढ़ती हुअी आबादीके बावजूद किसीको भूखों मरनेकी जरूरत नहीं रहेगी। यही

नहीं, बल्कि मुल्कसे भुखमरी जाती रहेगी, लोगोंका ज्ञान बढ़ेगा और हमारा अर्थशास्त्र भी दुरुस्त रहेगा।

नअी दिल्ली, ७–९–'४६ प्यारेलाल

हरिजन, २२–९–१९४६

## ७८

## अनाज, अींधन और तेल

अनाज, अींधन और घी-तेल — ये तीन चीजें गांवोंकी जिन्दगीके लिअे आधाररूप हैं। आज तो वहां तीनों चीजोंकी कमी है। अेक दोस्तने अिस तिहरी कमीको दूर करनेके नीचे लिखे सुझाव भेजे हैं। ये सुझाव पंजाब जैसी हालतवाले हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंको भी समान रूपसे लागू होते हैं, हालांकि वे खासकर पंजाबके लिअे ही सुझाये गये हैं:

(१) नदियों और नालोंके दोनों किनारोंकी बहुतसी जमीन सेवार और सरकटकी जंगली घाससे ही ढंकी रहती है। अगर अुसे फौजियोंकी मददसे साफ करवाया जा सके, तो अुसमें गेहूं, बाजरा, चना और मसूर पैदा की जा सकती है। वह जमीन बड़ी अुपजाअू होती है। अुसमें बड़ी मात्रामें अनाज पैदा हो सकता है, और मवेशियोंके लिअे चारा भी खूब मिल सकता है।

(२) अिसी तरह रेलवे लाअिनों और सड़कोंके दोनों तरफ बहुतसी बिना जोती जमीन पड़ी रहती है। अगर फौजी विभाग अिस जमीनको साफ करके अुसे पानी देनेका काम खुद हाथमें ले, या पम्प और तेलसे चलनेवाली भारी मशीनें, जिनका अिस तरहका अुपयोग किया जा सकता है, सिंचाअीके लिअे लोगोंको दे दे, तो वे अिस अूसर धरतीको सुधार कर अुसमें खेती करने लगें।

(३) पंजाबमें जमीनके अैसे कअी सूखे हिस्से हैं, जहां आज सिर्फ कंटीले झाड़-झंखाड़ खड़े हैं। थोड़ी मेहनतसे अुन्हें साफ किया जा सकता है और वहां रेंडीके पेड़ लगाये जा सकते हैं। यह बड़ा दमदार पौधा होता है और ज्यादातर हवासे ही नमी लेकर टिका रह सकता है। रेंडीका तेल साबुन बनानेका सबसे अच्छा साधन

है। अिससे आज साबुन बनानेमें सरसों, मूंगफली, जिंजेली और दूसरे खाने लायक तेलोंकी जो खपत होती है, वह भी बन्द हो सकती है।

(४) जलाअू लकड़ीकी कमीकी वजहसे, गांवोंमें गोबर और खलिहानोंका दूसरा खाद जलानेके काममें लिया जाता है। अिस तरह खाद न मिलनेसे जमीनका अुपजाअूपन दिन-दिन घटता जाता है। अिसलिअे सड़कोंके दोनों तरफ और नहरके किनारों पर अैसे पेड़ लगानेकी बाकायदा कोशिश की जानी चाहिये, जो लोगोंको जलाअू और अिमारती लकड़ी मुहैया करनेके काम आ सकें।

अुनके दूसरे सुझावोंमें नहरोंके दोनों तरफ अींट और सीमेन्टकी क्यारियां बना देनेका भी सुझाव है, जिससे अुस हजारों अेकड़ जमीनको फिरसे काममें लिया जा सके, जो लगातार पानीके भरे रहनेसे और सीलसे पैदा होनेवाले जरूरतसे ज्यादा खारेपनसे अपना अुपजाअूपन खो बैठी है। अुन्होंने यह भी सुझाया है कि जमीनके छोटे-छोटे टुकड़े करनेकी बुराअी रोकी जाय। अिससे अनाजकी पैदावार घटती है। अुनका यह भी कहना है कि जमीनके जिन टुकड़ोंमें खेती करनेसे कोअी आर्थिक लाभ न हो, अुन्हें मिलाकर अेक कर देना चाहिये। अखीरमें अुन्होंने बताया है कि खेतोंमें पानी देनेके लिअे मशीनोंका अुपयोग किया जाना चाहिये।

सोदपुर, ३०–१०–'४६ प्यारेलाल

हरिजनसेवक, १७–११–१९४६

## ७९

## पैसा नहीं, पैदावार

कहा जाता है कि हिन्दुस्तान खेती-प्रधान देश है। अिसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुस्तानके पास बहुत ज्यादा खेती है। अिसका अेक मतलब यह हो सकता है कि हिन्दुस्तानके गांवों और लोगोंके दिलोंकी बनावट खेतीके अनुकूल है। अिसके अलावा, दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि हिन्दुस्तानके पास खेतीके सिवा और कोअी खास रोजगार-धंधा बच नहीं गया है। वैसे अिस खेती-प्रधान देशमें फी आदमी पौन अेकड़की ही खेती होती है।

जिस देशके पास खेती बहुत कम है, अुसे अेक दूसरे अर्थमें भी खेती-प्रधान कहा जा सकता है। अुसे अपनी खेतीको सुधारनेकी तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिये, खेती बराबर शास्त्रीय ढंगसे करनी चाहिये और अुसमें अपनी सारी अकल लड़ा देनी चाहिये। नहीं तो जीना मुश्किल हो जायगा। अिन मानोंमें भी आज हिन्दुस्तान खेती-प्रधान बन गया है।

वैसे देखा जाय तो हरअेक देशको हमेशा खेती-प्रधान होना चाहिये। यानी आदमीको दूसरे धंधोंके मुकाबले खेती पर ही ज्यादा ध्यान देना चाहिये। क्योंकि खेतीसे मनुष्यको अन्न मिलता है और अन्न ही अुसकी खास जरूरत है।

अुपनिषदोंके बारेमें यह मशहूर ही है कि अुनमें जीवनकी बहुत गहरी चर्चा की गअी है। अुन्होंने तो यह हुक्म ही दिया है कि भरपूर अनाज पैदा किया जाय। लोग अिसे अपना व्रत समझें — "अन्नं बहु कुर्वीत तद् व्रतम्।" लड़ाअीके दिनोंमें हमारी सरकार अिस भाषामें बोलने लगी थी। लेकिन वह ज्यादा अनाज पैदा नहीं कर सकी। अुलटे अुसने अनाजके बदले पैसा ही ज्यादा पैदा किया। नतीजा यह हुआ कि तीस लाख आदमी भूखों मर गये।

आखिर अपनी अिस टूटती दुकानको अंग्रेज सरकारने हम लोगोंके हवाले किया। आज सभी प्रान्तोंमें लोगोंकी अपनी सरकारें काम कर रही हैं। टूटती दुकानकी बिगड़ी हुअी साखका खयाल न करके हमने अुसे अपने हाथमें लिया। अिसलिअे और कुछ करनेसे पहले लोगोंको जिलानेका सवाल हल करनेका काम जरूरी बन गया है।

हिसाबी लोग कहते हैं कि आज हिन्दुस्तानको खेती पुसाती ही नहीं। अिसका यही मतलब होता है कि जहां खेती नहीं पुसाती, वहां जीना भी नहीं पुसाता। अिसके लिअे कुदरत जिम्मेदार नहीं, नकली जिन्दगी जिम्मेदार है। पैसा अिस नकली या बनावटी जिन्दगीकी निशानी है। पैसेकी अिज्जत जीवनके लिअे घातक बन गअी है।

हिन्दुस्तानके लोग देहातमें रहते हैं। अगर देहातमें पैसेकी अिज्जत घटा दी जा सके, तो हिन्दुस्तानकी खेतीमें सुधार हुअे बिना न रहे। आखिर पैसेकी अितनी जरूरत क्यों है कि अुसके लिअे तमाखू बोअी जाय और अुसीके लिअे जरूरतसे ज्यादा कपास बोअी जाय? अिसलिअे कि दूसरी सब जरूरी चीजें पैसा देकर खरीदनी पड़ती हैं। कपड़ा खरीदना पड़ता है। खली खरीदनी पड़ती है। अिनके लिअे पैसेकी जरूरत है। और पैसेके लिअे

गैर-जरूरी चीजोंकी खेती करनी पड़ती है। अिसी कारणसे अनाज कम पैदा होता है — अुसकी तंगी रहती है। अिसका मतलब यह हुआ कि गांवोंमें अुद्योग-धंधे नहीं रहे, और अुनके न रहनेसे अनाजकी खेती कम हो गअी।

अिसमें शक नहीं कि खेतीमें सुधार करनेकी बहुत गुंजाअिश है। और यह जाहिर है कि सुधरी हुअी खेतीकी पैदावार बढ़ जायगी। लेकिन यह बहुत मेहनतका काम है। अिसे हाथमें लेनेकी जरूरत है, पर अिसमें कअी बरस लग जायंगे। और फिर भी काम तो होगा नहीं; क्योंकि आबादी बढ़ती जा रही है। अिसलिअे अब हमें अपने किसानकी व्याख्या ही बदल देनी होगी—किसान यानी सिर्फ काश्तकार या खेती करनेवाला आदमी नहीं, बल्कि वह आदमी जो खेती तो करे ही, पर साथ ही खेतीसे पैदा होनेवाले कच्चे मालसे अपनी जरूरतका पक्का माल भी बना ले। खादी और ग्रामोद्योगके आन्दोलनकी यही मन्शा है। गरीबोंकी मुसीबतें मिटानेके लिअे आज खादी और देहाती दस्तकारीको छोड़कर दूसरा कोअी जरिया नहीं।

आज सरकार अिस अुधेड़-बुनमें पड़ी है कि आजकल हिन्दुस्तानको हर साल जितने अनाजकी तंगी रहती है, अुतना अनाज किस तरह पैदा किया जाय। हकीकत यह है कि अनाज अिस तरह हिसाब लगाते बैठनेसे पैदा नहीं हो सकता। अनाज तो बेहिसाब पैदा करना होगा। अुसके बारेमें अितनी बेफिकरी पैदा करनी होगी कि वह सारे साल चलकर अगले साल भी चले। जिस तरह हवाकी कमी नहीं है, पानीकी कमी नहीं है, अुसी तरह अनाजकी भी कमी न रहनी चाहिये। लेकिन यह तभी हो सकता है जब खेती सुधरे। अनाजके अलावा भी खानेकी दूसरी चीजें खूब अुगानी चाहिये। अिसके लिअे जमीनकी अुतनी कमी नहीं है जितनी पानीकी। जमीनके पेटमें भरपूर पानी पड़ा है। अुसे बाहर निकालना होगा। अुसकी मददसे साग-सब्जी, कन्द-मूल और फल-फूल पैदा करने होंगे। लेकिन यहां भी पैसेकी अिज्जत न बढ़नी चाहिये। वरना अिनके लिअे बाजार तलाश करनेकी फिकर सवार हो जायगी। ये सब चीजें किसानोंको खुद खानी चाहिये। बची-खुची भले बेच डाली जायं। अिनके खास खरीदार किसान खुद बनें। यही स्वराज्यकी दृष्टि है। "आपुले केले आपण खाय, तुका वंदी त्याचे पाय" (जो अपना पकाया खुद खाता है, तुकाराम अुसके पैर छूता है)। अगर हम अपने बेटेको बाजारमें बेचें, तो अुसकी क्या कीमत आयेगी? और क्या वह हमें पुसायेगी? गांवोंमें दूध-घी होता

है, लेकिन गांववालोंको अुसका खाना पुसाता नहीं। ढेरों साग-तरकारी और फल-फूल अुगाने पर भी वे देहातवालोंको पुसायेंगे नहीं। क्यों? अिसलिअे कि देहातमें कोअी रोजगार-धंधा नहीं, कोअी दस्तकारी नहीं। चूंकि मेरी अकल अेक तरफ ही काम करती रहती है — अेक ही विचारसे घिरी रहती है — संभव है कि अिसलिअे मुझे अैसा मालूम होता हो। लेकिन जब तक दूसरा कोअी जवाब नहीं मिलता, तब तक अपने अिसी जवाब पर डटे रहना लाजिमी है।

पवनार, १३–१–'४७ **विनोबा**

हरिजनसेवक, २६–१–१९४७

## ८०

## अनाजकी तंगी

दिल्लीमें खुराकसे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकारियोंकी जो कान्फरेन्स हुअी, अुसमें यह कहा गया था कि चावलकी अगली फसल सिर्फ ८३ फी सदीके करीब होगी। यह कमी बहुत ज्यादा है, हालांकि देशके जिन हिस्सोंमें अच्छी बरसात हुअी है, वहांकी हालतमें सुधार हो सकता है। हर हालतमें देशमें आज अनाजकी जो कमी है, अुस पर काफी ध्यान देनेकी जरूरत है। हिन्दुस्तान हजारों टन अनाज विदेशोंसे मंगाता है। यह अेक खेती-प्रधान देशके लिअे बदनामीकी बात है। अब हिन्दुस्तान ब्रिटिश हुकूमतसे आजाद हो गया है और अुसे जल्दी ही स्वराज्य पानेकी आशा है, जब केन्द्रकी सरकार आम लोगोंकी अिच्छाके मुताबिक काम करेगी। आजाद रहनेका ध्येय रखनेवाला कोअी भी देश तब तक आजाद नहीं रह सकता, जब तक वह अपनी बुनियादी जरूरतोंके लिअे दूसरे देशोंका मुहताज रहता है। अिसीलिअे खुराकके मामलेमें हिन्दुस्तानको स्वावलम्बी बनानेके वास्ते हमें अच्छीसे अच्छी कोशिश करनी चाहिये।

अितनी बड़ी बेचैनी और दुःख-दर्दके बाद यूरोपके राष्ट्र यह समझने लगे हैं कि अनाज और दूसरी खुराकके लिअे दूरके देशों पर निर्भर करना खतरनाक बात है। आज अिंग्लैण्ड भी, जो अपनी खुराककी जरूरत पूरी करनेके लिअे अभी तक बाहरी मदद पर निर्भर करता रहा है, यह महसूस करता है कि अगर हमें आजाद बने रहना है, तो खुराकके लिअे विदेशों पर

निर्भर करना बेकार है। अिससे देशकी आजादी खतरेमें पड़ जायगी। अिस मकसदको ध्यानमें रखकर अिंग्लैण्डके लोग अपनी खेतीकी पैदावार बढ़ानेके लिअे नअी जमीनमें खेती करनेका प्रोग्राम शुरू कर रहे हैं।

अिंग्लैण्ड जैसा बढ़े-चढ़े अुद्योग-धंधोंवाला देश अगर बाहरसे अनाज मंगानेके लिअे अपने मालकी जावक पर निर्भर करता है, तो अिसे हम समझ सकते हैं। अिस मामलेमें भी ग्रेट-ब्रिटेन रोजाना काममें आनेवाली अैसी चीजोंकी आवकमें काट-छांट कर रहा है, जिनके बिना काम चल सकता है—यह काट-छांट प्रजाके भलेके लिअे ही की जाती है। साथ ही, अिंग्लैण्ड घरमें तंगी रहने पर भी अपने यहां बना सूती, अूनी और दूसरी तरहका माल बाहर भेजना चाहता है। अैसा वह अिसलिअे करता है कि अुसकी अनाजकी आवक बराबर बनी रहे। अिस दिशामें ब्रिटेनके मंत्री जो ठोस काम कर रहे हैं, अुसमें और हमारी हिन्दुस्तानी सरकारके 'ज्यादा अनाज पैदा करो' के प्रचारमें कितना बड़ा फर्क है? अुद्योग-धंधोंकी दृष्टिसे हिन्दुस्तान और ग्रेट-ब्रिटेनमें कोअी बराबरी नहीं हो सकती। अितने कम अुद्योग-धंधोंके होते हुअे भी हमें विदेशोंसे मंगाये जानेवाले अनाज पर निर्भर करना पड़ रहा है। अगर अूंची जगहोंमें काम करनेवाले कुछ दोस्तोंकी सुझाअी नीतिके मुताबिक हम अपने अुद्योग-धंधे बढ़ायें, तो अुनका हमारी अनाजकी पैदावार पर कितना भयानक असर पड़ेगा यह हम भलीभांति सोच सकते हैं।

आज ब्रिटेनके शहरों और गांवोंमें जहां कहीं भी शाक-भाजी पैदा करने लायक जमीन होती है, वहां शाक-भाजीके पौधे लहलहाते दिखाअी पड़ते हैं। यह चीज आज ब्रिटेनकी अेक विशेषता बन गअी है। साथ ही वहांके लोग हजारों अेकड़ नअी जमीनमें खेती करनेकी आशा रखते हैं। क्या हमारे देशमें खुराक-महकमेके मंत्री अिस अच्छी मिसाल पर चलकर अुद्योग-धंधोंके लिअे पैदा की जानेवाली कपास, गन्ना वगैरा जैसी तिजारती फसलों पर रोक नहीं लगा सकते? आज जिन जमीनोंका अुद्योग-धंधोंके लिअे शोषण किया जाता है, अुन जमीनोंमें क्या वे सबसे पहले खुराककी फसलें नहीं पैदा करा सकते? यह तभी हो सकता है जब देशकी प्रजाको अुसीकी कोशिशोंसे भरपेट अन्न देनेकी मंत्रियोंकी अिच्छा हो। अिसके लिअे जमीनके अुपयोग पर पाबन्दी लगानेकी और अुसमें खास खास फसलें पैदा करनेके लाअिसेन्स देनेकी भी जरूरत हो सकती है। जो किसान अुद्योग-धंधोंके काममें आनेवाली फसलें

पैदा करना चाहें, अुनके लिअे काफी फीस देकर लाअिसेन्स निकालना जरूरी कर दिया जाय। अिस तरह आज जिस जमीनका अुपयोग थोड़ेसे लोगोंकी बैंकमें रखी हुअी रकमोंको बढ़ानेके लिअे किया जाता है, अुसका अुपयोग राष्ट्रकी प्रजाके भलेके लिअे किया जा सकता है। अिसके लिअे खुराक-महकमे और अुद्योग-महकमेके मंत्रियोंको पूरे सहयोगसे काम करना होगा। हमें विश्वास है कि राष्ट्रकी तन्दुरुस्तीको बनाये रखनेके लिअे अैसा सहयोग जरूर किया जायगा।

हरिजनसेवक, २८–९–१९४७ **जे० सी० कुमारप्पा**

## ८१

## आखिर सही कदम अुठाया गया

कम-से-कम अेक प्रान्तकी सरकारने तो देशमें फैली हुअी अनाजकी तंगीको दूर करनेके अमली कदमके रूपमें खुराककी फसलोंको बढ़ावा देने और अुनकी खेतीकी जमीनको बढ़ानेके महत्त्वको आखिर समझा! यह अकल सूझी है मद्रास सरकारको। अिसलिअे सरकारने खुराकी फसलकी खेती करनेवाले लोगोंको बीज और खादकी मददके रूपमें सुभीते देनेका वचन दिया है।

व्यापारी मालकी खेतीकी जमीनमें होनेवाली बढ़तीको रोकनेके लिअे सरकार अबसे अैसी फसलोंके लिअे रासायनिक और दूसरी तरहका खाद नहीं देगी।

अिसके अलावा, अगर कोअी किसान अपनी धानकी जमीनमें तमाखू, कपास, मूंगफली, गन्ना वगैरा व्यापारी फसल पैदा करेंगे, तो अुन्हें सरकारकी तरफसे किसी तरहकी मदद या सुभीते नहीं दिये जायंगे।

हालांकि मद्रास सरकारके ये कदम रुकते-रुकते अुठाये गये मालूम होते हैं और अधूरे हैं, फिर भी वे सही दिशामें अुठाये गये हैं। अिसलिअे हम अुनका स्वागत करते हैं। क्या हम आशा करें कि स्वावलम्बनके ध्येय पर रची हुअी आर्थिक व्यवस्थावाले खेती-प्रधान देशके लिअे यह आशाके प्रभातकी झांकी है?

हरिजनसेवक, २१–१२–१९४७ **जे० सी० कुमारप्पा**

## ८२

# सरकार ध्यान दे

चित्तूरसे अेक भाअी अपने पत्रमें गांधीजीको लिखते हैं:

"'लेण्ड अिम्प्रुवमेन्ट लोन्स अेक्ट' (जमीन सुधारनेके लिअे कर्जका कायदा) तथा 'अेग्रिकल्चरल अिम्प्रुवमेन्ट लोन्स अेक्ट' (खेती-सुधारके लिअे कर्जका कायदा) के मुताबिक किसानोंको दिये जानेवाले कर्ज पर सरकार फिलहाल साढ़े पांच प्रतिशत ब्याज लेती है, जब कि सरकारको प्रजासे खुले बाजारमें दो से पौने तीन प्रतिशत तक ब्याजकी दरसे कर्ज मिल जाता है। यह विषय केन्द्रीय सरकारके हाथमें है। भारत सरकार किसानोंको बगैर ब्याजके या अधिक-से-अधिक ढाअी प्रतिशत ब्याजकी दरसे आवश्यक कर्ज दे सकती है।"

मसूरी, ७–६–'४६

### बंजर और खेतीके लायक जमीन

बम्बअीसे श्री वी० अेन० खानोलकर लिखते हैं:

"भारत सरकारकी ओरसे सन् १९४५ में प्रकाशित सन् १९४१–४२ के सालके खेती-सम्बन्धी आंकड़े हमारे मंत्रियोंको विचारने लायक काफी मसाला देते हैं, जो कि आज अन्नकी भीषण समस्याको हल करनेमें जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं।

"'ज्यादा अनाज पैदा करो' आन्दोलनके कारण आज जो परिस्थिति है, अुसमें बहुत फेरफार होनेकी संभावना नहीं है और यह मान लिया जा सकता है कि नीचे दिये गये आंकड़े आज देशकी परिस्थितिको ठीक रूपमें प्रकट कर रहे हैं।

"अिस वर्ष कुल ४,७१,५०,००० अेकड़ जमीन बिना जोती रही, जब कि कुल २१,३२,९०,००० अेकड़ जमीन जोती गअी। ब्रिटिश भारतमें बिना जोती जमीन, जोती गअी कुल जमीनकी २२ प्रतिशत है। भिन्न-भिन्न प्रान्तोंका यह प्रतिशत अिस प्रकार है:

| | | | |
|---|---|---|---|
| अजमेर-मेरवाड़ा | ६५% | दिल्ली | ९% |
| आसाम | ३०% | मद्रास | ३१% |
| बंगाल | १८% | सीमाप्रान्त | १९% |

| | | | |
|---|---|---|---|
| बिहार | ३८% | अुड़ीसा | ३०% |
| बम्बअी | १७% | पंजाब | ११% |
| मध्यप्रान्त और बरार | १४% | सिन्ध | १११% |
| कुर्ग | १००% | युक्तप्रान्त | ८% |

"निष्णातोंका यह मत है कि काफी प्रमाणमें खाद और पानीका प्रबन्ध किया जाय, तो जमीन पड़ती रखना जरूरी नहीं है। युक्तप्रान्तके आंकड़े अिसका सबूत देते हैं।

"'खेतीके लायक जमीन' शीर्षकमें नीचेके दिलचस्प आंकड़े दिये गये हैं:

| | | |
|---|---|---|
| बंगाल | ८,६२,७८८ | अेकड़ |
| बम्बअी | २,०७,३०१ | ,, |
| मध्यप्रान्त और बरार | ५१,९४,७२८ | ,, |
| पंजाब | ४२,३२,२८६ | ,, |
| कुल | १,०४,९७,१०३ | अेकड़ |

"'लॉ अेण्ड अिट्स प्रोब्लेम्स' नामकी पुस्तकमें (पृष्ठ ४ पर) सर विजयराघवाचार्य कहते हैं:

'सरकारी आंकड़ोंमें बाकीकी ९ करोड़ ७० लाख अेकड़ जमीनका वर्गीकरण 'बिना जोती जमीन' के तौर पर किया गया है। अन्न-अुत्पादन और खेती करनेवाले लोगोंको कॉलोनीके रूपमें बसानेके सम्बन्धकी चर्चामें अिस जमीनका सामान्य तौर पर खेतीको बढ़ानेके काममें आनेवाली जमीनके रूपमें अुल्लेख किया गया है। अुचित खर्च करने पर अिसमें से कितनी जमीन खेतीके काममें ली जा सकती है, अिस दृष्टिसे अिस जमीनकी कोअी व्यवस्थित रूपसे जांच नहीं हुअी है। प्रांतीय सरकारोंकी ओरसे की गअी जांच परसे यह मालूम हुआ है कि अिसमें से अेक करोड़ अेकड़ जमीन अैसी है, जो निश्चित रूपसे खेतीके काममें आ सकती है।'

"अिसके बाद रिपोर्टके नीचे लिखे विषय दिलचस्प मालूम होंगे। नीचे बताअी गअी चीजोंके अुत्पादनमें कितनी जमीनें रुकती हैं, यह बात अिन आंकड़ोंसे स्पष्ट हो जायगी:

| | | |
|---|---|---|
| १. सन तथा रेशेवाले अन्य वनस्पति | २९,५२,००० | अेकड़ |
| २. चाय और कॉफी | ८,४१,००० | ,, |
| ३. तमाखू | ११,९६,००० | ,, |
| ४. अफीम | १८,००० | ,, |
| ५. दूसरी नशीली चीजें | १,९४,००० | ,, |

कुल ५२,०१,००० अेकड़

"सन बहुत बड़ी मात्रामें विदेशोंको भेजा जाता है। चायके बगीचोंके मालिकोंने हजारों अेकड़ अच्छी जमीन भविष्यमें चायकी खेती बढ़ानेके लिअे अलग रख छोड़ी है।

"खुराककी बहुत बड़ी कमीकी दृष्टिसे नं० ३, ४ और ५ में बताअी गअी जमीन अन्न पैदा करनेकी जमीनके रूपमें बदल दी जानी चाहिये।"

यह बात लोकप्रिय मंत्रि-मंडलोंके लिअे तुरन्त ही हाथमें लेने जैसी है। अिसके लिअे अुन्हें केन्द्रमें राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाकी राह देखनेकी जरूरत नहीं।

नअी दिल्ली, १५–६–'४६ **प्यारेलाल**

हरिजन, २३–६–१९४६

## ८३

## रैयत या किसान

कअी प्रान्तोंमें लोकप्रिय सरकारें जमींदार और किसानके बीचके सम्बन्धको कानूनके जरिये व्यवस्थित करनेकी कोशिश कर रही हैं। आज देखा जाय तो जमींदार जमीनके अैसे मालिक हैं, जिन्हें सिर्फ किसानोंसे लगान वसूल करनेसे मतलब है। जमीनसे अुनका कोअी सीधा सम्बन्ध नहीं होता, और न अुन्हें अिस बातकी परवाह ही होती है कि अुन जमीनोंमें क्या बोया जाता है। खेती करनेवाले किसानको जमीनका मालिक बना देनेके लिअे जो तरीके काममें लाये जाते हैं, अुनके मुताबिक या तो सरकार जमींदारको हरजाना देकर वह जमीन खरीद लेती है और अुसे खेती करनेवाले किसानको दे देती

है, या फिर बड़ी रियासतोंको जब्त करके सरकार अुनके कअी छोटे-छोटे टुकड़े कर देती है और अुन्हें किसानोंकी मालिकीमें छोड़ देती है।

हमें लगता है कि पहले तो जमीनको जब्त करनेकी कोअी जरूरत ही नहीं है, न यही जरूरी है कि जमींदारको हरजाना दिया जाय। अिस मामलेमें अपनाने जैसा तरीका यह है कि गांवकी सारी खेती करने लायक जमीनमें, फिर वह चाहे जिसकी हो, 'समतोल खेती' के तरीके पर खेती की जाय, जिससे गांववालोंके युक्ताहारकी जरूरतका अनाज और दूसरी बुनियादी चीजें जरूरी मात्रामें पैदा की जा सकें। अिस स्कीमके मुताबिक अुस जमीनमें अितनी और अैसी चीजें बोनेका लाअिसेन्स दिया जाय, जिनसे ५० हजारकी आबादीवाले गांवोंके अेक समूहकी जरूरतें पूरी हो सकें। लाअिसेन्स देनेके बाद अैसी जमीनोंमें अुनके मालिकोंसे ही खेती कराअी जाय। अगर अैसी कोअी लाअिसेन्सवाली जमीन बिना किसी अुचित कारणके दो या तीन बरस तक बिना जोती पड़ी रहे, तो अुस जमीन पर सरकार अधिकार कर ले और गांवके जो लोग 'समतोल खेती' की योजनाके मुताबिक अुस जमीनको जोतनेके लिअे तैयार हों अुनमें अुसे बांट दे।

अिस तरीकेसे काम करने पर कोअी जमीनें बिना जोती नहीं रह सकेंगी और साथ ही अुनसे सीधा सम्बन्ध न रखनेवाले जमींदारोंके हाथसे निकलकर वे किसानोंके हाथमें आ जायेंगी। नतीजा यह होगा कि गांववालोंको जरूरतकी चीजें पानेके बारेमें बेफिकरी हो जायगी और जमीन सिर्फ अिसलिअे बिना जोती नहीं पड़ी रहेगी कि जमींदार साहब खुद अुसको नहीं जोतते।

मेरा खयाल है कि जमींदारोंकी जमीनें जब्त करनेमें जितना विरोध खड़ा होगा, अुतना अिस तरहका कानून बनानेमें नहीं होगा। पहले तरीकेमें हिंसाकी बू है, जब कि दूसरा तरीका अहिंसक है। जो प्रान्त पैदावार बढ़ाकर जरूरी चीजोंकी कमी पूरी करनेके लिअे अुत्सुक हैं, अुनसे हम अिस सुझाव पर अमल करनेकी सिफारिश करते हैं।

हरिजनसेवक, ११–५–१९४७ **जे० सी० कुमारप्पा**

## ८४

# ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय ?

१

कभी-कभी काम सिर्फ अिसलिअे हाथमें नहीं लिये जाते कि वे बहुत मामूली जान पड़ते हैं। 'ज्यादा अनाज पैदा करो' अेक अैसा ही काम है। अिसमें बहुत बड़ी मुश्किल ज्यादा अनाज पैदा करनेकी नहीं है, बल्कि लोगोंके दिल और दिमाग अुसकी तरफ खींचनेकी है।

क्या गांधीजीने बार-बार हमसे यह नहीं कहा है कि अपने देशमें अपनी ही कोशिशोंसे हिन्दुस्तानकी अनाजकी कमीको पूरा करना हमारे लिअे संभव है और अिस मामलेमें मददके लिअे दूसरे देशोंकी तरफ ताकना गलत है? हमें अिस तरह बिना कुछ किये गाफिल बने बैठे रहनेमें और परदेशोंसे हिन्दुस्तान आनेवाले अनाजके जहाजोंकी खबरें अखबारोंमें पढ़कर सन्तोष कर लेनेमें शर्म मालूम होनी चाहिये। ये परदेशी अनाजके जहाज मुफ्तमें यहां आकर अनाज जमा नहीं कर जाते! अिसके लिअे पहलेसे ही खर्चके बोझसे लदे हुअे हिन्दुस्तानके सरकारी बजटमें सब तरफसे काट-कसर करके देशको करोड़ों रुपये बाहर भेजने पड़ते हैं। और हम चुपचाप बैठे देखते रहते हैं! हमारी हाल ही में प्राप्त की हुअी आजादीको मजबूत करनेका क्या यही तरीका है?

हम सबको अिस पतनसे बचनेकी हिम्मतके साथ कोशिश करनी चाहिये। अिस काममें अेक मामूली आदमीसे लगाकर बड़े भारी सरकारी तंत्र तक सभी मदद कर सकते हैं:

१. जिन लोगोंके पास अेक अिंच जमीन भी नहीं है, वे पुराने टूटे हुअे बर्तन, तसले और पेटियां अिकट्ठी करके अुनमें थोड़ी मिट्टी रखकर साग-भाजी पैदा कर सकते हैं।

२. जिन लोगोंके पास बंगले और मकान हैं, वे हिन्दुस्तान-भरमें शहरों और कस्बोंके बाजारोंको अुचित कीमत पर हरी भाजियां, कंद, प्याज, आलू, लौकी, कद्दू और अैसी ही दूसरी चीजें मुहैया कर सकते हैं।

३. म्युनिसिपैलिटियां सार्वजनिक बगीचोंमें ये चीजें बोकर देशमें साग-भाजीका स्टॉक बढ़ा सकती हैं। जहां काफी जमीन हो, वहां वे अनाज भी पैदा कर सकती हैं।

४. जिस जमीनमें पहलेसे ही खेती हो रही है, अुसको ज्यादा अुपजाअू बनानेमें सरकार गांववालोंको आजकी अपेक्षा बहुत ज्यादा मदद दे सकती है।

ये कोअी नये सुझाव नहीं हैं। मगर कुछ अिने-गिने लोगोंको छोड़कर सभी अिनकी तरफसे आंख-कान बन्द करके बैठे हैं, जब कि देशमें अनाजकी तंगीकी हालत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है।

हम लोगोंमें अेक बुरी आदत यह है कि हम बड़ी-बड़ी योजनायें बनाते हैं, मगर अुन्हें अमलमें नहीं लाते। बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, मगर काम नहीं करते। जो कुछ मैंने अूपर सुझाया है, अुसके लिअे बड़े भारी मूलधन या साज-सामानकी जरूरत नहीं है। अुसके लिअे मनुष्यका रुचिके साथ काम करना जरूरी है। कोअी भी योजना तब तक पूरी तरह कामयाब नहीं होगी, जब तक कि अुसके पीछे यह जरूरी शक्ति न हो, फिर अुसमें कितना ही ज्यादा रुपया क्यों न लगाया गया हो। और अिस शक्तिके रहने पर अगर आर्थिक मदद न भी मिले, तो भी अुस योजनामें बहुत बड़ी सफलता मिलेगी।

जरा देखिये कि अगर मनुष्यकी क्रियात्मक रुचिको जगाया जाय, तो यह काम कितना आसान हो जाता है:

१. अिन सुझावों पर अमल करनेसे वे लोग, जिनके पास नामको भी जमीन नहीं है, थोड़े ही दिनोंमें हरी साग-भाजी अुगा सकेंगे और खा सकेंगे और कुछ ही हफ्तोंमें अुनके बरामदे और मकानकी छतें झालरकी तरह लटकती हुअी व आंखोंको भली लगनेवाली साग-भाजीसे लदी बेलों और पौधोंसे भर जायंगी।

२. बंगलोंके मालिक अिस मामलेमें अपने मालियों और मुकामी खेती-विभागके अफसरोंसे चर्चा करें। फिर वे अपने मालियोंको जरूरी बीज और खाद दें और खुद भी फुर्सतके वक्त अपने बगीचोंमें काम करें। (बगीचेकी ताजी हवामें शारीरिक मेहनत करनेसे जो तन्दुरुस्ती बढ़ेगी, वह अेक अतिरिक्त फायदा होगा।) बीज और खाद खरीदनेमें जो पैसा खर्च होगा, अुससे कअी गुनी ज्यादा कीमतकी अुपज बगीचेमें हो जायगी।

३. म्युनिसिपैलिटियां अपने मालियोंको फूल अुगाने और दूबके मैदान तैयार करनेके बजाय अनाज पैदा करनेके काममें लगायें। वे शहरकी जनतामें से अपनी मरजीसे काम करनेवाले लोगोंके अैसे जत्थे खड़े करें, जो म्युनिसिपल बगीचोंकी जमीनमें काम करके साफ हवा और कसरतका फायदा अुठायें। अपने शहरकी जमीनमें खेती करनेमें खुद मदद देकर शहरके लोग गौरव महसूस करें। यहां भी पैदावार खर्चसे ज्यादा ही होगी। मजदूरी ही पैदावारकी कीमत बढ़ाती है, लेकिन अिस हालतमें तो मजदूरोंको मजदूरी देनेका सवाल ही नहीं अुठेगा। माली वहां पहलेसे ही मौजूद हैं, जो अैसे काममें अपना समय बिताते हैं जिससे कोअी फायदा नहीं होता। बाकीके लोग खुद अपनी मरजीसे अनाजकी पैदावार बढ़ानेमें मदद करेंगे।

४. गांववालोंको सरकारी मदद देनेका काम बहुत बड़ा है। लेकिन जब अेक बार सरकारी महकमोंके कर्मचारियोंमें वह जरूरी ताकत — मनुष्यकी क्रियात्मक दिलचस्पी — पैदा कर दी जायगी, तो पैसेकी बहुत बड़ी मददके बिना भी अिस दिशामें काफी अुन्नति की जा सकती है। आज तो कचहरियोंमें बैठनेवाले सरकारी महकमोंके सेक्रेटरियोंसे लेकर खेतोंमें काम करनेवाले छोटे-से-छोटे अफसरों तकका काम करनेका तरीका और दृष्टिकोण गलत होता है। शासन-तंत्रका साराका सारा ढांचा कुछ अिस तरहका है कि अगर कोअी भला आदमी अुसमें पहुंच जाय, तो या तो अुसे दूसरोंके साथ खुद भी गिरना होगा या फिर वहांसे बाहर निकल आना होगा। कोअी अच्छा आदमी वहां काम कर ही नहीं सकता। बड़े अफसरोंको बहुत ज्यादा पैसा दिया जाता है और छोटे अफसरोंको बहुत कम पैसा दिया जाता है, लेकिन सबको जीवन और कपड़ोंका बनावटी स्टैण्डर्ड तो कायम रखना ही पड़ता है। दफ्तरी घिस-घिससे बढ़नेवाली सुस्ती, अुदासी, अयोग्यता, बेअीमानी और आम लोगोंके साथ जीते-जागते सम्बन्धका अभाव — ये सब बुराअियां सरकारी तंत्र अपने कर्मचारियोंमें लाजिमी तौर पर पैदा कर देता है। अिसलिअे सरकार द्वारा 'ज्यादा अनाज पैदा करो' की किसी योजनाको सफल बनानेकी पहली शर्त यह है कि सारे सरकारी तंत्रको साफ-सुथरा बनाकर बिलकुल नये सिरेसे अुसकी रचना की जाय।

सवाल यह नहीं है कि अिसके लिअे सरकार ज्यादा खर्च करे, बल्कि यह है कि आज सरकारके विकास-महकमे अिसमें जो पैसा खर्च कर रहे हैं, अुसे आजकी देरी, बरबादी और गलत दृष्टिकोणको खतम करके सही ढंगसे खर्च किया जाय। केन्द्र और प्रान्तोंमें जो विकासकी योजनायें बनाअी जा रही हैं, वह काम करनेका अुलटा ढंग है। सबसे पहले हमारी सरकारोंको जिस योजनाके बारेमें सोचना और जिस पर अमल करना चाहिये, वह है अैसे शासन-तंत्रको जन्म देना जो अिन विकासकी योजनाओं पर सफलतासे अमल कर सके। आज सरकारी हलकोंमें हर जगह यह बात कबूल की जाती है कि सरकारी तंत्र अूपरसे नीचे तक बिगड़ा हुआ है। लेकिन चूंकि यह सवाल बड़ा मुश्किल है, अिसलिअे हर आदमी अिस सचाअीसे भागनेकी कोशिश करता है कि तंत्रमें क्रान्तिकारी फेरफार करनेकी जरूरत है। खुले तौर पर अिस सचाअीका सामना किये बिना बड़ी-बड़ी योजनाओंकी बातें करना जनताको सरासर धोखा देना है।

अिसलिअे मैं कहती हूं कि सरकारी कर्मचारियोंके जरिये देशके अनाज पैदा करनेके साधनोंको बढ़ानेके लिअे हमें शासन-तंत्रमें अेकदम पूरी तरह फेरफार करना होगा। अगर हमने यह काम कर लिया, तो दूसरी सारी बातें कम खर्च और ज्यादा पैदावारके साथ विकास करेंगी और फलेंगी-फूलेंगी।

नअी दिल्ली, २३–१०–'४७

हरिजनसेवक, २–११–१९४७ **मीराबहन**

## ८५

## ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय?

### २

पिछले हफ्तेकी मेरी लिखी बातोंमें जिन्होंने दिलचस्पी ली है, अुनके लिअे मैं अिस हफ्तेमें कुछ अमली सुझाव यहां देती हूं। मौसम सिर पर आ गया है अतः थोड़ा भी समय बरबाद नहीं किया जाना चाहिये। अिसलिअे आपमें से जो लोग सचमुच काम करना चाहते हैं, अुन्हें जमीन खोदना शुरू कर देना चाहिये। पहले मैं खानगी लोगोंसे कुछ कहना चाहती हूं। जमीन

खुद जानेके बाद (जिस जमीनमें कुछ पैदा किया जा चुका है, अुसे अेक बार खोदा जाय और नअी जमीनको दो बार—अेक बार अिस तरफसे, दूसरी बार अुस तरफसे—खोदा जाय) मिट्टीके ढेलोंको तोड़कर मुलायम न बनाया जाय। अुसे ढेलोंके रूपमें ही छोड़ दिया जाय, ताकि जमीनकी तहमें सूरज और हवा प्रवेश कर सकें। लगभग अेक हफ्ते तक अुसे अिसी हालतमें रहने दिया जाय। अगर समय कम न रह गया होता, तो मिट्टीको ३ या ४ हफ्ते तक खुला रहने दिया जा सकता था और अुससे फायदा होता। अिसी बीच अगर अच्छी तरह सड़ा हुआ खाद मिल जाय, तो अुसे अिकट्ठा करके अुम्दा भूसा बना लिया जाय। हफ्तेके आखिरमें खादको खुदी हुअी जमीन पर अेकसा फैला दिया जाय। फिर मिट्टीके ढेलोंको फोड़कर खादको अच्छी तरह अुनके साथ मिला दिया जाय। अिसके बाद अुसे पानीसे अच्छी तरह सींचा जाय और तब तक छोड़ दिया जाय, जब तक अुसमें थोड़ा गीलापन तो कायम रहे, लेकिन चिपचिपाहट बिलकुल न रहे। अब आप जमीनमें बीज बोनेके लिअे क्यारियां बना सकते हैं। हर क्यारी करीब ५×६ फुटकी ठीक होगी। लेकिन मौका देखकर क्यारियोंकी लम्बाअी-चौड़ाअीमें फेरफार किया जा सकता है। हर क्यारीके चारों तरफ करीब ५ अिंच चौड़ा और ४ अिंच अूंचा पालबन्द होना चाहिये। जगहके हिसाबसे आप अेक क्यारीके बाद दूसरी क्यारी बनायें और अगर आपके पास पंप या नल या पानी सींचनेका दूसरा कोअी सुभीता हो, तो आप क्यारियोंकी सतहसे कुछ अूंचाअी पर क्यारियोंके साथ-साथ बहनेवाली पानीकी छोटीसी नाली बना लें, ताकि जब आप किसी क्यारीके पालबन्दको खोलें और पानीकी नालीको आगेसे बन्द करें तो पानी सहज ही तरकारीकी क्यारीमें बहने लगे।

अिस हफ्ते हम सर्दीकी चार अुम्दा भाजियोंकी बुवाअी पर विचार करेंगे: १. गाजर, २. शलजम, ३. मूली, और ४. पालक।

१. गाजर: अूपर बताये हुअे तरीकेसे क्यारी तैयार कीजिये। मिट्टीको मिलाकर जमीनकी सतहको मुलायम बनाअिये। अिसके बाद गाजरके बीज क्यारीमें चारों तरफ फैला दीजिये। जहां तक बने बीजोंको अेकसे बिखेरनेकी सावधानी रखिये। बीज बहुत घने या पास-पास न बोयें जायं, लेकिन साथ ही क्यारीमें खुली जगहें भी न रह जायं। बोनेके बाद बीजों पर हाथसे या टहनियोंके कड़े ब्रशसे बहुत

हलकी मिट्टी फैला दी जाय। तब पानी छिड़कनेके अुम्दा बरतनसे क्यारीमें बहुत हलका पानी दिया जाय। जब तक बीजोंके अंकुर न फूटें और वे जमीनमें पक्की जड़ न जमा लें, तब तक सिंचाअीकी नालियोंका अुपयोग न किया जाय; वरना क्यारीके निचले सिरे पर बहुत घने पौधे अुगेंगे और जहां पानी प्रवेश करता है वहां, अूपरके सिरे पर, कोअी पौधा नहीं अुगेगा। शुरूमें थोड़े-थोड़े समयसे जमीनमें हलका पानी दिया जाय, ताकि वह थोड़ी गीली बनी रहे। जब पौधे बड़े हो जायं तो ज्यादा दिनोंके अरसेसे अुन्हें ज्यादा गहरा पानी दिया जा सकता है। जब गाजरके छोटे-छोटे पौधे अुगते हैं, अुस समय अगर वे क्यारीके किसी भागमें बहुत घने मालूम हों, तो अुनमें से कुछ अुखाड़ दिये जायं। वर्ना अुनकी जड़ोंको पूरी तरह फैलने और आजादीसे बढ़नेका मौका नहीं मिलेगा।

२. शलजम : गाजरकी तरह अिनकी क्यारियां भी तैयार की जा सकती हैं। लेकिन बीजोंको चारों तरफ फैलाकर बोनेके बजाय अुन्हें अेक-दूसरेसे पांच-पांच अिंचकी दूरी पर, जमीनसे करीब अेक अिंच नीचे, धीरेसे रखकर अूपरसे मिट्टीसे ढंक दिया जाय (मिट्टीको नीचे दबाया न जाय)। अुन्हें पानी अुसी तरह दिया जाय, जैसे गाजरको दिया जाता है। लेकिन पौधे घने न अुगनेके कारण अुनमें से किसीको अुखाड़नेकी जरूरत नहीं।

३. मूली : अिन्हें भी शलजमकी तरह ही बोया जाय। लेकिन अिन्हें मिट्टीके अुठे हुअे टीलों पर बोना सबसे अच्छा होता है। अिसलिअे जिन क्यारियोंमें दूसरी तरकारियां बोअी जायं, अुनके अुठे हुअे पालबन्दको अिस काममें लाया जाय। अिन पालबन्दोंको भी पानी देनेके बरतनसे ही सावधानीसे सींचा जाय और जब पानी भरकर सिंचाअी की जाय, तो अितना पानी भरा जाय कि वे पूरी तरह भीग जायं।

४. पालक : अिसके बीजोंको गाजरकी तरह चारों तरफ फैलाकर बोया जाय। बीज भरसक अेकसे और गाजरके बनिस्बत ज्यादा पास-पास बोये जायं। वे कितने भी घने क्यों न अुगें, अुनमें से किसीको अुखाड़नेकी जरूरत नहीं। पालकको हमेशा अच्छा पानी दिया जाय। अेक ही फसलसे तीन या चार बार पालक काटा जा सकता है।

अिन सब बातोंसे आपको डरना नहीं चाहिये। यह कोअी बहुत कठिन काम नहीं है। अुलटे, अिसमें सबसे ज्यादा आकर्षण है। अिन तरकारियोंको पैदा करनेका काम आफिसमें बैठने या कारखानेमें काम करनेसे ज्यादा आकर्षक और ज्यादा तन्दुरुस्ती देनेवाला है। जब हम कुदरतसे अपना सम्बन्ध कायम करते हैं, तब जीवन कितना ज्यादा सुखी और आकर्षक बन जाता है? अगर हम प्यार और ममतासे कुदरतके पास जायं, तो हम अुसे अपने स्वागत और सेवाके लिअे हमेशा तैयार पायेंगे। यहां तक कि पुरानी थालीमें आधा अिंच मिट्टी फैलाकर भी अगर हम बीज बोयें, तो कुछ ही दिनोंमें वह हमें सलाद खानेको दे देगी।

अिस चीजको मैं ज्यादा विस्तारसे समझाअूंगी:

कोअी भी चौड़ा और अुथला बरतन — थाली या ट्रे — लीजिये और अुसमें अच्छी तरह भूसा की हुअी आधा अिंच मिट्टी फैला दीजिये। अिसके बाद अुसे पानीसे भर दीजिये और धीरे-धीरे बरतनको हिलाअिये, ताकि पानी मिली हुअी मिट्टी बरतनके पेंदेमें अच्छी तरह अेकसी बैठ जाय। तुरंत अुसमें सरसों या राअी बो दीजिये। बीज अितने घने बोअिये कि वे अेक-दूसरेसे सटे हों, लेकिन अेक-दूसरेके अूपर न हों। बरतनको अैसी जगह रखिये जो न ज्यादा गरम हो और न ज्यादा ठण्डी। अिससे मिट्टी जल्दी नहीं सूखेगी। लेकिन साथ ही, वहां अितनी गरमी भी हो कि बीजोंमें अंकुर फूट सकें। मिट्टीको कभी सूखने न दिया जाय। जब अुसका गीलापन मिटने लगे, तभी अुस पर धीरे-धीरे पानी छिड़क दिया जाय, ताकि मिट्टीके अन्दरके बीज अिधर-अुधर हटें नहीं। अब बरतनको पानीसे भरा न जाय। सिर्फ हाथसे हलका पानी समय-समय पर छिड़का जाय, जिससे मिट्टी हमेशा थोड़ी गीली बनी रहे। सरसों या राअीके बीज दो या तीन दिनमें फूट निकलते हैं और १० दिनके भीतर तो वे अेकसे डेढ़ अिंच तक बढ़ जाते हैं और काटने लायक हो जाते हैं। पौधोंका विकास मौसमके हिसाबसे कम-ज्यादा होता है। बरतनको मकानके भीतर सायादार जगहमें रखना चाहिये। लेकिन दिनमें अेक बार अुसे आधे या पौन घण्टेके लिअे धूपमें रखा जा सकता है। अिससे पत्तोंका रंग ज्यादा गहरा होगा। बरतनको धूपमें से भीतर लाते समय हमेशा मिट्टीको छूकर अच्छी तरह देख लीजिये कि वह सूखी तो नहीं।

'काहू' नामक अेक दूसरा पौधा होता है, जिसे अिसी तरह बोया या बढ़ाया जा सकता है। लेकिन राअी या सरसोंके बीज हर जगह मिल सकते हैं, जब कि 'काहू' के बीज बगीचोंमें बोये जाने-वाले बीजोंके बड़े व्यापारियोंके यहीं मिल सकते हैं। आपमें से जो अुन्हें पा सकते हैं, अुन्हें जरूर लाना चाहिये। राअी और काहूको दो अलग-अलग बरतनोंमें बोअिये और काटते समय दोनोंका थोड़ा-थोड़ा हिस्सा मिलाकर सलाद बनाअिये।

आप कह सकते हैं कि "थोड़ेसे सलादके लिअे अितनी बड़ी तकलीफ अुठानेसे क्या फायदा? सलादसे क्या पोषण मिलता है?" आपको याद रखना चाहिये कि काफी खाना खा लेना ही सब कुछ नहीं है। अुसे संतुलित भी रखना चाहिये। रोटी और दालके साथ थोड़ा सलाद जोड़ देनेसे खानेको समतोल बनानेमें बड़ी मदद मिलती है। वह हाजमा बढ़ाता है और अुसकी मददसे शरीर गेहूं और दालोंमें से ज्यादा पोषण खींचता है। चार रोटियां खानेवाला आदमी अगर तीन रोटियोंके साथ थोड़ा कच्चा सलाद या पकाअी हुअी हरी भाजी खायगा, तो अुसे ज्यादा पोषण मिलेगा और अुसकी तन्दुरुस्ती ज्यादा अच्छी रहेगी। अिसलिअे थालियां या दूसरे बरतनों या बक्सोंमें भी सलाद या तरकारियां पैदा करनेसे गेहूं या दालोंसे हमें जो पोषण मिलता है, अुसमें सच्ची बढ़ती होती है।

म्युनिसिपैलिटियोंसे मैं यह कहूंगी:

आपने अभी तक मीटिंग बुलाकर यह चर्चा की या नहीं कि कौनसी जमीनमें खेती की जाय? आपको यह फैसला करनेमें देर नहीं करनी चाहिये, क्योंकि जमीनकी खुदाअी अेकदम शुरू हो जानी चाहिये। आपको अपने नागरिकोंकी बैठक भी बुलानी चाहिये और अुनसे अिस जरूरी राष्ट्रीय काममें मदद देनेकी अपील करनी चाहिये।

सरकारोंसे मैं कहूंगी:

हालांकि सारे शासन-तंत्रको पूरी तरह बदलकर नअी रचना करना बहुत जरूरी है, फिर भी मौजूदा कर्मचारियोंसे ज्यादा अच्छा काम लेनेकी रोज-रोज कोशिश की जानी चाहिये। बीजके सरकारी गोदामोंको ताला लगाकर बन्द रखना चाहिये। अिन्स्पेक्टरोंको अकसर और अचानक गोदामोंका दौरा करके बीजकी जांच करनी चाहिये और

हर तरहसे यह देखनेकी कोशिश करनी चाहिये कि गोदामोंसे दिया जानेवाला बीज किसानोंकी जरूरतका हो, अच्छी किस्मका हो और बांटनेके पहले पूरी तरह जांच लिया गया हो। मुझे अिन गोदामोंका बड़ा बुरा अनुभव हुआ है। अिसके अलावा, सारे देशमें खाद बनानेका प्रचार करना चाहिये। आज गांवके चारों तरफ गोबर और कूड़े-करकटके ढेर अिधर-अुधर बिखरे पड़े रहते हैं और गांवके रास्तों पर कूड़ा-करकट फैला रहता है। अगर सरकारोंके खेती-महकमे संगठित आन्दोलन करके गांववालोंको अिस सारे कूड़े-करकटको कीमती खादके रूपमें बदलनेकी तालीम दें, तो अिससे सिर्फ फसलोंमें ही काफी बढ़ती नहीं होगी, बल्कि गांव भी साफ-सुथरे बनेंगे और बीमारियां कम होंगी।

मैंने यू० पी० के किसानोंसे खाद बनानेके बारेमें अेक छोटे परचेके रूपमें जो अपील की थी, अुसे मैं नीचे दे रही हूं:

"किसान भाअियो,

"हम धरती माताके साथ अच्छा बरताव नहीं करते। वह हम सबको अन्न देनेकी अच्छी-से-अच्छी कोशिश करती है। लेकिन बदलेमें हम अुसे अुसकी खुराक नहीं देते। जिस तरह अपना फर्ज अदा करनेवाले बच्चोंको अपनी प्यारी और आदरणीय मांकी सेवा करनी चाहिये, वैसे ही हम भी धरती माताकी सेवा न करें, तो वह हमें — अपने बच्चोंको — कैसे खाना दे सकती है और पाल सकती है? हम हर साल खेतोंको हलते, अुनमें बीज बोते और फसलें पैदा करते हैं, लेकिन जमीनमें खाद हम कभी-कभी ही देते हैं। जो कुछ देते हैं वह भी आम तौर पर आधा सड़ा कूड़ा-करकट ही होता है। जैसे हमें ठीक तरह पके हुअे खानेकी जरूरत होती है, अुसी तरह जमीनको अच्छी तरह तैयार किये हुअे खादकी जरूरत होती है।

"दुर्भाग्यसे मवेशियोंका आधा गोबर तो हमारे गांवोंमें जला डाला जाता है। खेतोंमें दिये जा सकनेवाले खादकी अिस तरह जो कमी होती है, अुसे रोकनेके लिअे हमें ज्यादा पेड़ अुगाने पड़ेंगे। हममें से हरअेकको अपनी जमीनमें अुगनेवाले बबूल और दूसरे पौधोंको बचाना चाहिये। बबूल फसलको नुकसान नहीं पहुंचाता। सच पूछा जाय तो बबूलके नीचे अकसर फसल ज्यादा बढ़ती है। अगर बारिश-

के बाद ध्यानसे खेतोंमें देखें, तो हम अपने-आप अुगनेवाले पौधोंको आसानीसे चुन सकते हैं, अुनके आसपासकी जमीन साफ कर सकते हैं और अुनके चारों तरफ कांटे लगाकर अुन्हें नुकसानसे बचा सकते हैं। अेक बार काफी पेड़ हो गये कि हम खादके लिअे बहुतसा गोबर बचा सकेंगे।

"अब मैं यह बताअूंगी कि घरकी जरूरतोंसे बचे हुअे गोबरका अच्छे-से-अच्छा अुपयोग कैसे किया जा सकता है। हमें चरागाहों पर पड़ा हुआ और घरोंमें मवेशियोंके पैरों तले पड़ा हुआ सारा गोबर अिकट्ठा कर लेना चाहिये। वह बड़ी कीमती चीज है। अुसका थोड़ा हिस्सा भी बरबाद न किया जाय। हमें गांवोंके रास्तों पर बिखरा हुआ और घरोंके अहातोंमें फैला हुआ सारा पुराना घास, भूसा और दूसरा कचरा भी अिकट्ठा करना चाहिये। हमें यह अिरादा कर लेना चाहिये कि हम अब गोबरकी टोकरियां भर-भरकर कचरेके ढेरों पर नहीं फेंकेंगे, बल्कि १० फुट चौड़ा, २० फुट लंबा और ३ फुट गहरा अेक गड़हा खोदेंगे। हर रोज गड़हेके किनारे पर दो ढेर अिकट्ठे करेंगे। अेक गोबरका और दूसरा कचरेका। जब सब अिकट्ठा हो जायगा, तब हम रोज अुसे गड़हेमें फैलायंगे — अुसके अेक सिरे पर ४ फुट जमीन खाली रखेंगे। पहले कचरेकी अेक पतली तह (करीब ३ अिंच) फैलायंगे और अुस पर दूसरी पतली तह (करीब १ अिंच) गोबरकी, और फिर गोबरको धूप और हवासे बचानेके लिअे अुस पर कचरेकी तह फैला देंगे। हर तीसरे दिन हम अिन तहोंको पानीसे भिगोयेंगे। जब अिस तरह आधा गड़हा सिरे तक भर जायगा, तो हम अुसे अूपरसे ३ या ४ अिंच मिट्टीसे ढंक देंगे और ७ या ८ हफ्ते तक वैसा ही पड़ा रहने देंगे। अब पहले गड़हेके पास दूसरा गड़हा खोदेंगे। अिसका आधा हिस्सा भी हम अिसी तरह भरना शुरू करेंगे। अगर यह आधा हिस्सा ७ हफ्तेसे कम समयमें भर जाय, तो हम तीसरा गड़हा खोदेंगे और अुसे भी अिसी तरह भरना शुरू करेंगे। जब पहले गड़हेके मिट्टीसे ढंके खादको पड़े-पड़े ७ या ८ हफ्ते हो जायेंगे, तो हम फावड़ा लेकर चार फुटके खुले हिस्सेमें अुतरेंगे और खादको अुलीचकर अिस हिस्सेमें भर देंगे। अिस तरह अन्तमें वह हिस्सा खुल जायगा, जहां पहले खाद

जमा था। यह काम करते हुअे हम गोबर, कचरे वगैराकी तहोंको पूरी तरह मिलाने और ठोस ढेलोंको फोड़नेका ध्यान रखेंगे। अिसके बाद अुस पर खूब पानी डालकर अुसे फिर मिट्टीसे ढंक देंगे और दूसरे ७ या ८ हफ्ते तक वैसा ही पड़ा रहने देंगे। अितने समयके बाद जब हम अुसे खोलेंगे तो हमें अच्छी तरह मिला हुआ और पूरी तरह सड़ा हुआ खाद मिलेगा। अिसे 'कम्पोस्ट'का खास नाम दिया जाता है। अिसके बनानेके कअी तरीके हैं। अुनमें से ज्यादातर बड़े पेचीदे हैं। जो तरीका मैंने अूपर बताया है, वह किसान-आश्रममें काममें लाया जाता है। यह काम बहुत सादा है और हममें से हरअेक अिसे कर सकता है। मैंने अिसे 'किसान-कम्पोस्ट'का नाम दिया है।

"अूपरके बयानसे आप देख सकते हैं कि किसान-कम्पोस्टको अेक ही बार पलटनेकी जरूरत होती है और अुसे पूरी तरह पकनेमें या सड़नेमें ३ से ४ महीने ही लगते हैं। जरूरत पड़ने पर गड्ढोंकी लंबाअी और चौड़ाअी बढ़ाअी भी जा सकती है। अगर नअी तहें फैलाते समय बीच-बीचमें थोड़ा पुराना कम्पोस्ट भी फैला दिया जाय तो खाद जल्दी सड़ता है। अच्छी तरह फैलाअी हुअी राख भी अिसमें मददगार साबित होती है। बाजरीके ठंडल, गन्नेकी छाल वगैरा जैसी कड़ी चीजें सीधे कम्पोस्ट नहीं मिलानी चाहिये। या तो सड़ने तक अुन्हें पानीमें भिगोया जाय या फिर जलाकर अुनकी राख बना ली जाय। अगर खेतोंमें जरूरत पड़नेके पहले ही गड्ढोंमें कम्पोस्ट तैयार हो जाय, तो अुसे गड्ढेसे हटाकर जमीन पर अिकट्ठा कर दिया जाय और ३ या ४ अिंच मिट्टीसे ढंक दिया जाय। जरूरी हो तो अुसे धूप और हवाके असरसे बचानेके लिअे हलके प्लास्टरसे भी ढांका जा सकता है।

"अगर हम जितना भी गोबर और कचरा मिले, अुसे अिकट्ठा करनेकी तकलीफ अुठायें और मेरे कहे मुताबिक खाद तैयार करें, तो हम अपनी गरीब भूखों मरनेवाली धरती माताको खुराक दे सकेंगे और वह बदलेमें खूब फसल देकर हमारा और हमारे भूखों मरनेवाले मवेशियोंका पालन-पोषण करेगी।"

(यह किसान-कम्पोस्ट खानगी बगीचोंमें छोटे पैमाने पर तैयार किया जा सकता है। गड्ढोंका अच्छा नाप अिस तरह होना चाहिये:

१. १४ फुट लंबा, ७ फुट चौड़ा और ३ फुट गहरा।
२. १० फुट लंबा, ५ फुट चौड़ा और ३ फुट गहरा।
३. ८ फुट लंबा, ४ फुट चौड़ा और २।। फुट गहरा।

अगर बगीचेके अहातेमें गोबर न मिले, तो थोड़ा गोबर शायद बाहरसे — किसी गोशाला या चरागाहसे — मिल सकता है। कम्पोस्ट बनानेके कामको भरसक जारी रखनेके लिअे अिस गोबरको अेक बालटीमें पानीके साथ घोलकर कचरे पर छिड़का जाय।)

हर प्रान्तके खेती-महकमे हर मौसमकी तरकारियोंके बीजोंकी सूचीवाले और अुनके बोने और बढ़ानेकी दिशा बतानेवाले छोटे परचे छपवाकर तरकारियां पैदा करनेकी अिच्छा रखनेवाले खानगी लोगोंको भी मदद दे सकते हैं। साथ ही, महकमोंके मुकामी कर्मचारी शहरों और कस्बोंकी जनताको अिसके बारेमें सलाह देकर रास्ता बतायें और यह समझकर पहले-पहल मुफ्त बीज भी बांटें कि आअिन्दा लोग अपने बगीचेमें से जरूरतके बीज खुद बचायेंगे। कहीं-कहीं अिस तरहकी कोशिश की गअी है, लेकिन आजके संकटमें जिस तरहकी मिली-जुली और संगठित कोशिशकी जरूरत है, वैसी नहीं की गअी।

नअी दिल्ली, ३–११–'४७ **मीराबहन**

हरिजनसेवक, २३–११–१९४७

## ८६

## ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय?

### ३

जब तक यह लेख आपके पास पहुंचेगा — मैं खानगी तौर पर साग-भाजी वगैरा बोनेवालोंसे कह रही हूं — आप साग-भाजियोंके बीज जमीनमें बो चुके होंगे और हर दिन आप अिस बातके लिअे अुत्सुक होंगे कि अुनमें अंकुर फूटनेके कोअी लक्षण दिखाअी पड़ते हैं या नहीं। आपको अिसका बड़ा लालच होता होगा कि मिट्टीको हटा कर जरा देखा जाय कि धरतीके नीचे बीज कैसी शकल ले रहे हैं; मगर अिस लालचको रोकिये। अिससे बीज बिगड़ जाते हैं। कम-से-कम दस-पन्द्रह दिन तक धीरज धरिये। अिसके बाद भी अगर अंकुर नहीं फूटें, तो अेक जगहकी मिट्टी हटाकर सावधानीसे जांच

करिये। अगर आप देखें कि मिट्टीमें बीज नहीं जमे हैं, तो जमीनको खोदकर अुसमें फिरसे बीज बोये जायं। अंकुर न जमनेका कारण यह हो सकता है कि या तो बीज खराब हैं या जमीन ठीक तरहसे तैयार नहीं की गअी है या फिर अुसमें जरूरतसे कम या ज्यादा पानी दिया गया है। जैसा कि मैंने पिछले हफ्ते समझाया था, जमीन कभी हड्डीकी तरह सूखी न बनने दी जाय और न वह लगातार बहुत गीली रखी जाय। अंकुर न फूटनेका दूसरा कारण जमीनकी स्थिति हो सकती है। साग-भाजीका प्लॉट कांटोंकी बाड़के बिलकुल नजदीक न हो, न अुसे घनी झाड़ियोंसे घेरा जाय। अिन जंगली झाड़ियोंकी मजबूत जड़ें जमीनसे पोषक तत्त्व खींच लेती हैं। बड़े छांहदार पेड़ोंके नीचे कुछ खास तरहकी भाजियोंके सिवा दूसरी भाजियोंका बोना भी अुनके पौधोंको बढ़ने नहीं देता।

जब बीजोंमें पहली बार अंकुर फूटते हैं, तब अुनमें दो छोटी-छोटी गोल और रसभरी कोंपलें निकलती हैं, जिन्हें अुनके "दूधके दांत" कहा जाता है। कुछ दिनों बाद अिन कोपलोंके बीचमें दो पत्ते और निकलेंगे और पुरानी कोपलें धीरे-धीरे सूखकर झड़ जायंगी। नये पत्ते आगे होनेवाले पौधेकी शकल लेंगे। पालक और गाजरके पौधे अैसे ही होते हैं। अुनमें पहले नन्हीं और लम्बी कोंपलें फूटती हैं। मैं यहां पर यह बतला दूं कि थालीमें जो राअी बोअी जाती है (गये हफ्तेमें मैंने अिसका वर्णन किया है), अुसे "दूधके दांत" निकलनेकी अवस्थामें ही काटा जाता है और अिसलिअे वह खानेमें बहुत रसीली होती है।

जब आपकी तरकारियां थोड़ी बड़ी हो जायं और मिट्टीमें अच्छी जड़ जमा लें, तो आपको क्यारियोंकी निराअीकी तरफ ध्यान देना चाहिये। क्यारियोंमें अुगनेवाला सारा घास-पात और दूसरे बेकार पौधे जड़से अुखाड़कर बाहर फेंक दिये जायं। पानी देनेके बाद तुरन्त यह काम मत कीजिये, क्योंकि तब जमीन गीली होगी और बहुतसी मिट्टी अुखाड़े हुअे पौधोंके साथ अूपर आ जायगी। अिससे तरकारियोंके कोमल पौधोंकी जड़ोंको नुकसान पहुंचेगा। पौधोंकी बाढ़ अगर बहुत घनी हो तो अिस समय कुछ पौधे अुखाड़ दिये जायं।

तरकारियोंके विकासका दूसरा दरजा तब आता है, जब पौधे काफी बड़े होने लगते हैं। अब पौधोंके चारों तरफकी मिट्टी खुरपीसे मामूली खोदकर

ढेलोंको फोड़ दिया जाय; लेकिन अिस बातका बहुत ध्यान रखा जाय कि अैसा करनेमें पौधोंकी जड़ें न कटें या वे अपनी जगहसे हिलने न पावें। यह काम दो सिंचाअियोंके बीच किया जाना चाहिये। यानी मिट्टी गीली न रहे, और जब अुसे खोदकर मुलायम कर दिया जाय, तो अगली सिंचाअीके पहले वह अेक या दो दिनके लिअे वैसी ही छोड़ दी जाय, ताकि धूप और हवा जमीनके भीतर पहुंच सकें।

अगर आपके पास काफी जमीन हो, तो आप दूसरी क्यारियोंमें भी गाजर, शलजम और पालक बो सकते हैं। मूली तो आप जनवरीके अन्त तक थोड़ी-थोड़ी मात्रामें हर दसवें दिन बो सकते हैं।

मुझे आशा है कि आपमें से जिन लोगोंके बगीचोंमें जगह है, अुन्होंने कम्पोस्ट तैयार करनेके लिअे गड़हे बना लिये होंगे और अुन्हें मेरे बताये मुताबिक भरना शुरू कर दिया होगा। यह याद रखिये कि कम्पोस्टके गड़हेमें जो भी चीज डाली जाय, अुसे अच्छी तरह फैलाया जाय। गड़हेमें किसी चीजको ढेलों या ढेरके रूपमें न पड़ा रहने दिया जाय। अिसका मतलब यह हुआ कि हम गड़हेमें गोबर या कचरेको अेक साथ डालकर ढेरके रूपमें पड़े रहने देनेके अपने आलसीपनको छोड़ दें। अगर हम थोड़ी भी तकलीफ अुठायें, तो अुम्दा कम्पोस्ट तैयार हो सकता है।

अगले लेखमें सारे मौसमोंकी अुपयोगी तरकारियोंकी पूरी सूची देकर मैं अपनी यह लेखमाला खतम कर दूंगी।

नअी दिल्ली, ८–११–'४७ **मीराबहन**

हरिजनसेवक, ३०–११–१९४७

## ८७

# ज्यादा अनाज कैसे पैदा किया जाय?

४

क्या आपके छोटे-छोटे पौधे अच्छी तरहसे बढ़ रहे हैं? आप लोगोंमें से जिनके पास जमीन बिलकुल नहीं है, क्या वे राअी और काहूकी भाजियां बो रहे हैं और अुन्हें खाकर अपनी तन्दुरुस्ती बढ़ा रहे हैं? मेरे दिमागमें ये विचार अुठते रहते हैं और यह बड़ा सवाल भी हमेशा सामने बना रहता है कि आप लोगोंमें से कितने सचमुच यह काम कर रहे हैं? भगवान आपको शक्ति और श्रद्धा दे!

अपने पिछले लेखमें मैंने तरकारियोंकी सूची देनेका वचन दिया था। अुसे यहां दे रही हूं। चूंकि यह बहुत जगह घेरती है, अिसलिअे गर्मीके मौसमकी सूची 'हरिजन' के अगले अंकमें दी जायगी।

नअी दिल्ली, १५–११–'४७ **मीराबहन**

[मीराबहनका सवाल बिलकुल ठीक है। यह जानना अेक दिलचस्प बात होगी कि कितने लोग अुनके सुझावोंसे फायदा अुठा रहे हैं। क्या अैसे भाअी संपादक, 'हरिजन', अहमदाबादके पास अपने नाम भेजेंगे?

नअी दिल्ली, १७–११–'४७ **—मो० क० गांधी**]

### ठंडके मौसमकी शाक-भाजी

| तरकारी का नाम | फी अेकड़ बीज | बोनेका वक्त (मै०-मैदान प०-पहाड़ी) | बोनेकी गहराअी | अंकुर फूटनेका समय | बोने, छांटने या जगह बदलनेके बादका अन्तर कतारें | पौधे | मैदानोंमें तरकारियां मिलनेका समय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सेम या लोबिया | ६० पौंड | मै० आधे अक्तूबरसे आधे नवम्बर तक<br>प० मार्चसे मअी आखिर तक | ३ अिंच | २० दिन | २ फुट | १·५ फुट | फरवरीसे मार्च |

नोट — बीजको २ फुट चौड़ी, ३ अिंच गहरी और अेक-दूसरीसे ५ फुटकी दूरी पर बनी हुअी नालियोंमें बोया जाय। हरअेक नालीमें दो कतारोंमें,

जिनका अन्तर १ फुटका हो, बीज बोये जायं। हर बीज ३ अिंच गहरा और अेक-दूसरेसे ५ से ६ अिंच दूर बोया जाता है। अच्छे अंकुर फूटनेके लिअे नालीको पानीसे भर दीजिये। जब पौधे १५ अिंच अूंचे हों, तब नालियां भरकर बराबर कर दीजिये। जब पौधोंमें फूल खिलें, तब बढ़नेवाले सिरोंको काट डालिये।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सेम (फ्रेंच) | (अ) अूंची ६० पौंड | मै० आधे अगस्तसे आधे अक्तूबर तक | १·५ अिंच | १२ दिन | १·५ फुट | १·५ फुट | फरवरीसे मार्च |
| | (आ) छोटी ४० पौंड | प० अप्रैलसे आधे जून तक | | | | | |

नोट — मैदानोंके बजाय यह पौधा पहाड़ियों पर ज्यादा अच्छी तरह बढ़ता है। मैदानोंमें जो जगह अिसके बोनेके लिअे चुनी जाय वहां कुंजोंकी छाया हो। अिसका बीज ढालू टीले पर या समतल जमीन पर अेक-दूसरीसे १.५ फुटकी दूरी पर बनी हुअी कतारोंमें बोया जाता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चुकन्दर | ४ से ६ पौंड | मै० अगस्तसे अक्तू० आखिर तक प० मार्चसे मअी आखिर तक | ·२५ अिंच | १२ दिन | १५ अिंच | ४ से ६ अिंच | नवम्बरसे मार्च |

नोट — अिसका बीज १५ अिंचकी दूरी पर बनी हुअी कतारोंमें घना बोया जाता है। बादमें पौधोंको ४ अिंचसे ६ अिंचकी दूरी पर छांट दिया जाता है। अंकुर फूटनेके लिअे अिसके बीजको लगातार नमीकी जरूरत होती है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ब्रुसेल्स स्प्राअुट्स (गोभी) | १२ औंस | मै० सितम्बरसे अक्तू० आखिर तक प० मार्चसे आधे मअी तक | १/८ अिंच | ६ दिन | ३ फुट | १·५ फुट | फरवरी |

नोट — बीजोंको खुले मैदानमें बनी हुअी क्यारियोंमें फैलाकर बोया जाता है। पौधे जब ४ से ५ अिंच अूंचे हो जाते हैं, तब अुनकी जगह बदल दी जाती है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बन्दगोभी | ८ औंस | मै० आधे अगस्तसे अक्तू० आखिर तक प० मार्चसे जुलाअी आखिर तक | १/८ अिंच | ६ दिन | २·५ फुट | २·५ फुट | जनवरीसे मार्च |

नोट — खेतमें २० टन फी अेकड़के हिसाबसे अच्छी तरह सड़ा हुआ खलिहानका खाद दिया जाय और दो मन फी अेकड़के हिसाबसे अेमोनिया सलफेट अुसके अूपर छिड़का जाय। 'ब्रुसेल्स स्प्राअुट्स' की तरह अिसके पौधोंको बढ़ाया जाय और जब वे ४ से ५ अिंच अूंचे हो जायं, तब अुनकी जगह बदल दी जाय।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गाजर | ६–८ पौंड | मै० आधे अगस्तसे नवम्बर आखिर तक प० मार्चसे मअी तक | ·५ अिंच | १५–२० दिन | १·५ फुट | २ से ३ अिंच | दिसम्बरसे मार्च |

नोट — देशी बीजोंको शरद अृतुमें जल्दी बोया जा सकता है और विदेशी बीजोंको देरसे। खलिहानका अच्छी तरहसे सड़ा हुआ खाद फी अेकड़ १० टनके हिसाबसे दिया जाय। गाजरके बीज बहुत कम जमते हैं, अिसलिअे अुन्हें घने बोना चाहिये। जब वे ४ से ५ अिंच अूंचे हो जायं, तब अुनकी जगह बदल देनी चाहिये।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फूलगोभी | ८ औंस | मै० आधे जूनसे अक्तू० आखिर तक प० मार्चसे अप्रैल आखिर तक | ·५ अिंच | ७ दिन | २·५ फुट | १·५ फुट | अक्तूबरसे मार्च |

नोट — जल्दी पैदा होनेवाले बीजोंको आधे जूनसे अगस्तके आखिर तक बो दीजिये। देरसे पैदा होनेवाले बीजोंको अक्तूबरमें बोया जाता है। दिनके बहुत गरम हिस्सेमें क्यारियों पर छांह रखी जाय। जब पौधे ४ से ५ अिंच अूंचे हो जायं, तब अुनकी जगह बदली दी जाय।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धनिया | २० पौंड | मै० सितम्बरसे नवम्बर तक प० मार्चसे मअी आखिर तक | ·५ अिंच | १० दिन | १ फुट | १ फुट | बीज जूनमें पत्ते सालभर |

नोट — बोनेके पहले बीजको रगड़कर अच्छी तरहसे फोड़ दिया जाय। बीजोंके लिअे पौधोंकी छंटाअी जरूरी है। पत्तोंके लिअे अिसे सालभर बोया जा सकता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बैंगन | ८ से १० औंस | मै० १. आखिर फरवरी<br>२. जून<br>३. आखिर अक्तू० | १/८ अिंच | ६ दिन | २·५ फुट | १·५ फुट | मार्चसे दिसम्बर |

नोट — पौधा-घर या नर्सरीमें बैंगनके बीज हर मार्लामें १.५ या २ औंसके हिसाबसे चारों तरफ फैलाकर बोये जाते हैं। पहली और दूसरी बार बोये बीजोंके छोटे-छोटे कोमल पौधों पर आम तौर पर हड्डा नामके कीड़ों द्वारा हमला किया जाता है, जिनके अण्डोंको हाथसे अलग कर देना चाहिये। ये सब अुठते हुअे पौधोंको खा जाते हैं। तीसरी बारके पौधोंको पालेसे बचाअिये और जब पालेका डर दूर हो जाय, तो अुन्हें क्यारियोंमें ले जाकर रोप दीजिये। ज्यादातर लोग तीसरी फसल ही लेते हैं।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लहसुन | ६–७ मन गांठें | मै० अक्तूबर प० फरवरीसे मार्च तक | ·५ अिंच | ७–१२ दिन | १ फुट | ३ से ४ अिंच | मअीके बाद |

नोट — जब मअीके शुरूमें पत्तोंके सिरे पीले होने लगें, तो पौधे अुखाड़कर सुखा लिये जाते हैं और आगेके अुपयोगके लिअे जमा कर दिये जाते हैं।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सलाद | १·५ पौंड | मै० अक्तूबरसे नवम्बर तक<br>प० मार्चसे आधे जून तक | १/८ अिंच | ६ से ८ दिन | १५ अिंच | १२ अिंच | जनवरीसे फरवरी |

नोट — अगर बीज सीधे खेतमें बोने हों, तो अुन्हें करीब दो फुट चौड़ी अुठी हुअी क्यारियोंके दोनों तरफ बोया जाय। और दो क्यारियोंके बीच सिंचाअीके लिअे नालियां रखी जायं। ये नालियां १८ अिंच चौड़ी और ९ अिंच गहरी होनी चाहिये। बीज बोनेके बाद तुरन्त क्यारियोंकी सिंचाअी कीजिये। बीजों तक पानी मिट्टीके जरिये सिर्फ सोखकर पहुंचाया जाय।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गांठगोभी | १ पौंड | मै० आधे अगस्तसे अक्तू० आखिर तक<br>प० फरवरीसे मअी आखिर तक | ·५ अिंच | ४ से ६ दिन | १·५ फुट | ९ अिंच | दिसम्बरसे मार्च |

नोट — जब पौधोंके शलजम जैसे डंठल लगभग २ से ३ अिंचके घेरेवाले हो जायं तब गांठगोभी काटिये।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्याज | ७ से ९ पौंड | मै० आधे अक्तू० से आधे नवम्बर तक प० मार्चसे मअी आखिर तक | ५ अिंच | १५ से २० दिन | १२ अिंच | ३ से ४ अिंच | मअीके बाद |

नोट — जब तक पौधे अच्छी तरह जम न जायं, तब तक बीज बोनेकी क्यारियोंमें पानी दिया जाय। पौधोंको अुखाड़कर दूसरी जगह रोपनेके बाद तुरंत अुनकी सिंचाअी कीजिये और अुसके बाद हर १२ से १५ दिनके बाद तब तक सिंचाअी कीजिये, जब तक अुनके सिरे नीचे न गिरें। बादमें सिरोंको काट दीजिये और फर्श पर प्याजोंको फैला दीजिये।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मटर | ४० पौंड | मै० अक्तूबरसे आधे नवम्बर तक प० मार्चसे मअी आखिर तक | १ अिंच | ७ दिन | ३ से ४ फुट चौड़ी अुठी हुअी क्यारियां | २ अिंच | फरवरीसे मार्च |

नोट — पाला पौधों पर असर नहीं करता, लेकिन वह फूलों और कलियोंको मार देता है। पौधोंके विकासके मुताबिक अुठी हुअी क्यारियोंकी चौड़ाअी ३ से ५ फुट होनी चाहिये। बीज बोनेके बाद ही सिंचाअी की जाती है। जब पौधे ५ से ६ अिंच अूंचे हो जायं, तब हर क्यारीके बीचमें डंडोंकी अेक कतार गाड़ दी जाती है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आलू | ८ से १२ मन | मै० आधे सितम्बरसे आधे अक्तूबर तक प० आधे फरवरीसे आधे अप्रैल तक | ३ अिंच | ७ से १० दिन | २·५ फुट | ९ से १२ अिंच | दिसम्बर से मार्च |

नोट — नअी गांठों या आलुओंको बोनेके पहले दो महीने तक रखनेकी जरूरत है। गांठ बनना शुरू होनेके पहले पौधे अुखाड़कर दूसरी जगह रोपे जाते हैं। नहरकी सिंचाअीके लिअे आलूके पौधे ६ से ९ अिंच अूंची पालों पर बोये जाते हैं और कुअेंकी सिंचाअीके लिअे ४ से ५ अिंच अूंची पालों पर। गांठोंको सड़नेसे बचानेके लिअे पौधे रोपनेके बाद तुरन्त पानी दिया जाय। पानी देते समय पालोंको पानीमें डुबोया न जाय। फसल पकने तक ८ से १० बार सिंचाअी की जानी चाहिये।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मूली | ३ से ४ पौंड | मै० आधे अगस्तसे जनवरी आखिर तक प० मार्चसे अगस्त आखिर तक | १ अिंच | ३ से ६ दिन | १५ अिंच | २ से ४ अिंच | सितम्बरसे फरवरी |

नोट — अगर बीज गर्मीके मौसममें बोये जायं, तो मूलीकी जड़ें बहुत कड़ी और तीखे स्वादवाली होती हैं। अेक-दूसरीसे डेढ़ फुट फासलेवाली और ९ अिंच अूंची पालों पर मूली बोअिये और तुरंत ही सिंचाअी कीजिये। हर १५–२० दिनके फासले पर बीज बोअिये, ताकि आपको हर समय नरम मूली खानेको मिलती रहे।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पालक | २०-२५ पौंड | मै० अक्तूबरसे नवम्बर तक प० मार्चसे अप्रैल आखिर तक | ·५ अिंच | ५ से ७ दिन | २ से ३ अिंच | नवम्बरसे फरवरी |

नोट — अिसके बीज चारों तरफ फैलाकर बोये जाते हैं और फावड़ेसे थोड़ी मिट्टीसे ढंक दिये जाते हैं। बोनेके बाद ही पानी दीजिये और बादमें हर ८–१० दिनके बाद पानी देते रहिये। बसन्तमें बीजके डंठल बढ़ने शुरू हों, अुसके पहले ३–४ बार पालक काटा जाता है।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शलजम | १–२ पौंड | मै० देशी बीज सितम्बरमें विदेशी सितम्बरसे नवम्बर तक प० फरवरीसे आधे जून तक | ·५ अिंच | ७ दिन | १·५ फुट | ४ से ५ अिंच अक्तूबरसे मार्च |

नोट — जड़ोंको अच्छी तरह बढ़ने देनेके खयालसे अूंची पालों पर बोना ही ज्यादा अच्छा है। अिसकी पालें मूलीकी पालोंकी तरह बनाअी जाती हैं। जब पौधे २ से ३ अिंच अूंचे हो जायं, तो अुनकी छंटाअी कर दी जाय।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| टमाटर | १. जल्दी आनेवाली फसल ८ औंस<br>२. खास फसल ४ से ५ औंस | मै० १. आधे जुलाअीसे आधा अगस्त<br>२. आधे अगस्तसे आधा सितम्बर<br>३. आधे अक्तूबरसे आधा नवम्बर (खास फसल)<br>प० आधे मार्चसे मअी आखिर तक | ·२५ अिंच | ७ से १० दिन | ३ फुट | २·५ अिंच | १. अक्तूबरसे नवम्बर<br>२. दिसम्बरसे मार्च<br>३. मअीसे जुलाअी |

नोट — खास फसलके छोटे-छोटे पौधे फरवरीमें नर्सरीसे हटा कर क्यारियोंमें बोये जायं, जब कि पालेका डर दूर हो जाय। जब मौसम गरम होता है और धूप अच्छी चमकने लगती है तब फल पकते हैं। छोटे-छोटे पौधोंको छांह करके धूपसे बचाया जाता है और जब वे ६ हफ्तेके हो जाते हैं, तब अुन्हें दूसरी जगह रोपा जाता है। अगर अुन्हें नर्सरी या पौधा-घरमें ६ हफ्तेसे ज्यादा रहने दिया जाय, तो वे विकासकी दृष्टिसे पिछड़ जाते हैं और दूसरी जगह बदलनेमें न तो ठीक तरहसे पनपते हैं और न फल देते हैं। जब पौधे ९ से १२ अिंच अूंचे हो जायं, तो अुन्हें डंडोंका सहारा दे दिया जाता है। पौधोंको पालेसे पूरी तरह बचानेकी सावधानी रखी जाय।

हरिजनसेवक, ७–१२–१९४७

## ८८

# गर्मीके मौसमकी शाक-भाजी

| शाकका नाम | हर अेकड़के लिअे जरूरी बीज | बोनेका समय मै०-मैदानमें प०-पहाड़ी प्रदेशमें | कितने गहरे बोये जायं | अुगनेमें कितना समय लगता है | बोने, छांटने या पौधे रोपनेके बादका फासला कतारोंके बीच | पौधोंके बीच | शाक किस समयसे किस समय तक मिल सकता है |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लौकी | ३–४ पौंड | मै० मार्चसे जुलाअी तक प० अप्रैलसे मअी आखिर तक | ·५ अिंच | ५–८ दिन | ८ फुट | ४ फुट | मार्चसे नवम्बर तक |

नोट — जमीनकी सतहसे अूंची ८ फुट चौड़ी क्यारियां बनाअी जायं और अुन्हें २ फुट चौड़ी नालियोंसे अलग किया जाय। अिन नालियोंके दोनों तरफ बीज बोये जाते हैं। नालियां बेलोंको पानी देनेके काममें आती हैं। बेलें अूंची क्यारियोंमें फैलती हैं। जल्दी फसल लेनेके लिअे बीज अक्तूबरमें बोये जाते हैं और पूरी सर्दियोंमें घास वगैरासे ढंककर पालेसे बेलोंकी हिफाजत की जाती है। हर टीले पर ४ से ५ बीज बोये जाते हैं और बादमें हर टीले पर अेक ही पौधा रहने दिया जाता है। घरके बगीचोंमें लगभग ३ फुट

व्यासकी गोल क्यारियोंमें बीज बोने चाहिये। घरकी दीवारके पास बीज बोये जायं, तो बेलें छत पर चढ़ जाती हैं।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मीठा कद्दू या काशीफल | ३–४ पौंड | मैं० फरवरीसे जुलाअी तक प० मार्चसे जून तक | ·५ अिंच | ५–८ दिन | ८ फुट | ४ फुट | जूनके बादसे |

नोट — अिसके बोने और सार-संभाल करनेका तरीका लौकी जैसा ही है। लेकिन लौकी नरम ही तोड़ी जाती है और कद्दू पूरी तरह पकनेके बाद डंठलके साथ तोड़ा जाता है। वह लंबे समय तक टिका रहता है। वह पूरी सर्दियोंमें और गर्मियोंमें जूनके बाद मिल सकता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुरअी और गिल्की | ३–४ पौंड | मैं० मार्चसे जुलाअी तक | ·५ अिंच | ५–६ दिन | ८ फुट | ४ फुट | मअीसे दिसम्बर तक |

नोट — दूसरी फसलके लिअे बेलें जब ५ से ६ अिंच अूंची हो जायं, तो अुन्हें कुछ सहारा देनेकी जरूरत होती है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| करेला | ३–४ पौंड | मैं० मार्चसे जुलाअी तक | ·७५ अिंच | ८–१० दिन | २·५ फुट | १ फुट | मअीसे सितम्बर तक |

नोट — करेले नरम खाये जाते हैं और अुनके कड़वे स्वादके लिअे वे अुगाये जाते हैं। पकने पर यह फल लाल नारंगी रंगका हो जाता है। तब यह शाककी तरह नहीं खाया जा सकता। अच्छी फसल लेनेके लिअे बेलको सहारा देनेकी जरूरत है। अिसका शाक बनानेके पहले छालका कड़वापन नमकके जरिये दूर कर दिया जाता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भिण्डी | जल्दीकी फसलके लिअे १६–२० पौंड और देरकी फसलके लिअे ८–१० पौंड | मैं० मार्चसे जुलाअी आखिर तक प० अप्रैलसे जून बीच तक | ·५ अिंच | ५–६ दिन | २·५ फुट | १ फुट | अप्रैलसे दिसम्बर तक |

नोट — भिण्डी नरम हो तभी तोड़ी जाय, क्योंकि वही अच्छी तरह सिझती है। अुसे हर दूसरे या तीसरे दिन तोड़ना चाहिये। अगर भिण्डीको पेड़ पर पकने दिया जाय, तो फिर पेड़को फल नहीं लगते।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खरबूजा | ३–४ पौंड | मै० जनवरी बीचसे मार्च आखिर तक | ·५ अिंच | ५–६ दिन | ५ फुट | ३ फुट | मअीसे जून तक |

नोट — खरबूजेके पकनेके समय गरम और सूखी हवाकी जरूरत होती है। तभी अुसमें अुम्दा खुशबू और अूंचे प्रमाणमें शक्करकी मात्रा बढ़ती है। मामूली पाला पड़नेसे भी अिसका पौधा मर जाता है। अूंची क्यारियोंके साथ-साथ बनाअी हुअी नालीके दोनों तरफ अेक-अेक जगह ४–५ बीज बोये जाते हैं। पौधा और फल दोनों सूखी जमीन पर रहने चाहिये। पके हुअे फलोंको सुबह तोड़िये। सपाट जमीनमें पौधे बोये गये हों, तो अुन्हें शामको पानी देना चाहिये।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ककड़ी या खीरा | ३–४ पौंड | मै० फरवरी बीचसे अप्रैल आखिर तक | ·५ अिंच | ५–६ दिन | ५ फुट | ३ फुट | मअीसे जून तक |

नोट — खरबूजेके बनिस्बत ककड़ीकी फसल बिना किसी नुकसानके खुलेमें अुग सकती है। वह कच्ची ही खाअी जाती है। जब फल नरम और मुलायम होता है, तब वह छोटे-छोटे रोओंसे ढंका रहता है और हरे रंगका होता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तरबूज | ३–४ पौंड | मै० जनवरी बीचसे मार्च आखिर तक | ·५ अिंच | ५–६ दिन | ५ फुट | ३ फुट | जूनसे जुलाअी तक |

नोट — तरबूजकी पहली फसल आम तौर पर नदी-किनारेकी सूखी जमीनमें होती है। वहां तरबूज बड़े और अच्छी जातिके होते हैं।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| टिण्डा | ३–४ पौंड | मै० १. फरवरी बीचसे अप्रैल तक<br>२. जून–जुलाअी | ·५ अिंच | ६–१२ दिन | ५ फुट | ३ फुट | १. जून–जुलाअी<br>२. अक्तूबर |

नोट — अिसकी अच्छी फसलके लिअे सूखी और गरम हवाकी जरूरत होती है। जल्दीकी फसल ५ फुट चौड़ी अुठी हुअी क्यारियोंमें बोअी जाती है। अिन क्यारियोंको २ फुट चौड़ी सिंचाअीकी नालियोंसे अलग किया जाता है। बीज बोनेके बाद तुरन्त सिंचाअी की जाय और हर ८–१० दिन पर पौधोंको पानी दिया जाय। दूसरी फसल आम तौर पर बीजोंको चारों तरफ फैलाकर बोअी जाती है। बेलें ठीक तरहसे अुगकर बड़ी हो जायं, तब तक पानी दिया जाता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विलायती कद्दू | ४–५ पौंड | मै० फरवरीसे अप्रैल बीच तक प० मार्च बीचसे जून बीच तक | ·५ अिंच | ६–१२ दिन | ३ फुट | ३ फुट | मअीसे जुलाअी तक |

नोट — चारसे पांच फुट चौड़ी जमीनकी सतहसे अुठी हुअी क्यारियोंमें तीन तीन फुटके फासले पर बीज बोये जाते हैं। आम तौर पर हर जगह ३ से ४ तक बीज बोये जाते हैं। लेकिन जब पौधे ३–४ अिंच अूंचे हो जाते हैं, तब अेक पौधेको रखकर दूसरे पौधे अुखाड़ दिये जाते हैं। अुन्हें हर ४–५ दिनके फासले पर पानी दिया जाता है।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शकरकन्द | अिसकी बेलें रोपी जाती हैं। अेक अेकड़में दो से चार 'मार्ला'की बेलें काफी होती हैं। | मै० अप्रैलसे जून आखिर तक | बेलके टुकड़े अितने बड़े किये जाते हैं जिनमें ३–४ आंखें आ जायं और अुनका बीचका भाग जमीनमें गाड़ दिया जाता है। | ६–८ दिन | २·५ फुट | १ फुट | नवम्बरसे जनवरी तक |

नोट — बेलोंके टुकड़े रोपनेके लिअे २ से २।। फुटके फासले पर पालें बनाअी जाती हैं।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुल्फा-शाक | ३–४ पौंड | मै० मार्च बीचसे जून आखिर तक | ·२५–·५ अिंच | ६–८ दिन | २·५ फुट | १ फुट | जूनसे अक्तूबर तक |

नोट — यह भाजी गमलोंमें अुगाअी जा सकती है। अिसके पत्ते दलदार होते हैं। बीज फैलाकर घने बोये जाते हैं और बादमें बारीक मिट्टीसे ढंक दिये जाते हैं।

नअी दिल्ली, २२–११–'४७ **मीराबहन**

हरिजनसेवक, ११–१–१९४८

## ८९

# अनाज, घास और खेती

### १. खेतीकी अुन्नति

भारतमें खेतीकी अुन्नति करनेके खास तौरसे नीचे लिखे अुपाय हैं: (१) जमीनके छोटे-छोटे टुकड़े न होने देना और आर्थिक दृष्टिसे फायदेमंद खेतोंकी मर्यादा तय करना; (२) देशभरमें पानीके स्रोतोंको खोजना और अुन्हें काममें लेना; (३) खाद, बीज, फसलकी बीमारियों, जमीनको बेकस होनेसे रोकने आदिके कुदरती व वैज्ञानिक तरीकोंसे जमीनको सुधारना और अुसके अुपजाअूपनको बढ़ाना; (४) सहकारी प्रयत्न; (५) राज्यकी मदद और संरक्षण; और (६) देशकी भीतरी और समुद्र व खाड़ियोंके किनारोंकी बंजर जमीनको खेतीके लायक बनाना।

अिनमें से हर विषय पर अैसे अनुभवी आदमियों द्वारा बार-बार बारीकीसे चर्चा की जा चुकी है, जिन्होंने अपना सारा जीवन अिनके अध्ययनमें लगा दिया है। पर अभी तक अपने सुझावों व हलोंको व्यवहारमें लानेका अुन्हें कोअी मौका नहीं मिला। अिसलिअे यद्यपि वे महत्त्वपूर्ण व जरूरी हैं, फिर भी मैं अुन्हें यहां गिनाभर देता हूं।

### २. ढोर, घास और दूध

बोझा ढोने और हल चलानेवाले जानवरोंके पालनको, जो भारतीय खेतीके मुख्य आधार हैं, वैज्ञानिक तरीकेसे बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करना चाहिये। भारतीय किसानोंके पास आज जो अिस तरहके ढोर हैं, अुनसे आर्थिक दृष्टिसे कोअी लाभ नहीं होता; वे सचमुच बोझरूप हैं। ढोरोंकी मनमानी पैदाअिशका निषेध कर देना चाहिये। केवल जिन बछड़ोंको वेटरीनरी विभाग सांड़ बनाने लायक माने, अुनको छोड़कर सभी नर-बछड़ोंका बधियाना कानूनन् अनिवार्य कर दिया जाय, जैसे कि बच्चोंके लिअे टीका लगवाना अनिवार्य कर दिया गया है। बहुतसे लोगोंके लिअे यह अेक नअी खबर होगी कि खेतीकी दिशामें काफी आगे बढ़े हुअे बंबअी प्रान्तमें भी

व्यक्तिगत मालिकीकी जमीनोंके विश्वास न होने लायक बड़े-बड़े प्रदेश बंजर पड़े हुअे हैं। सूरत जिलेमें, जो अपने फलोंके अुद्यान व बगीचोंके लिअे प्रसिद्ध है, दस तहसीलोंमें से दो तहसीलों (पारड़ी और बलसाड़) में ही क्रमशः ८० हजार और ६४ हजार अेकड़ व्यक्तिगत मालिकीकी जमीनें बेकार पड़ी हैं। अुनमें घास, बबूल या कंटीली झाड़ियोंके अलावा कुछ नहीं अुगता। यहां यह भी बता दूं कि अिन तहसीलोंमें वार्षिक ७५ अिंच तक बरसात होती है। साथ ही हर ५ या ७ मील पर बहुत अच्छी-अच्छी नदियां बहती हैं, जो हर साल करोड़ों गैलन ताजा पानी अरब सागरमें डालती हैं।

कुछ दिन पहले अेक सरकारी जांच-अफसरको मालूम हुआ कि पासके अेक गांवमें कुल १२०० अेकड़ जमीनमें से केवल ३५० अेकड़ जमीनमें ही खेती होती थी, जब कि ८५१ अेकड़में केवल घास अुगी हुअी थी। ये घासकी जमीनें गांवकी गोचरभूमि नहीं हैं — जहां गांवके सब ढोर चर सकें। वे ज्यादातर अैसे साहूकारों या मालिकोंकी हैं, जो खुद खेती नहीं करते। वे घास कटवाते हैं और अुसका तिनका तिनका गांठोंमें बंधवा कर बंबअी आदिके तबेलोंके लिअे ले जाते हैं। सरकारी और दूसरी सार्वजनिक संस्थाओंके 'अधिक अन्न अुपजाओ' आन्दोलनके बावजूद ये जमींदार सफलतापूर्वक सचमुच ही हरी घासको सुखाकर संग्रहके लायक बनाते हैं, जब कि गांवके लोग भूखों मरते हैं और अमेरिका व दूसरी जगहोंसे आयात किये हुअे बेकस (कम ताकतवाले) खाद्यान्नोंको खाकर जीते हैं। वे अपने किसानोंको अिन खेतोंमें अनाज नहीं अुगाने देते, यद्यपि अुससे भी ढोरोंके लिअे ज्यादा नहीं तो अुतना ही चारा तो अवश्य हो जाता है। क्योंकि तब अुन्हें अुस अुपजमें से किसानोंको हिस्सा देना पड़ेगा और फसल काटनेके समय चोरीको रोकनेके लिअे देखरेख रखनी पड़ेगी। हमारे देशमें करोड़ों अेकड़ जमीन अिसी रूपमें अनुपजाअू पड़ी है और वह अैसे मालिकोंके हाथमें है, जो 'न खाना न खाने देना' की नीतिके अनुसार चलते हैं। अिन मालिकोंसे बेजमीन किसानोंको आसान शर्तों पर खाद्यान्न, शाक-तरकारी आदि अुगानेके लिअे जमीन दिलवाअी जानी चाहिये और सरकार द्वारा सिंचाअीकी सहूलियतें दी जानी चाहिये। घास और तमाखूके अूंचे भावोंके कारण ही गुजरातके जिलोंके बहुतसे जमींदारोंने सरकारकी आंख बचाकर अनाज पैदा करनेके सरकारी प्रचारके बावजूद काफी प्रमाणमें अनाज अुगानेवाली जमीनोंको

घास व तमाखू अुगानेवाले प्रदेशोंमें बदल डाला है। अिसे जरा भी देर किये बिना असरकारक ढंगसे रोकना चाहिये।

जब हमारे प्रांतमें अैसे घासवाले बड़े-बड़े प्रदेश हैं, तब भी बंबअी जैसे शहरोंके बीचों-बीच दूधका अुत्पादन होता है और वह रुपये सेर या अुससे भी महंगा बिकता है। बंबअी, अहमदाबाद, पूना, शोलापुर, हुबली आदि सभी शहरोंके और अुनके आसपासके अुपनगरोंके सभी तबेलोंको हटा देना चाहिये, और अुन पर कानूनन् रोक लगा दी जानी चाहिये। सिर्फ ग्राम्य प्रदेशों और कुदरती वातावरणमें ही ढोरोंको रखने और पालने देना चाहिये। वहां पर सरकारको चरानेकी, तबेले रखनेकी, अुधार रुपया देनेकी और यातायातकी सुविधाअें देनी चाहिये। यह काम सरकार अैसे कामोंको करनेवाले पिंजरा-पोल, गोशालाअें वगैरा धार्मिक ट्रस्ट व संस्थाओंके सभी साधनोंको अेकत्र करके जनताकी मददसे कर सकती है।

### ३. किनारोंकी जमीनको खेतीके लायक बनाना

समुद्रके किनारेवाले सूरत, थाना और कोंकणके जिलोंमें हजारों अेकड़ खारी जमीन खाड़ियोंके किनारे पड़ी हुअी है। ये जमीनें धुल गअी हैं और अब अनुपजाअू हो गअी हैं, पर सरकारी प्रोत्साहन और मददसे बांध बांधनेके तरीके द्वारा खेतीके लायक बनाअी जा सकती हैं। अिनमें 'नमकीन धान' कहा जानेवाला हजारों टन मोटा धान पैदा होगा। मेरे खयालसे कुछ साल पहले सरकार द्वारा नियुक्त अेक खास अफसरने थाना जिलेका अिसी दृष्टिसे सर्वे किया था।

मुझे कुछ साल पहलेका अेक अुदाहरण याद है। थाना जिलेके अेक नमक बनानेवाले गांवमें सारे बालिग मजदूरों और मालिकोंके बीच झगड़ा पैदा हो गया। अिस जबरन् बेकारीके दिनोंमें अुस गांवके सभी बालिग लोग हिल-मिलकर अेक पुराने बांधको फिरसे बांधनेके रचनात्मक काममें जुट गये। अिस तरह बहुत बड़े प्रदेशको फिरसे खेतीके लायक बनानेमें अुन्होंने सफलता पाअी। यह प्रदेश खाड़ी द्वारा धुल चुका था और करीब अेक पीढ़ीसे अुस गांवके लिअे खो-सा गया था। संगठन करनेवालोंको यह डर था कि कहीं कुछ आलसी हड़ताली दंगा-फसाद न करें। यह पहले दरजेका रचनात्मक काम अुस डरके खिलाफ अेक गारण्टी साबित हुआ। दूसरे, यह काम सारे गांवके लिअे सचमुच अेक वरदान साबित हुआ। क्योंकि अिससे

हरअेक कुटुम्बको अेक स्थायी फायदा यह हुआ कि अुस गांवमें सैकड़ों खांडी* 'नमकीन धान' हर साल ज्यादा पैदा होने लगा।

अितने बड़े प्रदेशोंको खेतीके लायक बनानेकी समस्या किसी खानगी संस्था या मंडलके बूतेसे बाहरकी बात हो सकती है, लेकिन अिस दिशामें राज्यकी ओरसे शुरुआत की जाने पर काफी काम हो सकता है।

### ४. शाक-भाजी अुगाना

हमारे लोगोंकी खुराक बहुत ज्यादा हलकी और संतुलन-रहित है, क्योंकि अुसमें चिकने पदार्थ, प्रोटीन तथा दूसरे पोषक तत्त्व बहुत ही कम रहते हैं। अूपर बताअी हुअी घास अुगानेवाली जमीनोंमें अुम्दा ताजी तरकारियां बहुतायतसे हो सकती हैं। गरीब लोग कुछ मौसमोंमें ज्यादातर अिन तरकारियों पर निर्भर रह सकते हैं। अुदाहरणके तौर पर पंचमहालमें वे 'महुअे' के फूलों पर या कोंकणके कुछ हिस्सोंमें कटहल पर निर्भर रहते हैं। आजकल ताजा शाक तो सिर्फ अच्छे वर्गोंके भोजनमें पाअी जानेवाली अैश-आरामकी वस्तु बन गया है। शाक अुगानेवाले अपनी सारी पैदावार कस्बों और शहरोंको भेज देते हैं, जहां वह ४ से लेकर १२ आने पौंड तक बिकती है। तब भी अुगानेवालेको तो मुश्किलसे १ या २ आने ही मिलते हैं, क्योंकि अुसका बहुत बड़ा हिस्सा तो रेलें और शहरी दलाल ही ले लेते हैं। कअी साल पहले मैंने अिस प्रान्तके अेक प्रसिद्ध बगीचेके मालिककी किताबोंसे कुछ आंकड़े 'हरिजन' में पेश किये थे। अुसकी बिक्रीसे होनेवाली आमदनी और खर्च परसे पता चलता था कि अुसे अपनी आमदनीका ८७।। प्रतिशत रेलों और दलालोंमें ही बांट देना पड़ता था और अिससे वह सचमुच ही बरबाद हो गया था। केवल दो ही साल पहले वर्धाके पास बसी हुअी फौजी छावनियोंने ग्रामीण किसानोंको फौजियोंके लिअे बहुत बड़ी मात्रामें ताजी शाक-भाजी अुगानेके लिअे मजबूर किया था। यकायक वे किसी दूरके मोर्चे पर भेज दिये गये और अिससे वह सारा ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक बरबादीमें डूब गया। मैंने खुद अपनी आंखोंसे यह देखा कि पूरे मौसम भर लुभावने गोभीके फूलोंकी गाड़ियांकी गाड़ियां दो पैसे सेरके हिसाबसे बेची गअीं और बैलोंको मनों अैसे टमाटर खिलाये गये थे, जिनका मुकाबला आसानीसे अमेरिकन पत्रोंमें आने-

* अेक खांडी = १० मन।

वाले रंगीन विज्ञापनोंमें दिखाये गये टमाटरोंसे किया जा सकता था। कुछ ही दिन पहले मैं अपने पड़ोसके अेक व्यापारीसे मिला था, जो बहुत बड़ी मात्रामें ताजी शाक-भाजी पैदा करता था। वह रोज हजारों पौंड ताजे शाक फौजी छावनियों और कैम्पोंमें और बादमें बम्बअीकी सरकारी रेशनकी दुकानोंको देता था। लेकिन अब अुसे बहुत बड़ी मुसीबतका सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि नीतिके बदल जानेसे सरकारी खरीदी अेकाअेक बंद हो गअी; और अुसके साथ ही दूसरे ११ गांववाले छोटे व्यापारी भी अैसी ही हालतमें हैं, जिन्हें अुसने शाक अुगानेको प्रोत्साहित किया था।

अिस तरहकी सारी अव्यवस्था बंद हो जानी चाहिये और बुद्धिमानी-पूर्वक योजना बनाअी जानी चाहिये, जिससे शाक अुगानेवालोंको अैसी आफतोंसे बचाया जा सके। अगर गांववाले बड़े और दूरके शहरोंके लिअे शाक-भाजी अुगायें तो अुन्हें रोकना चाहिये। लेकिन अपने जिलेकी स्थानीय जरूरतें पूरी करनेमें अुनकी मदद करना चाहिये। और चूंकि वे निश्चित और सीमित हिस्सोंके लिअे ही शाक-भाजी अुगानेका जिम्मा लेते हैं, अिसलिअे दूधकी तरह अुनकी पैदावारके भी कमसे कम भाव नियत करके अुन्हें अुचित आमदनीका विश्वास दिलाना चाहिये।

### ५. गंदे पानीका अुपयोग

बंबअी, अहमदाबाद आदि बड़े शहरोंमें शाक-तरकारी अुगाने और शहरी तबेलोंके लिअे हरा चारा अुगानेके लिअे गंदे पानी और मैलेका अुपयोग करनेके बारेमें लाभदायक योजना बन सकती है। यदि शहरोंमें पीनेका पानी दूर-दूरके प्रदेशोंसे लाया जा सकता है, तो दूरके अुपनगरोंके बड़े-बड़े क्षेत्रोंको खाद देने व सींचनेके लिअे शहरी नालियोंको भी आसानीसे मोड़ा जा सकता है। यहां यह कहना अुपयोगी होगा कि अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी कअी सालोंसे अपनी नालियोंके कुछ पानीको अिसी तरीकेसे काममें ला रही है और अुससे अुसे काफी अच्छी आमदनी होती है। मेरे खयालसे दिल्ली, अिलाहाबाद, कराची और दूसरी जगहोंमें कमोबेश रूपमें यही किया जाता है।

हरिजन, २–२–१९४७ **स्वामी आनन्द**

९०

# अुपयोगी सूचनाअें

[ नीचेके हिस्से प्रो० कुमारप्पाके लेखमें से लिये गये हैं।

—मो० क० गांधी ]

## सहकारी संस्थाअें

सहकारी संस्थाअें न केवल ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे, बल्कि ग्रामवासियोंमें सामूहिक प्रयत्नकी भावना पैदा करनेके लिअे भी आदर्श अुपयोगी संस्थाअें हैं। मल्टी-परपज़ विलेज सोसायटी अर्थात् अनेक कार्य करनेके लिअे बनाअी हुअी ग्राम-सहकारी संस्था कअी अुपयोगी कामोंको कअी तरीकोंसे कर सकती है। जैसे कि :

१. अुद्योगोंके लिअे आवश्यक कच्चा माल और गांववालोंकी जरूरतका अनाज संग्रह कर सकती है ;

२. गांवमें पैदा की हुअी चीजोंको बेचने और गांववालोंकी जरूरतकी चीजें लाकर अुनमें बांटनेका प्रबंध कर सकती है;

३. बीज, सुधरे हुअे औजार तथा हड्डी, मांस, मछली, खली और वनस्पति आदिका खाद गांववालोंको बांट सकती है;

४. अुस प्रदेशके लिअे सांड़ रख सकती है;

५. टेक्स अिकट्ठा करने और चुकानेके लिअे गांववालों और सरकारके बीच मध्यस्थ बन सकती है।

अनाजको अेक जगहसे दूसरी जगह लाने ले जाने व अुसे अुठाने-धरनेमें जो बहुतसा नुकसान होता है और खाद्य वस्तुओंको पहले अेक केन्द्रीय स्थान पर अिकट्ठा करने व वापस ग्रामवासियोंमें बांटनेमें जो खर्च होता है, वह सब अेक सहकारी संस्थाके मारफत काम करनेसे बचाया जा सकता है। सरकार और जनता दोनोंकी दृष्टिसे सहकारी संस्था विश्वासपात्र साधन है। यदि अनाज गांवोंमें सहकारी संस्थाओं द्वारा अिकट्ठा करके रखा जा सके, तो गांवके नौकरोंके वेतनका कुछ भाग आसानीसे अनाजके रूपमें दिया जा सकता है। अिससे अनाजके रूपमें लगान वसूल करनेकी अेक वांछनीय पद्धतिको आसानीसे अमलमें लाया जा सकेगा।

## खेती

फसलकी पैदावार पर निम्न दो बातोंको ध्यानमें रखते हुअे कुछ अंकुश रखना चाहिये : (१) हरअेक गांवको कपास-तमाखू जैसी सिर्फ पैसे देनेवाली फसलोंके बदले अपनी जरूरतका अनाज और जीवनकी प्राथमिक जरूरतोंके लिअे अुपयोगी कच्चा माल अुपजानेकी कोशिश करनी चाहिये। (२) अुसे कारखानोंके लिअे अुपयोगी मालके बदले ग्रामोद्योगोंके लिअे अुपयोगी कच्चा माल पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अुदाहरणके तौर पर कारखानोंके लिअे जरूरी सख्त और मोटे छिलकेका गन्ना या लम्बे रेशेवाली कपास पैदा करनेके बदले गांवके कोल्हूमें आसानीसे पेरा जा सकनेवाला नरम छिलकेका गन्ना और हाथसे काती जा सकनेवाली छोटे रेशेवाली कपास पैदा करनी चाहिये। बची हुअी जमीन आसपासके जिलोंके लिअे अनाजकी कमी पूरी करनेके अुपयोगमें लाअी जा सकती है। कारखानेके लिअे अुपयोगी गन्ना, तमाखू, सन और अैसी ही अन्य व्यापारिक फसलें बन्द कर देनी चाहिये या अुनको घटाकर कमसे कम कर देना चाहिये। किसान यह नीति अपनायें, अिसके लिअे अैसी व्यापारिक फसलों पर भारी कर लगाना या अधिक लगान लेना चाहिये; और यह भी वे सरकारसे लाअिसेन्स लेकर ही कर सकें, अैसी व्यवस्था होनी चाहिये। अैसा करनेसे किसानोंमें व्यापारिक फसलोंको तरजीह देनेका अुत्साह नहीं रहेगा। कुल मिलाकर अैसा होना चाहिये कि खेतीसे पैदा होनेवाली चीजोंकी कीमतें औद्योगिक पैदावारकी कीमतोंके मुकाबले कुछ ज्यादा ही रहें।

व्यापारिक फसलें, जैसे तमाखू, सन, गन्ना आदि दोहरी हानिकारक हैं। वे मनुष्योंकी खाद्य सामग्री तो कम करती ही हैं, पशुओंके लिअे चारा भी पैदा नहीं होने देतीं, जो कि अन्नकी अच्छी फसलोंसे अपने-आप पैदा हो जाता है।

कारखानोंके लिअे अुपयोगी गन्नेकी पैदावार घटनेसे गुड़की पैदावार कम होगी। अिस कमीकी पूर्ति खजूर या ताड़के पेड़ोंसे, जिनसे आजकल ताड़ी अुत्पन्न की जाती है और जो अूसर जमीनमें पैदा होते हैं या अपनी जरूरतके मुताबिक पैदा किये जा सकते हैं, गुड़ पैदा करके की जा सकती है। गन्नेकी खेतीके लिअे जो सबसे अच्छी जमीन काममें लाअी जाती है, अुसमें अनाज, फल व शाक-तरकारियां, जिनकी आज भारतको बहुत जरूरत है, पैदा की जा सकती हैं।

### सिंचाओ

हर गांवके लिअे सिंचाओकी व्यवस्था करने पर जितना जोर दिया जाय कम है। खेतीकी अुन्नतिके लिअे यह अेक बुनियादी चीज है। अिसी पर खेतीकी अुन्नति निर्भर रहती है। अन्यथा खेती जुअेके खेलके समान है। कुअें खुदवाने, छोटे तालाबोंको बड़े बनाने या मिट्टी निकाल कर साफ करने और नहरें खुदवानेके लिअे अेक आंदोलन शुरू करना चाहिये। आटे और चावलकी मिलोंमें काम आनेवाले अेंजिनोंको सरकार कुओं (Tube wells)में से पानी खींचनेके लिअे ले सकती है। पानीकी जरूरी सहूलियतके बिना खाद भी अच्छी तरह नहीं दिया जा सकता, क्योंकि पानीके अभावमें खाद नुकसान पहुंचाता है।

हरिजन, १२–५–१९४६

## ९१

## खलिहानका खाद

नीचेका अवतरण, जो अुसी मेमोरेन्डमसे* लिया गया है, रासायनिक खादके बजाय खलिहानके खादकी श्रेष्ठता बताता है, खासकर हिन्दुस्तानी लोगोंके दो मुख्य अनाजों — गेहूं और बाजरा — की खेतीके संबंधमें :

> "अभी तक मेरी छानबीन गेहूं और बाजरेके पोषक तत्त्वों पर कुछ खादोंके होनेवाले असरके प्रयोगात्मक अध्ययनसे आगे नहीं बढ़ी है। दुर्भाग्यसे वह बहुत कठिन है और कुल मिलाकर होनेवाला काम अेक ही छानबीन करनेवालेकी सीमाओंसे सीमित होता है। तब भी अभी तक आये हुअे नतीजे काफी दिलचस्प हैं। बाजरे (मिलेट) के सम्बन्धमें — वह अनाज जो दक्षिण भारतमें आम तौरसे होता है — यह पाया गया है कि बरसोंसे खाद न दी जानेवाली जिस जमीनमें वह बार-बार अुगाया जाता है, वहां जो अनाज अुगता है अुसकी

---

* लेफ्टिनेण्ट कर्नल आर० मैक्केरिसनके मेमोरेन्डम (१९२६) से, जिसमें बताया गया है कि हिन्दुस्तानके आम लोगोंकी शारीरिक कमजोरी और बीमारीका कारण अुनका पोषणहीन भोजन है।

पोषक शक्ति अितनी कम होती है कि वह अुसके अुपयोग करनेवाले-को नकसान पहुंचाता है। अैसा लगता है कि अुस अनाजमें जहरीला असर आ जाता है। साथ ही यह भी दिखाया जा चुका है कि जिस जमीनमें ढोरोंके गोबर वगैराका यानी खलिहानका खाद दिया जाता है, अुसमें अुगाये हुअे बाजरेमें जो पोषक तत्त्व और विटामिन रहते हैं, वे अुसी जमीनमें पूर्ण रासायनिक खाद देकर अगाये हुअे बाजरेके तत्त्वों और विटामिनोंसे कहीं ज्यादा अच्छे होते हैं। गेहूके बारेमें यह पाया गया है कि जब वह खलिहानका खाद दी जानेवाली जमीनमें अुगाया जाता है, तो अुसकी पोषक शक्ति अुस गेहूंकी शक्तिसे करीबन १७ प्रतिशत ज्यादा होती है, जो पूरी तरह रासायनिक खाद दी हुअी जमीनमें अुगाया जाता है। रासायनिक खादवाली जमीनमें अुगानेसे गेहूंमें पोषक तत्त्वोंकी जो कमियां रहती हैं, वे मुख्यतया विटामिन 'अे' के कम प्रमाणके कारण होती हैं। विटामिन 'अे' वह तत्त्व है, जो आदमी व अुसके पालतू जानवरोंकी छूतसे लगनेवाली बीमारियोंका मुकाबला करनेके लिअे बहुत जरूरी है।"

## 'अेक अुम्दा खुराक'

लेफ्टिनेण्ट कर्नल मैक्केरिसन द्वारा दी गअी निम्न राय पाठकोंका ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रह सकती :

"चाहे जितना कमजोर हो, तो भी पूरा गेहूं बहुत अुम्दा पोषक खुराक है; वह मछलीके तेल और 'मारमाअिट' को मिलाकर खानेसे भी बेहतर है।"

हरिजन, ५–१०–१९३५ सी० अेस०

## ९२

# जमीनकी खुराक बनाम अुत्तेजक दवाअियां

लोग मनुष्यकी खुराकके बारेमें खास खुराक और अुत्तेजक दवाअियोंका भेद जानते हैं। अकसर बुनियादी खुराक बड़ी मात्रामें खाअी जाती है। अुसमें वे सारे तत्त्व सही या करीब-करीब सही प्रमाणमें मौजूद रहते हैं, जो मनुष्यके शरीरके लिअे जरूरी होते हैं। मिसालके तौर पर, दूधमें दूसरे कअी तत्त्वोंके साथ-साथ चरबी, प्रोटीन, केलशियम और विटामिन 'अे' मौजूद रहते हैं। लेकिन अगर किसी शारीरिक बुराअीके कारण बीमारको दूधमें रहनेवाले विटामिन 'अे' से ज्यादाकी जरूरत हो, तो अिस जरूरतको पूरा करनेके लिअे अुसे शार्क लिवर आअिल या काड लिवर आअिल जैसी प्राणियोंके कलेजेसे तैयार की हुअी चीजोंके रूपमें विटामिन 'अे' दिया जाता है। अिसलिअे हम यह समझते हैं कि शक्ति बढ़ानेवाली मामूली खुराक और दवाअियोंमें फर्क होता है। दवाअियां किसी बीमारकी हालत और अुसकी जरूरतके मुताबिक थोड़ी मात्रामें दी जाती हैं। अेक बूढ़े आदमी और अधेड़ अुमरवालेको दी जानेवाली दवाअीकी खुराकमें फर्क हो सकता है, और अधेड़ अुमरवाले लोगोंको बच्चोंसे अलग खुराककी जरूरत होती है।

अिसके अलावा जब कोअी व्यक्ति रात्रिक्लबोंके नाच-गान या दूसरे राग-रंगमें डूब जानेके लिअे कुदरती ताकतके बाहर जाना चाहते हैं, तो वे अुत्तेजक या कुछ समयके लिअे ज्यादा ताकत पैदा करनेवाली दवाअियोंका अुपयोग करते हैं। अैसे लोग जरूरतसे ज्यादा ताकतकी मांगको पूरी करनेके लिअे मारफिया और दूसरी अिसी तरहकी दवाअियोंके अिन्जेक्शन लेकर अपने शरीरको अुत्तेजित बनाते हैं। थोड़े समयके लिअे वे ताकत, कूवत और जोशसे भरे दिखाअी देते हैं, लेकिन अेक अरसेके बाद वे अुत्तेजक दवाअियोंके बादके असरसे नुकसान अुठाते हैं। अिसलिअे जो लोग अपनी नसों और स्नायुओं पर जरूरतसे ज्यादा जोर न डालकर साधारण जीवन बिताना चाहते हैं, वे मामूली खुराकसे पैदा होनेवाली ताकत व कूवतका अच्छा अुपयोग करके संतोष मानेंगे।

सादी दवाअियां बीमारीकी हालतमें ही दी जाती हैं, और वे रोगीको फायदा पहुंचाती हैं। लेकिन अुत्तेजित करनेवाली दवाअियोंसे शरीरको नुकसान

पहुंचता है, क्योंकि वे शरीर पर जरूरतसे ज्यादा जोर डालती हैं और अुसे थका देती हैं। अिस तरह बुनियादी खुराक, दवाअियों और अुत्तेजक पदार्थोंकी अपनी-अपनी जगह है और अुनमें से कोअी दूसरेकी जगह नहीं ले सकता। तन्दुरुस्त आदमीके लिअे खाना, बीमारके लिअे दवाअी और भोग-विलासमें या दूसरे कामोंमें डूबनेवालेके लिअे अुत्तेजक या नशीली चीजें।

अिसी तरह वनस्पति या पौधोंके जीवनमें भी ये तीन दरजे होते हैं। पौधोंको भी जानवरोंकी तरह खुराककी जरूरत होती है। यह खुराक वे हवासे और पानीके जरिये मिट्टीसे लेते हैं। अगर पौधोंकी मामूली खुराकमें किसी तरहकी कमी हो, तो वह कमी ठीक-ठीक निदान और नुसखेसे पूरी की जा सकती है। मनष्योंकी तरह पौधोंको भी अुत्तेजक दवाअियां देकर अुकसाया जा सकता है। लेकिन अैसा करना गैर-कुदरती होगा। पौधोंको जिन नमकीन पदार्थोंकी जरूरत होती है, वे सब कुदरती तौर पर अुन्हें जमीनके अन्दरके बहुत छोटे कीटाणुओंके जरिये हजम हो सकनेवाले रूपमें मिल जाते हैं। ये कीटाणु वनस्पति और दूसरे जीवोंसे पैदा हुअी चीजोंको अैसी शकलमें बदल देते हैं, जिन्हें पौधे आसानीसे पचा लेते हैं। आम तौर पर जानवर पौधोंसे खुराक लेते हैं और ताकत व विकासके लिअे अुसके जरूरी हिस्सेको पचानेके बाद बाकी जमीनको वापस दे देते हैं। और ये छोटे छोटे कीटाणु अैसी चीजको जमीनके अन्दर पौधोंकी खुराकके रूपमें बदल देते हैं। कुदरतमें यही चक्र हमेशा चलता रहता है। कुदरतके अिस प्रबन्धमें मनुष्यकी दस्तन्दाजीको किसी खास हालतमें ही ठीक माना जा सकता है।

सारे पौधोंकी कुदरती बुनियादी खुराक खलिहानोंमें तैयार किये हुअे गोबरके खाद और दूसरी वनस्पति और जीवोंसे पैदा हुअी चीजें होती हैं। अिस तरहके खादमें 'ऑक्सिजन' नामके तत्त्व होते हैं। ये जानवरोंको आसानीसे खुराक पचानेमें अुसी तरह मदद करते हैं, जिस तरह मनुष्यकी खुराकके विटामिन 'बायोकेमिकल' प्रक्रियामें मदद पहुंचाते हैं। जैसे मनुष्यके लिअे विटामिन लाजिमी हैं, अुसी तरह पौधोंके लिअे 'ऑक्सिजन' नामके तत्त्व बहुत जरूरी हैं। अुनके बिना पौधे टिक नहीं सकते। खलिहानोंका खाद और दूसरे जैव पदार्थोंमें 'ऑक्सिजन' खूब होते हैं।

बाढ़में कुछ खास क्षारोंके धुल जानेके कारण जमीनमें जब क्षार कम हो जाते हैं, तो रासायनिक पदार्थोंके जरिये अुस कमीको पूरा करना जरूरी

हो जाता है। लेकिन यह काम मनुष्यको दवाअी देने जैसा ही है। जिस तरह अेक होशियार डॉक्टर सावधानीसे बीमारीको पहचान कर और रोगीकी हालतके मुताबिक नुसखा बनाकर ही रोगीको दवाअी देता है, अुसी तरह जमीनकी सावधानीसे छानबीन करने और अुस पर अुगाये जानेवाले पौधोंकी जरूरतोंको समझनेके बाद ही जमीनमें रासायनिक खाद दिया जाना चाहिये। जमीनकी परख करनेवाले किसी योग्य केमिस्टके सही नुसखेके बिना रासायनिक खादोंका मनमाना अुपयोग करना अनजान आदमीके बीमारको दवाअी देने जैसा ही बेवकूफीका काम होगा और अिसकी तरह अुसका नतीजा भी बुरा ही होगा। अिसलिअे बनावटी खाद पौधोंकी खुराक नहीं, बल्कि जमीनके रोगोंकी दवा है।

जिस तरह मनुष्यके शरीरकी कुदरती ताकतको मारफिया वगैरा अुत्तेजक दवाअियोंके जरिये बढ़ाया जा सकता है, अुसी तरह अुत्तेजक औषधियोंके अुपयोगसे पौधोंकी बाढ़ और पैदावार भी बढ़ाअी जा सकती है, हालांकि आखिरमें अिससे नुकसान ही होता है। रासायनिक खाद यह असर पैदा कर सकता है, लेकिन यह नुकसानदेह, गैर-कुदरती और बगैर दूरन्देशीका काम है।

अगर मनुष्यको खुराक देनेवाली फसलोंको हमारे शरीरकी जरूरतें पूरी करनी हों, तो हमें खुराक देनेवाले पौधे भी स्वस्थ, साधारण और पूरी खुराक पानेवाले होने चाहिये। पौधोंको दिया जानेवाला कोअी बनावटी खाद या बनावटी खुराक कुदरती तौर पर हमारी खुराक पर असर डालेगी, क्योंकि हमारे देशमें हम ज्यादातर पौधों या वनस्पतियों पर ही खुराकके लिअे निर्भर करते हैं। अिसलिअे यह जरूरी हो जाता है कि हम अिन पौधोंको दी जानेवाली खुराक, दवाअियों और अुत्तेजक पदर्थोंका ध्यान रखें। अगर किसी भी समय अुन्हें गलत डोज दिया गया, तो अन्तमें हमारी तन्दुरुस्ती पर अुसका बुरा असर पड़ेगा।

न्यूज़ीलैण्ड अपनी ज्यादातर खुराकी फसलें अैसी जमीनमें पैदा करता है, जिसमें रासायनिक खाद दिया जाता है। और यह देखा गया है कि न्यूज़ीलैण्डके लोग जुकाम, अिन्फलुअेंज़ा, टॉन्सिल और दांतके रोगोंके शिकार होते हैं। अिसलिअे न्यूज़ीलैण्डकी 'फिज़िकल अेण्ड मेण्टल वेल्फेअर सोसायटी' के डॉक्टर चेपमैनने माअुण्ट अेल्बर्ट ग्रामर स्कूलके होस्टेलमें कुछ प्रयोग किये

और ६० लड़कों, मास्टरों और दूसरे काम करनेवालोंको 'रासायनिक खादोंसे पैदा होनेवाले' फलों, सलाद, और साग-भाजियोंके बजाय गोबरके खादसे पैदा हुअी चीजें खिलाअीं। अुन्होंने कहा है—"खुराककी अिस तबदीलीसे लोग काफी तगड़े हो गये हैं और कअी आम ददोंसे अुनको छुटकारा मिल गया है। अुनके दांतोंकी हालत भी बहुत सुधर गअी है।" यह बात ध्यान देने लायक है कि पिछली लड़ाअीमें जब सेनामें भरती करनेके लिअे न्यूज़ीलैण्डके नौजवानोंकी जांच की गअी, तो अुनमें से ४० फी सदी लोगोंको दांतके रोगोंके कारण अयोग्य ठहरा दिया गया। अूपरका प्रयोग हमें अिस बातकी चेतावनी देता है कि अगर हमें हिन्दुस्तानके लोगोंको पूरी तरह तन्दुरुस्त बनाना है, तो हमें बनावटी खादोंसे सावधान रहना चाहिये। यह सिर्फ अपनी खुराकके खातिर ही हमें करना चाहिये।

जमीनकी जरूरतोंको ध्यानमें रखकर अिस पर विचार करनेसे पता चलेगा कि रासायनिक या बनावटी खाद जमीनमें रहनेवाले क्षारको बढ़ाता है। बंगाल और बिहारके कुछ हिस्से अिससे नुकसान अुठा चुके हैं। खादको पुरअसर बनानेके लिअे यह जरूरी है कि जमीनको अुचित गहराअी तक खोदनेके बाद वहां अुसे फैलाया जाय। जमीनकी अूपरी सतह पर अुसे बिखेर देनेसे काम नहीं चलेगा। कुछ गहराअीमें खाद देनेका मतलब यह है कि जमीनको गहरा हला जाय और अुसमें काफी सिंचाअी की जाय। हमारे देशकी ज्यादातर जमीनको बरसाती हवाकी लहर पर निर्भर रहना पड़ता है। अिसलिअे अुसको गहराअी तक हलना और अुसमें कीमती खाद डालना जुआ खेलने जैसा काम होगा; क्योंकि यह तो हमें कभी भी देखनेको मिल सकता है कि पूरे मौसम भर बरसात नहीं हुअी। हमारे किसानोंकी आर्थिक स्थिति अितनी अच्छी नहीं है कि वे अिस तरहके खतरे मोल ले सकें।

जैसा कि हम पहलेसे ही बता चुके हैं, किसी जमीनमें बनावटी खाद देनेसे पहले अुसकी मिट्टीकी पूरी तरह जांच करके अुसकी जरूरतोंको जान लेना चाहिये। अिसके लिअे अैसे अनुभवी, तालीम पाये हुअे और होशियार 'जमीनके डॉक्टरों'की जरूरत है, जो मिट्टीकी खराबियां और अुन्हें सुधारनेके तरीके जानते हों। जब तक हमें अैसे लोग अितनी तादादमें नहीं मिल जाते कि अुन्हें हरअेक खेतीके लायक जमीनकी देखरेख पर रखा जा सके, तब तक किसानोंके हाथमें बनावटी खाद देना निरा पागलपन होगा। यह तो अेक

अैसी ही बात होगी कि नासमझ बीमारोंके हाथमें मारफिया और अफीम जैसे जहर दे दिये जायं और अन्हें यह न बताया जाय कि वे किस तरह और कितनी मात्रामें अुनका अुपयोग करें। अिसलिअे अगर हम जमीनके लिअे बनावटी खादका दवाअीकी तरह अुपयोग करना भी चाहें, तो अुससे पहले यह निहायत जरूरी है कि हम अिस कामके लिअे बड़ी तादादमें 'जमीनके डॉक्टरों' को तैयार करें। हमारे देशमें मनुष्योंके अिलाजके लिअे ही काफी तादादमें डॉक्टर नहीं मिलते, तब फिर जमीनकी बीमारियोंको जाननेवाले अितने डॉक्टर हमें कहांसे मिल सकते हैं?

अिन सचाअियोंको नजरमें रखकर हमें अफसोसके साथ कहना पड़ता है कि गलत सलाह पाअी हुअी हमारी केन्द्रीय सरकार बनावटी खादकी फेक्टरियोंको फैलाने और अुन्हें बढ़ावा देनेका काम जोरोंसे कर रही है। बिहारके सिन्ध्री नामक स्थानमें बनावटी खादकी फेक्टरियोंकी योजना अमलमें लाअी जा रही है, जिनमें करीब १२ करोड़की कीमतकी विदेशी मशीनें लगेंगी और १० करोड़ रुपया मकानों और दूसरी जरूरी चीजों पर खर्च होगा। हम अुम्मीद करते हैं कि बेहतर सलाह मानकर सरकार अिन आत्मघाती योजनाओंको छोड़ देगी और ज्यादा फायदेमन्द दिशाओंमें खोज-बीन करावेगी, जिससे आज फिजूल बरबाद होनेवाले अैसे रासायनिक पदार्थ काफी मात्रामें मिल सकें, जिनका खाद हमारे खेतोंके लिअे अुपयोगी साबित हो। यही अेक तरीका है जिससे हमें तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाला भोजन मिल सकेगा और हम अुन बेरहम शोषकोंसे बच सकेंगे, जिन्होंने जनताको होनेवाले नुकसानकी कोअी परवाह किये बिना धन अिकट्ठा करनेको ही अपनी जिन्दगीका अेकमात्र ध्येय बना लिया है

हरिजनसेवक, २–३–१९४७ **जे० सी० कुमारप्पा**

## ९३

# ज्यादा पैदावार, कम पोषण

[ दिसंबर १९४६ के 'वेजिटेरियन मेसेंजर'में अेक संपादकीय टिप्पणी छपी हुअी है, जिसका सार नीचे दिया जाता है।

—वा० गो० दे० ]

न्यूज़ीलैण्डकी स्पिनज (पालक) को लेकर मिसूरीके खेती-विभागने यह जाननेके लिअे कुछ प्रयोग किये हैं कि अुसमें पोषक गुण कितना होता है और ज्यादा पैदावार और पोषक गुणके बीच क्या सम्बन्ध है। मामूली स्पिनजमें आक्ज़ैलिक अेसिड बहुत होता है, अिसलिअे अुसमें मौजूद केल-शियमका फायदा नहीं मिलता। छानबीनके नतीजोंसे मालूम हुआ है कि न्यूज़ी-लैण्डकी १०० ग्राम ताजा स्पिनजमें २१ से ३० मिलिग्राम, मामूलीमें ४० से १०० मिलिग्राम और गांठगोभी, फूलगोभी व शलजममें ७५ से २०० मिलिग्राम तक विटामिन 'सी' होता है। सब्जीके हरेपनसे अैसा कोअी ठीक पैमाना मालूम नहीं होता, जिसके मुताबिक अुसके विटामिन या धातुद्रव्योंका अन्दाज लगाया जा सके।

जांचसे मालूम हुआ है कि जब नाअिट्रोजन मिली हुअी दवाओंसे न्यूज़ीलैण्डमें स्पिनजकी पैदावार बढ़ाअी गअी, तो अुसमें विटामिन 'सी' कम हो गया। अिस पर आस्ट्रेलियाके अेक डॉक्टरी पत्रने लिखा था: "ज्यादा पैदावारके लिअे लगातार की जानेवाली खोज पोषक तत्त्वोंके खयालसे नुकसानदेह साबित हो सकती है।" अिस देशमें अिस नतीजेको साबित करनेके लिअे शायद अभी काफी मसाला अिकट्ठा नहीं हुआ है। फिर भी अितना तय है कि जहां सब्जियोंकी खेतीमें बहुत ज्यादा दवाअियोंका खाद काममें लाया गया है, वहां सब्जीकी मात्रा तो बढ़ी है मगर अुसकी लज्जत बहुत खराब हो गअी है। मौसमके शुरूमें गैर-कुदरती कोशिश करके जल्दी पैदा की हुअी सब्जियां भी वसी ही बेलज्जत होती हैं। हम अुनकी कुदरती बढ़तीमें अेक हदसे ज्यादा जितनी दस्तंदाजी करेंगे, अुतना हमें अुनसे कम पोषण मिलेगा। अिसी तरह खानेकी दूसरी चीजोंमें भी होगा।

हरिजनसेवक, २३–३–१९४७

## ९४

# अन्नसंकट और जमीनका अुपजाअूपन

आजका अन्नसंकट हिन्दुस्तानकी जमीनके कम अुपजाअूपनके कारण नहीं है। अिस अनाजकी तंगीके बहुतसे कारण हैं। लेकिन सरकार जमीनको खाद देकर अुसकी पैदावारको बढ़ानेके कदम अुठा कर देशको सचमुच अिस संकटसे बचा सकती थी। दुःख है कि वह अैसा करनेमें असफल रही। अब वह समय आ गया है, जब राष्ट्रीय सरकारको अनाजकी पैदावार बढ़ानेके प्रयत्नमें लग जाना चाहिये। अगर हिन्दुस्तान ज्यादा धान, गेहूं, जुवार, बाजरा वगैरा अनाज, जो कि हिन्दुस्तानकी जनताके भोजनका मुख्य अंग है, पैदा कर सके, तो अकाल या अन्नसंकटका डर बहुत कम हो जायगा। चावल पर निर्भर करनेवाले देशके बहुतसे हिस्सोंको बर्मा, स्याम और दूसरे देशोंके चावलसे हमेशा बहुत बड़ी मदद मिलती रही है। त्रावणकोर राज्यमें हर साल ३,६७,००० टन चावल बाहरसे मंगाया जाता है और अुसकी सालाना पैदावार २,५०,००० टन है। बंगाल और मद्रासको भी बहुत कुछ बाहरके चावल पर निर्भर करना पड़ता है। अिसलिअे यहां अैसे अनाजकी पैदावार बढ़ानेकी काफी गुंजाअिश है, जो नाअिट्रोजन मिले पदार्थोंकी मददसे अच्छी मात्रामें पैदा किये जा सकते हैं।

यह सवाल बार-बार पूछा गया है कि क्या हिन्दुस्तानकी जमीनका अुपजाअूपन बिलकुल खतम हो गया है? लेकिन अभी तक अिसका सन्तोषप्रद अुत्तर नहीं दिया गया है। डॉ० वॉल्करने अपनी पुस्तक 'अिम्प्रूवमेन्ट ऑफ अिंडियन अेग्रिकल्चर' में रॉथेमस्टेड (अिंग्लैण्ड) के नतीजोंके नीचे लिखे आंकड़े दिये हैं, जहां लगातार ५० सालसे खाद न दी हुअी जमीनमें गेहूं पैदा किया जा रहा है:

| | प्रति अेकड़ गेहूं पैदा हुआ |
|---|---|
| ८ साल (१८४४–५१) | १७ बुशल |
| २० साल (१८५२–७१) | १३.९ ,, |
| २० साल (१८७२–९१) | ११.१ ,, (१ बुशल = ३० सेर) |

ये नतीजे बताते हैं कि रॉथेमस्टेडमें बिना खादवाले खेतोंकी पैदावार बहुत धीरे-धीरे घट रही है। डॉ० वॉल्करने अन्तमें कहा है कि आज

हिन्दुस्तानमें जिन हालतोंमें खेती की जाती है, अुससे देशकी जमीन धीरे-धीरे जरूर कम अुपजाअू हो जायगी।

दूसरी तरफ हॉवर्ड और वॉडने अपनी पुस्तक 'वेस्ट प्रॉडक्ट्स ऑफ अेग्रिकल्चर' में यह लिखा है:

"बिना खाद दिये की जानेवाली खेतीका अच्छा अुदाहरण यू० पी० (हिन्दुस्तान) की कछारी जमीनोंमें देखनेको मिलता है। वहांके खेतोंका १० सदीका रेकार्ड यह साबित करता है कि जमीन हर साल अच्छी फसलें देती है और अुसके अुपजाअूपनमें कमी नहीं आती। जमीनमें पैदा होनेवाली फसलोंकी खाद-सम्बन्धी जरूरतोंको और अुपजाअूपनकी कमीको पूरा करनेवाली कुदरती प्रक्रियाओंके बीच वहां पूरा संतुलन हो गया है।"

जी० क्लार्क (यू० पी० के भूतपूर्व खेती-डायरेक्टर) ने अिंडियन सायन्स कांग्रेसके कृषि-विभागके सामने दिये हुअे अपने सभापतिपदके भाषणमें नीचेकी बात कही है:

"जब हम हकीकतोंकी जांच करते हैं, तो जहां तक अुपजाअूपनके शक्तिशाली तत्त्व — नाअिट्रोजन — से लाभ अुठानेका सम्बन्ध है, हमें अुत्तरी हिन्दुस्तानके किसानको दुनियाका सबसे ज्यादा किफायतशारी-वाला और सावधान किसान कहना चाहिये। अिस सम्बन्धमें वह कनाडाके किसानसे ज्यादा होशियार है। वह रासायनिक खादोंके जरिये जमीनमें बहुत ज्यादा नाअिट्रोजन नहीं दे सकता। कुदरत हर साल जो कुछ पौंड नाअिट्रोजन जमीनको देती है, अुसीका फायदा अुठाकर वह यू० पी० की सिंचाअीकी जमीनमें गेहूंकी फसल पैदा करता है, जिसका औसत कनाडाके औसतसे बहुत कम नहीं होता। वह थोड़ेसे नाअिट्रोजनसे जितना लाभ अुठाता है, अुतना शायद ही कहींका किसान अुठाता हो। हमें यू० पी० की जमीनके बारेमें यह चिन्ता नहीं रखनी चाहिये कि अुसका अुपजाअूपन घट जायगा। अुसका आजका अुपजाअू-पन अनिश्चित समयके लिअे कायम रखा जा सकता है। . . . हिन्दु-स्तानमें हम जो फसलें पैदा करते हैं, अुनके लिअे जरूरी नाअिट्रोजनमें और जमीनके अुपजाअूपनको कायम रखनेकी कुदरती प्रक्रियामें पूरा सन्तुलन है।"

सब कोअी जानते हैं कि किसी भी फसलको काटते समय अुसका आधा हिस्सा यानी नीचेके डंठल और जड़ें जमीनमें ही रह जाती हैं, जो मिट्टीको 'सेल्युलोस' (पौधोंकी बढ़तीके लिअे जरूरी पदार्थ) और कार्बनवाले पदार्थ देती हैं। हमारे प्रयोग यह बतलाते हैं कि जब 'सेल्युलोस' वाले और दूसरे शक्ति देनेवाले पदार्थ जमीनमें मिलाये जाते हैं, तो अुसमें नाअिट्रोजनकी मात्रा काफी बढ़ती है। अिससे हम यह नतीजा निकाल सकते हैं कि 'सेल्युलोस' वाले और दूसरे जैव पदार्थोंके ऑक्सीकरण (oxidation) से जमीनकी सतह पर जो नाअिट्रोजन जमता है, वह पौधोंकी जरूरत पूरी करता है। अुष्ण कटिबन्धवाले देशोंमें फसलोंके लिअे जरूरी नाअिट्रोजनकी पूर्ति अुस नाअिट्रोजनसे हो सकती है, जो फसल काटनेके बाद खेतमें रही हुअी 'सेल्युलोस' वाली चीजोंके ऑक्सीकरणसे छोड़ी हुअी शक्तिके कारण हवामें से मिलता है। अिसके अलावा अुष्ण कटिबन्धके देशोंमें बरसातके पानीसे जो नाअिट्रोजन मिलता है, वह समशीतोष्ण देशोंमें मिलनेवाले नाअिट्रोजनसे बहुत ज्यादा होता है। ठण्डे देशोंमें, खास कर जमीनके नीचे तापमान और धूपकी कमीके कारण पैदा हुअी नाअिट्रोजन-जीवाणुओंकी अक्रियताकी वजहसे जमीनमें मिलाये जानेवाले पौधोंके बचे हुअे भागोंके साथ 'सेल्युलोस' वाले और दूसरे शक्तिवाले पदार्थोंका ऑक्सीकरण अुतना जल्दी नहीं होता, जितना कि अुष्ण कटिबन्धवाले देशोंकी जमीनमें होता है। अिसलिअे समशीतोष्ण देशोंकी जमीनमें बहुत ज्यादा नाअिट्रोजन-संयोजन नहीं हो सकता। अिससे यह समझमें आ जाता है कि अूपर रॉथेमस्टेडके जिन खाद न दिये जानेवाले खेतोंका जिक्र किया गया है, अुनकी पैदावार धीरे-धीरे क्यों घटती है। अूपरकी बातोंसे यह मालूम होता है कि अुष्ण कटिबन्धके देशोंमें फसल कटनेके बाद जमीनमें छोड़े या जोड़े हुअे पौधोंके डंठलों और जड़ोंके ऑक्सीकरणसे पैदा होनेवाली शक्तिके कारण हवामें पाया जानेवाला नाअिट्रोजन जमीनको मिलते रहनेके कारण वहांके खेतोंमें लगातार अेकसी फसल आना संभव है। अलबत्ता, बिना खादवाले खेतोंमें वह पैदावार अूंची नहीं रहती। अुष्ण कटिबन्धकी जमीनमें अिस तरह जो नाअिट्रोजन मिलता है, वह आम तौर पर कुल नाअिट्रोजनके १० फी सदीसे ज्यादा होता है, जब कि समशीतोष्ण आबहवावाले देशोंमें अिस तरह मिलनेवाले नाअिट्रोजनकी मात्रा कुल नाअिट्रोजनके १ से २ फी सदीके बीच होती है।

अिसलिअे यह साफ है कि अुष्ण कटिबन्धकी जमीनोंमें पौधोंके विकासके लिअे मिलनेवाले अेमोनियम और नाअिट्रेट आयोन (ion) की मात्रा ठंडे देशोंसे कहीं बड़ी होती है, हालांकि ठंडे देशोंका कुल नाअिट्रोजन अुष्ण कटिबन्धके देशोंके कुल नाअिट्रोजनसे दुगुना या तिगुना हो सकता है।

## खाद देनेका नया और पुराना तरीका

खाद दो तरहसे दिया जाता है: अेक नाअिट्रेट, अेमोनियम सल्फेट वगैरा जैसे काफी नाअिट्रोजनवाले पदार्थ खेतमें डालकर; दूसरे, कार्बनवाले पदार्थ जोड़कर, जो हवामें मिलनेवाले नाअिट्रोजनके संयोजनमें मदद कर सकते हैं। जमीनके अुपजाअूपनका कारण अेमोनिया और नाअिट्रेटके रूपमें मिलनेवाला नाअिट्रोजन है। और अिस नाअिट्रोजनकी मात्राको बढ़ाकर ही जमीनका अुपजाअूपन बढ़ाया जा सकता है।

जहां तक अजैव (inorganic) खादोंका सम्बन्ध है, अेमोनियम सल्फेट, अेमोनियम नाअिट्रेट वगैरा जैसे रासायनिक खाद, जो संभवतः भारतमें बनाये जायंगे, न तो स्थायी रूपसे जमीनको समृद्ध बनाते हैं और न अुसका अुपजाअूपन बढ़ाते हैं। अिनमें से ज्यादातर खाद नाअिट्रोजन गैसके रूपमें नष्ट हो जाते हैं और जमीनको कोअी नाअिट्रोजन नहीं देते। अिसलिअे जिन जमीनोंमें अैसे खाद दिये जाते हैं, अुनकी पैदावार कुछ समयके लिअे चाहे बढ़ जाय, लेकिन आम तौर पर वे बिगड़ जाती हैं और संभवतः अुनके नाअिट्रोजनकी मात्रा घट जाती है। दूसरी तरफ, गोबर, खलिहानोंमें तैयार किया हुआ खाद, राब वगैरा जैसे जैव (organic) खाद न सिर्फ खेतोंके नाअिट्रोजनको बढ़ाते हैं, बल्कि हवामें मिलनेवाले नाअिट्रोजनके संयोजनसे जमीन भी समृद्ध बनती है। गोबर या राबकी कीमत अुसकी नाअिट्रोजनके संयोजनकी शक्ति पर निर्भर करती है। रॉथेमस्टेडमें रासायनिक खादोंका कोअी भी मिश्रण सालाना फसलको अेकसी बनाये रखनेमें खलिहानके खाद जैसा असरकारक साबित नहीं हुआ। और जब लगातार ६० बरस तक खलिहानका खाद दिया गया, तो जमीनका नाअिट्रोजन पहलेसे करीब तीन गुना बढ़ गया। लेकिन अेमोनियम सल्फेट और सोडा नाअिट्रेटसे जनीनका नाअिट्रोजन धीरे-धीरे घटने लगा। अिसी तरह जब अिलाहाबादमें रासायनिक खादोंकी जगह गोबर, राब, पौधोंके पत्तों वगैरा जैसा सजीव खाद दिया गया तो ज्यादा अच्छे नतीजे आये। जब जमीनमें सजीव खाद डाला जाता है, तो धूप

जमीनका नाअिट्रोजन बढ़ानेमें मददगार साबित होती है। अिलाहाबादके प्रयोगोंसे यह बात सिद्ध हो चुकी है कि नाअिट्रोजनके संयोजनकी प्रक्रिया बगैर जीवाणुओं (bacteria) के भी हो सकती है; और वह जीवाणुओंके पूर्ण अभावमें भी तुरन्त हो सकती है, अलबत्ता अुसका वेग कम रहेगा।

सजीव खादोंके समर्थनमें डॉ० जी० रुशमन कहते हैं:

"आजके सारे वैज्ञानिक और व्यावहारिक प्रयत्नोंका ध्येय जमीनका अुपजाअूपन बढ़ाना है, लेकिन यह रासायनिक खादोंसे नहीं बढ़ाया जा सकता। अिनके कारणसे जमीनका ह्यूमस ज्यादा तेजीसे नष्ट होता है, अिसलिअे वे दरअसल नुकसानदेह हैं। जमीनके गुण बढ़ाकर पैदावार बढ़ाना और अुसमें पौधोंकी खुराक डालकर ज्यादा पैदावार लेना, दोनों अलग चीजें हैं। अकसर अिन दोनोंको गलतीसे अेक समझ लिया जाता है। दूसरा काम रासायनिक खादोंकी मददसे किया जा सकता है, जो तुरंत काम करते हैं। दूसरी तरफ, जमीनको अच्छी बनानेमें लम्बा समय लगता है। खास तौर पर खनिजोंसे भरी जमीनमें जरूरी ह्यूमस पैदा करनेके बनिस्बत ह्यूमससे समृद्ध जमीनके अुपजाअूपनको टिकाये रखना ज्यादा आसान है। . . . प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सारे पौधा-जगत और प्राणी-जगतका जीवन जमीनके ह्यूमससे ही संभव होता है। अिसलिअे आज जो जैव पदार्थ बरबाद किये जाते हैं, अुनका जमीनका ह्यूमस बढ़ानेमें व्यवस्थित रूपसे अुपयोग करना चाहिये। मनुष्य और पशु-जगतके बेकार समझकर फेंके हुअे चर्बीवाले या नाअिट्रोजनवाले अवशिष्ट पदार्थोंकी तरफ ज्यादासे ज्यादा ध्यान देना चाहिये।"

हिन्दुस्तान जैसे गरीब और गरम देशके लिअे तो खलिहानका खाद (गोबर) या राब, पत्ते, पौधोंके बचे हुअे हिस्से वगैरा जैसे कार्बनके मिश्रणोंसे समृद्ध पदार्थ ही सबसे अच्छा खाद हो सकते हैं। जब ये चीजें बड़ी मात्रामें न मिलें, तो अुन्हें हिन्दुस्तानमें तैयार किये गये अेमोनियम सल्फेट, अेमोनियम नाअिट्रेट या यूरिया (स्तनपायी प्राणियोंके पेशाबमें पाया जानेवाला यौगिक पदार्थ) के साथ मिलाया जा सकता है। विदेशोंसे रासायनिक खाद खरीदना महंगा पड़ेगा और देशके गरीब किसान अिस स्थितिमें नहीं हैं कि वह खाद खरीद सकें।

## गोबर जलाना गुनाह है

जैसा कि अूपर समझाया गया है, जमीनके गुण बढ़ाने और अुसकी पैदावार अेकसी बनाये रखनेके लिअे गोबर या खलिहानका खाद निश्चित रूपसे सबसे अच्छा है। अगर अुसका ठीकसे अुपयोग किया जाय, तो वह हिन्दुस्तानके गरीब किसानके लिअे सचमुच वरदान साबित हो सकता है, क्योंकि अुससे कम पैसेमें काफी अच्छी मात्रामें अेकसी फसल मिल सकती है। यह बड़े दुःखकी बात है कि गोबरका खाद सबसे सस्ता और फायदेमन्द होते हुअे भी भारतीय किसान अुसे जला डालता है। वह नहीं जानता है कि अैसा करके वह अपना पैसा ही जला रहा है। लेकिन यह सवाल पैदा होता है कि वह अींधनके रूपमें गोबरके सिवा और क्या जलाये? दुर्भाग्यसे गोबरसे ही अुसे सस्ता अींधन मिल सकता है। पहलेकी सरकारने अिस महत्त्वपूर्ण समस्याकी सर्वथा अुपेक्षा की है और आजकी सरकारके पास अिसकी कोअी योजना नहीं है। राष्ट्रीय सरकारको, जो हिन्दुस्तानकी खेतीको सुधारनेके लिअे बीसों योजनायें हाथमें लेना चाहती है, कोअी दूसरा अींधन प्राप्त करके और गोबरको खादके ही लिअे रखकर भारतीय किसानकी हालत सुधारनेके लिअे कोअी कदम अुठाना चाहिये। वृक्षारोपणको बढ़ावा देना अिस दिशामें अुपयोगी हो सकता है, या जहां संभव हो वहां कोयला जलानेके लिअे दिया जा सकता है।

यह सुझाया गया है कि खेतोंमें डालनेके लिअे कम्पोस्ट (मिश्र खाद) तैयार करनेसे बड़ा फायदा होगा। लेकिन सारी दुनियाके किसानोंका यह अनुभव है कि कम्पोस्ट बनानेका तरीका सख्त मेहनतवाला और थकानेवाला होता है। अिसलिअे वे अुसे बनानेमें सच्चा अुत्साह नहीं दिखाते। खेतोंकी मिट्टीमें हरे और सूखे पत्ते, कागज, घास, कूड़ा-करकट वगैरा डालकर नाअिट्रोजनके संयोजनके प्रयोग करनेसे हमारी यह राय बनी है कि कम्पोस्ट बनानेके पहले ही पौधोंके बचे हुअे भागोंको खेतोंमें खादके रूपमें डालना ज्यादा फायदेमन्द है। जब ये बचे हुअे हिस्से खेतोंमें डाले जाते हैं और बरसातके पहले हलसे मिट्टीमें मिला दिये जाते हैं, तो तीन महीनेके भीतर वे काफी सड़ जाते हैं और नाअिट्रोजन-संयोजनके लिअे जरूरी शक्ति छोड़नेके साथ ही साथ अिन चीजोंके कार्बनका जमीनकी सतह पर ऑक्सीकरण भी हो जाता है। अिसलिअे पौधोंके बचे हुअे हिस्से (डंठल, जड़ें वगैरा) जब

सीधे जमीनमें मिलाये जाते हैं, तो वे न सिर्फ अपनेमें रहा हुआ नाअिट्रोजन, पोटास वगैरा ही देते हैं, बल्कि जमीनकी सतह पर काफी मात्रामें नाअिट्रोजनका संयोजन करके अुसे समृद्ध भी बना सकते हैं। अगर पौधोंके बचे हुअे ये भाग जरूरतसे बहुत ज्यादा न हों, तो वे मिट्टीमें मिलानेके तीन महीनेके अन्दर ही काफी सड़ जाते हैं और अुनका ऑक्सीकरण हो जाता है; और मिट्टीके कार्बन-नाअिट्रोजनका अनुपात सामान्य हो जाता है। ह्यूमस, अणु-समह दशामें रहनेवाला (colloidal) पदार्थ और नाअिट्रोजनकी मात्रा —सब बढ़ जाते हैं। जमीनकी जुताअी, नमी कायम रखनेकी शक्ति और नाअिट्रोजनको सुरक्षित रखनेकी शक्तिमें काफी सुधार हो जाता है। मिश्र खाद बनानेका ध्येय होता है पौधोंके बचे हुअे भागोंमें मूल रूपसे रहे हुअे कुल नाअिट्रोजनकी रक्षा करना और अुसे मिश्र खादके कार्बनके साथ जमीनमें जोड़ना। हमारे तरीकेसे पौधोंके बचे हुअे हिस्सोंको सीधे जमीनमें मिलानेसे न सिर्फ मूल चीजोंमें रहा नाअिट्रोजन जमीनमें जुड़ता है, बल्कि वायु-नाअिट्रोजनके संयोजनके कारण जमीनमें नाअिट्रोजनकी मात्रा भी काफी बढ़ती है। अिससे यह मालूम होता है कि पौधोंके बचे हुअे हिस्सोंका मिश्र खाद बनानेके बजाय अुन्हें सीधे जमीनमें मिलाना ज्यादा फायदेमन्द है, क्योंकि अुष्ण कटिबन्धके देशोंका अूंचा तापमान और धूप अिसमें मदद करते हैं।

सच पूछा जाय तो अजैव या रासायनिक खाद जमीनके गुणोंको बढ़ानेमें कोअी मदद नहीं करता। हां, जरूरत पड़ने पर वह ज्यादा अच्छी फसल पानेमें अुपयोगी साबित हो सकता है। यह जानकर खुशी होती है कि हिन्दुस्तानमें भी खादके कारखाने खुलनेवाले हैं। लेकिन सरकारको यह हकीकत मालूम होनी चाहिये कि जब तक हम चीन और जापानके साथ खाद तैयार करनेमें होड़ नहीं लगा सकते, तब तक यहां तैयार किये हुअे खादका नतीजा कुछ साल पहले हुअे गुड़ (शक्कर) के नतीजेसे बेहतर नहीं हो सकता। यह आर्थिक दृष्टिसे लाभ और बुद्धिमानीकी बात नहीं होगी कि बिहारमें कारखाना खोला जाय और अुसके लिअे कच्चा माल (जिप्सम) लगभग ८०० मील दूर राजपूतानेसे लाया जाय।

हिन्दुस्तानमें यूरिया, अेमोनियम नाअिट्रेट, अेमोनियम सल्फेट वगैरा खाद तैयार किये जा सकते हैं।

## अूसर जमीनको अुपजाअू बनाना

क्षारवाली जमीनके खास दोष ये हैं :

१. खारापन। हमने बुरी अूसर जमीनके कअी नमूनोंकी जांच की है। अुससे पता चला है कि अुसमें क्षारकी मात्रा बहुत ज्यादा होती है।

२. मामूली मिट्टियोंके बजाय क्षारवाली मिट्टीमें केल्शियमके यौगिकों (compounds) की मात्रा कम होती है। मामूली मिट्टियोंके बजाय अिस मिट्टीमें अेक-दूसरेसे बदले जानेवाले क्षारोंकी मात्रा कम होती है।

३. अिसमें नाअिट्रोजनकी मात्रा बहुत थोड़ी होती है। जो बहुतसे नमूने हमने जांचे, अुनमें कुल नाअिट्रोजन ०.००८ फी सदीसे लेकर ०.०२ फी सदी तक था। अुष्ण कटिबन्धवाले देशोंकी मामूली मिट्टियोंमें लगभग ०.०५३ फी सदी नाअिट्रोजन रहता है।

४. अुस मिट्टीमें पानी बहुत मुश्किलसे प्रवेश कर पाता है। यानी वह फोसरी नहीं होती।

५. जब अिस मिट्टीके कणोंको पानीमें हिलाया जाता है, तो वे तुरन्त नीचे नहीं बैठते।

६. अुसमें जीवाणुओंकी क्रियाका अभाव रहता है।

यह अंदाज लगाया गया है कि सिर्फ संयुक्त प्रान्तमें ही अैसी अूसर जमीनका क्षेत्रफल ४० लाख अेकड़से ज्यादा है। पंजाब (लायलपुर, मान्टगुमरी और दूसरी जगहोंमें), बिहार, मैसूर, सिन्ध और बम्बअी प्रान्तमें अैसी अनुपजाअू जमीनके बड़े-बड़े हिस्से हैं। स्वभावतः अिन अूसर जमीनोंको खेतीके लायक बनानेकी समस्या हिन्दुस्तानके लिअे बड़ा महत्त्व रखती है। जो क्षार अिन जमीनोंको अूसर बनाते हैं वे हैं : कार्बोनेट, बाअिकार्बोनेट, सल्फेट और सोडियम क्लोराअिड। सोडियम कार्बोनेट अैसी जमीनको अूसर बनानेके लिअे खास तौर पर जिम्मेदार है। ये जमीनें सामान्यतः भारी मिट्टीवाली होती हैं और अक्सर पड़ती जमीनें कही जाती हैं। सिन्धमें और देशके दूसरे भागोंमें साधारण (normal) जमीनें सिंचाअीके पानीसे अूसर जमीनोंमें बदलती जा रही हैं। अिसके अलावा, बंगाल, अुड़ीसा, गुजरात, बम्बअी और मद्रास प्रान्तोंमें समुद्रके पानीसे बिगड़ी हुअी जमीनोंके बड़े बड़े हिस्से हैं। अूपर बताये गये विभिन्न कारणोंसे हिन्दुस्तानमें अूसर जमीनकी मात्रा बढ़ती जा रही है।

स्वर्गीय डॉ० जे० डब्ल्यु० लेदरने संयुक्त प्रांतके विभिन्न हिस्सोंमें अूसर जमीनोंको खेतीके लायक बनानेके प्रयोग किये थे। वे अिन नतीजों पर पहुंचे थे :

१. जो अेकमात्र प्रयोग सचमुच अूसर जमीनको खेतीके लायक बनानेका दावा कर सकता है, वह है जिप्सम (केल्शियम सल्फेट नामक खड़ियाका प्रचलित नाम) के अुपयोगका। अुसमें अूसर जमीनको अुपजाअू बनाने लायक जिप्समकी मात्रा डालनेका खर्च बहुत ज्यादा आया था — अेक अेकड़के पीछे लगभग ७०० से ८०० रुपये तक। साफ है कि अिसका अुपयोग बहुत महंगा पड़ता है। अगर जिप्समकी कीमत घटाकर आधी की जा सके तो भी यह तरीका बहुत महंगा पड़ेगा, यदि अुसका अुसी मात्रामें अुपयोग करना पड़े जितना कि अिस जमीनको अुपजाअू बनानेके लिअे करना पड़ा था।

२. अूसर जमीनको अुपजाअू बनानेके लिअे ज्यादा खाद देकर गहरी और अच्छी जुताअी करनेका सचमुच वह नतीजा नहीं हुआ, जो हमारी आंखोंको दिखाअी देता है या जिसकी आशा की जा सकती है। जमीनकी अूपरी सतह तो जाहिरा तौर पर खेतीके लायक हो गअी है, पर अिसके नीचेकी जमीन वैसी ही अूसर बनी हुअी है।

३. क्षारोंको खुरचकर निकाल देना व्यावहारिक दृष्टिसे बेकार है। हालमें डॉ० दलीपसिंह और मि० अेस० डी० निझावानने लायलपुर, लालकाकू, माण्टगुमरी, और बारा फार्मकी जमीनको जिप्सम और केल्शियम क्लोराअिडके मिश्रणका अुपयोग करके अुपजाअू बनानेकी कोशिश की है। और अुन्हें अिस काममें थोड़ी सफलता भी मिली है। अुन्होंने कहा है कि अिस मिश्रणके अुपयोगके चार साल बाद जमीनका फोसरापन काफी बढ़ता है और जमीनके खेतीके लायक बननेकी प्रक्रियामें चार साल लगते हैं। यही समय जिप्सम या सल्फरका पाअुडर अिस्तेमाल करनेके बाद भी जरूरी होता है।

अिसके लिअे गुड़की राब भी काममें ली जा सकती है। कानपुर और अिलाहाबादके पास और मैसूर रियासतमें अेक अेकड़ पीछे १ से १० टन तक राबका अुपयोग करके अूसर धरतीको कामयाबीके साथ खेतीके लायक बनाया गया है। और अिन हिस्सोंमें, जहां पहले कोअी वनस्पति नहीं अुगती थी,

चावलकी अच्छी फसल पैदा की गअी है। हमने सोराअूं (अिलाहाबादके पास) और अुन्नावके सरकारी फार्ममें अेक अेकड़ पीछे २ से ५ टन तक राबका अुपयोग करके बहुत बढ़िया चावलकी फसल ली है। मैसूर सरकारने अैसी अूसर धरतीमें, जहां पहले कोअी फसल नहीं अुगती थी, अेक अेकड़ पीछे अेक टन राबका अुपयोग करके १२०० से १८०० पौंड चावल पदा किया है।

अिलाहाबाद, बंगलोर, जावा, हवाअी और दूसरे शक्कर पैदा करनेवाले देशोंमें जो खोज की गअी है, अुससे मालूम होता है कि जब राब कार्बोनिक अेसिडके साथ जमीनमें मिलाअी जाती है, तो अुसके सड़नेके शुरूके दर्जोंमें और अुसमें (राबमें) रहे हुअे कार्बोहाअिड्रेटके आंशिक ऑक्सीकरणके दरमियान अेसेटिक, प्रोपायोनिक, बटाअिरिक, लेक्टिक वगैरा जैसे जैव अेसिड पैदा होते हैं। फलस्वरूप राबमें रहे हुअे अेसिड और अुसके सड़ने तथा अुसमें रहे हुअे कार्बोहाअिड्रेटके आंशिक ऑक्सीकरणसे पैदा होनेवाले अेसिड अूसर भूमिके क्षारोंको बेकार बना सकते हैं। अिसके अलावा, सड़ने और कार्बोहाअिड्रेटके आंशिक ऑक्सीकरणसे बड़ी मात्रामें जो कार्बोनिक अेसिड पैदा होता है, वह सोडियम कार्बोनेटको बाअिकार्बोनेटमें बदल सकता है। साथ ही राब मिली हुअी जमीनमें से कार्बोनिक अेसिडके निकलनेकी प्रक्रियामें जमीन फोसरी बनती है और अुसकी जुताअीमें अुन्नति होती है। अिलाहाबादकी छान-बीन निश्चित रूपसे यह बताती है कि राब मिली मिट्टीमें नमीकी मात्रा अुस मिट्टीसे काफी ज्यादा होती है, जिसमें राब नहीं मिलाअी जाती। राबके साथ जो चूना जमीनमें मिलाया जाता है, वह राबसे बने जैव अेसिडोंकी मददसे घुलने लायक बना दिया जाता है और सोडियमवाली मिट्टीको केल्शियमवाली मिट्टी बनानेमें मदद पहुंचाता है। अिसके अलावा, राबमें थोड़ी मात्रामें जो सल्फरिक अेसिड रहता है, वह मिट्टीके केल्शियम कार्बोनेटको केल्शियम सल्फेटमें बदल देता है, जिसकी क्षारोंके साथ प्रतिक्रिया होती है और अूसर जमीन खेतीके लायक बनती है।

शक्करके कारखानोंमें असावधानीसे गिरनेवाले रस, राब वगैराके कारण जो कीचड़ होता है, वह भी अूसर जमीनको खेतीके लायक बनानेमें बड़ा अुपयोगी साबित होता है। अिसमें बहुत बड़ी मात्रामें कार्बोहाअिड्रेट और केल्शियमके यौगिक रहते हैं। हर अेकड़के पीछे आधेसे अेक टन तक तिल,

मूंगफली वगैराकी खलीका अुपयोग करके अूसर जमीनोंको कामयाबीसे चावलकी फसल पैदा करने लायक बनाया गया है।

**डॉ० अेन० आर० धर**

[ अिस लेखमें जो सुझाव पेश किये गये हैं, वे ध्यान देने और अमल करने लायक हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि अगर जमीनमें अुचित ढंगसे खाद दिया जाय और समझके साथ जमीनका अुपयोग किया जाय, तो अनाजकी कमीका सारा डर दूर हो जाना चाहिये। **—मो० क० गांधी** ]

हरिजन, १७–८–१९४७

## ९५

## कचरेमें से सोना

गांववालोंके सवालोंको समझनेके लिअे जबसे मैंने किसानोंकी-सी जिन्दगी बितानी शुरू की है, तबसे मैं अेक ही दृढ़ निश्चय पर पहुंची हूं। गांवके जिन अनेक सवालोंका हल हमें खोज निकालना है, अुनमें खाद तैयार करनेका सवाल सबसे महत्त्वपूर्ण है। मामूली किसान खाद तैयार करनेकी कोअी कोशिश नहीं करता। आम तौर पर गोबर और कूड़े-करकटके छोटे-मोटे ढेर अिकट्ठे कर दिये जाते हैं, जिनको मिलानेकी कभी मेहनत नहीं की जाती। ये ढेर या तो गड्ढोंमें होते हैं या समतल जमीन पर। बरसातके दिनोंमें वे खुले पड़े रहते हैं, अिसलिअे वे कुछ हद तक सड़ते हैं और बादमें अुन्हें खेतोंमें कहीं कम कहीं ज्यादा फैला दिया जाता है। अिस तरह जो खाद किसानोंके पास अिकट्ठा होता है, अुसका वे कम-से-कम फायदा अुठाते हैं। हिन्दुस्तानके गांवोंमें खादकी कमीका सबसे बड़ा कारण यह बताया जाता है कि गांववाले गोबरका बहुत बड़ा भाग अींधनके काममें ले लेते हैं। लेकिन अिस अींधनको किसी प्रकार कम किये बिना भी आज खादके लिअे जितना गोबर अिकट्ठा किया जाता है, अुससे दुगुना तो किया ही जा सकता है। अिसमें से बहुतसा तो बंधे हुअे ढोरोंके पांव तले रौंदा जानेसे बरबाद हो जाता है। अिससे भी ज्यादा चरागाहोंमें पड़ा रह जाता है। अगर अिस तरह बरबाद होनेवाले सारे गोबरको बचाया जाय और घरके बाड़ों और

गांवकी गलियोंमें हमेशा पड़े रहनेवाले कचरेको नियमित रूपसे अिकट्ठा करके दोनोंको ठीक तौरसे मिला दिया जाय, तो आज जितना खाद तैयार किया जाता है अुससे दुगुना किया जा सकता है। अिस तरहके खादसे फायदा भी कअी गुना ज्यादा होगा।

कृत्रिम या बनावटी खादोंको तैयार करनेके लिअे बड़े-बड़े कारखाने खोलनेके बजाय बाड़ोंमें खाद तैयार करनेके सवालको हल करना ज्यादा जरूरी है। बनावटी खाद तैयार करनेके लिअे बहुत बड़ी पूंजी, बड़ी-बड़ी मशीनों और कअी निष्णातोंकी जरूरत होती है और अिस तरह तैयार किया हुआ बनावटी खाद अेक अरसे तक तो सात लाख गांवोंमें से कुछ ही गांवों तक पहुंच सकेगा। अिस खादको बरतनेमें भी बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। लेकिन जो खाद बाड़ोंमें तैयार किया जाता है, अुसके लिअे न तो भारी पूंजीकी जरूरत है, न बड़े-बड़े कल-कारखानों या निष्णातोंकी। अिसकी सारी सामग्री अिकट्ठा करनेवालेका रास्ता देखती हुअी गांवोंमें ही बिखरी पड़ी रहती है। किसान अपने मामूली औजारोंसे ही यह सारा काम पूरा कर सकता है। सीधे-सादे तरीकोंसे बनाया जानेवाला यह बाड़ोंका खाद सारी दुनियामें सब खादोंसे अच्छा और सबसे कम नुकसानदेह माना जाता है।

किसान-आश्रममें मैंने सादे-से-सादे तरीकोंसे खाद तैयार करनेके प्रयोग शुरू किये हैं। यह काम अभी प्रारंभिक अवस्थामें है, अिसलिअे अिसके बारेमें कोअी ठीक आंकड़ों या ठीक समयका विवरण तो मैं नहीं दे सकती, लेकिन जो तरीका आज मैं काममें ले रही हूं अुसका ब्योरा अिस तरह है: २ फुट गहरा, २२ फुट लंबा और १० फुट चौड़ा अेक खड्डा खोदा जाता है। (हर रोज जितना गोबर और कचरा काममें लिया जाय, अुस हिसाबसे खड्डेकी लंबाअी-चौड़ाअीमें फर्क किया जा सकता है।) हर रोज घास-पत्तियां और दूसरी तरहका मामूली कचरा अिकट्ठा किया जाता है और खड्डेके किनारे पर अुसका ढेर लगा दिया जाता है। अिस कचरेके पास ही अलगसे गोबर और घोड़ेकी लीदका ढेर लगा दिया जाता है। दिनके अखीरमें कचरेकी पतली तह खड्डेके आधेसे ज्यादा हिस्सेमें फैला दी जाती है और अुसके अूपर तोड़े हुअे गोबरकी पतली तह हाथसे फैला दी जाती है। अिस तरह रोज-रोज ज़ितना गोबर और कचरा अिकट्ठा किया जाता है, अुसी हिसाबसे अुसकी अेक तह पर दूसरी तह बिछा दी जाती है। गोबर और

लीदको धूप और हवाके बुरे असरसे बचानेके लिअे सबसे अूपरकी तह हमेशा कचरेकी रखी जाती है। हर तीसरे दिन अिन तहों पर अितना पानी छिड़का जाता है कि वे गीली हो जायं। जब आधा खड्डा भर जाता है, तो खाद मिट्टीकी पतली तहसे ढंक दिया जाता है और ६ से ८ हफ्तों तक पड़ा रहने दिया जाता है। अिसके बाद अुसे खड्डेके दूसरे आधे हिस्सेमें खींच लाया जाता है। खींचते वक्त यह खयाल रखा जाता है कि जमी हुअी तहोंके पतले और खड़े टुकड़े किये जायं। अिस तरह जब खाद खड्डेके दूसरे आधे हिस्सेमें फैला दिया जाता है, तो अुसे फिरसे पानीसे तर किया जाता है और मिट्टीसे ढंक दिया जाता है। फिर दूसरे ६ से ८ हफ्ते बीत जानेके बाद अुस खादकी जांच की जाती है और अगर वह काफी सड़ चुका होता है, तो अुसे खड्डेसे बाहर निकालकर जमीन पर अिकट्ठा कर दिया जाता है और मिट्टीसे ढंक दिया जाता है। अब वह जरूरतके मुताबिक कभी भी काममें लिया जा सकता है। अगर खादके दानोंके अलग-अलग हो जानेमें किसी तरहकी कसर रह जाती है, तो अूपर बताये गये तरीकेसे अेक बार फिर अुसे खड्डेके दूसरे आधे हिस्सेमें खींच लिया जाता है। बरसातमें अिस खड्डे पर छप्पर डाल देना जरूरी है।

किसानकी आजकी अशिक्षित मानसिक स्थितिमें अुससे अितना करा लेना भी बड़ा कठिन काम होगा। अिससे ज्यादा बारीक तरीका तो शायद असफल ही साबित हो। मगर मेरा यह तरीका पूरी तरह कारगर साबित होगा।

अिस तरहके कामके पूरे-पूरे आंकड़े पानेके लिअे खाद तैयार करनेके अलग-अलग तरीकोंका प्रयोग किया जाना चाहिये और दो या तीन सालकी फसलोंके नतीजेकी जांच की जानी चाहिये। लेकिन मैंने अिस विषयके ठीक आंकड़े दिखानेका अिन्तजार किये बिना ही यह बात अिसलिअे सामने रख दी है कि हम सब, जो अिस तरहके काममें दिलचस्पी लेते हैं, अपने विचारों और प्राप्त किये गये परिणामोंकी रिपोर्टोंके आदान-प्रदानसे अेक-दूसरेकी कोशिशोंमें सहयोग दे सकें। नअी प्रान्तीय सरकारें ज्यों ही काम करने लगें, त्यों ही अुनके कृषि-विभागोंको यह काम बिना किसी देरीके हाथमें लेना चाहिये। और हमारा फर्ज होगा कि हम अपने अिन सरल और व्यावहारिक तरीकोंसे अिस काममें प्रान्तीय सरकारोंकी मदद करें।

किताबोंमें चीनके खाद तैयार करनेके सरल देशी तरीकोंका वर्णन मिलता है। वहांके लोग बड़े पुराने जमानेसे अिस कलाका अुपयोग करते आये हैं। यह भी सुना जाता है कि चीनी किसान हिन्दुस्तानी किसानसे चौगुनी फसल लेता है। अिसके साथ ही चीनके गांव भी खूब साफ-सुथरे रहते हैं, क्योंकि वहांका सारा कूड़ा-कचरा खादके गड्ढोंमें अिकट्ठा करके डाल दिया जाता है। हिन्दुस्तानके हमारे गांवोंमें सालके शुरूसे आखिर तक कूड़ा-करकट छितरा पड़ा रहता है। अगर हम अुसे ठीक ढंगसे काममें लें, तो यह सारा कचरा सोना बनाया जा सकता है।

**मीराबहन**

हरिजनसेवक, १४–४–१९४६

## ९६

## कचरेसे कंचन*

मदुराके सहकारी बिक्री-मंडलने १९३७-३८ में मदुरा म्युनिसिपल कौंसिलसे रु० २५,००० में मैले और कचरेको अुठानेका ठेका लिया। अिससे पहले अैसे ठेके अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा लिये जाते थे, जो मैले और कचरेको आसपासके गांवोंके किसानोंको अपनी शर्तों पर देते थे और अुस कचरेका वैज्ञानिक ढंगसे खाद बनानेका कोअी प्रयत्न नहीं करते थे। वे मैलेका ढाअी रुपया और कचरेका १२ आने प्रति गाड़ी किसानोंसे लेते थे। काम करनेमें लगनेवाले खर्चका अन्दाजी हिसाब लगाकर बिक्री-मंडलने कीमतको अेकदम घटाकर मैलेके रु० १–१२–० और कचरेके ९ आने प्रति गाड़ी कर दिये। कचरेकी गाड़ीके दाम बादमें और भी घटाकर ७ आने कर दिये गये थे, और अनुभवसे यह मालूम हुआ था कि ये कीमतें और भी घटाअी जा सकती थीं। पर दुर्भाग्यसे अैसा न किया जा सका; क्योंकि ठेका १९३८-३९ के लिअे फिरसे बिक्री-मंडलको नहीं दिया गया। कीमतमें यह कमी करनेके बावजूद भी सालके आखिरमें

---

* 'मद्रास जर्नल ऑफ कोऑपरेशन', जिल्द ३०, नम्बर १ में प्रकाशित श्री जी० जी० स्पिटलर, डेप्युटी रजिस्ट्रार, कोऑपरेटिव सोसाअिटिज़, मदुरा के 'मदुरामें म्युनिसिपैलिटीके कचरेको सहकारी पद्धतिसे देना' लेखके आधार पर।

बिक्री-मंडलके पास रु० १०,८९६ का खालिस नफा बच रहा था। अिससे पता चलता है कि व्यक्तिगत ठेकेदार पहले गांववालोंका कितना ज्यादा शोषण करते थे। बिक्री-मंडलका यह नफा भी अुसके सदस्य बननेवाले किसानोंको, जिनकी संख्या २७६ है, अुनके द्वारा की गअी खरीदीके अनुपातसे बांट दिया जायगा। अिस तरह नफा बांटनेका मतलब यह हुआ कि चुकाअी हुअी कीमतके हर रुपयेमें दो आनेकी और कमी हुअी।

कचरेकी कीमतमें कमी करना ही बिक्री-मंडलकी मुख्य कामयाबी नहीं है। अुसने यह जांच करना शुरू किया है कि वह अुस कचरेका अच्छेसे अच्छा अुपयोग कैसे करे, ताकि किसानोंको सस्ता खाद दे सके और वह भी कमसे कम खतरनाक और बदबूवाले रूपमें। अुसने 'अिन्दौर-पद्धति' को काममें लिया और अुसे सादा पाया। वह तरीका अैसा था : अेक चौड़ी लेकिन छिछली खाअीकी सतह पर मैले और कचरेकी अेकके बाद अेक परत अिस तरह बिछा दी जाती थी कि कचरेकी चार परतोंके बीच मैलेकी तीन परतें आ जायं। अिस तरह करनेके दो दिन बाद सारा मिश्रण अुलट दिया जाता था। अिस तरीकेको दो हफ्तों तक दोहराया जाता था। और बीच-बीचमें अूपरी सतह पर, यदि वह बहुत सूख जाती तो, पानी छिड़क दिया जाता था। करीब चार हफ्तोंके बाद यह मिला हुआ पदार्थ खादके रूपमें काममें लेने लायक हो जाता था। दो गाड़ी कचरे और अेक गाड़ी मैलेसे सादा मिश्र खाद तैयार किया जाता था। यद्यपि यह खाद बुरी बदबू नहीं देता था और बाड़ेमें होनेवाले खादके बराबर ही गुणवाला होता था, तब भी अिसकी कीमत बहुत ज्यादा होती थी, यानी वह बाड़ेमें होनेवाले खादसे दुगुना महंगा पड़ता था। मद्रास सरकारके खेती-संबंधी रसायनशास्त्रीकी मददसे बिक्री-मंडलने कअी तरहके प्रयोग किये और आखिरमें कचरे और मैलेको ४ : १ के अनुपातमें मिलानेका तय किया। अिससे खाअियां खोदनेका खर्च बच गया और ढेर लगानेके तरीकेसे ही मिश्र खाद बनने लगा। अिस तरह अेक गाड़ी खादकी लागत कीमत ढाअी रुपयेसे रु० १–१०–० पर आ गयी। ये प्रयोग न केवल प्रयोगशालामें ही किये गये, बल्कि बिक्री-मंडलने किसानोंको ये प्रयोग अपने खेतोंमें करनेके लिअे तैयार किया और अिस तरह विज्ञानके ज्ञान व अनुभवको ग्रामीण क्षेत्रोंमें फैलानेमें मदद दी। दूसरी मुख्य सेवा खतरनाक और बदबूदार मैलेको फायदेमन्द खादके रूपमें बदलनेकी थी। यदि यह सोचा जाय कि

व्यक्तिगत ठेकेकी पद्धतिमें गांवोंमें जिस जगह खाद अेकत्र किया जाता था, अुसके आसपासकी सारी जगह बहुत ज्यादा गन्दी व बदबूभरी हो जाती थी, तो यह सेवा कोअी मामूली नहीं लगेगी। अिस तरह कचरेके अुपयोगका ठीक बन्दोबस्त करके बिक्री-मंडलने सफाअी और आरोग्यको बढ़ाने और जन-स्वास्थ्यकी रक्षा करनेका अेक पदार्थपाठ दिया।

**वैकुण्ठभाअी महेता**

हरिजन, २०–८–१९३८

## ९७

# नौकरशाही योजनाओंके खिलाफ चेतावनी

### १

पिछले सितम्बर महीनेमें रूटरने अमेरिकासे तारसे खबर भेजी थी कि ४ करोड़ डालर या १३ करोड़ रुपयोंके खर्चसे ३५ लाख टन अेमोनियम सल्फेट पैदा करनेके लिअे अेक कारखाना खोलनेकी योजना हिन्दुस्तानकी मौजूदा गैर-जिम्मेदार सरकारने तैयार की है। और अिस योजनाके सम्बन्धमें 'सर' का खिताब रखनेवाले अेक अंग्रेजके नेतृत्वमें कुछ लोगोंका अेक डेप्युटेशन अिंग्लैण्डमें '५ महीने बितानेके बाद' अमेरिकाकी मुलाकातको आ रहा है।

लेकिन हिन्दुस्तानियोंके सिर अिससे बड़ी आफत शायद दूसरी कोअी नहीं आ सकती कि अुनकी जमीनको बनावटी खादके जरिये जहरीली बना दिया जाय। खेतीके ब्रिटिश निष्णातोंने खुद ही बनावटी खादके अुपयोगको बुरा बताया है, और अुसकी निन्दा की है।

जमीनमें से हम जितना लेते हैं, अुतना अुसे वापस लौटा देना चाहिये। फसल काटनेसे जमीनकी ताकत कम होती है। खेतोंमें गोबरका खाद देकर और घास-फूसको हल द्वारा मिट्टीमें मिलाकर यह कमी पूरी कर देनी चाहिये। आदमीके शरीर पर दवाओंका जैसा असर होता है, वैसा ही असर रासायनिक खादोंका जमीन पर होता है। यह सच है कि थोड़े समयके लिअे अिन खादोंसे बहुत ज्यादा फसल पैदा होती है, लेकिन बादमें अुसकी अुलटी क्रिया शुरू हो जाती है। बनावटी खादोंका अुपयोग करके बहुत ज्यादा फसल ली जा सकती है। लेकिन ये खाद जमीनमें नअी बीमारियां और नअी

कमियां पदा कर देते हैं। 'लिविंग सॉअिल' (जिन्दा जमीन) नामकी किताबमें सर अल्बर्ट हॉवर्डकी भेजी गश्ती चिट्ठीसे बॉल्फोरने नीचेका हिस्सा दिया है:

"दक्षिणी फ्रान्समें अंगूरकी खेती ज्यादातर बनावटी खादकी मददसे की जाती है और जहरीले रसायनोंकी पिचकारियां लगा कर अंगूरकी बेलोंको लगनेवाली बीमारियोंका सामना करना पड़ता है।

"अिसके खिलाफ बलूचिस्तानमें अंगूरकी बेलोंको हमेशा घूरोंका यानी मवेशी वगैराके गोबरसे बना सजीव खाद दिया जाता है। अंगूरकी फसलको नुकसान पहुंचानेवाली फफूंदी या जन्तुओंका नाश करनेके लिअे वहां रासायनिक जहरोंकी पिचकारी लगानेकी जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि वहां वैसी बीमारियां होती ही नहीं।"

ब्रिटेनके लेखकोंका खयाल है कि अिंग्लैण्डमें फसलको लगनेवाली जो बीमारियां बढ़ गअी हैं, अुनका कारण ये बनावटी खाद ही हैं। जेम्सने लॉर्ड लिमिंग्टनके लेखोंसे नीचेका अेक अवतरण दिया है:

"२० साल पहले आलूकी फसल पर सालमें अेक या दो बार कॉपर सल्फेट यानी नीले थूथेका घोल छिड़कना पड़ता था। लेकिन आजकल फसलके मौसममें १२ से १५ बार छिड़कना पड़ता है। बहुत करके अिस सबकी वजह यह है कि जमीनको सजीव खाद नहीं मिलता और खेतीके अुचित संतुलनको कायम नहीं रखा जाता।" ('फैमिन अिन अिंग्लैण्ड'—अिंग्लैण्डमें अकाल)

रासायनिक पदार्थोंकी पिचकारी फसल पर बुरा असर डालती है, और जमीनकी अुम्र काफी घटा देती है।

लॉर्ड लिमिंग्टनकी राय है कि बनावटी खाद बहुत नुकसानदेह है:

"जीवनकी प्रक्रियाका आधार जितना वनस्पतिके बढ़ने पर है, अुतना ही अुसके सड़ने पर है। जैव और वनस्पति-जन्य पदार्थ अच्छी तरह सड़कर 'ह्यूमस' के रूपमें बदल जाते हैं, तभी नीरोग फसल पैदा हो सकती है और 'ह्यूमस' तभी पैदा होती है जब जमीनके अन्दर रहे हुअे जीवाणु (बैक्टीरिया) अपना काम करते हों। सल्फेट ऑफ अेमोनिया, नाअिट्रो-चॉक, पोटाश और दूसरे क्षारोंका अविचारपूर्ण अुपयोग अिन जीवाणुओंका नाश करता है और जब जमीनमें 'ह्यूमस' नहीं होती तो पौधे नीरोग नहीं रह सकते।"

पशुओंकी और आदमियोंकी बीमारीकी तरह खेतीकी फसलके रोग भी बनावटी अिलाजोंकी वजहसे ही होते हैं। अिंग्लैण्डमें फी आदमी दवाका सालाना खर्च ६ पौण्ड है, और किसानको ढोरोंसे होनेवाली आमदनीका १० वां हिस्सा अुनकी दवादारूमें खर्च होता है।

अिंग्लैण्डमें ढोरोंको मुंह और पैरकी बीमारियां होती हैं और बीमार ढोरोंको कसाओखानोंमें भेज दिया जाता है। जिन हिस्सोंमें बीमारीका जोर होता है वहांसे १५ मीलके घेरेमें ढोरोंकी आमद-रफ्त बन्द कर दी जाती है। लेकिन हॉवर्डने यह साबित किया है कि सजीव खाद डालकर पैदा की गअी खुराक पर जीनेवाले अुनके बैलोंको बीमार ढोरके साथ 'नाक घिसने' पर भी अुस ढोरके रोगकी छूत नहीं लगती थी।

बॉल्फोरने अपने नाम आये अेक पत्रमें से नीचेका हिस्सा दिया है:

> "नाअिट्रेट और फॉस्फेट डालकर अुगाअी जानेवाली बन्दगोभीका रंग अेक अजीब तरहका 'झूठा' रंग होता है। अगर खरगोशको खुराकके तौर पर दी जानेवाली सब्जीमें से ५० फी सदी अिस तरहकी हो तो वह मर जाता है। अगर फॉस्फेट अेक हदसे ज्यादा दिया जाता है, तो खेत अस्वाभाविक रूपसे हरे रंगका हो जाता है और जंगली खरगोश अुसे छोड़कर भाग जाते हैं।" फॉस्फेट बेचनेवाले अिसको अेक अच्छाअी समझकर बतौर सिफारिशके अिसका अुपयोग करते हैं। वे कहते हैं: "हमारे घुल जानेवाले फॉस्फेटके खादका अुपयोग करो और खरगोशोंको भगा दो।" या "अगर आप पूरी मिकदारमें नाअिट्रो-चॉकका अुपयोग करेंगे, तो आपका खेत अिस तरह हरा हो अुठेगा कि खरगोश शायद ही अुसे छुअेंगे और अगर छुअेंगे तो मर जायंगे।"

अैसा मालूम हुआ है कि बनावटी खाद दिये गये खेतमें ढोर नहीं चरते।

बॉल्फोरने अेक अैसे स्कूलकी भी मिसाल दी है, जिसने पहले बनावटी खादोंसे और बादमें सजीव खादसे साग-सब्जीकी खेती की थी। अुस स्कूलके हेडमास्टरने बताया कि पहले स्कूलके बहुतसे लड़कोंको जुकाम होता था, फोड़े-फुन्सी निकलते थे और 'स्कार्लेट फीवर' के नामसे मशहूर अेक छूत फैलानेवाला बुखार आता था। लेकिन बादमें अैसा अेकाध ही केस होता था, और

सो भी बाहरकी छूत लगनेकी वजहसे ही। साग-सब्जीके स्वाद और गुणमें भी निश्चित सुधार हुआ था।

जिन दिनों डॉक्टर मैक्केरिसनके हाथमें हिन्दुस्तानमें 'पोषणकी कमीके कारण होनेवाली बीमारियों' की जांचका काम था, तब अुन्हें यह पता चला था कि सजीव यानी घूरेका खाद डालकर तैयार की गअी जमीनमें पके हुअे गेहूंकी पौष्टिकता रासायनिक खाद डालकर तैयार की गअी जमीनमें पके हुअे गेहूंकी पौष्टिकतासे १७ फी सदी ज्यादा थी। दूसरे तरीकेसे यानी रासायनिक खादोंकी मददसे पैदा किये गये गेहूंमें 'अे' विटामिनकी मात्रा कम थी। छूतवाले रोगोंसे टक्कर लेनेके लिअे मनुष्य और अुसके आश्रित पशु दोनोंके लिअे यह विटामिन महत्त्वका होता है।

डॉ० मैक्केरिसनको यह भी पता चला कि ढोरोंके खादसे पैदा हुअे बाजरेमें अगर 'बी' विटामिनकी मात्रा १ मानें, तो रासायनिक खादसे पैदा किये गये बाजरेमें अुसकी मात्रा करीब .६६ होती है।

**वालजी गोविन्दजी देसाअि**

हरिजनसेवक ५–५–१९४६

## ९८

# नौकरशाही योजनाओंके खिलाफ चेतावनी

२

नौकरशाही योजनाओंमें दूसरी अेक योजना हमारी खेतीके तरीकेमें मशीनें दाखिल करनेकी यानी खेतीका यंत्रीकरण करनेकी है। लेकिन लॉर्ड नॉर्थबोर्नने अपनी 'लुक टु दि लैण्ड' ('जमीनकी दशाको देखो' : प्रकाशक डेण्ट) नामकी किताबमें चेतावनी दी है: "यंत्रीकरणसे जमीनका अितना ज्यादा शोषण होता है कि अुसकी वजहसे खेतीकी जमीनके बड़े-बड़े भागोंके रस और कससे खाली होकर लम्बे-चौड़े रेगिस्तान बन जानेका अन्देशा रहता है। यह अेक अैसी हालत है, जो पहले कभी पैदा नहीं हुअी थी। अिसीलिअे खेतीके साधनोंका यंत्रीकरण हमको भुलावेमें डालनेवाला भयानक जाल-सा बन जाता है।"

अपने खेतोंमें मशीनोंका अुपयोग करनेवाले अंग्रेज किसानोंसे हमें अिस बारेमें बहुत-कुछ सीखना है और हमारा यह फर्ज है कि जिन मामलोंमें वे खुद अपनी गलती कबूल करते हैं, अुनसे सबक लेकर हम अुनके जैसे नुकसानसे बचें।

अुनका अेक अनुभव यह है कि बहुत वजनदार होनेकी वजहसे मशीनोंके नीचे जमीनकी बनावट नीरोग नहीं रह पाती। हरी घासवाले खेतों पर 'मोटर लॉन-मोअर' (घास काटनेकी मशीन) का अुपयोग होता है, तो जमीनका कस अुतर जाता है।

कअी तसलोंवाला यांत्रिक हल जरूरतसे ज्यादा तेजीके साथ जमीनोंको जोत डालता है, जब कि बैल या घोड़ेके अेक तसलेवाले हलसे किसी बड़े खेतको जोतनेमें कअी दिन लग जाते थे। जमीन जोतते समय अन्दरसे जो जीवजन्तु बाहर निकल आते हैं, अुनको या अुनके अण्डों और छोटी अिल्लियोंको गटक जानेके लिअे तैयार बैठे पक्षियोंके झुण्ड-के-झुण्ड अुस हलके पीछे अुड़ा करते थे। पहले जिस कामको बहुत दिन लगते थे, वह अब यांत्रिक हलसे अेक ही दिनमें खतम हो जाता है और पक्षियोंको जमीन साफ करनेका मौका ही नहीं मिलता। अिसलिअे अंग्रेज किसान अब अिस बातकी बहुत शिकायत करते हैं कि अुनके खेतोंमें धानकी जड़को कुरेद कर खा जानेवाली अिल्लियां और दूसरे जन्तु बेशुमार बढ़ गये हैं।

लेकिन बात यहीं आकर नहीं रुक जाती। अिस तरह जमीन तो साफ होती ही नहीं; साथ ही, प्राणिज या वनस्पतिज पदार्थोंके सड़नेसे तैयार होनेवाला जो तत्त्व जमीनमें होता है और रेतमें नहीं होता, वह मशीनसे खेती करनेके कारण नष्ट होता जा रहा है। यह अेक दूसरी ही क्रिया है। जब घोड़े या बैल हल खींचते हुअे खेतोंमें घूमते थे, तो अपनी लीद या गोबरसे वे जमीनके कसको बढ़ाते थे। मोटरसे चलनेवाला ट्रैक्टर बात-की-बातमें सारे खेत पर चक्कर लगा डालता है; और अपनी तरफसे जमीनको कुछ नहीं देता। पिछले २० बरसोंमें ब्रिटिश फौजों और ब्रिटिश शहरोंसे ५ लाख घोड़े कम हो गये हैं। नतीजा यह हुआ है कि ब्रिटेनकी १० लाख अेकड़ जमीनको लीदके खादसे जो पोषण मिला करता था, वह अब नहीं मिलता और अुस हद तक वहांकी जमीन कमजोर हो गअी है।

वनस्पति, प्राणी और मनुष्य — अिन तीनका कृषिचक्र विलायतमें अनेक तरहसे खंडित हुआ है और हरअेक जगह अुसका फल बुरा निकला है। माअिकेल ग्रेहाम अपनी 'सॉअिल अेण्ड सेन्स' ('जमीन और समझदारी': प्रकाशक, फेबर) नामकी किताबमें लिखते हैं कि ब्रिटेनकी गृहिणियां अपने परिवारको छोटा बनाना सीख गअी हैं, अिससे गड़रिये बेकार हो गये हैं और किसान कंगाल बनने लगे हैं। हर साल भेड़ोंकी तादादमें १० लाखकी कमी होती जाती है और अिसकी वजहसे ब्रिटेनको गेहूंकी तंगीका सामना करना पड़ता है। अितना होते हुअे भी गेहूंके खेतोंमें खादके लिअे जितनी भेड़ोंको बैठानेकी जरूरत होती है, अुतनी तादादमें भेड़ें आज नहीं मिलतीं।

सच पूछा जाय तो सारी दुनियाका यह अनुभव भी है कि वैज्ञानिक कही जानेवाली खेती जमीनके कसका नाश करती है, अुसे कंगाल बनाती है, और आखिर अुसके सारे रसको चूस लेती है। जैसा कि मिस्रमें हुआ — "जिस हिसाबसे वहां खेतीका ज्यादा और ज्यादा वैज्ञानिक तरीका दाखिल किया गया, अुसी हिसाबसे जमीन भी बराबर अेकसी अुतरती गअी।" ('रेप ऑफ दि अर्थ' — पृथ्वी पर अत्याचार)

जबसे विलायतमें मशीनोंसे खेती होने लगी है, तबसे खेतोंके आसपास हरी बागुड़ भी चुन-चुन कर साफ कर दी गअी हैं। अी० बी० बॉल्फोरकी रायमें अिसकी वजहसे खेतोंमें जीव-जन्तुओं और अिल्लियोंका त्रास बहुत ही बढ़ गया है, क्योंकि "बागुड़ोंके निकल जानेसे जीव-जन्तुओंका शिकार करनेवाले पक्षियोंके बैठनेकी जगह भी खतम हो गअी है। अुनके लिअे कोअी आसरा नहीं रहा।" पहले विलायतमें छोटे-छोटे खेत थे। अिसके सिवा बागुड़ोंमें हरियाली खूब रहती थी। थोड़े-थोड़े फासले पर पेड़ भी बहुत थे। अिसकी वजहसे ब्रिटेनमें जहां जोरोंकी आंधियां अुठा करती हैं, "जमीनकी गठन कायम रहती थी और अुसकी पैदावारमें वृद्धि होती थी।" लेकिन अब नये ढंगकी खेतीकी मशीनोंका अुपयोग करनेके खयालसे खेतोंका कद बहुत बढ़ा दिया गया है।

ब्रिटिश किसानोंके अिन अनुभवों पर विचार करते हैं, तो यह चीज अेक छिपा वरदान ही मालूम होती है कि अमेरिका हमको ५ सौ ट्रैक्टर भी नहीं दे सकेगा, जब कि वह रूसको ५० हजार और फ्रान्सको दूसरे २० हजार ट्रैक्टर देनेवाला है।

जॉर्ज रसेलको, जो अपने अे० अी० अुपनामसे मशहूर थे, अुनकी मृत्युसे दो साल पहले अमेरिकाके संयुक्त राज्योंकी सरकारने अपने यहां बुलाया था और अुनसे प्रार्थना की थी कि वे बतायें कि अमेरिकाकी खेतीके तरीकेमें क्या खामी है। साधन-सामग्री सब बिलकुल अच्छी तरह तैयार की गअी थी, फिर भी काम करनेवाले किसान काम करनेसे आनाकानी करते थे। अे० अी० ने यह सब देखकर राय दी कि आप लोगोंके जरूरतसे कहीं ज्यादा संगठनकी वजहसे असल चीजमें से आत्मा अुड़ गअी है; मनुष्य, जमीन और मनुष्यके साथी घोड़े या बल अिन तीनोंके बीच मशीनोंने कुछ अैसा दखल दिया है कि आदमीके लिअे अपना काम आनन्दरूप होनेके बदले बेगारकी तरह असह्य हो गया है।

लॉर्ड नॉर्थबोर्नके नीचे लिखे कथनको हम याद रखें :

> "क्या खेतीमें और क्या दूसरे हुनरोंमें, हरअेक अच्छी-से-अच्छी चीज आदमीको अपने हाथों द्वारा ही मिलती है, और अिसमें शक नहीं कि जो बढ़िया नहीं है या अुससे थोड़ी भी घटिया है, अुससे काम नहीं चल सकता।"

**वालजी गोविन्दजी देसाअि**

हरिजनसेवक, ५–५–१९४६

## ९९

## खेतीमें कृत्रिम चीजोंका अुपयोग

अब तो यह बात आम तौरसे मान ली गअी है कि तन्दुरुस्ती बनाये रखने के लिअे सिर्फ अच्छी दिखनेवाली खुराककी नहीं, बल्कि तन्दुरुस्तीके नियमोंका खयाल रखकर पैदा की गअी खुराककी जरूरत है। यह चीज जमीनकी अच्छाअी पर निर्भर है। जिस तरह अेक अिन्सानके शरीर पर चढ़े हुअे मांससे अुसकी तन्दुरुस्तीका अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता, अुसी तरह फसलकी मात्रा या अनाजके दानोंकी मोटाअीसे अुसकी पोषण-शक्तिका अन्दाज नहीं किया जा सकता। बनावटी खादोंके अुपयोगसे बड़े-दड़े दानोंवाली ज्यादा-से-ज्यादा फसल पैदा की जा सकती है, लेकिन अिस तरह पैदा किये गये अनाजमें कुछ खास पोषक तत्त्वोंकी कमी रहती है; और जिन जानवरोंको वह खुराक खिलाअी

जाती है, वे बीमार और कमजोर हो जाते हैं। कुदरती और बनावटी खादके प्रश्न पर विल्टशायरके अेक बड़े सफल किसान फ्रेण्ड साअिक्सने 'ह्यूमस अेण्ड फार्मर' (जमीनकी गठन और किसान) नामके अखबारमें अेक बहुत अुपयोगी लेख लिखा है।

दो साल पहले साअिक्सने गायें, सूअर और घुड़दौड़के घोड़े पालना शुरू किया। घोड़ोंने देशमें खूब नाम कमाया। लेकिन लम्बे अरसेकी यह कामयाबी अखीरमें नुकसानदेह साबित हुअी।

'न्यूज़ रिव्यू' लिखता है: "जानवर पालनेवाले दूसरे लोगोंको रास्ता दिखानेके लिअे साअिक्सके अच्छे-से-अच्छे काले और सफेद ढोरोंकी तपेदिकके अिलाजके नये-से-नये तरीकोंसे जांच कराअी गअी। अुनमें से दो-तिहाअी मवेशी तपेदिकके शिकार पाये गये, हालांकि वे काफी दूध देते थे। जब अुसे अिस बातका भरोसा हो गया कि कुदरती खादसे पैदा की गअी खुराकके बजाय बनावटी खादसे पैदा की गअी खुराक और खली वगैरा खिलानेसे ही अुसके मवेशियोंकी यह हालत हुअी है, तो अुसने सबको बेच डाला।

"साअिक्सने सन् १९३६ में सेलिस्बरीके समतल मैदानके पूरबी हिस्सेमें चेण्टरीका अूंचे-से-अूंचा खेत खरीदा और वहां नये 'कुदरती' ढंगसे खेती शुरू की। अेक दोस्तने अुसके छोटे, संकरे, हलके और खरगोशसे भरे खेतको देखकर कहा—'यह भी कोअी खेत है? यह तो मकानके बाहरका अेक अूसर मैदानभर है!' लेकिन दस सालके पहले ही अुस काली निचली जमीनने बढ़िया-से-बढ़िया फसलें और अच्छे-से-अच्छे मवेशी दिये।

"साअिक्सने यह नियम बना दिया था कि न तो ढोरोंको मशीनोंसे तैयार की गअी खुराक खिलाअी जाय और न खेतमें बनावटी खाद डाला जाय। जमीनकी शुरूकी खराबियोंको गहरी जुताअी करके दूर किया गया और अुसमें तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाली फसलें पैदा होने लगीं। जमीनको दो फुट खोदनेसे गहरी जड़ोंवाले पौधोंके साथ कीमती खारोंवाली मिट्टी अूपर निकल आअी। घास और फसल पैदा करनेके नये तरीकोंसे घासमें सुधार हुआ और मवेशियों पर अुसका बहुत अच्छा असर हुआ।

"सबसे महत्त्वकी बात यह है कि फ्रेण्ड साअिक्सने अपने खेतमें 'ह्यमस' (वैज्ञानिक तरीकेसे सड़ाये गये जानवरोंके मल और वनस्पतिके सड़े-गले हिस्से) का खाद दिया और रासायनिक पदार्थोंके अुपयोगसे जहरीली बननेके बजाय जमीन अुपजाअूपनको बढ़ानेवाले कअी तरहके कीड़ोंसे भर गअी।"

साअिक्स कहता है: "आज यह जो अेक फैशन बन गअी है कि हम जमीनको अुपजाअू बनानेके बारेमें वनस्पतिशास्त्रके बजाय रसायनशास्त्र के अुसूलों पर सोचते हैं सो गलत है। रासायनिक कारखानोंके मालिकोंने अपने मालकी खपत बढ़ानेके लिअे लगातार सौ बरसों तक जो प्रचार किया है, अुससे बनावटी खादोंके अुपयोगको बढ़ावा मिला।" अुसकी रायमें बनावटी खादसे अैसी फसल पैदा होती है, "जो शक्तिको अितना घटा देती है कि खानेवालोंमें बीमारीको रोकनेकी ताकत दिन-दिन कम होती जाती है।"

अुसका कहना है कि "दिन-दिन हम अेक अैसी बड़ी-से-बड़ी खराबीकी तरफ बढ़ रहे हैं, जो करीब-करीब सभी मुल्कोंमें जमीनके अुपजाअूपनको पुराने जमानेका अेक किस्सा बना देगी।"

दूसरे बनावटी तरीकोंके बारेमें, जो हमें धीरे-धीरे भावी खतरेकी तरफ ले जा रहे हैं, साअिक्सके विचार ये हैं:

"जिसे वैज्ञानिक खेती कहा जाता है, अुसमें जो बनावटी तरीके काममें लाये जा रहे हैं, अुनमें गैर-कुदरती तौर पर जानवर पैदा करनेका तरीका शायद सबसे ज्यादा नुकसानदेह साबित होगा।

"मैलेको समुद्रमें बहानेका तरीका बहुत खराब और भयंकर बरबादीका तरीका है। मैलेको तो फिर जमीनमें ही गाड़ना चाहिये।

"गैर-कुदरती तौर पर सुखाये गये अनाजकी रोटी अकसर अच्छी नहीं बनती। सफेद मैदेकी रोटीका रिवाज शुरू होते ही औरतोंमें बांझ-पन बढ़ने लगा है। आज जरूरत अिस बातकी है कि हम फिर जल्दी-से-जल्दी पूरे गेहूंकी यानी चोकरवाले आटेकी रोटी खाना शुरू कर दें।

"फसलके खड़े डंठलोंको हलकर फिरसे जमीनमें मिलानेके बजाय अुन्हें जला देना किसानके लिअे सबसे बड़ा गुनाह है।

"कअी किसान सालमें पांच महीने गायोंको पास-पास बांधकर घरके भीतर ही रखते हैं, और अुन्हें खली वगैरा अैसी बनावटी खुराक खिलाते हैं, जिसे वे आसानीसे पचा नहीं सकतीं, और फिर अुम्मीद करते हैं कि वे तन्दुरुस्त बनी रहें।"

नअी दिल्ली, १४–१०–'४६ प्यारेलाल

हरिजनसेवक, १०–११–१९४६

## १००

## फोर्ड ट्रैक्टर बनाम हल

दक्षिण अफ्रीकासे 'कारापारा' जहाज पूर्वी अफ्रीकाके तमाम बन्दरगाहों पर होता हुआ, मत्त-गयन्द गतिसे सागरकी गर्वीली लहरोंको चीरता हुआ चला जा रहा था। लॉरिंजो मारक्विस बन्दर पर अेक अमेरिकन व्यापारी जहाज पर सवार हुआ। अुसे बादमें हिन्दुस्तान आना था, पर अभी तो केनिया और युगाण्डामें फोर्ड कम्पनीके ट्रैक्टर बेचनेके लिअे मोम्बासा बन्दर पर अुतर जाना था।

वहांसे अुसका विचार बम्बअी जानेका और फिर देशके दूसरे छोर पर कलकत्ते जाकर वहां फोर्डके ट्रैक्टर बेचनेका था।

बैरा और मांजाबीकके दरमियान हम लोगोंमें यों ही कुछ बातचीत छिड़ गअी और जहाजके मोम्बासा पहुंचने तक तो बड़े मजेकी बातें हुअीं।

मैंने अुससे पूछा : "क्यों भाअी, आप कलकत्तेमें अपने ट्रैक्टर किस कीमत पर बेचेंगे?"

वह मुझसे कुछ गर्वके साथ कहने लगा कि "बैलोंसे चलनेवाले मामूली हलको जितनी जमीन जोतनेमें अेक हफ्ता लगता है, अुतनी जमीनको हमारा ट्रैक्टर आधे दिनमें जोत सकता है।"

मैंने कहा : "ठीक, मुझे यह सब मालूम है। मुझे खुद अेक बार बाढ़-वाले हिस्सेमें जमीनकी जुताअी करनेके लिअे आपके फोर्ड ट्रैक्टरसे काम लेना पड़ा था। वहांके ढोर या तो करीब-करीब सब डूब गये थे या मर-मरा गये थे और जमीन सूर्यकी प्रचंड धूपसे कड़ी होती जाती थी।"

यह सुनकर अुस अमेरिकन व्यापारीको बड़ी खुशी हुअी। "वह जगह कहां है?" — अुसने मुझसे बड़ी अधीरतासे पूछा। अुसे अैसी आशा थी कि वहां जाकर अुसे ट्रैक्टरोंके कुछ आर्डर मिल सकते हैं।

अुत्तरी बंगालके अुस गांवका नाम तो मैंने अुसे बता दिया। पर साथ ही वह सारा किस्सा भी अुसे बतला दिया कि अुस मौके पर वहांकी जमीनको ट्रैक्टरसे क्यों जोतना पड़ा। संतहार और पोतीसरके बीचमें यह जगह लगभग १५०० वर्गमील थी। वहां मैं काम करता था। कहीं वह जमीन और भी पत्थर-सी कड़ी न हो जाय, अिसलिअे अुसे तुरन्त जोत डालनेकी जरूरत थी। अेक दिन सवेरे, थोड़ा पानी बरस जानेके बाद, मैं बाहर निकला। जमीन अब जोतने लायक हो गअी थी। अेक अूंची-सी जगह पर जाकर मैंने आसपास मीलों तक जब नजर फैलाअी, तो मैं देखता क्या हूं कि वहां तो कुल जमा ६ हल ही चल रहे हैं!

लोगोंसे मैंने पूछा: "यह क्या बात है?" तो अुन्होंने कहा, "बाढ़से हमारा अितना नुकसान हुआ है कि कुछ पूछिये नहीं, अिने-गिने ये थोड़ेसे ही बैल बचे हैं।"

यह स्थिति मुझे निराशाजनक मालूम हुअी। तेज धूपमें जमीनका यह हाल था कि वह कड़ी होती ही जा रही थी। अिसलिअे जुताअीका काम जितनी जल्दी हो जाये अुतना अच्छा था।

अिसलिअे हमने कलकत्तेसे अेक फोर्ड ट्रैक्टर मंगाया, और हलके बजाय अुसे वहां चलवाने लगे। अुसने अूपरकी अुस कड़ी काली मिट्टीको — सतहसे बहुत नीचे जानेकी जरूरत नहीं पड़ी — अेक ही झपाटेमें काट-कूट कर तोड़ दिया। देखते देखते पचासों बीघे जमीन जुत गअी। अिस नये ट्रैक्टर-दैत्यकी यह भीषण लीला देखनेके लिअे वहां झुण्डके झुण्ड लोग जमा हो गये। पर खुद अुनके करनेके लिअे तो अब कोअी काम वहां नहीं था, क्योंकि ट्रैक्टर चलानेमें तो सिर्फ दो ही आदमियोंकी जरूरत थी।

फोर्ड ट्रैक्टरके अिस प्रचंड पराक्रमकी कथा सुनकर अुस व्यापारीकी आंखें चमक अुठीं। अुसने मेरा अंतिम वाक्य शायद ही ध्यानसे सुना हो।

लेकिन जब मैंने अुसे अिसके बादकी कहानी सुनाअी, तो वह अुसे बहुत ध्यान देकर सुनने लगा और कुछ विचारमें पड़ गया। मैंने अुसे कहा कि अुस जिलेके जमींदार मुझसे कहने लगे कि अिस ट्रैक्टरको आप हमारे पास छोड़ जायं। अिसे कलकत्ता वापस भेजनेकी जरूरत नहीं। हम लोग अिसे काममें लायेंगे।

मैंने कहा : "नहीं जी, यह नहीं हो सकता। अिसका अुपयोग तो बस बाढ़की आफतके समयके लिअे ही था। मगर जब आपके बैल फिरसे जुट जायेंगे और समय अच्छा आ जायगा, तब . . .।"

"तब क्या?" व्यापारीने अधीर होकर पूछा।

मैंने कहा : "फिर क्या काम? **फोर्ड ट्रैक्टरका मेरे लिअे फिर काम ही क्या रह जाता है?** आपके जो कुटुम्ब खेती-बाड़ीका काम कर रहे हैं, अुनमें से कमसे कम ५० तो बेकार हो ही जायंगे और अुन्हें कलकत्ते जाकर जूटकी मिलोंमें मजदूरी करनी पड़ेगी। अिससे भी बुरी दशाकी क्या आप कल्पना कर सकते हैं?"

यह अंतिम प्रश्न जब मैंने अुस व्यापारीसे पूछा, तब अकेले हमीं दोनों लोग डेक पर बैठे हुअे थे। वह अुस प्रशान्त नीलवर्ण समुद्रकी ओर देख रहा था, जिसके वक्षस्थल पर धीरे-धीरे हमारा जहाज चला जा रहा था। जहाजके चलनेसे पानीमें जो शब्द होता था, अुसके अतिरिक्त चारों ओर वहां शान्ति ही शान्ति थी। यह समय भरोसेके साथ खुले दिलसे बातें करनेका था, अिसलिअे अुसने मेरी तरफ मुड़कर कहा :

"जी नहीं! मेरे भी हृदय है। और मुझे आपके सामने यह कबूल करना चाहिये कि अभी कुछ ही दिन हुअे कि मैं चीनमें यांगटिसीक्यांग नदीकी घाटीकी तरफ गया था। वहां मैंने चीनके ग्रामवासियोंको जब धान बोते हुअे देखा, तब मुझे यह लगा कि यहां तो फोर्ड ट्रैक्टर लाना अेक तरहका गुनाह है।"

मैंने कहा : "गंगाके किनारे भी भाअी, यांगटिसीक्यांगकी घाटीकी ही तरह खूब घनी आबादी है। तब आप क्या वहां अपने ट्रैक्टर दाखिल करनेको तैयार हैं?"

अुसने कहा : "नहीं, आपने मुझे कायल कर दिया है। आपकी बात मेरे गले अुतर गअी है। मैं रूसमें व्यापारके सिलसिलेमें काफी घूम-फिर आया हूं, ठीक साअिबेरिया तक गया था। वहांकी बात ही अलग है। वहां आबादी अितनी कम है कि जमीन या तो अधजुती पड़ी रहती है या बिलकुल ही नहीं जुतती। पर चीन और हिन्दुस्तानकी नदियोंके किनारों पर हाथसे जो खेती होती है, अुसका जोड़ तो दुनियामें कहीं है ही नहीं। जो लोग सदियोंसे खेती

करते हुअे अपनी गुजर करते चले आ रहे हैं, अुन्हें अुनके कार्यक्षेत्रसे बाहर निकाल देना सचमुच अेक भारी गुनाह है।"

सी० अेफ० अेण्ड्रूज़

हरिजनसेवक, ४–१–१९३५

## १०१

## जमीनका अूसर बनना

मिसीसिपी और ओहियोकी घाटियोंमें जो भयंकर बाढ़ आअी है, अुससे अमेरिकाको लगभग १०० करोड़ पौण्डका नुकसान हुआ होगा। यदि खेतीकी बड़ी-बड़ी मशीनोंसे वहांकी जमीनका बेरहमीसे शोषण न किया जाता और कागजकी मिलोंके लिअे लकड़ीका 'मावा' पूरा करनेके लिअे जंगली पेड़ोंको अुतनी ही बेरहमीसे काटा न जाता, तो यह भयंकर बाढ़ रोकी जा सकती थी। आधुनिक सभ्यताने अितने बड़े पैमाने पर विध्वंस (Vandalism) चलाया है कि अुसके सामने पुराने जमानेमें बर्बर लोगोंकी फौजोंके द्वारा किया हुआ विध्वंस (जिससे vandal—विध्वंसक शब्द निकला है) बिलकुल फीका पड़ जाता है। अिस बड़ी बातका महत्त्व बहुत धीरे-धीरे ही लोगोंकी समझमें आ रहा है। यदि दीर्घ दृष्टिसे देखें तो हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रममें जिन राजनीतिक और सामाजिक कामोंको हम पहला स्थान देते हैं, अुनमें कअियोंसे अिसका महत्त्व बहुत ज्यादा है।

यह सत्य मेरी समझमें अेक महान कष्टके अनुभवके बाद आया, जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। अुस कष्टका कारण था महानदीके डेल्टामें आनेवाली बाढ़, जिसने सारे अुड़ीसाको अुजाड़ दिया था। अुस समयकी हमारी हरअेक जांच अुस भयंकर नुकसानकी तरफ ही अिशारा करती थी, जो महानदी और अुसकी सहायक नदियोंके अूपरी हिस्सोंमें जमीनको ढंके रहनेवाले जंगली पेड़ोंको काटनेसे हुआ था। ये जंगली पेड़ जरूरतसे ज्यादा पानीको तब तक रोके रहते थे जब तक वह जमीनमें नहीं अुतर जाता था। अिससे मैंने अेक हमेशा याद रहनेवाला यह सबक सीखा है कि भविष्यकी सभी बाढ़ोंको रोकनेका अेकमात्र सच्चा अिलाज यह है कि अेक कंज़र्वेशन बोर्ड महानदीके पुराने बहावके आसपासके जंगलोंकी रक्षा करे। वह सिर्फ नदीके डेल्टाके बहावके

ही नहीं, बल्कि अुसके अूपरी हिस्सेके बहावके आसपासवाले जंगलोंको भी अुनकी जगह बनाये रखनेकी कोशिश करे।

मि० जी० बी० जेक्स १८ फरवरीके 'दि स्पेक्टेटर' में छपे अपने बहुत महत्त्वपूर्ण लेखमें कहते हैं कि जमीनकी बेकस होकर अूसर बननेकी क्रिया, जो बड़ी बड़ी बाढ़ोंको जन्म देती है, सिर्फ अमेरिकामें ही नहीं बल्कि दक्षिण और पूर्व अफ्रीका, हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलियामें भी हो रही है। वे अिसे आधुनिक सभ्यताके खिलाफ प्रकृतिका विद्रोह कहते हैं। या तो आखिरमें प्रकृतिकी पूर्ण विजय होगी और धरतीका बहुत बड़ा भाग अूसर बन जायगा, या फिर आदमी अपनी बरबादीकी आदतोंको सुधारना और दबाना सीख जायगा। वे लिखते हैं: "जमीनके अूसर बननेकी क्रिया मनुष्यको धोखेमें डालनेवाली होती है। अकसर वह जमीनके अितने ज्यादा बिगड़ जाने पर ही ध्यानमें आती है, जब अुसे सुधारकर फिरसे खेतीके लायक बनाना असंभव हो जाता है। जमीनके बिगड़नेसे जो तबाही होती है, अुसे देखे बिना विश्वास नहीं हो सकता। जिन देशोंकी जमीन सबसे ज्यादा बिगड़ी है, अुनके लिअे अेक यही रास्ता है कि वे जमीनको अिस बरबादीसे छुड़ानेवाली अेक संपूर्ण वैज्ञानिक योजना बनावें।" वे भारतको अैसा ही अेक देश मानते हैं। वे आगे कहते हैं: "मनुष्यने अुस समृद्धिके सपने देखे हैं, जिसमें अूंचे अुड़नेवाले विमानों, स्वास्थ्यप्रद और साफ कपड़ों और गगनचुम्बी अिमारतोंका बोलबाला हो। लेकिन वर्तमान लक्षण यह बताते हैं कि सबसे पहली सच्ची वैज्ञानिक सभ्यताका आधार ज्यादा सादी चीजें होंगी, जैसे छोटे-छोटे मकान, अुगाये हुअे जंगल, नदियोंके बांध और सबसे ज्यादा घास-चारेकी संभाल और सुधार।"

शान्तिनिकेतनमें यह देखकर हमें बड़ी चिन्ता हुअी कि जमीनका यह बिगाड़ तेजीसे हमारे आश्रमके पास पहुंच रहा है। पिछले नवम्बरमें जब मैं रोज वर्धासे सेवाग्रामकी यात्रा करता था, तब वहांके खुले मैदानमें भी अिस बिगाड़का असर साफ दिखाअी दिया था। जाहिर है कि बरसातका हर मौसम अच्छी जमीनको धोकर अुसे बिगाड़ देता है। सचमुच भारतमें यह खोजबीनका अेक अुपयोगी क्षेत्र है, जो जमीनकी पूरी खोजबीन करनेमें प्रेम रखनेवालोंका रास्ता देख रहा है। अिस बारेमें सबसे पहला और शायद सबसे बड़ा सबक यही होगा कि सादे जीवनकी तरफ लौटनेसे और हमारे रोजके भोजनके लिअे जमीनसे लिये जानेवाले रासायनिक पदार्थोंको वापस जमीनमें

डालनेसे ही हम प्रकृतिके साथ समन्वय कायम करके रह सकते हैं और अुसके लाभदायक काममें रुकावट डालनेके बजाय मदद दे सकते हैं।

**सी० अेफ० अेण्ड्रूज़**

हरिजन, २७–३–१९३७

## १०२

## खाद और ढोरोंकी खुराकके रूपमें नमक

नमक-करकी वजहसे जिस तरह मनुष्योंके खानेमें नमककी मात्रा कम हो गअी, अुसी तरह खेतीके लिअे खादके रूपमें बरते जानेवाले नमककी मात्रा भी बहुत घट गअी है।

सरकारने मि० रॉबर्टसनको कोयम्बतूरमें खेतीकी हालतकी छानबीन करके अुस पर अपनी रिपोर्ट देनेका काम सौंपा था। वे अपनी रिपोर्टमें कहते हैं:

> "पेड़-पौधोंके विकासके लिअे नमकका पुराने जमानेसे अुपयोग होता आ रहा है। देशके भीतरी हिस्सोंमें खादकी शकलमें नमक बहुत बेश-कीमती चीज है। . . . प्रत्यक्ष प्रयोगों द्वारा यह बात साबित हो चुकी है कि कुछ समुद्र-तटोंकी जमीनोंको हर साल फी अेकड़ ३०० पौंड नमक हवाके जरिये मिल जाता है। चूनेके या दूसरे खादोंके साथ नमक मदद-गार खादके रूपमें आम तौर पर बरता जाता है। विलायतमें 'मैंगोल्ड सर्ज़ेल' नामक चुकन्दरकी जातिकी वनस्पतिकी खेतीके लिअे तैयार की जानेवाली जमीनमें दूसरे खादोंके साथ अेकड़ पीछे ६०० पौंड तक नमक डाला जाता है और चरागाहवाली जमीन पर १०० पौण्ड नाअिट्रेट ऑफ सोडाके साथ २०० पौण्ड नमक अूपर छिड़कनेके लिअे बरता जाता है। चरागाहवाली जमीनकी घासको सुधारनेके लिअे और अुसको नुकसान पहुंचानेवाले कीड़ोंको मारनेके लिअे कभी-कभी काफी बड़ी मात्रामें नमक छिड़का जाता है।"

अिंग्लैण्डकी नमक-महसूल सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुअे सन् १८८८ में बैरोनेट सर थॉमस बरनार्डने अिस चीजकी ताअीद की थी। चेस्टर परगनेके मि० बेविनके अेक पत्रका हवाला देते हुअे अुन्होंने बताया है कि अेक खेतमें, जिसके अन्दर फसलको नुकसान पहुंचानेवाली 'कोल्टफुट' नामकी

और वैसी दूसरी जंगली घास बहुत बढ़ गअी थी, नमकके कारखानेकी राख छिड़कनेका प्रयोग किया गया था। अुसका जो नतीजा हुआ अुसके बारेमें लिखते हुअे वे कहते हैं:

"अिस प्रयोगकी वजहसे खेतके अन्दरकी जंगली घास तो बिलकुल साफ हो ही गअी, साथ ही अनाजकी फसल पर भी अिसका बहुत बड़ा असर पड़ा। खेतके जिस हिस्सेमें यह खाद डाला गया था, अुसमें मामूलीसे करीब तिगुनी फसल पैदा हुअी और दाना भी बहुत बढ़िया पड़ा। सच मानिये कि मैंने अिसमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं की है।"

नीचे खेतीके लिअे दिये गये हलकी जातिके नमकके कुछ आंकड़े दिये जाते हैं, जिनसे पता चलेगा कि किस तरह हमारी खेतीको अिस जरूरी खादसे वंचित रखा जाता है:

| | |
|---|---|
| १९१४–१९१५ | २६४४ मन |
| १९१५–१९१६ | २६५५ मन |
| १९१८–१९१९ | कमीकी वजहसे नहीं दिया गया |
| १९१९–१९२० | १७५ मन |
| १९२०–१९२१ | ४०२ मन |
| १९२२–१९२३ | ७७२ मन |
| १९२५–१९२६ | २४०७ मन |

मवेशियोंमें नमककी भूख कभी-कभी अितनी ज्यादा पाअी जाती है कि अुनको अकसर राहमें पड़ा हुआ अिन्सानों या जानवरोंका मैला खाना पड़ता है।

नमक पर लिखी गअी अपनी छोटीसी किताबमें मि० रैटन लिखते हैं: "मवेशियोंकी अिस गैर-मामूली भूखको देखकर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ, लेकिन बादमें जब मुझे पता चला कि अिन मवेशियोंको हलकी जातिकी घास पर निभना पड़ता है और न तो अुन्हें अपनी कुदरती खुराकमें कोअी नमक मिलता है और न मामूली नमक ही खानेको मिल पाता है तो मेरा अचम्भा मिट गया। क्योंकि अिस तरहके मैलेमें नमक काफी मिकदारमें होता है और कुछमें तो बहुत ज्यादा पाया जाता है। लेकिन मवेशियोंकी अिस आदतके नतीजे बहुत ही खतरनाक होते हैं।"

आगे चलकर मि० रैटनने बताया है कि अिस तरह अिसकी वजहसे मवेशियोंमें 'हाअिटिड' नामकी बीमारी पैदा होती है। अुन्होंने यह भी लिखा

है कि अिस बीमारीसे मरनेवाले सैकड़ों ढोरोंको किस तरह काफी मात्रामें नमक खिलाकर बचाया गया है। "अिसका यह मतलब नहीं है कि नमक अपने-आपमें कोअी दवा है, लेकिन अुसमें बीमारीको रोकनेकी ताकत है।"

सन् १८३६ में ब्रिटिश हिन्दुस्तानकी नमक पर बैठाअी गअी सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुअे बंगाल मेडिकल सर्विसके मि० जॉन क्रॉफर्डने कहा था कि देशमें नमककी यह कमी नमक-करकी वजहसे ही है:

> "कस्टम्स बोर्ड बंगालमें नमककी अधिक खपतके खिलाफ हमेशासे यह दलील देता आया है कि नमक शरीरके पोषणके सिवा और किसी काममें न तो बरता जाता है और न कभी बरता जायगा। असलमें यह बात बिलकुल ठीक नहीं है। आजकी हालत पर अिसे घटाने पर भी यह सही नहीं निकलेगी। बहुतसा नमक (नाअिट्रेट ऑफ सोडा नहीं, क्योंकि अुस पर बहुत भारी कर बैठा हुआ है और अिसलिअे वह अिस काममें नहीं लाया जा सकता, लेकिन दूसरी तरहका अशुद्ध और बिना महसूलवाला नमक) घोड़ोंको खिलाया जाता है; सींगवाले दूसरे मवेशियों और भेड़ोंको खिलाया जाता है। अगर लोग खिला सकें तो अिसमें शक नहीं कि वे अपने मवेशियोंको शुद्ध नमक भी बहुत बड़ी मात्रामें खिलाना पसंद करेंगे।"

हरिजनसेवक, १९–५–१९४६ प्यारेलाल

## १०३

## बैलके हकमें

देशकी आर्थिक व्यवस्थामें नअी योजनाके नामसे जो विचार फैल रहे हैं, अुनकी वजहसे हमारी खेतीके तरीकोंमें और आमद-रफ्तके जरियोंमें जहां-तहां मशीनोंको दाखिल करनेकी हवा चल पड़ी है। यानी अगर नअी योजनाओंके हिमायतियोंकी मन्शा पूरी हो सके, तो बैलोंका देशमें नाम-निशान भी न रह जाये। अिसलिअे यह जरूरी हो गया है कि हम अेक बार फिर अुन सब बातोंको सोच लें, जो हमारे यहां बैलके हकमें कही जा सकती हैं।

पहली बात यह है कि हमारे देशमें जितना हो सके अुतना दूध पैदा करना जरूरी है। अिसलिअे हमें गायोंकी जरूरत तो रहेगी ही। जब

गायें रहेंगी तो अुनके साथ बैल भी होंगे। बैलोंके लिअे पूरे कामकी जरूरत भी रहेगी। अुन्हें पूरा काम तभी मिल सकता है, जब हम खेतीमें हलके साथ, सवारियोंमें गाड़ीके साथ और अुद्योगमें कोल्हूके साथ बैलको जोड़े रहें। अगर हम अिन सब तरीकोंसे बैलका अुपयोग नहीं करेंगे, तो हमारी हालत पश्चिमी देशोंके जैसी हो जायगी। वहां गायोंकी नसलको बनाये रखनेके लिअे जितने सांड़ोंकी जरूरत होती है, सिर्फ अुतने ही बछड़ोंको पाल-पोस कर बड़ा किया जाता है और बाकी सबको कसाअीके हवाले कर देना पड़ता है।

मशीनके जरिये बड़े पैमाने पर की जानेवाली खेतीमें बरता जानेवाला ट्रैक्टर अेक मशीन है, और बैलमें यद्यपि अुसके जितनी ताकत नहीं है तो भी वह अेक मशीन ही है। यहां यह याद रखना चाहिये कि बैल अेक जीती-जागती मशीन है। वह जानदार है। अुसके जैसे सीधे-सादे जानवरोंके साथ मनुष्योंके संबंध मानव-सभ्यताकी कूचमें अेक खास महत्त्व रखते हैं और यह बात साबित भी हो चुकी है। पश्चिमी संस्कृतिमें जो खास बुराअियां पाअी जाती हैं, अुनमें बार-बार होनेवाली खूंखार लड़ाअियां भी अेक है। हम देखते हैं कि अिन लड़ाअियोंके दौरानमें अिन्सान अपनी अिन्सानियतको भूलकर हैवान या जानवर बन जाता है। पश्चिमवालोंने जानदारोंकी ताकतका अुपयोग करना छोड़कर अुनकी जगह जड़ और बेजान मशीनोंको जिस तरह कायम किया है, वही अिस सारी बुराअीकी जड़ हो तो अिसमें अचम्भा क्या?

यह तो अिन्सानियतकी भावना पर रची गअी दलील हुअी। लेकिन अिसे आर्थिक दलीलका सहारा देकर मजबूत बनाना जरूरी है। अिसलिअे अब हम आर्थिक दलीलों पर गौर करें। अिसके लिअे हम श्री अेन० जी० आपटेकी 'थॉट्स अेण्ड वर्क अबाअुट विलेजेस' (देहातके काम और देहातके बारेमें विचार) नामकी समर्थ भारत प्रेसके श्री सरदेसाअी द्वारा पूनासे निकाली हुअी किताबके 'अिकॉनामिक्स ऑफ दि बुलक' (बैलका अर्थशास्त्र) नामवाले हिस्सेका खुलकर अुपयोग करेंगे।

बैल सिर्फ जानदार ट्रैक्टर ही नहीं, बल्कि खादका अेक जीता-जागता कारखाना भी है, जो हमें गोठमें से मिलनेवाला बेशकीमती खाद देता है। यह खाद जमीनको नाअिट्रोजन नामकी अेक चीज देता है, जिसकी वजहसे जमीनके दानों या जर्रोंके बीच कुछ फासला रहने लगता है, और पानीको

पकड़े रखनेकी अुसकी ताकत बढ़ती है। अुसकी बदौलत जमीनमें नमी और हवा दोनों काफी मात्रामें बनी रहती हैं। वनस्पतिके पोषण और अुसकी बाढ़के लिअे ये तीनों चीजें बहुत जरूरी हैं। "जमीनको बढ़िया बनानेवाले अलग-अलग तत्त्वोंको अिकट्ठा करके अुनका तेज खाद तैयार किया जाय और वह जमीनमें कितना ही क्यों न डाला जाय, फिर भी अगर अुससे हवा और पानीको जज्ब करनेकी जमीनकी ताकत नहीं बढ़ती, तो अुस खादसे कोअी फायदा नहीं होता।"

जैसा कि अिन पृष्ठोंमें पहले लिखा जा चुका है, बनावटी खाद बिल-कुल शापरूप है। अिसके सिवा सन जैसे दालोंकी जातिके पौधोंको थोड़ा बढ़ने देकर अन्हें हरेके हरे हलसे जमीनमें मिलाकर हरा खाद देनेका रिवाज भी हमारे यहां मौजूद है। लेकिन कुल मिलाकर गोठसे मिलनेवाले खादके मुकाबले यह हरा खाद घटिया दरजेका होता है। अिसकी अेक वजह यह है कि बीज बोनेके समयसे लेकर अुगे हुअे पौधोंको जमीनमें मिलाने और अुनके सड़ने लगने तक जमीनका दूसरा कोअी अुपयोग नहीं किया जा सकता; और न वे मवेशियोंको खिलानेके काम ही आते हैं। अिसके खिलाफ अगर हम अुसी जमीन पर अिस हरे खादके बजाय अैसी कोअी फसल पैदा करें जिसका अुपयोग जानवरोंकी खुराकके लिअे हो सके, तो मौसमके अन्तमें हमें दो बैलोंके लायक घास-भूसा मिल जायगा। ये बैल बारहों महीने काम देते हैं और खुद जो घास वगैरा चरते हैं, अुसे गोबर वगैराके रूपमें हमको लौटा देते हैं। गोबर वगैराका यह खाद जमीनमें आसानीसे घुल जाता है और अेक खास बात यह होती है कि खुराककी तरह खाअी गअी चीजोंको बदलनेका जो काम जानदारोंके अन्दर होता रहता है, अुसकी वजहसे संभव यह है कि अुसमें नाअिट्रोजन ज्यादा मात्रामें पैदा होता हो।

घासके जरिये बैल नाअिट्रोजनके जिस तत्त्वको अपने पेटमें डालता है, अुसका बहुतसा हिस्सा अुसके गोबरसे हमको वापस मिल जाता है, क्योंकि काम करते हुअे बैलके शरीरमें सिर्फ कार्बोहाअिड्रेटवाली चीजोंका ही अुपयोग होता है। खादके रूपमें ये कार्बोहाअिड्रेट ज्यादा काम नहीं देते, क्योंकि अुगती हुअी फसलके लिअे जितने कार्बोहाअिड्रेटकी जरूरत होती है, अुतने बढ़ते हुअे पौधे हवामें से ले लेते हैं। अिसलिअे जमीनके अन्दरसे अुसे लेनेकी जरूरत नहीं पड़ती। हरे पौधोंको जमीनमें मिला देनेसे जो ताकत बेकार खर्च

होती है, अुसका बैल अपनी देहके जरिये पूरा-पूरा अुपयोग करता है। अिसके अलावा गोठसे मिलनेवाला गोबर वगैराका खाद हरे खादके मुकाबले जमीनको ज्यादा अच्छी खुराक पहुंचाता है, क्योंकि जब वह जानवरके बदनमें से गुजरता है, तब घास-चारेके रूपमें वह जिन चीजोंको अपने अन्दर पहुंचाता है, अुनको शरीरके अन्दरके रस हाजमेके लिअे अलग-अलग कर डालते हैं।

मशीनोंके मुकाबले बैल सिर्फ अिसीलिअे बेहतर नहीं है कि वह खेतीको अुपजाअू बनानेवाला बढ़िया खाद देता है, बल्कि हमें यह भी याद रखना चाहिये कि बैल जितने तरहके काम कर सकता है, अुन तमाम कामोंको करनेवाली कोअी अेक मशीन बनाना असंभव है। बैल तेजीसे भी काम कर सकता है और धीरे धीरे भी। यह भी नहीं कि वह सिर्फ हलकी मददसे जमीन जोतनेके ही काम आता हो। वह तो दावन चलानेके यानी अनाजके दानोंको बालों या भुट्टोंसे अलग करनेके काम भी आता है और तैयार गल्लेको बाजार तक ढोकर ले जानेके लिअे भी गाड़ीमें जोता जा सकता है। अिन सब कामोंके साथ वह खली, भूसी, पुआल वगैरा अैसी चीजें खाता है, जिनमें से आदमी अपने मतलबका दाना और तेल वगैरा निकाल चुकता है। बैलकी अेक जोड़ीकी कीमत ज्यादा-से-ज्यादा कुछ सौ रुपये होती है, लेकिन बैल जितने काम कर सकता है अुन तमाम कामोंको मशीनोंसे करना हो, तो किसानको कमसे कम अेक ऑअिल अेन्जिन, अेक मोटर-लॉरी, अेक ट्रैक्टर, मोटरसे चलनेवाले छोटे-छोटे पटरे और अैसी न जाने कितनी चीजें खरीदनी होंगी और अिन सबकी कीमत बैलकी कीमतसे कितनी ज्यादा होगी भगवान ही जाने! अिसके सिवा अपनी मशीनोंको चलानेके लिअे किसानको बतौर अींधनके क्रूड ऑअिल या पेट्रोल खरीदना होगा, जो न किसानके खेतमें पैदा होता है, न देशमें कहीं मिलता है। यह भी अेक सोचनेकी बात है।

खेतमें खास तौर पर हल चलाने, हेंगा या पटरा फेरने और बोने वगैराके काम होते हैं। अिन सब कामोंकी वजहसे बैलको सालमें कुल तीनसे चार महीनोंका काम मिलता है। बाकी समयमें अुसका अुपयोग माल ढोने, लोगोंको अेक जगहसे दूसरी जगह ले जाने और तेल वगैरा पेरनेमें किया जा सकता है, और किया जाना चाहिये। बैल ये सब काम कर सकते हैं। लेकिन मशीनें, जो सिर्फ अपना ही अपना काम कर सकती हैं, खेतीका काम खतम होनेके बाद बाकीके लम्बे अरसे तक बेकार ही पड़ी रहती हैं।

मशीनोंसे तेल पेरनेमें अूपर अूपरसे फायदा नजर आता है, लेकिन वह दूसरे तरीकेसे खतम हो जाता है, क्योंकि बेकार पड़ी रहनेवाली मशीनोंसे किसानोंको और किसी तरहका कोअी बदला नहीं मिलता।

श्री आपटेकी कीमती और अध्ययनपूर्ण किताबसे नीचेकी पंक्तियां देकर हम बैलकी अपनी हिमायत पूरी करेंगे :

> "मशीनोंको हम तभी अपने अुपयोगमें लाना शुरू करें, जब अिन्सानों और जानदारोंके रूपमें जो ताकत हमारे पास मौजूद है, अुसको पूरा-पूरा काम मिल जाय। आज हमारे यहां अिस ताकतका पूरा अुपयोग नहीं होता। अिसलिअे मशीनें दाखिल करनेकी यहां अभी कोअी जरूरत नहीं।"

हरिजनसेवक, २–६–१९४६ **वालजी गोविन्दजी देसाअि**

## १०४

# भारतमें द्वि-अर्थक ढोरोंका विकास

द्वि-अर्थक (dual-purpose) शब्दका साधारण मतलब ढोरोंकी अुन नसलोंसे है, जो दो अलग-अलग काम कर सकें। भारतमें ढोरोंकी वे नसलें द्वि-अर्थक जातिकी कहलाती हैं, जिनके नर हल या भार खींचने और मादायें दूध देनेके काम आती हैं।

भारतमें द्वि-अर्थक जातिके ढोरोंका विकास करनेकी कोशिश ठीक है या नहीं, अिसके बारेमें ढोरोंका पालन-पोषण करनेवालोंके बीच अलबत्ता काफी विवाद चला है। अिस प्रश्न पर हमारे ढोरोंकी अुन्नतिमें दिलचस्पी रखनेवाले और अुनको पालनेवाले सक्रिय ध्यान देते रहे हैं। पर १९२८ में कृषि-संबंधी रॉयल कमीशनकी रिपोर्टकी प्रसिद्धिसे यह प्रश्न बहुत आगे आ गया। तबसे विचारकी दो स्पष्ट धाराओंका विकास हुआ है। अिसलिअे सारे प्रश्नको सही ढंगसे देखनेके लिअे यहां दोनों तरफके दृष्टिकोणोंको संक्षेपमें दोहराना अधिक फायदेमंद होगा।

जो लोग यह सोचते हैं कि भारतीय ढोरोंका दो अलग-अलग कामोंके लिअे नहीं, बल्कि किसी अेक निश्चित कामके लिअे विकास किया जाय, अुनका कहना है :

१. कुल मिलाकर भारतीय ढोरोंका पालन-पोषण बहुत पुराने समयसे अेक निश्चित अर्थके लिअे होता रहा है। सामान्य नियम यह है कि सबसे तेज और सबसे अच्छा काम करनेवाली नसलके ढोर अच्छा दूध देनवाले नहीं होते; और दूधकी अधिक पैदावारका तेज काम करनेकी शक्तिके साथ मेल नहीं बैठता। अिस तरह दूध देने और बोझा या हल खींचनेके दोनों काम साथ-साथ नहीं हो सकते।

२. द्वि-अर्थक ढोरोंमें किसी भी अेक गुणके विकासको समय-समय पर दूसरे गुणका खयाल करनेके कारण रोकना पड़ता है। अिसलिअे मुकाबलेमें दूध देने और हल या भार खींचनेके दोनों गुणोंका झुकाव हमेशा नीची सतह पर रहनेका होता है। द्वि-अर्थक जातिके विकासकी किसी भी कोशिशमें अेक गुणको बढ़ानेके लिअे दूसरे गुणका बलिदान होगा। अिससे हमारे ढोरोंका स्तर घटकर औसत दर्जेके जानवरोंका हो जायेगा। अिस तरह कोअी भी गुण अपने सबसे अच्छे रूपमें भी अपर्याप्त ही रहेगा। अिसलिअे अुत्तम गुणवाले ढोरोंके विकासके लिअे निश्चित काम देनेवाले ढोरोंका पालन करना जरूरी होगा।

३. यदि केवल अेक ही गुण पर लक्ष्य रखा जाय तो पालन-पोषणकी दृष्टिसे बहुत अूंचे दर्जेके हल और भार खींचनेवाले या डेरीके लायक ढोरोंके अुत्पादनमें बहुत तेजीसे अुन्नति होगी। वंशशास्त्रकी दृष्टिसे भी दो या अधिक गुणोंवाले ढोरोंको अेक ही समयमें सफलतापूर्वक अुत्पन्न करना व बढ़ाना बहुत मुश्किल है, फिर भले अुन गुणोंमें आपसी विरोध न भी हो। नसलके गुणोंको स्पष्ट रूपसे तय कर देनेका नतीजा हमेशा अिच्छित गुणोंका निश्चित रूपमें शीघ्र विकास होनेके रूपमें आया है। अेक ही मुख्य गुण पर केन्द्रित हुअे बिना अूंचे स्तरकी तरफ बढ़ना संभव नहीं है।

४. भारतमें खेती और बोझा ढोनेके लिअे सबसे जरूरी चीज है बैल। अिस जातिके ढोरोंसे ज्यादा दूध पानेकी कोशिशसे अुन गुणोंके नष्ट हो जानेका खतरा रहता है, जिनके कारण वे पहले अुम्दा काम करनेवाले माने जाते थे।

५. जो देश द्वि-अर्थक जातिके विकाससे अूंचा कोअी लक्ष्य नहीं रखते, वे अुन देशोंसे मुकाबला करनेकी कोअी आशा नहीं रख सकते,

जहां विशेष गुणोंके विकास पर ही जोर दिया जाता है। अिसलिअे खास कामके लिअे बढ़ाअी जानेवाली नसलों पर बुरा असर डाले अैसे हरअेक कदमको अुठानेसे बचना चाहिये।

दूसरी तरफ, जो लोग भारतीय ढोरोंकी द्वि-अर्थक जातिके विकासके हामी हैं, अुनकी बातका सार नीचे दिया जाता है:

१. भारतमें ढोरोंकी संख्या पहलेसे ही काफी है। यदि भिन्न-भिन्न गुणोंके लिअे अलग-अलग ढोरोंके विकासकी कोशिश की गअी, तो अुनकी संख्या और ज्यादा बढ़ जायगी। अिस तरह अेक किसानको अलग-अलग कामोंके लिअे अलग-अलग जानवर रखने पड़ेंगे। जैसे खेतीके लायक 'नर' बच्चे पैदा करनेके लिअे अेक गाय और दूध आदिकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे दूसरी गाय। अिसका अर्थ यह हुआ कि आर्थिक दृष्टिसे जमीन पर जितने ढोर आसानीसे पल सकते हैं, अुनसे ज्यादा संख्यामें ढोर रखना जरूरी होगा।

२. भारतीय किसान अितना गरीब है कि अधिक ढोरोंको रखना अुसे नहीं पुसा सकता। अुसको अैसी गायकी जरूरत है, जो अुसके खेत पर होनेवाले खेतीके कामोंको करनेके लिअे अच्छा मजबूत नर बच्चा पैदा कर सके और साथ साथ अुसके कुटुम्बकी जरूरतोंके लिअे काफी मात्रामें दूध दे सके। अिस तरह वह ये दोनों काम कर सकनेवाला जानवर होना चाहिये।

३. औसतन, सब ढोरोंमें, मिलाकर पैदा होनेवाले आधे बछड़े नर होंगे और अुनमें से सांड़ बनने लायक तो बहुत ही थोड़े होंगे। अगर अलग-अलग कामोंके लिअे अलग-अलग नसलके ज़ानवर रखे जायं, तो दूध देनेवाली नसलोंके नर बछड़े मुकाबलेमें अुपयोगी नहीं होंगे — जैसा कि आजकल डेरीके लिअे अुत्तम मानी जानेवाली साहीवाल और लाल सिंधी (रेड सिंधी) जातिमें होता है—जब कि द्वि-अर्थक नसलके ढोरोंमें नर बछड़ोंको खेतीके लिअे पाला जा सकता है। अिस तरह भारतमें, जहां दूध देने और खेती करनेके दोनों गुणोंकी आवश्यकता है, मामूली किसानके लिअे द्वि-अर्थक जातिका जानवर खास कामके लिअे पाले हुअे जानवरसे अधिक फायदेमन्द होता है।

अूपरके मतों पर डाली हुअी सरसरी नजर भी यह बतानेके लिअे काफी है कि दोनों तरफकी बातोंमें काफी सत्य है। सच पूछा जाय तो ये

अेक ही तसवीरके दो पहलू हैं। मेरे लिअे तो यह समझना बहुत मुश्किल है कि खास कामोंके लिअे खास नसलोंके साथ-साथ द्वि-अर्थक नसलें रखे बिना किसी देशमें पशु-विकासका अुद्योग कैसे फल-फूल सकता है।

ग्रेट ब्रिटेन, कुल मिलाकर, अेक औद्योगिक देश है। फिर भी हमें अुस देशमें कुछ खास तरहकी नसलें और द्वि-अर्थक नसलें दोनों साथ-साथ देखनेको मिलती हैं। अैसी सभी जातियां साथ ही साथ पाअी जाती हैं और फलती-फूलती हैं। वहां खास कामोंके लिअे कुछ अुत्तमसे अुत्तम नसलें पाअी जाती हैं, और तब भी ज्यादातर नसलें द्वि-अर्थक जातिकी ही हैं — जैसे 'शॉर्ट हॉर्न्स', 'डेक्सटर' और 'रेड पॉल्स'।

भारतमें दूध और खेतीके गुणोंको अेकत्रित करनेमें वे ही कठिनाअियां नहीं आती हैं। अिन दोनों जातियोंमें मांसपेशियां और शारीरिक चरबी काफी होती है और जो भोजन वे खाते हैं और पचाते हैं, अुसे काम या दूधके रूपमें ज्यादातर वापस दे देते हैं। विलियम स्मिथने तो यहां तक कहा है: "आप संभवतः सबसे अच्छा खेतीके लायक बैल सिर्फ अच्छी दूध देनेवाली गायसे ही पा सकते हैं। दूध पैदा करनेकी शक्ति ही मातृत्वका सबसे जोरदार सबूत है; और जितनी अच्छी और पूर्ण मां होगी अुतनी ही ताकतवर और तन्दुरुस्त अुसकी सन्तान होगी।" अलबत्ता, अिस पर चलनेमें थोड़ी सावधानी रखनेकी जरूरत है। मेरे अपने निरीक्षणमें मुझे लगता है कि हम अपनी कुछ खेतीके लायक नसलोंमें, अुनके काम करनेके गुणको हानि पहुंचाये बिना, काफी प्रमाणमें दूधकी मात्राको बढ़ा सकते हैं। पर हरअेक नसलके लिअे अेक सीमा है, जिससे ज्यादा किसी अेक गुणका दूसरे गुण पर बुरा असर डाले बिना हम विकास नहीं कर सकते। अिसलिअे कृषि-संबंधी रॉयल कमीशनने खेतीके लिअे अुपयोगी ढोर पैदा करनेके सम्बन्धमें अेक आम नियम बताते हुअे कहा है कि "अधिक दूध देनेके गुणका विकास अितना ही करना चाहिये कि अुसका खेतीके लायक ढोरोंमें आवश्यक गुण बनाये रखनेके साथ पूरा मेल बैठ सके।" वर्तमान नसलोंमें से हरअेक प्रदेशके लिअे अुपयोगी जाति या नसलका ठीक चुनाव करके यह आसानीसे किया जा सकता है।

भारतमें खेतीके लायक कुछ बहुत अच्छी अच्छी नसलें हैं, जैसे कि हिसार, अमृतमहल, कांगायाम, नागौर और भगनारी। साहीवाल और लाल सिन्धी बहुत अच्छी दूध देनेवाली नसलें हैं। अिन दूध देनेवाली नसलोंके संबंधमें

अभी तक किये हुअे कामसे यह दिखाया जा चुका है कि बहुत ज्यादा दूध देनेवाली देशी नसलें प्रमाणमें बहुत थोड़े सालोंमें पैदा की जा सकती हैं, जिनका दुनियाकी अच्छीसे अच्छी दूध देनेवाली नसलके साथ अच्छी तरह मुकाबला किया जा सकता है। पूसा और फीरोजपुरकी साहीवाल नसलका काम अितना प्रसिद्ध है कि अुसे यहां देनेकी जरूरत नहीं मालूम होती। हमारे पास द्वि-अर्थक नसलें भी अच्छी अच्छी हैं, जैसे कि हरियाना, थार-पारकर और गीर। हालमें ही हरियाना नसल पर किये गये प्रयोगने यह बताया है कि यद्यपि वह मूलतः खेतीके लायक नसल है, फिर भी दूध देनेकी खास संभावनाअें भी अुसमें हैं। दूसरी तरफ यद्यपि गीर नसलकी कोअी कोअी गायें काफी अधिक मात्रामें दूध देनेकी शक्ति रखती हैं, फिर भी अुसके बैल ताकतवर और मजबूत काम करनेवाले होते हैं। गीर बैल हरियाना बैलों जितने फुर्तीले और तेज भले ही न हों और हरियाना गायें गीर गायों जितना अधिक दूध भले ही न दे सकें, पर अिन दोनों नसलोंमें अुन दोनों विशेषताओं का मिश्रण है, जो औसत किसानके लिअे सचमुच जरूरी हैं। अैसे जानवरोंकी आर्थिक दृष्टिसे अेक खास कीमत है; और जिन प्रदेशोंमें वे पनप सकते हैं, वहां वे बहुत पसन्द किये जायंगे। अतः मेरी रायमें दूसरे सभी ढोर पालनेवाले देशोंकी तरह भारतमें भी विशेष कामकी और द्वि-अर्थक—दोनों प्रकारकी नसलोंके विकासके लिअे काफी गुंजाअिश है। जहां खास कामके लायक ढोरोंके विकासके लिअे चारे-और दानेकी कुदरती सहूलियतें हों, वहांके लिअे मैं खास किस्मोंकी सिफारिश करता हूं; जब कि औसत किसानके लिअे, जो अितना गरीब है कि चारे-दानेकी कमी और सीमित साधनोंके कारण अिन विशेष जातियोंको पालनेमें असमर्थ है, द्वि-अर्थक जानवर ही सबसे ज्यादा अुपयोगी हैं।

लेख खतम करनेसे पहले मैं पाठकोंका ध्यान अिस हकीकतकी तरफ खींचना चाहता हूं कि भारतमें बहुत बड़ी संख्या अैसी गायोंकी है, जो न केवल दूध ही कम देती हैं, बल्कि अुनके बैल भी बहुत कमजोर होते हैं। यहां अुस कारणसे कोअी गलती नहीं होनी चाहिये। ये नसलें द्वि-अर्थक नहीं हैं, और अिसीलिअे ढोरोंके विकासकी योजना बनाते समय द्वि-अर्थक नसलों और बिना अर्थकी — बेकार — नसलोंमें हमेशा भेद किया जाना चाहिये। अैसे जानवरोंके लिअे खास ध्यान देनेकी आवश्यकता है और अच्छे सुधरे हुअे

सांड़ोंके अुपयोगसे अुनकी जातिको सुधारनेके लिअे सभी संभव अुपाय काममें लाये जाने चाहिये।

(सर) दातारसिंह

हरिजन, २३–६–१९४६

## १०५

## ट्रैक्टर बनाम बैल

ट्रैक्टरसे खेती करना अेक विवादपूर्ण प्रश्न है। कुछ लोग खेतीके यंत्रीकरणको भारतके लिअे आदर्श लक्ष्य समझते हैं, जब कि कुछ ट्रैक्टरकी तरफ देखना भी पसन्द नहीं करते।

अिस विकासके अरसेमें अेक दूसरा बीचका रास्ता भी है।

अकेले संयुक्त प्रान्तमें वास्तवमें खेतीके लायक ७९ लाख अेकड़ जमीन बंजर है। अितने बड़े क्षेत्रफलका काफी हिस्सा अूसर है, जो बहुत सख्त हो गया है, और कुछ जगहों पर तो सतहके नीचेकी कंकड़वाली जमीनको तोड़नेके लिअे अलगसे गहरी जुताअीकी जरूरत है। कुछ दूसरी बंजर जमीन अैसी है, जिसमें लम्बी गहरी जड़ोंवाली घास फैली हुअी है। और कुछ, खास करके तराअीमें, अैसी जमीन भी है, जहां झाड़ियां और छोटे छोटे पेड़ भी अुखाड़ने पड़ेंगे।

भारतके ढोरोंकी कअी वर्षोंसे अवनति होती जा रही है और अभी हालके अिस युद्धसे अुनमें अेकदम चौंकानेवाली कमी आ गअी है, क्योंकि युद्ध-बंदियों और विदेशी (अंग्रेजी व अमेरिकन) फौजोंको खिलानेके लिअे जानवरोंका बहुत बड़ी संख्यामें कतल किया गया था। अिसका अर्थ यह है कि आज बंजर जमीनको बैलोंकी ताकतसे जोतनेकी कोशिशमें अितनी देर लगेगी कि यह तरीका लगभग बेकार साबित होगा। हमारे गांवोंको जो सड़ांध भीतर ही भीतर नष्ट करती जा रही है, अुसे सफलतापूर्वक रोकना हो तो हमें कअी वर्षोंकी सरकारी शासनकी बेपरवाहीको यथासंभव जल्दी दूर करना होगा।

जहां जहां अैसी बंजर जमीनके बड़े बड़े हिस्से हैं और दूसरी तरहसे अनुकूल हैं, वहां वहां अुनकी जुताअी करने व अुन्हें खेतीके लायक बनानेके लिअे मैं ट्रैक्टरके अुपयोगकी सिफारिश करती हूं। लेकिन जब जमीन खेतीके लायक

बन जाय, तब मैं अेक क्षणके लिअे भी यह नहीं चाहूंगी कि वहां मशीनों द्वारा हमेशा खेती की जाय। भारतीय किसानके लिअे आर्थिक दृष्टिसे बैल हर तरहसे फायदेमन्द है। जमीनसे होनेवाली अुपजसे ही बैलको खिलाया जाता है और बदलेमें वह कीमती गोबर देता है, जो दीवारों व फर्शको लीपनेमें, जलानेमें और खादके काममें आता है; मालको अिधर-अुधर ले जाने, पानी खींचने और अैसे ही दूसरे सब कामोंके लिअे भी बैलका अुपयोग हो सकता है, जब कि ट्रैक्टरके लिअे बाजारमें महंगा तेल खरीदना पड़ता है और वह वापस कुछ भी नहीं देता। साथ ही ट्रैक्टर अेक ही तरहका काम कर सकता है और वह है बड़े पैमाने पर खेतीकी जुताअी।

जब हम अींधनके लिअे गांवोंमें काफी झाड़ियां बढ़ा लेंगे, तब हम यह नहीं देखना चाहेंगे कि गांवकी खेतीमें से बैलके हटा दिये जानेसे गोबरकी कमी हो गअी है। अुलटे, हम भारतकी बेकस जमीनके लिअे बहुत ज्यादा गोबर चाहते हैं। ग्राम्य जीवनसे परिचित हरअेक आदमी जानता है कि गोबरका अुसमें कितना ज्यादा हिस्सा है। गोबरके बिना सारे गांवका रहन-सहनका ढांचा और आर्थिक जीवन ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

संक्षेपमें, अिसका अर्थ यह हुआ कि ट्रैक्टरोंको बड़े पैमाने पर बंजर भूमिकी जुताअीके काममें लेना चाहिये। और जिन वर्षोंमें ये जमीनें अच्छी खेती करने लायक हालतमें लाअी जायं, प्रान्तके हालके ढोरोंकी नसल सुधारने और अुन पर नियंत्रण करनेका हर प्रयत्न होना चाहिये; ताकि खेतीके कामके लिअे अच्छे बैलोंकी हमेशा बढ़ती रहनेवाली तादाद मिलती रहे। (अगला लेख देखिये)

अिसको पूरा करनेके पहले मैं ट्रैक्टरोंके बारेमें अेक चेतावनी देना चाहती हूं। अभी ट्रैक्टर बाहरसे मंगाये जाते हैं। अिसका मतलब यह हुआ कि अिसके साथ मिलनेवाले पुर्जोंके अलावा सभी अतिरिक्त पुर्जे बड़ी मुश्किलसे और बड़े महंगे मिलेंगे। साथ ही साथ आज भारतमें अुसके होशियार अिंजीनियर व मेकेनिक मिलने भी मुश्किल हैं। अिसका अर्थ यह होता है कि कोअी भी बड़ी योजना हाथमें लेनेसे पहले, काम करनेके लिअे आदमियोंको अच्छी तरह ट्रेनिंग देनी होगी और जहां भी बंजर जमीनको खेतीके लायक बनानेका काम शुरू किया जायगा, वहां स्थानीय वर्कशाप (पुर्जे बनानेके कारखाने) खड़े करने पड़ेंगे।

ट्रैक्टरसे खेती करनेमें अुसके औजार सबसे ज्यादा तकलीफदेह होते हैं, क्योंकि वे बार-बार टूट जाते हैं या बिगड़ जाते हैं, और अगर हम औजारों और अुनके हिस्सोंके लिअे विदेशोंका मुंह ताकते रहेंगे, तो ट्रैक्टरकी खेती अवश्य असफल होगी। कुछ भी हो, यदि हम ट्रैक्टरके भारतमें बन सकनेवाले औजारोंको बनानेमें असफल रहेंगे, तो प्रान्तके नाते यह हमारे स्वदेशीके अुत्साह पर अेक धब्बा ही होगा।

मीराबहन

हरिजन, २९–९–१९४६

## १०६

## हमारा मवेशी धन

जमीनों और गांवोंकी अुन्नतिकी कोअी स्कीम हिन्दुस्तानमें अुस समय तक कामयाब नहीं हो सकती जब तक मवेशीका सवाल पूरे तौरसे हल नहीं किया जाता। लड़ाअीके जमानेमें गायों और बैलोंकी तादादमें बहुत कमी हो गयी है, क्योंकि परदेशी फौजों और लड़ाअीके कैदियोंको खिलानेके लिअे वे बेरहमीके साथ कतल किये गये हैं। देशके मवेशियोंकी हालत पहले ही दर्दनाक थी, मगर अब तो वह बहुत ही नाजुक बन गअी है।

मवेशी अेक दिनमें पैदा नहीं किये जा सकते। बगैर चार-पांच साल राह देखे अुनसे कोअी काम नहीं लिया जा सकता। अिसलिअे हमारा फर्ज हो जाता है कि हम तुरन्त अिस प्रश्नको अपने हाथमें लें। लेकिन बदकिस्मतीसे देर या ढिलाअी तो आज हमारे देशकी अेक खासियत बन गअी है।

अिसके लिअे सरकारी हाकिमोंका फर्ज है कि वे अेक नअी स्पिरिटके साथ मवेशियोंको बढ़ानेका काम अपने हाथमें लें। तभी वे कामयाब हो सकेंगे अगर अिसमें कामयाबी न मिली, तो गांवोंको सुधारने या अुनकी अुन्नति करनेका दूसरा सब काम बेकार हो जायगा।

केन्द्र और प्रान्तोंकी सरकारोंने अेक स्कीम मंजूर की है, जिसके खर्चके बोझ दोनों आधा-आधा अुठायेंगे। अिस स्कीमके मुताबिक अच्छी नसलके मवेशी पैदा करनेके लिअे प्रान्तोंमें जगह जगह गोशालाअें कायम की जायंगी

अगर यह योजना ठीक तरह चलायी गअी, तो सही दिशामें अच्छी अुन्नति की जा सकेगी।

**मीराबहन**

हरिजनसेवक, १५–९–१९४६

## १०७

# पशु-सुधार

सरदार दातारसिंहने अंग्रेजीमें 'पशु-सुधार' पर अेक लम्बा लेख लिखा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है:

वे कहते हैं कि चूंकि हिन्दुस्तान अेक खेती-प्रधान देश है, अिसलिअे यहांके पशुओंको सुधारना खेतीको सुधारनेके बराबर है। सारी दुनियाके ढोरों में से २९% ढोर हिन्दुस्तानमें हैं; फिर भी यहां फी आदमी दूध बहुत कम पैदा होता है। न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलियामें हर रोज हर आदमी पीछे दूधकी पैदावार क्रमशः ५६ और ४५ औंस होती है, जब कि हिन्दुस्तानमें वह सिर्फ ७ औंस ही होती है। अच्छी खुराककी दृष्टिसे हरअेक आदमीको रोजाना कमसे कम २० औंससे ३० औंस तक दूध मिलना चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि हमें अपने यहां दूधकी पैदावार तिगुनीसे भी ज्यादा बढ़ानी होगी। हमारी अेक गाय साल-भरमें औसतन् ७५० पौंड दूध देती है। यह भी बहुत कम है। अितना कम दूध निकलनेका कारण यह है कि गायका पेट नहीं भरता। हमारे देशमें ढोरोंको खिलानेके लिअे जहां २७०० लाख टन चारा और ५०० लाख टन दानेकी जरूरत है, वहां हमें सिर्फ १७५० लाख टन चारा और ३७.५ लाख टन दाना मिलता है। अिसके अलावा, अिकट्ठा करने, सुखाने, काटने और ढोरोंके लिअे दाना-चारा वगैरा तैयार करनेमें बहुत-कुछ नुकसान भी होता है।

१. ढोरोंके लिअे अच्छी खुराकका अिन्तजाम करनेके लिअे सरदारजी नीचे लिखे सुझाव पेश करते हैं:

(क) चारेकी पैदावार बढ़ाअी जाय। काश्तकारोंको चारा अुगाने के लिअे ज्यादा जमीन छोड़नेकी सलाह दी जाय। ज्यादा-से-ज्यादा ताकत

देनेवाला और ज्यादा-से-ज्यादा मात्रामें पैदा होनेवाला चारा अुगाया जाय। कुछ किस्मकी घास, जैसे अेलिफण्ट, गिनी, रोहडस वगैरा बारहों मास पैदा होती हैं। अिसके साथ-साथ थोड़ी फलियां भी अुगाअी जायं।

(ख) चारा संभालकर रखा जाय। अुसे सीलसे बिगड़ने न दिया जाय और चारा सुखानेके तरीके सुधारे जायं।

(ग) अच्छी और खुली चरागाहें हों। चरागाहोंकी जमीन बहुत कम हो गअी है, अिसलिअे जितनी जमीन अभी मौजूद है, अुस पर किसी-न-किसी तरहकी मापबन्दी होनी चाहिये। नहरोंके किनारेकी हरियालीवाली जमीन भी अिस काममें ली जा सकती है।

अिस सिलसिलेमें सरदारजी जंगलकी जमीनोंके अुपयोग पर जोर देते हैं। हिसाब लगाया गया है कि देशकी १०७० लाख अेकड़ जमीन जंगल खातेके हाथमें है और ३६२० लाख अेकड़ जमीनमें खेती होती है। जंगलके अिस बड़े धनसे आज तक बहुत कम फायदा अुठाया गया है। मिसालके तौर पर, संयुक्त प्रान्तके ३३० लाख ढोरोंमें से करीब दस लाख ही अिन चरागाहोंका थोड़ा-बहुत अुपयोग करते हैं। हिन्दुस्तान भरमें ढोरोंकी तादाद ९७० लाख है। अुनमें से सिर्फ ८० लाख ५० हजार ढोरोंके बारेमें कहा जा सकता है कि वे जंगली चरागाहोंका अुपयोग करते हैं। ब्रिटिश हिन्दुस्तानमें आज जंगलोंकी जितनी जमीन है, अुसे दुगुनी करनेकी योजना चल रही है। यह कहना गलत है कि जंगल बढ़ानेसे पैदावारको नुकसान होगा। प्रयोग करके देखा गया है कि अगर ढोरोंको ठीक तरहसे चरने दिया जाय, तो अुससे नुकसान नहीं होता बल्कि ज्यादा अच्छे पौधे अुगने लगते हैं। अिसलिअे सस्ते और वैज्ञानिक तरीकेसे जंगलोंकी जमीनका चरागाहके तौर पर अुपयोग करनेकी बहुत बड़ी जरूरत है।

२. ढोरोंकी नसल सुधारनेका सवाल भी अेक बहुत अहम सवाल है। अिसके बारेमें सरदारजीके सुझाव ये हैं:

(क) हरअेक अिलाकेको अुसकी जरूरतके मुताबिक अैसे सांड़ दिये जायं, जो अुस जगहके काबिल हों। अुनकी हिफाजतके लिअे कुछ आदमी रखे जायं, जो शामके वक्त सांड़ोंको अेक अहातेमें बन्द कर दें और अुन्हें चारा-दाना खिलानेके लिअे जिम्मेदार हों। ये हिफाजत करनेवाले तालीमयाफ्ता हों, ताकि वे सांड़ोंका प्राथमिक

अुपचार कर सकें, और ढोरोंमें छूत वगैराकी बीमारियोंके फैलने पर अुनका अिलाज कर सकें।

(ख) जो सांड़ अच्छे नहीं हैं, अुन्हें खस्सी कर दिया जाय।

(ग) तबेलेके सांड़ोंकी संख्या बढ़ाअी जाय। आज तो जरूरतके हिसाबसे वे बहुत ही कम हैं। कमसे कम दस लाख सांड़ोंकी जरूरत है; और अगर अुन्हें चौथे साल बदला जाय, जैसा कि होना चाहिये, तो अुसका मतलब यह होगा कि हर साल अढ़ाअी लाख सांड़ोंकी जरूरत पड़ेगी। यानी ६ लाख गायें और १० हजार सांड़ अिसी कामके लिअे रखने होंगे। मगर यह आसान काम नहीं है और अिस पर खर्च भी बहुत होगा। अिसलिअे सरदारजीकी सलाह है कि जो गोशालायें और पिंजरापोल आज हैं, अुन्हींका अुपयोग अिस कामके लिअे किया जाय। अगर अुनका अिन्तजाम वगैरा सुधारा जाय, तो वे आसानीसे सालभरमें २५ हजार सांड़, अुतने ही बल और साथ ही सुधरी हुअी नसलकी ५० हजार बछियें पैदा कर सकेंगे।

३. छूतकी बीमारियोंको काबूमें लानेकी बड़ी जरूरत है। रिंडरपेस्ट, हैमोरेज़िक, सेप्टीसोमिया, ब्लैक क्वार्टर और अेन्थ्रेक्स जैसी बीमारियोंसे हर साल तीन करोड़से ज्यादा ढोर मरते हैं। बीमारियोंको रोकने और अुन्हें मिटानेके अिलाजों पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये। देहातियोंको सिर्फ ढोरोंकी संभालके तरीके सिखानेसे काम नहीं चलेगा, वरन् जरूरतके वक्त अुन्हें डॉक्टरी मदद पहुंचानेका भी बन्दोबस्त करना पड़ेगा।

नअी दिल्ली, २७–९–'४६ **अमृतकुंवर**

हरिजनसेवक, १३–१०–१९४६

## १०८

# वैयक्तिक या सामुदायिक ?

श्री जमनालालजीने गोसेवाका महान बोझ अपने सिर पर अुठाया है। अिस बारेमें गोसेवा-संघकी सभाके सामने अेक महत्त्वका प्रश्न यह था कि गोपालन वैयक्तिक हो या सामुदायिक? मैंने राय दी कि सामुदायिक हुअे बगैर गाय बच ही नहीं सकती और अिसलिअे भैंस भी नहीं बच सकती। हर-अेक किसान अपने घरमें गाय-बैल रखकर अुनका पालन भलीभांति और शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं कर सकता। गोवंशके ह्रासके दूसरे अनेक कारणोंमें व्यक्तिगत गोपालन भी अेक कारण रहा है। यह बोझ वैयक्तिक किसानकी शक्तिके बिलकुल बाहर है।

मैं तो यहां तक कहता हूं कि आज संसार हरअेक काममें सामुदायिक रूपसे शक्तिका संगठन करनेकी ओर जा रहा है। अिस संगठनका नाम सहयोग है। बहुतसी बातें आजकल सहयोगसे हो रही हैं। हमारे देशमें भी सहयोग आया तो है, लेकिन वह अैसे विकृत रूपमें आया है कि अुसका सही लाभ हिन्दुस्तानके गरीबोंको बिलकुल नहीं मिला।

हमारी आबादी बढ़ती जा रही है और अुसके साथ व्यक्तिगत रूपसे किसानकी जमीन कम होती जा रही है। नतीजा यह हुआ है कि प्रत्येक किसानके पास जितनी चाहिये अुतनी जमीन नहीं है। जो है वह अुसकी अड़चनोंको बढ़ानेवाली है।

अैसा किसान अपने घरमें या खेत पर अपने गाय-बैल नहीं रख सकता। रखता है तो अपने हाथों अपनी बरबादीको न्यौता देता है। आज हिन्दुस्तानकी यही हालत है। धर्म, दया या नीतिकी परवाह न करनेवाला अर्थशास्त्र तो पुकार पुकार कर कहता है कि आज हिन्दुस्तानमें लाखों पशु मनुष्यको खा रहे हैं। क्योंकि वे अुसे कुछ लाभ नहीं पहुंचाते, फिर भी अुन्हें खिलाना तो पड़ता ही है। अिसलिअे अुन्हें मार डालना चाहिये। लेकिन धर्म कहो, नीति कहो या दया कहो, ये हमें अिन निकम्मे पशुओंको मारनेसे रोकते हैं।

अिस हालतमें क्या किया जाय? यही कि जितना प्रयत्न पशुओंको जिन्दा रखने और अुन्हें बोझ न बनने देनेका हो सकता है अुतना किया जाय। अिस प्रयत्नमें सहयोगका बड़ा महत्त्व है।

सहयोगसे यानी सामुदायिक पद्धतिसे पशु-पालन करनेसे :

१. जगह बचेगी। किसानको अपने घरमें पशु नहीं रखने पड़ेंगे। आज तो जिस घरमें किसान रहता है, अुसीमें अुसके सारे मवेशी भी रहते हैं। अिससे हवा बिगड़ती है और घरमें गन्दगी रहती है। मनुष्य पशुके साथ अेक ही घरमें रहनेके लिअे पैदा नहीं हुआ है। अैसा करनेमें न दया है, न ज्ञान है।

२. पशुओंकी वृद्धि होने पर अेक घरमें रहना असम्भव हो जाता है। अिसलिअे किसान बछड़ेको बेच डालता है, और भैंसे या पाड़ेको मार डालता है या मरनेके लिअे छोड़ देता है। यह अधमता है।

३. जब पशु बीमार होता है, तब व्यक्तिगत रूपसे किसान अुसका शास्त्रीय अिलाज नहीं करवा सकता। सहयोगसे चिकित्सा सुलभ होती है।

४. प्रत्येक किसान सांड़ नहीं रख सकता। लेकिन सहयोगके आधार पर बहुतसे पशुओंके लिअे अेक अच्छा सांड़ रखना आसान है।

५. व्यक्तिशः किसान गोचर-भूमि तो ठीक, पशुओंके लिअे व्यायामकी यानी हिरने-फिरनेकी भूमि भी नहीं छोड़ सकता। किन्तु सहयोग द्वारा ये दोनों सुविधायें आसानीसे मिल सकती हैं।

६. व्यक्तिशः किसानको घास अित्यादि पर बहुत खर्च करना होगा। सहयोग द्वारा कम खर्चमें काम चल जायगा।

७. व्यक्तिशः किसान अपना दूध आसानीसे नहीं बेच सकता। सहयोग द्वारा अुसे दाम भी अच्छे मिलेंगे और वह दूधमें पानी वगैरा मिलानेसे भी बच सकेगा।

८. व्यक्तिशः किसानके पशुओंकी परीक्षा असंभव है। किन्तु गांव-भरके पशुओंकी परीक्षा आसान है, और अुनकी नसल-सुधारका अुपाय भी आसान है।

९. सामुदायिक सहकारी पद्धतिके पक्षमें अितने कारण पर्याप्त होने चाहिये। सबसे बड़ी और प्रत्यक्ष दलील यह है कि वैयक्तिक पद्धतिके कारण ही हमारी और हमारे पशुओंकी दशा आज अितनी

दयनीय हो अुठी है। अुसे बदलकर ही हम बच सकते हैं और पशुओंको बचा सकते हैं।

मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जब हम अपनी जमीन भी सामुदायिक पद्धतिसे जोतेंगे, तभी अुससे पूरा फायदा अुठा सकेंगे। बनिस्बत अिसके कि गांवकी खेती अलग-अलग सौ टुकड़ोंमें बंट जाय क्या यह बेहतर नहीं है कि सौ कुटुम्ब मिलकर सारे गांवकी खेती सहयोगसे करें और अुसकी आमदनी आपसमें बांट लिया करें? और जो खेतीके लिअे ठीक है, वही पशुके लिअे भी समझा जाये।

यह दूसरी बात है कि आज लोगोंको सहयोगी पद्धति पर लानेमें कठिनाअी है। कठिनाअी तो सभी सच्चे और अच्छे कामोंमें होती है। गोसेवाके सभी अंग कठिन हैं। कठिनाअियां दूर करनेसे ही सेवाका मार्ग सुगम बन सकता है। यहां तो बताना यह था कि सामुदायिक पद्धति क्या चीज है, और वह वैयक्तिकसे अितनी अच्छी क्यों है? यही नहीं, बल्कि वैयक्तिक पद्धति गलत है और सामुदायिक सही है। व्यक्ति अपने स्वातंत्र्यकी रक्षा भी सहयोगको स्वीकार करके ही कर सकता है। अतअेव यहां सामुदायिक पद्धति अहिंसात्मक है, वैयक्तिक हिंसात्मक।

सेवाग्राम, ८–२–'४२ **मो० क० गांधी**

हरिजनसेवक, १५–२–१९४२

# सूची


अंकुश ६५, ६७, ७०, ७१, ७२; –हटानेका नतीजा ७०–७१, ७५–७६
अकाल ८, १६, २५ ४४, ५०, ११९, १४१, १४३, १४९; –और तिहेरी बरबादी २५; –और भुखमरी १४३; –का संकट ५५; –रोटी और कपड़ेका ३
अच्युतराव पटवर्धन ६९
अनाज ३९; –का आयात ३, १२–१४, ६०; –का संकट १०, २०, ४९, १३५; –का संग्रह न किया जाय ९८; –की कमी (तंगी) ५, १७, ४७, ४०-४१, ५३-५४; –की गंभीर परिस्थिति ५०; –की पैदावार ४८; –की बरबादी १४-१५, १८, ४६, ६०; –की समस्या ५०-५५, ५९; –भंडार ११४;–सड़ा-गला खानेसे बीमारियां ५८; –सस्ता ४८
अल्बर्ट हॉवर्ड ८१, २१८

आबादी –की अदलाबदली ५६; –जरूरतसे ज्यादा बढ़ी हुअी ५७, १८१
आर० मैक्केरिसन १९४, १९५
आहार –के नियम २०; –शास्त्र १५

अिंग्लैण्ड ४२, ७२, १४५; –का खुराक-महकमा १०८
अिज्जत नगरकी 'न्युट्रीशनल रिसर्च लेबोरेटरी' ३३
अिण्डोनेशिया १२८
'अिन्स्टिट्यूट ऑफ प्लान्ट अिन्डस्ट्री' ८१
अिन्दौर-पद्धति ८२-८३, ९०, २१६
'अिम्पीरियल कौंसिल ऑफ अेग्रिकल्चरल रिसर्च' ३१
अुत्तरी बंगाल-चावल-मिल अेसोसियेशन १०६
अुपवास १९, ५३, १२८; –का महत्त्व ५३; –पूरा या आधा ५३-५४
'अेग्री-हॉर्टीकल्चरल सोसायटी' १३३
अेन० जी० आपटे २३४, २३७
अेम० अे० चद्रे, डॉ० १२५
अेम० अेल० खेमका १०५

कंट्रोल –अनाज पर ६३, ६४, ६५-६७; –चीनी पर २९, ६४, ६७; –कपड़े पर ५६, ६४-६७; –की बुराअियां ५६; –की व्यवस्था, प्रान्तोंकी २३; –की साअिन्स ६२; –हटानेका मतलब ६८
'करंट साअिन्स' ३२
कांग्रेस ६, ६१, ६२; –वर्किंग कमेटी १४३
काटजू, डॉ० २७ २९
किन्केअिड मि० १२४
'कूड़े-कचरेका अुपयोग' ७९
केसी, मि० ५९

चावलकी अुपज १५०; –की कमी १४; –को पॉलिश करना १४; –खुड़ी (टूटा) १०७,११३
चेपमैन, डॉ० १९८

जर्मनी ९९, १०१
जवाहरलाल ७२
जाकिर हुसैन, डॉ० १६
जापान ६
जी० आअी० फाअुलर, डॉ० ७९, ८०
जी० क्लार्क २०३
जी० बी० जेक्स २३०
जी० रुशमन, डॉ० २०६

जे० सी० कुमारप्पा ३१, ६९, १९२
जे० डब्ल्यु० लेदर, डॉ० २१०
झवेरभाओी पटेल १४
'टाटा अिन्स्टिट्यूट ऑफ सोशल साअिन्स' १०३
ट्रूमन, प्रेसिडेण्ट ५३
ट्रैक्टर बनाम बैल २४२–४४
दातारसिंह, सरदार ७७, २४५, २४६
नओी तालीम और खाद्य अुत्पादन १६-१७
नॉर्थबोर्न, लॉर्ड २२०
नियंत्रण –आयात-निर्यात पर ९७; –बनावटी १०४
न्यूज़ीलैण्ड १९८
'फिजिकल अेन्ड मेण्टल वेलफेअर सोसायटी' १९८
फ्रेन्ड्स अेम्बुलन्स यूनिट २६
बर्मा १४, ९६
बॉल्फोर २१८, २१९
ब्रजकिशनजी ७०
ब्रुलटीनी, प्रोफेसर ७९
ब्रेन ७८
भाव-नियंत्रण ९३, ९६, ९८, १०१
भुखमरी ५, ४४, ६३, १५१; –और मोहताजी २८
मंत्री ५७; –कांग्रेसी ४२; –खुराक ५८; –प्रान्तके ५८
मछलियां २१, २२, ४५, ५०; –का अुद्योग २२
मथाओी, डॉ० ७१
मद्रास १६, २०२
महकमा –खाद्य (भारत सरकारका) १०५; –खेती १७४, २१४; –रेशनिंग १२९; –विकास १६६
मौलाना आजाद ६
'युटिलाअिज़ेशन ऑफ अेग्रिकल्चरल वेस्ट' ८१
रंगा, प्रो० ११३; –के सुझाव १७३-७५
राजगोपालाचार्य १०३
राजेन्द्रप्रसाद, डॉ०, ८, ५५, ५८, ७०, ७
राममनोहर लोहिया, डॉ० ५९
'रॉयल अिकानॉमिक सोसायटी' ९
रॉबर्टसन २३१
रॉथेमस्टेड २०२, २०४
रेशनिंग १२, ४२, ६१, १०३ –पद्धति १३६
लिमिंग्टन, लॉर्ड २१८
विंस्टन चर्चिल १४९
वी० अेन० खानोलकर १५९
वैकुण्ठभाओी महेता ६९
वॉल्कर, डॉ० २०२
शांतिनिकेतन २३०
शाकभाजी १७; –ठंडके मौसमकी १७७–८३; –गरमीके मौसमकी १८३–८६
'संपत्ति तथा दुर्व्यय' ७९
सरदार पटेल ७२
सहकारी — बिक्री-मंडल २१५; –संस्थाअें २१, ४४, १४५, १९२
सहस्रबुद्धे ३७
साअिक्स २२४, २२५
सिन्धी २००
सीमियन्स, डॉ० १२२
सोयाबीन ३५–३७
हर्बर्ट स्टुअर्ट, सर ३१
हूवर, मि० ३२

## अहिंसक समाजवादकी ओर

लेखक : **गांधीजी**

गांधीजी मानते थे कि सच्चे समाजवादका लक्ष्य प्रेम और शांति है, अिसलिअे वह अहिंसक साधनोंसे ही प्राप्त हो सकता है। अिस पुस्तकमें अहिंसक समाजवादकी स्थापनाका आदर्श किन्तु व्यावहारिक मार्ग बताया गया है। आशा है हमारी राष्ट्रीय सरकारके समाजवादी समाज-व्यवस्थाके ध्येयको मूर्तरूप देनेमें यह पुस्तक सरकार और जनता दोनोंका सही मार्गदर्शन करेगी।

कीमत १.०० डाकखर्च ०.८७

## बापूकी कलमसे

[गांधीजीके मूल हिन्दी लेखोंका संग्रह]

संपादक : **काकासाहब कालेलकर**

अिस पुस्तकमें वे सारे मूल हिन्दी लेख अेकत्र किये गये हैं, जो गांधीजीने अगस्त १९२१ से जनवरी १९४८ तक 'हिन्दी नव-जीवन' में और 'हरिजनसेवक' में समय समय पर लिखे थे। अिनके बारेमें काकासाहब कालेलकर अपने सम्पादकीय वक्तव्यमें लिखते हैं: "गांधी-विचारको समझनेकी तीव्र अिच्छा रखनेवालोंसे मैं कहता आया हूं कि गांधीजीके विचार और लेख केवल अंग्रेजीमें पढ़नेसे आपको गांधीजीका संपूर्ण दर्शन नहीं हो सकता। भारतीय जीवन-दर्शनमें गांधीजीकी देनको पूर्णतया समझना हो, तो अुनके हिन्दी और गुजराती लेख पढ़े बिना चारा नहीं। अिस दृष्टिसे अिस पुस्तकका असाधारण महत्त्व है।"

कीमत २.५० डाकखर्च १.००

## सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा

लेखक : **गांधीजी; अनु० काशिनाथ त्रिवेदी**

अिस पुस्तककी प्रस्तावनामें गांधीजीने लिखा है : "मेरी बिनती है कि कोअी मेरे लेखोंको प्रमाणभूत न समझें। मैं सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि अिनमें बताये गये प्रयोगोंको दृष्टान्तरूप मानकर सब अपने-अपने प्रयोग यथाशक्ति और यथामति करें। मेरा विश्वास है कि अिस संकुचित क्षेत्रमें आत्मकथाके मेरे लेखोंसे पाठकोंको बहुत कुछ मिल सकता है।" राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके जीवन और कार्य-पद्धतिको समझनेकी अभिलाषा रखनेवाले प्रत्येक भारतीयको यह अमूल्य ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिये।

कीमत १.५० डाकखर्च ०.५०

## हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

लेखक : **गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा**

आज जब कि देशके विभिन्न भागोंमें ग्रामविकास और सामूहिक कल्याणकी योजनाओं पर अमल हो रहा है, तब गांवोंके पुनर्निर्माणके बारेमें गांधीजीके बुनियादी सिद्धान्तों पर प्रकाश डालनेवाला यह संग्रह अिस विषयमें हमें सही दिशा बतानेवाला सिद्ध होगा। अिससे हमें मालूम होगा कि गांधीजी गांवोंको अुन्नत और समृद्ध बनानेके लिअे क्या करना चाहते थे, हम आज क्या कर रहे हैं और वास्तवमें हमें क्या करना चाहिये।

कीमत १.५० डाकखर्च ०.३१

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद – १४